संसार।

(समाजिक उपन्यास)

बाबू वेणीप्रसाद द्वारा अनुवादित

संसार।

(सामाजिक उपन्यास)

सर रमेशचन्द्र दत्त लिखित पुस्तक
का भाषा अनुवाद।

बा० बेणीप्रसाद जी द्वारा अनुवादित।

बा० माधोप्रसाद द्वारा प्रकाशित।

भारत प्रेस बनारस में बा० माधोप्रसाद के
प्रबन्ध मे छपा।

प्रथमबार १०००] १९११ [मूल्य ३)

* ओ३म् *

प्रथम परिच्छेद ।

एक दुःखी विधवा ।

आरे से बक्सर को जो राह गई है उससे थोड़ी दूर पर कुन्दनपुर नाम का एक गांव बसा हुआ है। यहां से आरा कोई छः मील होगा। कुन्दनपुर एक बहुत छोटा सा गांव है, कुल तीस चालीस घर की बस्ती है। दस पन्द्रह घर ब्राह्मण पांच चार घर क्षत्री और बनिए, पन्द्रह बीस घर किसान, धोबी, नाई, ग्वाले कोइरी वगैरः के हैं। दो एक घर भर, तेली, कहार और चमार के भी हैं। पहले ज़माने में भाग्यवान जमींदार लोग अकसर ग्रामों में बड़े २ दिग्घी तालाब वगैरः खुदवा दिया करते थे जिस के चिन्ह अब तक कहीं २ मौजूद हैं। इस गांव में भी करीब दो बीघे के घेरे में एक तालाब है जिस के किनारे दो तरफा लम्बे लम्बे ताड़, सुपारी और नारियल के पेड़ खड़े हैं। इन की छाया से सूर्य की किरनें तालाब पर नहीं पड़ने पातीं, केवल कहीं कहीं पत्तों के बीच से ताक झांक कर रह जाती हैं। एक दिन सन्ध्या समय एक विधवा ब्राह्मणी इस तालाब की सीढ़ी उतर रही है। इसके गोद में एक तरफ मिट्टी की एक गगरी है और एक तरफ चार वर्ष की उज्ज्वल नयना एक बालिका है। सूरज डूब चुका है, तालाब में अंधियारा हो आया है और बड़े बड़े पेड़ की डालों से ढका हुआ तालाब इस सन्नाटे में कुछ भयावना मालूम पड़ रहा है। इस ब्राह्मण नारी की उम्र करीब अट्ठाईस वर्ष की होगी पर चिन्ता और दुःख से सिर के बाल कुछ कुछ श्वेत हो चले हैं और वह रमणी धीरे धीरे मानों संसारिक चिन्ता और भार से नमित सिर नीचा किये तालाब की सीढ़ी उतर रही है। इस के पीछे एक श्यामांगी बालिका जिस की उम्र करीब

दस वर्ष की होगी तालाब में पेड़ों की परछांही देखती हुई चली आ रही है। सीढ़ी उतर कर इस रमणी ने पीछे आती हुई बालिका से कहा "बेटी बसन्ती, तू ज़रा चम्पा को तो पकड़ तब तक मैं दो गोते लगालूं"

बसन्ती। मां, मैं भी नहाऊंगी।

माता। ना, मन्नो, मुझे नहाने दे।

बसन्ती। नहीं मा, मैं भी नहाऊंगी।

माता। छिः बेटी, अब तू सयानी हुई, तुझे क्या अब हर बात में ज़िद्द सुहाती है? तेरे नहाने से चम्पा भी नहाना चाहेगी, तू इसे पकड़ मैं छिनभर में दो गोते लगा लूं हूं।

यह कह कर माता ने छोटी कन्या को बसन्ती की गोद में दे दिया और आप तालाब में उतर कर नहाने लगी। यहां इस रमणी का कुछ परिचय दे देना उचित समझ पड़ता है। यह रमणी इस समय विधवा है। इसके स्वामी विश्वनाथ को मरे दो वर्ष हो चुके हैं। इस दरिद्र परिवार को केवल पांच सात बीघे जमीन का आसरा था। इस का स्वामी विश्वनाथ खुद तो जमीन जोतता नहीं था, गल्ले का हिस्सा देकर दूसरे किसानों से जमीन जोतवाता था इसमें जमींदार का खजाना, बीज वगैरे का खरच इत्यादि देकर बहुत थोड़ा ही बचता था जिस से ज्यों त्यों कर पेट की ज्वाला बुझती थी। विश्वनाथ के चचेरे भाई रमानाथ बांकीपुर में अमीन हैं, दो पैसे की अच्छी आमदनी है। पर आज कल के ज़माने में सगे भाई ही से मदद नहीं मिलती फिर चचेरे भाई की कौन कहे, पर हां कभी रोग दुख या ऐसे ही किसी आफत बिपत के समय रमानाथ छोटे भाई को पांच सात रुपया कर्ज दे देते थे और रुपया पटने पर भाई होने के सबब से सूद छोड़ देते थे। विवाह के पन्द्रह सोलह वर्ष बाद विश्वनाथ के एक लड़की हुई। माता पिता लड़की का बड़ा लाड प्यार करने लगे, पर खाली लाड प्यार से क्या होता है। इतने दिनों बाद एक लड़की हुई अड़ोसी पड़ोसी के यहां ले जाती वक्त उसे एक आध गहना या कपड़ा पहिना कर ले जाय

इतना भी ठिकाना नहीं क्या करें, लड़की के हाथ में कुछ नहीं तो एक जोड़ी कड़े तो हों, एक चुनरी साड़ी तो हो, बिचारे गरीब इस से बढ़ कर और क्या ऊंची अभिलाषायें करते, पर लाचारी थी क्या करें, अन्त को विश्वनाथ ने बड़ी बड़ी मुश्किल से दो तोले के कड़े बनवा दिए, इसके लिये उसे कर्ज लेना पड़ा। कर्ज़ा पटना मुश्किल हो गया अन्त को बिचारे ने एक बैल बेच कर कर्ज़ा पटाया। विश्वनाथ के बड़े भाई रमानाथ के भी एक लड़की थी। विश्वनाथ की बड़ी लड़की बसन्ती अकसर अपने ताया के यहां खेलने जाती। इस लड़की तारा की उम्र बसन्ती के बराबर थी। तारा बड़ी सुशील लड़की थी। मेले तमाशे कहीं से भी चार खिलौने लाती तो बसन्ती को उनमें से एक जरूर देती या एक पेड़ा आप खाती तो आधा बसन्ती को देती। दरिद्र ब्राह्मण कन्या घर आकर माता को तारा के दिए खिलौने दिखाती और बहुत प्रसन्न होती। माँ बिचारी आंसू पोंछती हुई बेटी को हृदय से लगाकर मुंह चूम लेती और ठण्डी सांस ले कर रह जाती। बसन्ती के होने के छः वर्ष बाद विश्वनाथ के आगे और एक कन्या हुई। पहली लड़की का रंग कुछ काला था। अब की लड़की बड़ी सुन्दरी हुई। चम्पक वर्ण देख कर पिता माता ने चम्पा नाम रखा। दरिद्र दम्पती ने बड़ी चाह से कन्या को कण्ठ लगाया, इससे आगे और कुछ चाव नहीं कर सके, मन तो बहुत करता कि ऐसी सुन्दरी कन्या को एक आध आभूषण या वस्त्र पहिना कर, मन का चाव निकालें पर क्या करते लाचारी थी, पैसे बिना यह क्योंकर हो सकता था। बिचारे चुप चाप कन्या को छाती से लगा कर चूमते और मन मसोस आंसू बहा कर रह जाते थे। किसी तरह से बसन्ती की मां दुःख को दुःख और सुख को सुख न समझ कर गृहस्ती चलाती थी। तड़के सूरज के पहले उठती, जूठे बर्तन मांजती, झाड़ू बुहारू देती दोनों कन्याओं को खिला पिला कर पति के लिए रसोई चढ़ाती, फिर स्वामी को भोजन करा कर आप तालाब पर जा कर स्नान करके पानी लाती और दो पहर के बाद भोजन कर के दोनों कन्याओं

को लेकर जेठ बैशाख को दुपहरिया में हरे भरे पेड़ की छाया में कपड़ा बिछा कर तनिक विश्राम करती। शाम होने पर फिर रसोई और घर के काम धन्धे में लग जाती और इससे निश्चिन्त हो कर तालाव में स्नान कर जल भर लाती। योंहि गृहस्ती के धन्धे में बिचारी का दिन बीतता था। यद्यपि धन नहीं था सुवर्ण के आभूषण नहीं थे, चौमंजिला मकान नहीं था, पर मैं पूछता हूं कि इस परिवार की नाईं कै जन सुखी हैं। पर निर्दई विधाता से इस परिवार का यह सुख भी नहीं देखा गया। चंपा के जन्म के तीन वर्ष बाद सहसा विश्वनाथ की मृत्यु हो गई। बिचारी बसन्ती की मां के करम फूट गए। विधवा का हृदय विदारक रोना और विलाप सुन कर सारे ग्राम वासी व्याकुल हो गए। खेत में जाते हुए किसान भी विधवा की कुटिया के आगे क्षणिक खड़े हो कर दो बून्द आंसू बहा गए। विश्वनाथ को मरे एक वर्ष हो चुका है। अब रमानाथ अपनी ज़मीन के शामिल में विश्वनाथ की जमीन जुतवाते हैं। वर्ष के अन्त में हाथ उठा कर अनाथ विधवा को जो कुछ दे देते हैं वही मिलता है, इस से उस बिचारी का मुश्किल से गुजारा होता है। दोनों लड़की को पालना पोसना, अपना पेट भरना हर साल झोपड़ी पर नई छावनी डलवानी, कुटिया का बांस का घेरा हर साल मरम्मत करवाना यह सब उतने सामान्य द्रव्य से होना कठिन हो गया अगत्या लाचार हो कर विधवा बिचारी ने अपनी झोपड़ी बेंच कर सेठ के घर में आश्रय लिया। वहां उनके घर में टहलनियों की तरह काम करना पड़ता, अपनो लड़कियां चाहे पड़ी छुटके, उनके घर के बच्चों को गोद में लादे रहना पड़ता, पानी भरना रसोई करना यह सब तो करना पड़ता ही था, इस के अलावे चुपचाप सेठानी जी का दम्भपूर्ण वाक्य वाण भी सहना पड़ता था। बिचारी निराले में आहें भरती और आंसू बहा कर कहती कि " हे भगवान बेटी बसन्ती, चम्पा बड़ी हों, तू इन्हें सुखी करियो। मुझे सब सहना है, मैं अपना दुख अपना अपमान इन सब की कुछ भी चिन्ता नहीं करती। आहा! भगवान करें बेटी बसन्ती और चम्पा का अच्छे घर

ब्याह हो और मैं तुम्हें सुखी देख कर मरूं। मेरी और कोई कामना नहीं है। अस्तु इस ब्राह्मण नारी का परिचय हो गया अब हम फिर से अपनी कहानी का सिलसिला छेड़ते हैं। बसन्ती की माता ने स्नान कर अस्त होते हुए सूर्य को प्रणाम किया। और गगरी भर कर गीले ही वस्त्र से ऊपर चढ़ने लगी।

माता। बेटी बसन्ती, दे चम्पा को मेरी गोद में दे दे।

बसन्ती। ना मा, मैं ही ले चलूंगी, देख यह सो गई है।

माता। नहीं नहीं, तू लड़की है उठा सकेगी नहीं, सोने से और भी भारी हो गई है, दे मेरी गोद में दे।

बसन्ती। ना मा, मैं खूब उठा सकूंगी देख उसदिन पांडे जी के यहां से मैं अकेली ही चम्पा को ले आई थी कि नहीं? कुछ दूर तो नहीं है। देख न वही तो चौके का दीया दीख रहा है।

माता। देख बेटी बड़ा अन्धेरा है मेरा आंचर पकड़ के धीरे धीरे चली आ, कहीं गिर न पड़ियो, कल रात को तारा कहीं मेले से आती हुई रस्ते में गिर पड़ी, आहा! बिचारी का मत्था इतना सा कट गया है।

बसन्ती। मा, तारा कौन से मेले में गई थी? कैसे अच्छे अच्छे खिलौने लाई थी, एक काठ का घोड़ा लाई थी, एक मिट्टी का शेर लाई थी और मा, मा एक कैसा तो कल लाई थी, वह घूमता था, तारा यह सब कहां से लाई थी मा?

माता। अरे तू नहीं जाने है? वहीं वे लोग रथ यात्रा के मेले में गई थीं, हर साल वहां बड़ा भारी मेला होए है। हजारों लोग जाएं हैं। कितने तमाशे वाले जाएं हैं, कितने खिलौने की दुकाने हलवाइयों की दुकानें जाएं हैं।

बसन्ती। मां तू भी वहां गई थी।

माता। हां बेटी, एक बेर जब छोटी थी तब बाबू जी के संग गई थी, हम लोग सब घर भर गए थे। एक आम के पेड़ के नीचे डेरा किया था रसोई भी बनी थी।

बसन्ती। मां आम के पेड़ के नीचे क्यों रसोई बनाया, क्या घर नहीं मिलता था।

माता। वहां हजारों आदमी आए हैं सब को घर कहां मिले है, एक बड़ा भारी बड़ का पेड़ है उसी के नीचे ठाकुर जी का रथ खड़ा होए है।

बसन्ती। मां मैं भी मेला देखने जाऊंगी, मेरा बड़ा मन करे है।

माता। मेरे ऐसे नसीब कहां कि तुझ को ले के जाऊं बहुत रुपया खरच होए है।

बसन्ती। ना मां, मैं अगले बरस जाउंगी, तारा जो जाय है. मैं नहीं जाऊंगी?

माता। छि: बेटी तू अब सयानी हुई तुझे क्या जिद्द अच्छी लगे है तेरी ताई बड़ी आदमी है, उस की लड़की चाहे जहां जाय, तू गरीब की लड़की ठहरी तुझे क्या जिद्द सुहावे है। आहा! जो भगवान ने तुम लोगों के भाग में सुख लिखा होता तो क्या रोटी कपड़े के लिए तुम लोगों को दूसरे का मुंह ताकना पड़ता, फिर क्या मेरी सोने की पुतलियां फूल ऐसी बच्चियों को दूसरे के द्वारे द्वारे भटकना पड़ता, हा! भगवान जो तेरी मरजी।

अब चारों तरफ अन्धेरा अच्छी तरह छा गया, सिर पर काले काले बादल घिर आए पेड़ों की सघन छाया से अन्धेरा और भी दूना हो रहा है, हवा रह रह कर एक आध झोंका मार देती है। बादलों के बीच कहीं कहीं एक आध तारा दिख जाता है फिर छिप जाता है, कहीं कहीं बिजली भी चमक जाती है और बीच बीच में कहीं पेड़ों पर से चमगीदड़ या ऐसे ही कोई पक्षी बोल उठते हैं। बसन्ती अपनी छोटी बहिन को गोद में लिये मां का आंचर पकड़े धीरे धीरे उसी बनके बीच से चली जा रही है। अन्धेरा है नहीं तो बसन्ती देखती कि उस की मां की आंखों से टपाटप आंसू की बून्दे गिर रही हैं।

दूसरा परिच्छेद ।

दो बहिनें ।

कुन्दनपुर में एक छोटी सी साफ सुथरी झोंपड़ी दिखाई दे रही है । दोपहर का समय है चारों तरफ खेत में सूर्य्य की प्रचंड धूप चटक रही है । किसान सब सबेरे का काम समाप्त कर के कन्धे पर हल धरे हाथ में बैल की डोरी थामे अपनी अपनी कुटिया के तरफ चले आ रहे हैं यां कहीं पेड़ों की छाया में बैठे हुये हैं घर से उनकी माता, बहिन या स्त्री थाल में भात लिए आ रही हैं । वही दही या मठे के साथ परम तृप्त हो कर भोजन कर रहे हैं, कहीं किसी आम की बारी में, जहां कई बीघे तक कतार के कतार आम के पेड़ लगे हुए हैं सूरज की किरणें पत्तों को भेद कर कहीं कहीं धरती पर पड़ रही हैं, दो चार किसान खा पी कर मैली अंगौछी बिछाए लेटे हैं या बैठ कर हुक्का तमाकू पी रहे हैं । सिवाय झिल्ली की लगातार झनकार के इस समय कहीं किसी पेड़ पर से भी किसी पक्षी की आवाज नही सुनाई देती । चारों तरफ एक अपूर्व शांति-दायक सन्नाटा छाया हुआ है ।

एक तरफ एक छोटी सी कुटिया दिखाई दे रही है । इसके चारों तरफ बांस के झाड़ हैं और आम कटहर के कई पेड़ हैं जिन की छाया से कुटिया की आगन में धूप बिलकुल नहीं पड़ने पाती है इसी के पास नारियल के भी पांच चार पेड़ हैं जिनमें पांच चार डाब (कच्चे हरे नारियल) लगे हुए हैं । कुटिया के पीछे एक सहन है उस पर पेड़ों की छाया पड़ रही है । एक तरफ एक साफ सुथरा लिपा पोता लंबासा दालान है जिस की फूस की छावनी पर लौवे, कोंहड़े की बेलें चढ़ी हुई हैं । इसी दालान के सामने एक और कोठरी है जिस में रसोई वगैरा होता है और इस के पिछवाड़े बांस की बखारियों से घिरी हुई एक और झोपड़ी है जिस में एक मात्र गइया बंधी हुई है ।

घर वाले सब खा पीकर निश्चिन्त हो चुके हैं। चूल्हे की आग बुझ चुकी है। बांस के घेरे पर दो एक धोतियां सूख रहीं हैं और कुटिया की लंबी दालान में एक चौकी और दो एक चरखे पड़े हुए हैं। झोंपड़ी के पिछवाड़े एक छोटी सी कच्ची पोखरी है जिस में थोड़ा सा बरसाती पानी होगा और चारो तरफ तरह तरह के घास फूस उग रहे हैं। पोखरी में पांच चार पीतल के बरतन पड़े हुए हैं। अभी मांजे नहीं गए। घर के हाते के चारों तरफ पेड़ और जंगल भरा हुआ है जिस से इस दोपहरिया की कड़ी धूप में भी घर छाया से भरा हुआ और शीतल है। इसी लंबे दालान में जहां दिन के समय भी थोड़ा थोड़ा अन्धेरा है, घर की स्वामिनी टहल रही है, इस की एक तीन वर्ष की कन्या जमीन में चटाई पर सो रही है और एक छः महीने के लड़के को माता गोद में लिए टहल रही है सुलाने के लिए लड़के को थप थपाती जाती है और बीच बीच में धीरे धीरे कुछ गुन गुनाती हुई गाती भी जाती है और टहलती जाती है।

इस स्त्री की उम्र करीब आठरह वर्ष की होगी। उज्ज्वल श्याम वर्ण, दुबला पतला सुडौल बदन बड़ी बड़ी काली धीर शान्त आखें, पर मुंह कुछ सूख गया है। अठारह वर्ष की कामनियों की जैसी सुन्दरता जो छबि हम उपन्यासों में पढ़ते हैं, वह सब इस स्त्री में कुछ भी नही है। युवा अवस्था का सर्वांग पूर्ण सौन्दर्य्य, हंसी से दमकता हुआ चेहरा, प्रसन्न ललाट, आंखें की चंचलता, हरेक चाल पर सदा एक अपूर्व लावण्य लीला यह सब इस रमणी में कुछ भी नहीं है। पाठक क्या करें लाचारी है, बहुत मन चलता हो तो अन्यत्र सन्तोष कीजिए। पर भाई औपन्यासिक सौन्दर्य्य वास्तव में कै नर नारियों को प्राप्त होता है। हमने तो नहीं देखा। जरा संसार के चारो तरफ निगाह उठा कर देखिए औपन्यासिक सुख कै भाग्यवानों के बांटे पड़ा है। विषम संसार पर जरा एक दृष्टि डाल कर देखिए हजारों लखों दरिद्र गृहस्तो की अवस्था निहार देखिए, हमारी सहस्रों लखों दुःखिनी बहिनें, पुत्रीएं कितने तरह की

तकलीफ सहती हुई, दुःख सुख झेलती हुई संसार चला रही है। औपन्यासिक काल्पनिक सुख से कै जन सुखी हैं। सोने की कटोरी से दूध पीते हुए कै बच्चे पैदा होते हैं। अस्तु, टहलते टहलते थोड़ी देर में मा की गोद में बच्चा सोगया, माता ने सावधानी से बच्चे को चटाई पर सुला दिया और आप पास बैठकर कुछ देर तक पंखा झलने लगी। शान्त मलीन चेहरे पर घर की धीमी रोशनी पड़ रही है, भंवरे ऐसी काली काली बड़ी बड़ी आंखे सोते हुए बच्चे की तरफ एक टक निहार रहीं हैं, जिनसे माता की स्नेह, चिन्ता, धीरता और सहनशीलता टपक रही है। इस निराले घर में बैठे हुए इस स्त्री के हृदय में न जाने कितने तरह की चिन्ताएं लहर मार रहीं हैं। घर गृहस्ती की चिन्ता, दुख सुख मय संसार की चिन्ता और कभी कभी अतीत काल के स्मृति की चिन्ता इस युवती के मन में एक के बाद एक आ जा रही हैं।

बच्चा अच्छी तरह सोगया, तब माता ने भी हाथ से पंखा छोड़ दिया और सिरहाने बांह रख, वहीं जमीन पर बच्चे के पास लेट गई। धीरे धीरे दोनों पलकें बन्द हो गाईं और थोड़ी देर में युवती सो गई। दोपहरिया की गर्मी में सारी दुनिया चुप है, इस कुटिया में भी कोई शब्द नहीं है। चारों तरफ के सन्नाटे में स्नेह मई माता दोनों बच्चों के पास सो रही है। घर गृहस्थी की सारी चिन्ता कुछ देर के लिये इसके हृदय से विदा हुई और उस शान्त चिन्तशील ललाट से चिन्ता की दो एक रेखाएं मिट गईं।

यह स्त्री प्रायः घण्टे भर सोई होगी, फिर किसी शब्द से उसकी आंखे खुल गईं तो देखा कि बगल ही में एक हंसमुखी सुन्दरी बालिका एक बिल्ली के बच्चे से खेल रही है। बच्चा उछल उछल कर उसके हाथ का खिलौना लिया चाहता है और लड़की हाथ हटा हटा लेती है। काली काली चमकीली आंखें कभी इधर कभी उधर तेजी से घूम जाती हैं। होठों से लाली चूई पड़ती है, गोल गोल सुडौल बाहें कभी उठती कभी गिरती हुई अपूर्व शोभा दे रही हैं। इस लड़की की उम्र करीब तेरह वर्षकी होगी पर चेहरे का भोलापन

हंसती हुई आंखें, चिन्ता शून्य उद्वेग रहित मन,. अभी बालिका ही का है, युवती का नहीं।

नींद से जाग कर वह स्त्री बहुत देर तक स्नेह भरी दृष्टि से इस सुन्दरी बालिका की तरफ देखती रही, इस बालिका और बिल्ली के बच्चे का खेल बड़ी देर तक देखती रही। फिर धीरे से पूछा। "चम्पा, तुम कब आई ?"

चम्पा। बेबे मैं तो बहुत देर से आई हूं, तुम सोती थीं इसी लिये जगाया नहीं। और देखो बेबे यह बिल्ली का बच्चा जहां मैं जाऊं हूं वहीं मेरे साथ साथ चला आवे है, मैं इसे चौके में बन्द करके बर्तन मांजने गई, यह मेरे संग संग चला आया।

बसन्ती। बर्तन सब तो मंज गया न? सब घर में बन्द कर दिया है न?

चम्पा। हां, सब मांज कर रख आई हूं। फिर बिल्ली को गइया वाली झोंपड़ी में बन्द कर आई, पर वह घेरा टप कर यहां आगई, यह मेरा खिलौना लिया चाहती है, सो देखो न मैं इसे यह देती हूं न।

बसन्ती। अच्छा भैन इतने देर से आई हो तो जरा सोओ न, कल रात को तुमे अच्छी तरह नींद नहीं आई, इस बखत जरा सा सोलो।

चम्पा। नहीं बेबे, दोपहरिया को मुझे नींद नहीं आवे है। क्यों, रात को तो खूब नींद आई थी। खाली एक दफे जब बच्चा रोया था तब नींद खुली थी। आज बच्चा कैसा है बेबे?

बसन्ती। इस बखत तो अच्छा है, रात होते ही शरीर गरम हो आवे है। वह आज आरे से एक दवाई लाने के लिये कह गए हैं, उससे नींद भी आवेगी और बुखार भी नहीं आवेगा।

चम्पा। बैजनाथ, कब आवेंगे बेबे?

बसन्ती। कह तो गए हैं, कि सन्ध्या को आवेंगे, क्यों?

चम्पा। आज उन्हें आने तो दो एक तमाशा करूंगी, तुम्हें अभी नहीं बतलाती, उन्हें आ जाने दो फिर आप ही देखोगी। क्यों जैसा उसदिन मुझ पर अबीर डालिस था।

बसन्ती । हंसकर, "क्या करोगी बतला न ?"

चम्पा । नहीं बेबे तुम कह दोगी ।

बसन्ती । नहीं, कहुंगी नहीं ।

चम्पा । सच्ची, नहीं कहोगी ।

बसन्ती । सचमुच नहीं कहुंगी ।

इस पर चम्पा ने अपने आंचर से खोल कर एक चीज निकाली । यह वस्तु अन्दाज एक हाथ लम्बी थी ।

बसन्ती । अरे ! यह क्या है ? यह !

चम्पा । देखो नहीं हो ?

बसन्ती । यह, देखुं तो हुं, यह क्या पाट है ?

चम्पा । हां पाट है, देखो कैसा कुसुम के फूल में रंगा है ।

बसन्ती । इससे क्या होगा ?

चम्पा । अच्छा बतलाओ तो क्या होगा ?

बसन्ती । क्या जाने ?

चम्पा । इतना भी नहीं अटकल लगा सकी । आज जब रात को जीजा जी सो जायंगे, तो यह उनकी दाढ़ी में बांध दुंगी, फिर जब उठेंगे तो जटाधारी साधू कहके उन्हें चिढ़ाउंगी " बड़ा तमाशा होगा" यह कह कर बालिका ताली बजाकर हंस पड़ी ।

बसन्ती ने भी थोड़ा सा हंस दिया, फिर स्नेह पूर्ण दृष्टी से अपनी बहिन की ओर निहारने और मनही मन कहने लगी । "चम्पा, तेरी अमृत भरी हंसी से संसार में अमृत बरसता है । अहा बिचारी बच्ची को अपने फूटे करम का हाल अब भी कुछ मालूम नहीं है । जानती हुई भी अनजान है । हे ! निर्दई बिधाता, इस नन्हीं सी बच्ची के करम में तुमने इतना भारी दुख लिखा—क्यों कर इस अमृत की कटोरी में जहर मिलाया ?

शायद इसके कहने की जरूरत नहीं कि पहले अध्याय में हमने जो कुछ कहा दूसरे अध्याय में उस से नौ वर्ष बाद की बात हो रही है, हमारी कहानी यहीं से शुरू है । इस नौ वर्ष के बीच की वारदातें कुछ कुछ तो ऊपर ही जाहिर हो चुकी हैं बाकी के लिए और कुछ

थोड़ा सा कह देना भी अनुचित न होगा। बसन्ती की माता अपने जेठ के यहां रह कर बड़े दुख से दोनों लड़कियों को पालती पोसती रही। पति की मृत्यू के बाद उस ने सब तरह के सुख की आशा को तिलांजुली देदी थी पर मन में यह इच्छा सदा बनी रहती थी कि मरने के पहले दोनों कन्याओं का ब्याह करती जाऊं। जिस समय दोनों लड़कियों के साथ बसन्ती की मा ने अपने जेठ के यहां आश्रय लिया उस समय बसन्ती की उम्र नौ वर्ष की हो चुकी थी, अतएव बसन्ती की मां बर को खोज करने लगी। पर गरीब की लड़की का ब्याह जल्दी नहीं होता। सब ही लड़के वाले यह चाहते हैं कि लड़के का व्याह बड़े आदमी के घर हो जिसमें पोटली भर रुपया गहना मिले, इसलिए जो बिधवा बिचारी अपने जेठ के घर टुकड़े तोड़ती हुई अनाथ बालिकाओं का पालन कर रही है, उस की लड़की से भला कौन कुलीन जल्दी अपने लड़के की सगाई करता। सगे सम्बन्धियों ने भी इस बारे में कुछ ध्यान नहीं दिया। लड़की का रंग भी गोरा नहीं था, पर चेहरे पर सलोना पन था आंखें दोनों बड़ी बड़ी और सुन्दर थीं और शरीर का गठन भी सुडौल था, पर लड़की दुबली पतली थी। कई जगह बात लगी और छूट छूट गई, लड़की की ताई जी शाम को अपने बरामदे में पैर पर पैर चढ़ा कर बैठी हुई सिर झाड़ती हुई कहती बसंती की मां परांदा जूड़ा बांधने की डोरी लिए खड़ी थी "अरे भैन इसका क्या सोच है? हम लोगों के घर की लड़की के ब्याह का क्या फिकर है, हम लोगों का घर, मान इज्जत, बांकीपुर की बड़ी नौकरी, यह भला किसी से छिपी है, बड़ी तपस्या से तब अपने ऐसे घर की लड़की मिले है।" "उंह, तुम्हें बसन्ती के ब्याह का क्या फिकर है। जरा ठहरो तो, अब की दसहरे की छुट्टी में उन्हें घर तो आने दो, फिर उनसे कह कर ऐसे घर ब्याह करा दुंगी कि फिर देखना। समधी (कुटुम्ब) ऐसे समधी होंगे। यही देखो न, मेरी तारा अभी नौ वर्ष की भी नहीं हुई है अभी से कितने आदमी खुशामद कर रहे हैं, पैर पड़ रहे हैं, ब्याहना चाहें तो अभी लड़की को सिर चढ़ा कर ले जांय, पर मैं सब की बात सुनी

अनसुनी कर जाऊं हुं। अपनी तारा को ऐसे घर दुंगी कि लोग भी कहेंगे कि हां, ऐसे घर लड़की देनी होती है। पर हां मेरी तारा का रंग गोरा है, और तुमरी लड़की जरा काली है, और बहिन तुमारे पास कुछ ऐसा रुपया पैसा भी तो नहीं है। मेरा देवर जरा चलाक नहीं था, कुछ जमा पूंजी नहीं छोड़ गया इसीलिये जो कुछ कहलो, पर क्या हुआ, तुम कुछ फिकर मत करो बहिन, जब मैंने इस काम में हाथ डाला है तो हुआ ही समझो, तुम निश्चिन्त रहो"।

जेठानी जी की मन समझौती बातें सुन कर, उनके अनन्त जोशन विभूषित बाहू का लगातार हिलना देख कर बसन्ती की मां को कुछ ढारस हुआ, पर ताई जी के बांह हिलाने से बसन्ती का कुछ भला न हुआ। बसन्ती का व्याह नहीं हुआ इसके बाद दसहरे की छुट्टी में रमानाथ घर आए। अपनी स्त्री के लिए नए नए फैशन के कपड़े गहने न जाने कितनी चीजें लाए। मालकिनी जी खुशी से फूली नहीं समाती थी। घर के लड़को के लिए कितने तरह की टोपी रेशमी कोट खिलौने वगैरः लाए। तारा के लिए बनारसी साड़ी, जूड़े में लगाने का नकली फूल और कितने तरह की चीजें आई। अमीन साहब घर आये हैं, सारे गांव में धूम मच गई। कितने ही लोग मुलाकात करने आए, कितने ही खुशामदी टट्टू आ आ कर लम्बी लम्बी तारीफें करने लगे। किसी को दसहरे के त्योहार में दस पांच रुपया कर्जा चाहिए, किसी पर कुछ आफत आई है, अमीन साहब से सलाह पूछने आए हैं, कोई अपने लड़के की नौकरी लगवाने के लिए अमीन साहब को हाथ जोड़ रहे हैं, और कोई ऐसे हैं कि उन्हें इस समय कुछ चाहिए नहीं फकत बड़े आदमियों की खुशामद के आदी हैं, उन्हें इसी में आनन्द मिलता है। इस धूम धाम के बीच में बिचारी बसन्ती की बात भला कौन सुने और कौन कहे। पन्द्रह दिन की छुट्टी बीत गई अमीन साहब बांकीपुर चले गए। बसन्ती के व्याह की कुछ भी बात न होने पाई जब अड़ोस पड़ोस की किसी स्त्री से बसन्ती की मां मिलने जाती तो अपनी बेटी के व्याह के लिए कितनी बूढ़ियों के हांथ पाव जोड़ती।

वह सब भी बड़े चाव से जवाब देतीं "क्यों नहीं क्यों नहीं" "तुमारी लड़की का व्याह भला नहीं करावेंगे तो और किसका करावेंगे ? पर बहिन जानो तौ ही लड़की का व्याह कुछ मुंह का खेल तो है नहीं और तुम कुछ ऐसा वैसा दहेज भी तो नही दे सकोगी। बसन्ती का बाप तो कुछ छोड़ नहीं गया, वह तुमरे जेठ ऐसा होता और उसके ऐसा दो पैसा कमाना जानता तो फिर क्या फिकर था। मैं तो उसी बखत कहती थी पर मेरी सुने कौन, अब मालूम पड़े है न। भाई गरीब की बातें बासी होने ही से अच्छी लगे हैं। तौ भी क्या हुआ बहिन व्याह तो करा ही दूंगी तुमरी लड़की का व्याह करा दूंगी यह भला कौन सी बड़ी बात है। या कोई दूसरी वृद्धा कहने लगती इसका क्या फिकर है। बसन्ती के व्याह का भला क्या फिकर है। पर भई एक बात यह है कि बसन्ती जरा देखने सुनने में अच्छी होती तो यह काम जलदी हो जाता। पर क्या हुआ लड़की के मुँह पर पानी है, पानी है पर हां रंग जरा कुछ काला है और आंखें जरा निकली हुई हैं और सिर के बाल भी कुछ छोटे हैं। नहीं तो और सब बात में लड़की बुरी नहीं है। मुँह पर सलोना पन है, पर हां जरा दुबली पतली है, सारी हड्डीयां दिखाई देती है, हाथ पैर जरा लम्बे २ हैं और अभी ही से कुछ लम्बी होगई है। है तो है, पर बहिन तुम कुछ फिकर मत करो काली लड़की का क्या व्याह नहीं होता है। क्या रुका रहे है। कुछ भी नहीं अटका रहेगा, बहिन कुछ नहीं अटका रहेगा, जब हम लोग हैं तो कुछ नहीं रुका रहेगा"। इसी तरह गांव के बुढ़ियों की पेट भर मन समझौती बातें और साथ ही अपनी निन्दा अपने पति और बसन्ती की पेट भर निन्दा सुन कर बसन्ती की मां घर फिर आतीं गांव में दो एक पुराने बूढ़े लोग भी थे। इन्हों ने जमाना देखा हुआ था, सभी ग्रामों में आया जाया करते थे, बहुतों से जान पहचान थी कई लड़कियों का व्याह भी करा दिया था। बसन्ती की मां ने कई रोज तक इन महात्माओं के घर भी दौड़ धूप की। कभी उनके घर के लड़कों के लिए दो चार पैसे का बताशा ले जाती या कभी

मिश्री के कूजे या कुछ मिठाई के दोने ले जाती, घर की मालकिनी के हाथ पैर जोड़ती खुशामद करती, और वह इसे हास्य देतीं और कहतीं "अच्छा अच्छा हम भी फिकर करेंगे, उनसे भी कहेंगे इस तरह की बहुत सी चिकनी चुपड़ी बातें कह कर बिचारी का मन रखती थीं। अन्त को बसन्ती की मां ने घूंघट काढ़ कर इन महात्माओं को रास्ते चौराहे में, तालाब के किनारे घेरना और हाथ जोड़ना खुशामद करना शुरू किया। यह लोग कहते। "ओहो, यह बात हमसे तुमने इतने दिन तक कही नहीं? यह सब काम क्या बिना हम लोगों से कहे होता है। देखो न, वही उस मुहल्ले के शुक्ल जी के घराने की लड़की कामनी के ब्याह के लिए, उन लोगों ने कितनी दौड़ धूप की अन्त को जब बड़ी बहू जी ने हमें बुला कर कहा बस फ़ौरन ही सब काम हो गया। कैसा ब्याह करवा दिया है, पांडे जी का पुस्तैनी बंस है, रोटी कपड़े की कोई कमी नहीं, रुपये की कमी नहीं, मानो कुबेर का भंडार है; ऐसे घराने के लड़के से शुक्ल जी की लड़की का ब्याह करा दिया। लड़के का दूसरा ब्याह है, ज़रा दुबला पतला है और ज़रा बड़ा भी है। पर क्या हुआ अभी भी चालिस बयालिस वर्ष से ज़्यादा नहीं है और कामनी आठ वर्ष की है तो क्या हुआ जलदी बड़ी हो जायगी, कलियुग की लड़कियों को बड़ी होते क्या देर लगे है। गांव का गांव इस ब्याह की तारीफ़ कर रहा है। लड़का बांकीपुर में रहे है, बड़ा आलिम फाज़िल नहीं है तो क्या हुआ, उसकी इज्जत कितनी है, नाम कैसा है। भाइयों को दावत देता है, हर दम दस बीस लोग घेरे ही रहते हैं, गाड़ी घोड़ा साज सामान ठाट बाट देख के लोग कहते हैं कि हां क्यों न हो, बड़ा आदमी जिमीदार है। पर, बिना हम लोगों के हाथ डाले क्या ऐसा सम्बन्ध होता है। तुम बैठे अब तक कहां दौड़ धूप कर रही थी? हम लोगों से पूछा तक नहीं। आज कल का जो ज़माना हुआ है, सब अपने आप मन मानी करते हैं, इससे क्या काम चले है। तौ भी आज हमारी याद हुई यही ग़नीमत है"। आंखों में आंसू भर कर बिचारी बसन्ती की मा ने अपना अपराध

माता और मनोमन सोचने लगी कि "ऐसे लोगों के पास पहले ही से न आकर मैंने बड़ी मूर्खता की"। विधवा बिचारी के आंसू और हाथ पैर जोड़ने से गांव के चौधरी जी ने खुश होकर कहा। "क्या हुआ कुछ फिकर मत करो देखो न मैं दो ही चार दिन में सब ठीक ठाक किए देता हूं"। बसन्ती की मा बिचारी को मानों आकाश का चन्द्रमा हाथ लगा। खाना, पीना, सोना छोड़ कर चौधरी जी की आशा किए बैठी रही, पर दो चार दिन गए, दो चार महीने भी बीत गए बसन्ती की सगाई नहीं हुई। गरीब की लड़की को किसी ने नहीं अपनाया। बसन्ती की मा ने भी देखा कि कुन्दनपुर के लोग बड़े महात्मा हैं। दूसरे के यहां आज क्या रसोई हुई है, निस्वार्थ भाव से इसकी भी खबर रखते हैं। दूसरों की बहू बेटियां क्या कर रही हैं, इसका वैज्ञानिक पता रखते हैं और घर घर गांव गांव इस वैज्ञानिक खबर को फैलने की निस्वार्थ चेष्टा करते हैं। यदि किसी पर कोई आफत आन पड़े या कोई काम अटक जाय तो आगे के किसी गलती के लिये उसे दो खरी खोटी सुनाने, बड़प्पन दिखाने, कोरा दिलासा देने में बड़े जबर हैं। बात की कमी कभी नहीं करेंगे। पर काम के वखत कुछ सहायता करना, यह तो बात ही और हुई। बसन्ती की मा को इस भार से किसी ने भी छुटकारा नहीं दिलाया, उसकी खुशामद से किसी ने एक कौड़ी भी नहीं दी, उसकी भलाई के लिए किसी ने बांए पैर की कानी अंगुली तक नहीं हिलाई। बसन्ती की माता यदि कभी कुन्दनपुर के बाहर गई होती तो उसने देखा होता कि केवल इसी गांव में नहीं वरं संसार में सर्वत्र समभाव से यह सारे सद्गुण विराजमान हैं। पर वह विधवा बिचारी सीधी सादी थी। उसने एक दफे भी नहीं सोचा कि इतने दम दिलासा, सदोपदेश के बदले यदि कोई उसका यह भार हलका कर देता तो नैतिक उन्नति न सही, उसे कुछ संसारिक सुख तो हुआ होता।

कुन्दनपुर में विश्वनाथ के एक परम मित्र थे। उनके आगे बैजनाथ नाम का केवल एक ही पुत्र था। यद्यपि पिता गरीब था,

पर उसने लड़के को पढ़ाने लिखाने में कुछ कसर नहीं रखी और लड़का भी मेहनती था। बांकीपुर के हाईस्कूल से एन्ट्रेंस पास कर बैजनाथ कलकत्ते में एफ० ए० पढ़ने गया पर एफ० ए० क्लास में भर्ती होने के कई महीने बाद उसके पिता की मृत्यु होगई, इसलिये विवश हो बैजनाथ को गांव लौट आना पड़ा और लिखाई पढ़ाई भी बन्द होगई। घर आकर बैजनाथ अपने पिता को मामूली जायदाद से गुजारा करने लगे।

बैजनाथ, बसन्ती और बसन्ती की मा को बचपन से जानते थे बैजनाथ नाम होने के कारण, या कुछ गवांर होने के कारण, कुछ दिनों तक युनिवरसिटी की विद्या या कलकत्ते की हवा लगने के कारण न जाने किस कारण से उन्होंने अपने पिता के परम मित्र विश्वनाथ की कन्या से विवाह करना चाहा। बैजनाथ के, इसका जिकर छेड़ते ही सारा गाँव चमक उठा, सब ने उसको इस मूर्खता से रोकना चाहा। उसके पिता के पुराने दोस्त सब आ आ के कहने लगे, "क्यों जी तुम क्या दरिद्र की लड़की ब्याह कर बाप का नाम डुबाने बैठे हो"। परन्तु लड़का कुछ गवांर था, उसने इन बातों का कुछ ख्याल नहीं किया। बसन्ती की मा से मिला और (हमें लिखते लज्जा आती है) छिप कर दो एक दफे बसन्ती का सूखा हुआ मलीन मुख भी देखा और लड़की की ताई को राजी करा के विवाह का सब ठीक ठाक कर लिया। बसन्ती की ताईजी खोटी नहीं थीं, मन की सीधी सादी थी, उन्हें किसी से लड़ाई झगड़ा करना या किसी को गाली गलौज देने की आदत नहीं थी। पर बड़े आदमी की लड़की ठहरीं उस पर पति दो पैसा कमाता ठहरा इसलिये यदि इनके मिजाज में कुछ जरा सा बड़े आदमीयत की बू हो या किसी अमीर से सम्बन्ध करने की इच्छा हो या गरीबों से हमर्ददी कुछ कम हो तो हमें नाक भौं सिकोड़ना न चाहिए। हम में से कै ऐसे हैं, जिनमें यह सब बातें नहीं हैं। इसलिये किसी के दो एक दोष देख कर हमें निन्दक होना उचित नहीं।

बसन्ती की सीधी सादी ताईजी ने भतीजी के ब्याह के लिये

कुछ ऐसा यत्न नहीं किया, किसी के लिये ब्याहे. फिर छपाने की उनकी आदत न थी, पर बसन्ती की एक जगह सगाई होने से वह सचमुच खुश हुई । अच्छी महूर्त घड़ी देख कर उन्होंने बसन्ती का बैजनाथ से विवाह कर दिया और जब अड़ोस पड़ोस की औरतें उनसे मिलने आतीं तो रमानाथ की गृहणी जी अनन्त जोशन विभूषित भुजाओं को हिला हिला और चमका चमका कर कहतीं "आहा, मुझे तो जैसी तारा, वैसी बसन्ती, मैं ब्याह न कराऊं तो भला कौन कराता, बसन्ती की मा बिचारी की तो यह दशा है, बाप भी दो पैसा छोड़ नहीं गया, मैं न करूं तो कौन करे।" इत्यादि इत्यादि ।

पड़ोसनी भी कहतीं, "हां जी क्यों नहीं तुम्ही हो जो इतना सब करो हो नहीं तो आज कल कौन किसका इतना करे है"। इत्यादि नाना प्रकार से मालकिनी जी की खुशामद और तारीफ की गई ।

उस समय चम्पा की उम्र पांच छः वर्ष की थी, पर मा की बड़ी इच्छा थी कि चम्पा का भी ब्याह करतो जाऊं । बैजनाथ ने कितना मना किया बहोत कुछ रोका, यह भी कहा कि मैं इसे घर रख के थोड़ा बहुत हिन्दी हिसाब वगैरे पढ़ाऊंगा फिर जब दस बारह वर्ष की होगी तो ब्याह कर दूंगा, पर चम्पा की मा ने एक न मानी, यही कहती रही कि मैं चम्पा को बिना ब्याहे मरी तो मेरी मन की एक चाह रह जायगी । अस्तु बैजनाथ बिचारे क्या करते लाचार होकर मामूली हालत के एक पढ़े लिखे लड़के से चम्पा की शादी करादी ।

पति की मृत्यु के इतने दिनों बाद बसन्ती की मा के हाड़ में हवा लगी । मन में जरा आनन्द हुआ । दोनों ब्याही कन्याओं को गोद में बैठा कर उन्होने अपने को भाग्यवती माना, पर रहती वहीं जेठ के ही घर थीं ।

चम्पा के विवाह के कई महीने बाद उनका परलोक वास होगया ।

हमें और एक बात कहना है । पांच वर्ष की उम्र में चंपा का ब्याह हुआ और सातवें ही वर्ष वह बिधवा होगई । किसे स्त्री कहते

हैं, ब्याह क्या होता है और विधवा क्या बला है, कोमल बालिका चम्पा बिचारी को इन बातों की कुछ भी होश नहीं थी । बड़ी बहिन के घर आकर सात वर्ष की सरल बालिका ने घुंघट उतार कर दूर फेंका और खिलौना लेकर खेलने लगी ।

॥ तीसरा परिच्छेद ॥

॥ घर गृहस्ती की दो एक बातें ॥

रात के दस बज चुके हैं । चन्द्रमा की ठंडी चांदनी सारे कुन्दनपुर के गांव और खेतों में छाई हुई अजब छटा दिखा रही है । तालों की छोटी छोटी तरंगे मानों चांदी की लहरें मार रहीं हैं । नारियल, सुपाड़ी, ताड़, के लंबे लंबे पेड़ रातो|की निस्तब्ध चांदनी में सिर ऊंचा किए मानों चित्र लिखे से खड़े हैं । आम कटहर के पेड़ों से छन छन कर कहीं कहीं चांदनी पड़ रही है । किसान की कुटिया पर, आंगन में मानों चांदनी का जाल बिछा हुआ है । सारे गांव पर शीतल श्वेत चांदनी मानो जूही पुष्प सेसी खिल रही है । घर वालों का खाना पीना हो चुका है । सब लोग किवाड़ चढ़ा कर निद्रा देवी की आराधना में समाधिस्थ होगए हैं । कहीं कहीं दो एक खुर्राट बुढे अब भी बाहर चबूतरे पर बैठे हुक्का पी रहे हैं और खांस रहे हैं और कहीं किसी झोंपड़ी के पीछे की पोखरी में किसी के घर की बहू बेटी बासन मांज रही हैं । गृहस्थी का धन्धा अब भी पूरा नहीं हुआ है । चांद की ठंडी चांदनी में रात की ठंडी हवा धीरे धीरे चल रही है और कहीं से किसी मनचले किसान की संवैया गीत की आवाज हवा के साथ साथ कभी कभी सुनाई दे जाती है ।

बसन्ती बीबी के घर का सब काम हो चुका है पर अभी पति नहीं आए, इस लिए उन्हीं के आसरे बाहर आंगन में बैठी हुई है । चन्द्रमा की निर्म्मल चांदनी उसके सादे कपड़े और शान्त नयनों

पर पड़ रही है। चम्पा आज सोने नहीं आती, बैजनाथ को बाबू बना कर तमाशा करेगी इसी धुन में है, पर आंगन में बहिन के बगल में जरा सा लेटती ही सो गई। आंचर का रंगा हुआ पाट आंचर ही में रहा। नींद में उसके दोनों लाल लाल होंठ हंसी से खिले हुए हैं मानों बालिका शीतल चांदनी रात में कोई सुख या खेल का सुपना देख रही है।

थोड़ी देर में बाहर किवाड़ खट खटाने की आवाज आई। बसन्ती तो यह आसरा देख ही रही थी, उसने फौरन जाकर किवाड़ खोले। बैजनाथ घर में आए।

बैजनाथ की उम्र करीब पचीस वर्ष की होगी। कद लंबा और शरीर पुष्ट है नाक बड़ी और मत्था चौड़ा है। वर्ण श्याम है पर आंखें दोनों कमलवत और तेज पूर्ण हैं। बहुत दूर से पैदल चले आ रहे हैं, इस लिए मुंह कुछ सूख गया है शरीर पर धूल उड़ उड़ के पड़ी है और पैर दोनों धूल मिट्टी से भरे हुए हैं। बसन्ती ने पति के आते ही आंगन में एक चौकी बिछा दी और पैर धोने के लिये एक लोटा पानी और अंगोछा भी ला रखा। बैजनाथ ने मुंह हाथ धोकर गमछे से हाथ पैर पोंछा, इतने ही में बसन्ती ने स्वामी से पूछा।

बसन्ती। तुम्हें आज बड़ी देर हुई? अभी तक तुमने, कुछ खाया पिया नहीं?

बैजनाथ। हम तो सांझ को ही आते, पर क्या करें आरे में एक मुलाकाती आदमी मिल गए, शाम को हमें अपने डेरे पर ले गए, और कह सुन के कुछ जलपान भी करा दिया, इसीलिये इतनी देर हुई। तुम लोग तो खा पी चुकी हो न?

बसन्ती। चम्पा खा के सोई है और मैं खाने जाउं हुं। तुम तो बस वही शाम के जलपान किए हुए हो और तो कुछ खाये नहीं हो, अच्छा तो पिरौंठी तरकारी ले आऊं।

बैजनाथ। हमें कुछ ऐसी भूख तो नहीं है, पर अच्छा दो एक पिरौंठी ले आओ, रात बहुत हो गई अब देर मत करो।

बसन्ती ने वहीं आंगन में पानी छिड़क कर पीढ़ा बिछा दिया और छीके पर से कटोरा उतार कर तीन चार पिटोटी, रखे की तरकारी और घर में एक नीबू का पेड़ था उसमें का दो तीन नीबू तराश कर पति के सामने ला रखा । आज नारियल के पेड़ से दो कच्चे नारियल भी बसन्ती ने तुड़वा रखे थे उसका भी मुंह काट कर पत्तल के सामने रख दिया । घर में एक गय्या थी । उस का दूध औाट कर एक कटोरे में भर कर बगल में रख दिया और आप पास बेठ कर पङ्खा झलने लगी ।

बैजनाथ । बच्चे के लिए एक दवा लाए हैं, अभी मत पिलाना, रात को अगर उठे या रोवे तो पिला देना और जिस काम के लिए गए थे, वह कुछ हुआ हवाया नहीं ।

बसन्ती । क्या हुआ ?

बैजनाथ । आरे में एक वकील मेरे मुलाकाती हैं, उनसे मैंने तुम्हारे बाबू जी के जमीन वगैर: की सब बातें समझा के कहीं ।

बसन्ती । उन्होंने क्या कहा ?

बैजनाथ । उन्होंने कहा कि मुकदमा लड़ना पड़ेगा ।

बसन्ती । अरे राम राम ! क्या ताया जी के संग मुकद्दमा लड़ोगे लड़कपन से उन्होंने पाला पोसा, विवाह करवा दिया, ताई जी अब भी कभी कदाच कुछ न कुछ चीज भेजही छोड़ती हैं, उन से क्या मुकद्दमा लड़ना चाहिए ।

बैजनाथ । हम लोगों के ब्याह के लिए तो तुमारे ताया जी का हम लोगों पर कुछ ऐसा अहसान नहीं है । तुम उस समय लड़की थीं, वह सब बातें जानती नहीं हो, खैर और अब जानने की भी कुछ ऐसी जरूरत नहीं है, पर हां वह तुमारे ताया लगते हैं इस लिए उनसे झगड़ने की हमारी इच्छा भी नहीं है, पर क्या करें लाचारी है ।

बसन्ती । नहीं नहीं ! यह काम अच्छा नहीं, और देखो हम लोग गरीब आदमी ठहर, हम क्या मुकद्दमा चला सकेंगे । अगर गरीबों की तरह शाम सबेरे दो रोटी मिल जाय, नारायणजी

की मरजी से दोनों बच्चे पल जांय तो मुझे यही सब कुछ है। तुमरी जो कुछ थोड़ी बहुत ज़मीन है हमें वही पारस है। तुम्हारी यह पुश्तैनी झोंपड़ीही मुझे चौखंडा महल है।

बैजनाथ। हमने जब तुम्हें ब्याहा था तो यह नहीं जानते थे कि इस तरह गरीबी से गुजारा करना पड़ेगा। तुम बड़ी धीरज वाली सति पति व्रता हो। इस लिए सब कुछ सह कर भी मुंह खोल कर दो बात नहीं कहती, यह तुम्हारी हो तारीफ है पर हमसे तो नहीं देखा जाता।

बसन्ती की आंखों में आसू आ गए और मनो मन कहने लगी "हे नाथ, रस्ते की फकीरनी को गोद में उठा कर राज पर बिठा दिया, यह क्या भूल गए"? पर प्रगट में कुछ मुसकरा कर बोली "क्यों ऐसा घर और ऐसे आदमी और जहां राजाओं तक के चखने लायक चीजें मिलती हों वहां हमें कमी किस बात की है। एक राजाओं के चखने लायक चीज देखेगे? "

बैजनाथ ने जरासा मुसकरा कर कहा "कहां है देखें ?"

बसन्ती उठ कर चौके में गई। उसी दिन पेड़ से छोटे छोटे आम के टिकोरे तोड़ कर उनकी चटनी कर रखी थी। वही पति के सामने ला कर रख दिया और बोली। "जरा खा कर देखो तो सही"

बैजनाथ ने हंसते हंसते चटनी चाटना शुरू किया और कहा "हां, हां, यह राजाओं ही के चखने लायक चीज बनी है, पर यह मेरे राज्य का प्रताप नहीं है, रानी ही जी के हाथ का करतब है"।

थोड़ी देर बाद फिर बोले "मैं सच कहता हूं ताया जी के संग मुक़द्दमा लड़ने की मेरी भी इच्छा नहीं है, पर वह तुम्हारे बाप की जायदाद हजम कर जांयगे। और तुम्हें गरीब समझ कर दुतकार देंगे हमसे तो यह कभी भी नहीं सहा जायगा।"

बसन्ती। अच्छा तो फिर एक काम तो करो। वह जो कटोरे में दूध रक्खा है उसे उठा कर पी तो आओ। फिर खूब जबर हो के ताया जी से कमर बांध के लड़ना।

बैजनाथ जी ने अगत्या इस लड़ाई की तय्यारी करते हुए मनोमन न जाने कुछ को या मालकिनी जी के हाथ के करतब की तारीफ की, फिर बसन्तीजी बोलीं। "अच्छा तायाजी के संग यह मामला मिटा लिया जाय तो कैसा, गांव में भी दस पांच भले आदमी रहे हैं"।

बैजनाथ। उसको कोशिश भी कर चुके हैं। तुम्हारे ताया जी कहते हैं कि "जमीन में मेरा ही हक़ है, मैं ही आज दस वर्ष से खजाना देता हूं, कितने रुपये लगा कर जमीन आबाद किया है और जमीदार के सिरिश्ते में मेरा नाम चढ़ा हुआ हैं, अब मैं यह जमीन हाथ से जाने देने वाला नहीं हुं" पर हां तुम्हें और चम्पा को कुछ नगद रुपया देने पर राजी हैं, वह जमीन का असली दाम क्या होगा, उस के आधे से भी कम है। हम लोग गरीब हैं, इसीलिए यह जुल्म कर रहे हैं।

बसन्ती। मैं औरत मानो ठहरी। तुम जितना यह सब समझते हो, मैं थोड़े ही समझ सकती हूं पर मेरी समझ में तो वह जो दें वही ले लेना चाहिए। वह हमारे बड़े हैं, किसी जमाने में मुझे पालते पोसते भी रहे, इस लिए अगर कुछ कम दाम में ही उन्हें कोई चीज देदिया जाय तो क्या हुआ। और भी तो एक बात है, मुकद्दमा लड़ने में न जाने कितना रुपया हम लोगों का बिगड़ जायगा रुपया कहां से आवेगा ? उधार लेना पड़ेगा, फिर वह उधार चुकेगा किस तरह ? मान लो कि अगर मुकद्दमा लड़ कर जमीन मिल भी गई तो वह उधार चुकाने ही में बिक जायगी और ताया जो सदा के लिए शत्रु हो जायगे और अगर मुकदमा हर गया तो दोनों तरफ से मारे पड़ेंगे। यही न है, कि ताया जो कुछ कम दाम देते हैं। कम ही सही, बखेड़ा सब यहीं से मिट तो जायगा। अजी, मैं तो औरत ठहरी, मैं मामले मुकद्दमे का जंजाल क्या जानुं। मुझे, तो मुकद्दमे के नाम से डर लगे है, इसी लिए यह कहूं हुं, सो तुम गुस्सा मत हो, अच्छी तरह सोच बिचार लो, आखिर जो जो अच्छा समझो करो।

बैजनाथ जी ने भोजन समाप्त कर थोड़ा सा पानी पिया। और फिर धीरे धीरे कहने लगे "तुमरे ऐसी औरत जिसे मिले वह दुनियां में भाग्यवान है। मैं तुमसे पहले सलाह न करके वकील साहब के यहां दौड़ा गया यही मेरी बेवकूफी है। तुम्हारी सलाह ही ठीक है। हमें भी यह मंजूर है। ताया जी आज कल छुट्टी पर आए हुए हैं कलही उनसे मिल कर सब तय कर लेंगे। और अगर फिर कभी किसी सलाह की जरूरत पड़ेगी तो घर के वृहस्पती से पहले सलाह कर लेंगे।

बसन्ती जी ने हंसते हुए कहा "अच्छा तो वृहस्पती जी की एक और सलाह मान लो।

बैजनाथ। क्या कहो हो, हम किसी में भी उजर नहीं करेंगे।

बसन्ती। अच्छा यह जो दो एक डाब (कच्चे नारीयल) रखे हैं इनका पानी मुंह लगा पी आओ तो।

बैजनाथ जी ने अगत्या वृहस्पति जी की यह दुसरी सलाह भी मान ली और फिर पत्तल पर से उठ कर हाथ मुंह धोया कुल्ला किया। बसन्ती जी ने पति की शय्या बिछा दी एक बीड़ा पान दिया, और बहोत देर तक पति की शय्या के पास बैठी हुई घर गृहस्ती की बातें करती रही। बहोत देर तक बात चीत करने के बाद बैजनाथ ने अपनी प्यारी स्त्री को हृदय से लगा कर चूम्बन किया और कहा "जाओ बहोत रात हुई, जा के खाओ पियो" संसार में अपने को भाग्यवती समझती हुई बसन्ती भोजन करने चौके के तरफ चली।

॥ चौथा परिच्छेद ॥

खेती बारी की बातें ।

सबेरा होगया है, पर सूरज नहीं निकले हैं, पौफटा ही है, ठंडी ठंडी मन्द मन्द हवा चल रही है । पेड़ों पर नाना प्रकार के पक्षी कलरव कर रहे हैं, मानो ऊषादेवी के स्वागत की तय्यारी कर रहे हैं, धीरे धीरे तारों की ज्योति फीकी पड़ती जा रही है, अब भी आकाश में कहीं कहीं दो एक तारे टिम टिमा रहे हैं। धीरे धीरे पूरब दिशा की ओर पहले सफेद फिर लाली फैलने लगी । हंसमुखी उषा के प्रेमाभिलाषी होकर सूरज भगवान् अपने सातों घोड़ों को कस कसा कर उसके पीछे चढ़ दौड़े, पर चंचला हाथ न आई । प्रणयी के प्रचंड तेज के भय से न जाने हिमालय की किस पर्वत की गुफा में जा छिपी । इधर सूरज भगवान ने चारो तरफ अपनी शोभा फैलानी शुरू की । सारे जड़ जगत को चैतन्य कर दिया, सेतों को जगा दिया कुरूप को स्वरूपवान कर दिया। रोशनी होते ही पक्षी सब सविता (सूरज) को धन्यवाद देते हुए नाना दिशा को उड़ चले । अस्तु सूरज की पहिली किरन के साथ ही बैजनाथजी ने शय्या त्याग किया और कुटिया के बाहर निकले सारे पेड़ पौधे सूरज की लाली से चमक दमक कर अजीब शोभा दिखा रहे थे। फूलों के छोटे छोटे पेड़ सबेरे की ठंडी हवा से सिर हिला हिला कर मानों बैजनाथ जी को अपनी तरफ बुला रहे थे। कहीं किसी घर की औरतें बड़े तड़के ही उठ कर घर में झाड़ बुहारु दे रहीं थीं कहीं कमर पर कलश धरे जल लेने जा रहीं थीं या कहीं रसोई का लभा लगा रही थीं । लड़के सब कोई बगल में स्लेट या बस्ता दाबे पाठशाला को जा रहे थे, या मैदान में खेल रहे थे । किसान सब कन्धे पर हल लिये आगे बैलों को हांकते हुए खेत की तरफ जा रहे थे । बैजनाथ जी ने भी आज अपनी जमीन देखने की इच्छा से उधर ही कदम उठाया । ठंडी छाया की पग-

डंडी पर कुछ दूर चल कर बैजनाथ एक किसान की कुटिया के सामने आ खड़े हुए, इस किसान का नाम रामखिलावन था।

रामखिलावन के घर के सामने मिट्टी की एक ऊंची दीवार थी, उसी के पास धान वगैरे कूटने की ढेंकी पड़ी थी और उसके बगल में एक झोपड़ी थी जिसमें तीन चार गाय बैल बन्धे थे। आंगन में चुल्हा था, पास ही फूस की छावनी की एक चार हाथ लंबी कुटिया थी, बरसात के दिनों में इसी में रसोई वगैर: होती थी, नहीं उसी खुले आंगन में हुआ करती थी। इस आंगन के बाद एक चौकोन कुटिया थी, यही रमाखिलावन के सोने बैठने का घर था। इस कुटिया के पिछवाड़े एक छोटा सा गड्ढा था इसमें गोबर इकट्ठा करके रखा जाता था, खेती के वखत खाद के काम आवता था। इस गड्ढे के एक तरफ एक मैली सी पोखरी थी, हमें लिखते लज्जा आती है कि आजकल के म्युनिसपल कायदे और ग्रामिण स्कूलों के रहते हुए भी खिलावनजी की गृहणी इसी मयली पोखरी में बासन बर्तन तो मांजती ही, पर नहाना धोना और कपड़ा कचारना भी इसी में करती थीं और अपने स्वामी जी के पीने और रसोई करने का पानी भी यहीं से ले जाती थीं।

बैजनाथ जी ने कुटिया के बाहर से रामखिलावन को आवाज दी। खिलवान की नींद खुल चुकी थी, पर बिस्तरे से उठने का अभी उद्योग पर्व हो रहा था, इधर उधर करवटें बदलता, दो एक उबासी लेता और बीच बीच में बगल ही में सोई हुई स्त्री को "अभी मुंझौसी उठी नहीं, अभी तक मेहरारू की नींद नहीं खुली" इत्यादि मीठे बचन सुना रहा था। इसी बीच में खिलवान ने बैजनाथ की आवाज सुनी।

"यह आवाज तो शायद बनिए की आवाज सी मालुम पड़ती है"। इसलिये चालाक खिलावन जल्दी उठा, नहीं। फिर आवाज, दोबारा तीबारा आवाज आई अब क्या करें बिचारे को कुछ न कुछ उपाय करना पड़ा। किसी विपद आफत के वखत खिलावनजी का आसरा एक मात्र उनकी माहाभाग्य गृहणी ही जी थीं।

अतएव जरा खुशामद के सुर से उसने स्त्री से कहा। "ऐ ऐ, जरा दरवाजा खोल के झांक के देख तो कौन आया है। अगर रामदास बनिया हो तो कह दिजो कि घर में हैं नहीं, खिलावन जी की स्त्री जी मुंझौसी, इत्यादि प्रिय वचन सुन कर अब तक चुप थीं, अब मौका मिला। पति की बात सुन कर धीरे धीरे करवट बदली और एक दो दफे उबासी लेकर पति की तरफ पीठ करके फिर बेपर वाही से टांग फैला कर सो रहीं। खिलावन ने देखा कि यह तो अच्छी आफत आई. एका एक बाहर भी नहीं जा सकता, क्या करें, दो एक दफे श्रीमती जी को बुलाया, कोई जवाब नहीं। एक आध दफे टाना टानी की, सो मिनकी तक नहीं, दो एक धक्के भी दिए तब भी कुछ फल न निकला। सारे यत्न निष्फल हुए, सभी हथियार खाली गए तब खिलावन ने खाली हाथ उठ कर गुस्से में भरे हुए बहादुर की तरह जूझने को ठानी और कहा "इतना दिन चढ़ आया अभी तक मेहररुवा उठती नहीं, इतना बुलाया चलाया, तब भी हरामजादी जरा मिनकती तक नहीं, अब मजा चखाता हूं, दो घूंसा देके नींद खुलाता हूं"।

खिलावन की श्रीमती जी ने देखा कि अब चुप्पी साधने से काम नहीं चलेगा, अब बिना मुंह खोले सिर पर आफत आवगी, इसलिये वह भी अबको दफा बिस्तरे पर उठ बैठीं और बोलीं। "क्या हुआ क्या है? लड़के हो लड़के उठ के बाप मा क्यों बखान रहे हो? क्या नशा पिये हो? देखो न मनबेहुवा मरता भी नहीं"। चन्द्रमुखी इसी प्रकार से अपने अचल सुहाग की कामना कर फिर पीठ मोड़ कर सो रही।

लाल लाल आंखे और पत्नी जी की झाड़ सुन कर खिलावन जी की बहादुरी हवा होगई, पर एका एकी कायर की तरह उसने रण भूमि छोड़ी नहीं।

खिलावन। अरे, फिर जो सो गई?

स्त्री। सोऊं नहीं!

खिलावन। घर का काम काज नहीं करना है?

स्त्री। नहीं करना है।

खिलावन। पानी नहीं लावेगी?

स्त्री। नहीं लाऊंगी।

खिलावन। रसोंई नहीं चढ़ावेगी?

स्त्री। नहीं चढ़ाऊंगी।

खिलावन। फिर जो सो गई?

स्त्री। सोऊं नहीं!

खिलावन। तब घर गृहस्थी कौन करेगा?

स्त्री। मैं क्या जानू मै मुंह झौंसी, मै हरामजादी, मेरा बाप हराम-जादा, मेरा दादा हरामजादा, मैं घर गृहस्थी करके क्या करूंगी, और कोई अच्छी सी देखके लेआओ!

खिलावन। नहीं, नहीं, क्या गुस्से होगई?

स्त्री। "गुस्सा काहे का है"? इतना कह कर गृहणी जी फिर पीठ मोड़ कर सो रहीं।

खिलावन विचारा इस युद्ध में हार गया, फिर क्या करे अब इस ने चन्द्रवदनी श्रीमतीजी के हाथ पैर जोड़ना खुशामद करना शुरू किया, अन्त को बहुत कुछ हाथ पैर जोड़ने से श्रीमतीजी का गुस्सा कुछ ठंडा हुआ और वह बिस्तरे से उठीं। अपनी जीत पर मनो मन मुसकाती और ऊपर से गुस्से का मुंह बनाए हुए पति से बोली। "बोलो अब क्या करना होगा। भला ऐसे आदमी की गृहस्ती किससे होगी? बिना गाली गलौज के सबेरा ही नहीं होता"।

खिलवान। गाली कब दिया, खाली एक बेर "मुंझौंसी" कहके प्यार किया था, बस यही तो। क्या यह भी न करें?

स्त्री। नही तुमने भला कुछ कहा है। मुझे ऐसा लाड़ प्यार नहीं चाहिये। कहो क्या करना है?

खिलावन। कहते हैं, कि जरा दरवाजे से झांक कर देख तो कौन हौरा मचाए हुए है, रामदास बनीया ही तो कह दीजो, मैं घर में नही हुं।

तब चंद्रबदनी हिलती डुलती शय्या से उठी। मुंह खासा काली हंडीया के पेंदे सा था, वैसाही चौड़ा फैला हुआ चमकता, दमकता बदन भी खूब गोल मोल मोटा ताजा मानों पृथ्वी का पिंड हो— दोनों जमीन पर अगर पैर के छाप पड़ते तो जल्दी मिटते काहे को थे। भुजा को देख के खिलावन को डर लगता था कि कहीं किसी रोज ऐसी रमणी रत्न के प्रिय आलिंगन से दम घुट कर उसकी अपमृत्यू न हो जाय, लंबाइ में दुल्हा बड़ा था कि दुलहिन देखने वालों को अब तक इसका शक ही बना हुआ था।

माननी श्रीमती जी ने जरा सा दरवाजा खोल के कहा "कौन है, हो"।

बैजनाथ। हम आए हैं, खिलावन घर में है।

मालिक को देख के खिलावन की स्त्री ने कुछ शरमिन्दे और उतावले हो कर घुंघट काढ़ लिया, और जल्दी से बाहर अंगन में महाराज जी के बैठने के लिए एक चौकी ला रखी और भीतर खिलावन को बुलाने चली गइ। तब खिलावन भी निडर होकर आंख मलता हुआ बाहर आया और मालिक को धरती पर झुक के दंडवत किया और बोला। "जी महाराज हम लोग नींद में थे, आप को बहोत देर तक खड़े रहना पड़ा"।

बैजनाथ। खैर जो हुआ सो हुआ, अब चलो खेत पर जाना है, आज खेत देखेंगे। कहां तुमारे मजूरे सब कहां हैं?

खिलावन। जी महाराज मजूरों को सब ठीक कर लिया है, चलिए अभीही चलता हूं। आप बहुत सा रस्ता चल के आए हैं। थोड़ा सा दूध पीजिएगा।

बैजनाथ। कोइ जरूत नहीं है।

खिलावन। "नही नही थोड़ा सा पी लीजिए, मेरे घर की गय्या का दूध थोड़ा सा तो पीलीजिए, यह कह कर खिलावन गय्या दुहने गया और उसकी स्त्री एक पथरी ले आइ। इसी पथरी में दूध लाकर खिलावन की स्त्री ने मालिक के सामने रख दिया। बैजनाथ ने भी किसान के भक्ति भाव से दिए हुए

दूध को पान कर लिया। खिलावन ने भी मजूरों को हांका हांकी करके इकट्ठा कर लिया और दो हल और चार बैलों को लेके तय्यार होगया। सब लोग खेत की तरफ चले। रस्ते में और और बातें होते होते खिलावन बोला। "महाराज जी आप इतना दुःख क्यों उठा रहे हैं। आपकी दोनों जमीन पर मैं हल अच्छी तरह फिरा चुका हूं, एक बार फिर फिरा दूंगा। आज सब ठीक होजायगा, फिर कल धान रोप दूंगा। आप नाहक इतना तकलीफ कर रहे हैं?

बैजनाथ। नहीं, बहुत दिन से हमने अपनी जमीन देखी नहीं है, तुम लोग क्या करते हो, नहीं करते हो एक दफे देख लेना अच्छा है, इस लिए आज इच्छा हुई कि एक दफे जा के देख आवें।

खिलावन। देखिए न, आपकी चीज है, जब खुशी हो देखिए। जमीन अच्छी है, धान अच्छा होता है, महाराज जी आप लोग भले मानुष ठहरे, नौकर रख के खेती करवाना पड़ता है, इसीसे मालूम पड़े हैं, कि आप को कुछ ज्यादा नफा नहीं होता।

बैजनाथ। हां, बचत तो साधारण ही है। तुम लोगों, मजूरों को दे दिला के कुछ ज्यादे नहीं बचता। गए वर्ष शायद दो हाट सौ मन धान हुआ था पर तुम लोगों को और बीज का दाम जमीदार का खजाना वगैरे देके सौ रुपए से ज्यादे हाथ नहीं आए।

खिलावन। जी महाराजा आपने एक दफे कहा था कि जमीन बंटवारे में देंगे सो अब क्या मरजी है? अगर देना हो तो मुझेही दीजिएगा। मैं आप के यहां का पुराना नौकर हूं, बड़े महाराज जी के वखत से इसी जमीन को जोतता बोता हूं। आप को कुछ भी तकलीफ उठानी नहीं पड़ेगी। मैं अपने खर्च से जोताई बोआई करूंगा, हल बैल सब मेरे है ही है, साल आखरी में धान वजन करके सगड़ पर लदवा के आधा धान आपके घर पहौंचाए आऊंगा।

बैजनाथ। अच्छा बतला तो सही तुझे बंटवारा लेने की ऐसी लालसा क्यों है ?

खिलावन। महाराज जी आप तो जानते ही हैं। मेरी भी एक छोटी सी जमीन आपके जमीन के पास है, फकत आठ दस बिस्वा है, उससे पेट तो भरता नहीं आप लोगों की सेवा टहल मेहनत मजूरी करके जो कुछ मिलता है उससे गुजारा करतें हैं, पर हां अगर आपकी जमीन बट वारे में मिल जाय तो दस आदमी से कहने लायक भी हूंगा कि "इतनी जमीन जोतता हूं", और जुताइ बुआइ में आपका जितना खर्च हो जाता है, हम लोग मजूरे ठहरे हमारा उतना खर्च नहीं पड़ेगा दो पैसा मिल जायगा, लड़के बाले खा के जीयंगे।

बैजनाथ। खैर जो होगा पीछे देखा जायगा। इस वक्त तो हमरी जमीन को दे, फिर जो करना होगा पीछे करेंगे।

वैशाख महीने में दो एक दफे पानी बरस गया है। सभी खेतों में जुताइ बुआइ हो रही है। सवेरे की ठंडी ठंडी हवा में किसान सब मन की मौज से गाते हुए या बैलों को नाना प्रकार की रीस्ते-दारी सूचक शब्द से सम्बोधन करते हुए खेत जोत रहे हैं। खेत पर खेत, चारों तरफ जहां निगाह दौड़ाइए खेतों का अन्त नहीं मिलता, इस तरफ उपजाऊ जमीन की कमी नहीं है, और यही यहां के निवासियों का यथा सर्व्वस्व है। न जाने कितने खेतों की जुताइ बोआई देखते, खिलावन से बातचीत करते हुए बैजनाथ अपनी जमीन के तरफ चले जा रहे थे, पर आज भी वह अपनी जमीन न देख सके। रास्ते ही में अचानक उनके श्वशुर जी रमानाथ मिल गए रमानाथ किसी काम से पहले दिन शाम को कहीं किसी गांव में गए थे रात हो जाने के कारण घर नहीं आ सके, सोही आज तड़केही घर की तरफ आ रहे थे। बैजनाथ ने उन्हे देखते ही प्रणाम किया, वह भी आशीर्वाद देकर बोले। "क्यों बेटा, यह मजूरे के संग कहां जा रहे हो? चलो घर चलो। अच्छे तो हो? हम रोज सोचते है कि एक दिन तुझे बुला कर खिलावें पिलावें, पर क्या करें

बांकीपुर से यहां आके तबसे तरह तरह के झंझट में फंसे हुए हैं, शरीर भी कुछ ढीला है, लड़को को बीसों दफे कहें है कि जाके तुमें न्योता दे आवें, पर वह घर से बाहर निकलतेही नहीं और जो हो तुम किसी रोज जरूर आके खा पो जाना"। बैजनाथ श्वशुर साहब के साथ लौट पड़े; और कहा। "हां, हां, जरूर आउंगा, मैंने भी सोचा था कि आज या कल जरूर आप के दर्शन करूंगा, कुछ काम भी है। अगर आप को फुरसत हो तो कहिए आजही शाम को आउ"।

रमानाथ। तुम तो घर के लड़के ठहरे, फुरसत, बे फुरसत कैसा, जब आओगे तभी मिलेंगे। तारा बेटी सुसरार से आई है उसने कई दफे कहा कि बाबू जी "जीजा जी को नेवता भेजो न" और घर में से कै दफे कहिन कि बैजनाथ को एक दफे बुलाओ। तो जरूर आना, आज शाम ही को आना, कुछ जलपान भी करना।

इसी तरह बात चीत करते हुए दोनों जने गांव में दाखिल हुए।

॥ पांचवा परिच्छेद ॥

॥ बड़े आदमीयों के चुटकुले ॥

शाम को बैजनाथ रामनाथ जी के यहां गए। घर के बाहर गायों के रहने का एक दालान और कइ एक धान रखने का गोलंबर भंडार था। एक देवी पूजा का चंडी मंडप और उसके सामने नाच तमासे के लिए फूस की छावनी का एक बड़ा सा आठ पहला बंगला था कुआर महीने में अमीन साहब के यहां बड़े धूम धाम से नवरात्री भर दुर्गा पूजा होती थीं, नाच तमाशा, रास लीला, नाटक सबो कुछ होता था। आस पास के गांव से हजारों लोग देखने आते थे। हर साल अमीन साहब देवी पूजे के वखत घर आते हैं, पर इस दफे किसी खास जरूरत से बैशाख महीने ही में एक महीने की छुट्टी लेके आए हैं।

करीब दो साल के हुआ, अमीन साहब ने बैठने उठने के लिये बाहर एक पक्का बैठखाना बनवाया है, और घर के बगलही में कुछ ईंटे भट्टे से पके हुए पड़े थे, मालकिनी जी की मनसा थी, कि

सोने का कमरा भी पक्का हो जाय । उसी बैठके में एक बड़ी सी मोटी चौकी पड़ी हुई है, जिस पर दरी और चादर बिछी है। उस पर एक तकिए के सहारे बैठे हुए पंडित रमानाथ जी गुड़ गुड़े में तमाकू पी रहे हैं और मुहल्ले के पांच चार जने बैठे हुए इधर उधर की गप्प शप्प हांक रहे हैं ।

बैजनाथ के आते ही, रमानाथ ने उन्हें खातरी से बैठाया और दो चार शिष्टाचार की बातें कर के एक लड़के के साथ घर के भीतर भेज दिया । जनाने अन्दर का मकान चारों तरफ छाड़ दिवारी से घिरा हुआ, सामने लंबा चौड़ा आंगन और ऊंचे चबूतरे पर फूस की छावनी का बड़ा उम्दा एक अठपहला सोने उठने का बंगला और इस बंगले के अगल बगल वैसा ही ऊंचे चबूतरे पर फूस की छावनी के लंबे लंबे दो तीन दालान थे। घर सब अच्छी तरह लिपा पुता, झाड़ू बुहारु दिया हुआ साफ सुथरा था और एक तरफ कोने में रसोंई घर था। घर के पीछे एक बड़ासा तालाब, उसके चारों तरफ बगीचा लगा हुआ जिसमें गुलाब जूही बेला इत्यादि पुष्पों के पौधों के अलावे आम, कटहर, ताड़, सुपारी, नारीयल के भी कई एक पेड़ थे ।

बैजनाथजी ने घर में पैर रखते ही सासुजी को झुक कर प्रणाम किया । उन्होंने भी असीस देकर घरके भीतर ले जाके बैठाया । मालकिनी जी की उम्र चालीस से ज्यादे हो चुकी है। बदन सुडौल गोल गाल, गोरा गोरा और कद कुछ नाटे होने के सबब से उम्र पैंतिस से ज्यादे नहीं मालुम पड़ती । गोल गाल मोटे ताजे दोनों भुजाओं पर सोने के मोटे मोटे अनन्त और जोशन से मालकिनी जी का बड़ा आदमीपन जाहिर हो रहा है। हाथ में सोने के ठोस कड़े और सोने ही की चुड़ीयां पड़ी हुई हैं। इनके ठोस कड़े अनन्त जोशन, गज गमन ऐसी ही ठोस चाल, कुछ कुछ हंसता और मुस्करता हुआ चेहरा देख के और कुछ कुछ गौरव और दम्भ पूर्ण बातें सुन कर यही मालुम पड़ता है कि "हां किसी अमीर के घर की मालकिनी हैं सही" । इतने पर भी रमानाथ की

गृहणीजो छोटी आदमी नहीं थीं, मन की सादी और सीधी थीं। यद्यपि उनकी बातों से कुछ कुछ घमण्ड टपकता था पर बातें सब बड़ी मीठी और हास्य पूर्ण होती थीं । यदि कोई उनकी तारीफ करता या इनके बड़े आदमीयत का बखान करता तो बड़ी खुश होती थीं, पर दूसरे की निन्दा या किसी की बुराई करने की आदत इनमें नहीं थी ।

सासू । क्यों जी, दो कदम पर घर है, फिर भी कभी झांकी नहीं मारते । बुढ़िया है कि मर गई, जरा खबर तक नहीं लेते ?

बैजनाथ । नहीं जी ऐसा नहीं, आप लोगों की खबर तो रोज ही मिल जाती है, पर बात यह है कि हमलोग गरीब आदमी ठहरे, सारा दिन काम काज में ही निकल जाता है ।

सासू । हां, क्यों नहीं अब तो यह कहो ही गे ? इतनी मेहनत से बसन्ती को पाला पोसा, बड़ी किया, ब्याह कर लाया सो क्या वह भी कभी नहीं पूछती की ताई कैसी है ?

बैजनाथ । वह तो सदा ही आपको पूछती रहती है, और जब से तारा आई है तबसे यहां आने २ को भी कर रही है, पर क्या करे गृहस्थी का सारा धन्धा उसी को करना पड़े है और लड़के की तबियत भी कुछ दिक है,इसलिये आ नहीं सकती,तो क्या हुआ एक दिन तारा को हमारे घर भेज दिजिए न, अपनी बहिन से भी मिल आवेगी और दोनों बच्चों को भी देखनी आवेगी ।

सासू । नहीं बेटा, तारा का जिनके यहां ब्याह हुआ है उनका हुकुम नहीं है कि बहू दूसरे किसी के यहां जाए आवे । वह बहोत बड़े आदमी हैं,रघुनाथपुरके पुस्तैनी रहीस हैं,वही जो पहले रघुनाथजी पटने के नवाब के दीवान थे उन्हीं का घराना है, बड़े भारी धनी हैं, ऐसा धनी इस तरफ कोई है नहीं ।

बैजनाथ । हां, सो तो मैं जानता हूं ।

सासु । हां जानते क्यों नहीं होगे, उनका घर भला कौन नहीं जानता ? क्रयाकांड, दान धर्म्म समझे कि नहीं, जैसा धन है वैसाहि नाम है । यही देखो न अभी उन्हीं दिनों उनके घर की

एक लड़की बांकीपुर में ब्याही, जहां वह नौकरी करें हैं, तुमसे सच कहू हूं, ब्याह में दस हजार रुपया खर्च हुआ । उनको क्यां कुछ रुपए को परवाह है । हर साल बसन्त पंचमी होली पर खूब नाच जलसा खिलाना पिलाना होय है और दान धर्म्म की भी कमी नहीं है, समझे कि नहीं, रघुनाथपुर में ऐसा कोई ब्राह्मण गरीब कंगला नहीं कह सकता कि मुझे फलाने मौके पर बिदाई नहीं मिली ।

बैजनाथ । हां यह सब मुझे मालुम है ।

साहु । सो तारा को क्या जलदी भेजते थे, बस वही दसहरे पर एक दफे भेजें हैं, फिर नहीं भेजते । इस दफे यह छुट्टी ले के घर आने लगे तो न जाने कितने आदमियों को भेज भेज के आप कितनी दफे दौड़ धूप करके तब लड़की को बिदा करवाया तिस पर भी कह दिया है कि पन्द्रह दिन से एक दिन भी बेसी नहीं रहने पावेगी, सो क्या करें यही पन्द्रह दिन होते ही भेज दूंगी । एक आदमी को आरे भेजा है, वह वहां से मिठाई आम अनारस यह सब चीज लेने गया है, लड़की के संग भेजना होगा । बड़े आदमी से नाता किया है तो कुछ गांठ से भी लगाना पड़ेहीगा ।

बैजनाथ । यां यह तो है ही है, अच्छा तो हम इसी बीच में अपने घर में से भेज देंगे । लड़कों को ले के चली आवेगी, तारा से मिलती जायगी ।

साहु । क्यों नहीं,जरूर भेज दीजो; बसन्ती तो मेरे अपने पेट की सी लड़की है वह भला नहीं आवेगी ? जरूर भेजियो और बेटा तुम भी कभी कभी हम लोगों का खबर लेलिया करो ।

बैजनाथ । अजी, यह भी क्या आप को कहना होगा । तारा और कै दिन रहेगी ?

साहु । अब और रहेगी किस तरह । आज तेरहवां दिन बीतही गया । कल आदमी आरे से सब चीज लेके आवेगा परसों लड़की बिदा हो जायगी । लड़की को दुलार भेजुं हूं साथ में कुछ

भी तो देना चाहिए नहीं तो हंसी होगी। बड़े आदमियों से नाता किया है, बिना कुछ दिए लिए क्या अच्छा लगे है। और भी देखो न, सामने अक्षय तीज खड़ी है। तब भी कुछ भेजना ही होगा। बड़ा रुपया खर्च हो रहा है।

बैजनाथ। हां, क्यों नहीं।

सास। क्या करें, जैसे आदमियों से नाता किया है, लेन देन भी वैसाही करना पड़े हैं, दस आदमीयों में अपना नाम इज्जत भी है, समधी भी जानते हैं कि हम लोग घराने वाले हैं, फिर क्या करें बिना कुछ दिए लिए भी तो काम नहीं चलता, अच्छा तुमरे दोनो बच्चे तो अच्छे हैं।

बैजनाथ। नहीं आज पांच छः दिन से लड़के की तबियत कुछ दिक है। रात को जरी हरारत आजाती है। कल आरे से एक दवाई लाके खिलाई है, आज कुछ अच्छा है।

सास। अच्छा किया बेटा, बसन्ती भी दुबली पतली नाजुक थी, बीच बीच में बुखार हो आता था। आहा, अभी उस दिन की बच्ची है, ऐसी सीधी शान्त लड़की देखने में नहीं आई, कभी मुंह खोल के कोई चीज नहीं मांगी। मैं जब तक उसे खाने नहीं बुलाती तब तक आप कभी नहीं कहती कि "ताई जी भूख लगी है"। ताईजी तो मानों उसकी जी जान थी। जब से उसके बाप मर गए, तब से उसके मा की तबियत तो ठिकाने थी हो, इस लिए जब मैं ही बसन्ती और चंपा को खिलाती तो खाती, पहीनाती तो पहिनती थी। जैसी मेरी तारा तैसी बसन्ती, आहा भगवान करें फले फूलें, एक दफे जरूर भेज देना।

बैजनाथ। हां हां जरूर भेज दुंगा।

सास। देखो, गए वर्ष बसन्ती देवी पूजा के वखत आई और उसी दिन चली गई, अब की तो ऐसा होगा नहीं। घर की लड़की ठहरी, त्योहार के दिन पांच सात दिन रह कर घर का काम धन्धा करेगी। काम धन्धा तो कुछ ऐसा है नहीं, देखतेही हैं कि

हम लोगों के यहां दर्शन परसन के लिए तीन चार कोस तक के गांव के सभी तरह के आदमी आते हैं। तुम लोग घर के लड़के होके बाहर ही बाहर आके चले जाते हो घर का काम धन्धा भला क्या जानो। तीन बजे रात से कड़ाई चढ़े है और शाम तीन बजे तक चुल्हा बुझने की नौबत नहीं आती। तिस पर भी तो पूरा नहीं पड़ता। कितने आदमियों को खिलाऊं पिलाऊं, जी जिच हो जाए है।

बैजनाथ। भला यह क्या मैंने देखा नहीं है? हर सालही देखता हूं। आप के घर के देवी पूजे की धूमधाम का हाल कौन नहीं जानता।

बाबू। क्या करें बेटा, बाप दादा के वखत से चला आवे है वह भी बिचारे क्या करें, करना ही पड़े है अगर रुपया पैसा न होता तो दूसरी बात थी। देखो न, गांव में क्या सबके यहां देवी पूजा होए है. सो तो नहीं, सब को लोग तो कुछ कहते सुनते नहीं, पर क्या करें बाप दादा के वखत से चला आया है, बाजपेई जी के घराने का जरा नाम भी है और भगवान की दया से यह दो पैसा कमाते भी हैं, इसी लिए किए बिना सरता नहीं, क्या करें।

बैजनाथ। सो तो है ही है।

बैजनाथ जी, न जाने कितनी देर तक अपनी बाबूजी की जुबानी बाजपेई जी के घराने का इतिहास, देवी पूजे का धूम धामका इतिहास, रघुनाथपुर के पुस्तैनी धन का गौरव, लड़की की बड़ाई इत्यादि का लेकचर सुनते रहे। यहां तक की रात ज्यादे हो गई और दिन भर की मेहनत से थके हुए बैजनाथ की पलकें झुकने लगी। बाबूजी के लेकचर का मर्म भी कहीं कहीं उनकी समझ में नहीं आने लगा, फकत बाबूजी का मन रखने के लिये हां, क्यों नहीं, ऐसाही तो है, इस प्रकार के शब्द उच्चारण करते और ऊंघते जाते थे, पर यह क्या, सहसा झमाझम पायजेब की ध्वनि कहां से हुई। हां, रघुनाथपुर के पुस्तैनी रईस

के घराने की बहू नाना प्रकार के रत्नाभरणों से भूषित सोलह वर्ष की रूपाभिमाननी तारादेवी ने घर में पैर रखा, तारा का रंग मानो दूध मलता घुला हुआ था, तिस पर से रत्न जटित आभूषणों की शोभा अपार थी, देखिए सिर पर जड़ाऊ बंदी बेने की क्या शोभा है, उसमें से हीरे पन्ने की ज्योति मानों बिजली सी चमक रही है। गले में हीरे का चन्द्रहार, मोती जड़ाऊ का टिकड़े दार सतलड़ा, हाथ में जड़ाऊ कड़े, छन्द, पैांची, बांह में जड़ाउ जोशन बाजू और अनन्त, कमर में जड़ाउ टिकड़े की सोने की करधनी, कहां तक बखान करूं मुझे तो सब गहनों के नाम भी नहीं आते तात्पर्य्य यह कि तारा रानी सर्व्वांग रत्नाभरणों से विभूषित थीं। घर में पैर रखते ही बैजनाथ को देख के तारा रानी बोलीं "अहा! बड़े भाग, आज न जाने सवेरे किसका मुंह देख के उठी थी"।

बैजनाथ। मेरे भाग कहो, बड़े भाग्यों से तब तुमरे ऐसे आदमियों से एका एकी मुलाकात होती है।

तारा। हां जी हां, खाली बातें बनाओ हो, तेरह दिन आये होगए, एक दफे मिलने भी नहीं आया गया। अच्छा, अच्छे तो हो? बसन्ती सेबे अच्छी है?

बैजनाथ। हां वह अच्छी है, तुम तो अच्छी हो?

तारा। हां, जैसा रखे हो, मुंह खोल के पूछो यही बहोत है, पर आज यहां हम लोगों के यहां क्यों कर पधारे? बसन्ती सेबे ने छोड़ा क्योंकर, इतनी रात तक यहां बैठे हुए हो, गुस्से तो नहीं होगी।

बैजनाथ। अरे भाई तुम्हारी सेबे तो आप आने आने कर रही है, भला हमें नहीं आने देगी? कै दिन से कह रही है कि तारा से जाके एक दफे मिल आवें।

तारा। कल जरूर भेज देना। भूलना मत।

बैजनाथ। हां जरूर भेज देंगे, वह भी तुमसे मिलने के लिये उकता रही है, तुम जब सुसरार में रहती हो, तो सदा ही तुम्हारी मां से तुम्हारी खबर लेती रहती है।

तारा। वो तो जानु हूं। बचन्ती बेबे लड़कपन से ही मुझे बड़ा चाहे है। लड़काई में हम दोनों एक संग खेलतीं, मुझे बिना देखें उसे घड़ी भर चैन नहीं पड़ता था। लड़काई में समझती थी कि सदा ऐसे ही रहेंगे, रोज मिलें जुलेंगे, पर यह लड़काई की क्या सब मनसा पूरी होए हैं? मन की मन ही में रह जाए है। अच्छा तो कल बहू को भी भेज देना।

बैजनाथ। जरूर, जरूर।

तारा रानी बड़ी खुश हुई। पाठकों ने भी लक्ष किया होगा कि पिता की धन लालसा, माता का धन गौरव, सुसराल की अमीरी चाल से तारा के हृदयसे लड़काई का प्रेम, लड़काई का स्नेह दूर नहीं हुआ है, यह अब तक लड़काई के सुहृदों को याद किया करती और स्नेह भी रखती थी। पहले तो दिवान जी के घराने की अपूर्व सुन्दरी रत्नाभरण भूषिता षोडश वर्षिया रुपाभिमाननी युवती को देख कर हमें कुछ डर लगा था—न जाने क्यों, यह सब देख के ही हमारा दिल सहम जाता है-पर नहीं इसके गुण को देख के कुछ जी में जी आया और यदि अमीरों में सर्व्वत्र यह गुण दिखाई दें तो बड़ा ही आनन्द हो। और बातों के बाद तारा बोली, "अच्छा अब उठो, कृपा करके पधारे हो तो जरा जलपान करते जाओ, थाली परोसी रक्खी है"।

तारा रानी झम झम करती हुई आगे चलीं और पीछे पीछे सिर नीचा किए बैजनाथजी गए। भोजन के कमरे में पैर रखते ही देखा कि गलीचे का एक बहुत उमदा आसन बिछा हुआ है, और एक चौकी पर जिसके दोनों तरफ मोमबत्ती के दो शमादान जल रहे हैं, चांदी के एक थाल में नाना प्रकार के व्यंजन परोसे हुए हैं। चांदी की कई कटोरियों में न जाने कितने प्रकार के रसे, अचार मुरब्बे होंगे। भोजन की सामग्री और ठाट देख कर बैजनाथ घबड़ा गए, मनोमन कहने लगे कि "भोजन के इन बर्तनों के मूल्य से मेरी साल भर की गृहस्थी चल जाय" पर जाहिरा बोले। "अरे, यह क्या? इतनी रात गए इतना थाल भर भोजन कौन

खाएगा। माफ करो, बस किंचित जलपान ही काफी है" पर तारा रानी भला यों काहे छोड़ने लगी थीं। बरजोरी बैजनाथ को आसन पर बैठाया और आप सामने बैठ कर बात चीत करने लगी। बैजनाथजी के भाग्य में ऐसा भोजन भला काहे को मिलता था, इसलिये वह भी कुछ प्रसन्न चित्त कुछ संकोच बस अपनी सुन्दरी साली से बात चीत करते हुए भोजन करने लगे। शमादान की धीमी रोशनी में तारा रानी के रत्नाभूषण चमक रहे थे, चेहरा दमक रहा था, आंखों से प्रफुल्लता और हंसी टपक रही थी, पर बैजनाथ को शायद बसन्ती के आंख तारा से ज्यादे सुन्दर जंचे, पर इस बारे में बैजनाथ जी तरफदारी करते हैं। इसलिए हम उनकी गवाही मंजूर नहीं करेंगे। सारा गांव कहता था कि बसन्ती काली लड़की है, तारा गोरी और खूब सूरत है और इसी खूबसूरती के कारण इसका बड़े घर विवाह हुआ है। दिवान साहब के लड़के ने प्रतिज्ञा की थी कि लड़की खूबसूरत न होगी तो ब्याह न करेंगे, तारा की खूबसूरती के कारण ही वह ऐसे घर ब्याही गई थी। अपने से बड़े, बड़े भारी धनवान से नाता करके रमानाथजी को बहोत कुछ लांछन सहना पड़ता, उनकी मालकिनी जी भी दिवान जी के घर की दाइयों का अवाजा तवाजा बरदाश्त करतीं, पर शायद बड़े आदमियों का जूता झाड़ू सब बरदाश्त हो जाता है, गरीब की एक बात भी नहीं सही जाती।

दिवान साहब के घराने से नाता करके रमानाथ जी की इज्जत अपने गांव में बहोत कुछ बढ़ गई। सब लोग उन्हें आगे से और भी ज्यादे मानने और डरने लगे। गांव में धीरे धीरे वह भी धनवान रईस हो चले अतएव जहां एक तरफ इतने फायदे हैं तो गाहे व गाहे छोट से कभी अमीरों के घर का दो एक मीठा जूता झाड़ू मिल भी गया तो क्या हर्ज है, कहावत है कि "दुधार गाय की लात भी बरदाश्त होती है"।

तारा रानी को वस्त्राभूषणों की कमी नहीं थी, रुपए पैसे का सब कुछ सुख था, पर और तरह का सुख था कि नहीं यह हम

अभी नहीं कह सकते जब तक कि दिवान साहब के युवक पुत्र से हमारी दो एक दफे भेंट मुलाकात न हो ले, पर सुनते हैं कि शायद उम्र के साथ साथ उक्त रईस साहब की रूप लालसा भी कुछ बढ़ती जाती थी और विजय नारायणजी इधर उधर की हवा भी खाने लगे थे। जाने दीजिये बड़े आदमियों की बात से हमें क्या काम। हम तो गरीबों की कहानी लिखने बैठे हैं। सुसरार में तारा को खाने पीने की किसी बात की कमी नहीं थी पर गरीब के घर की लड़की होने के कारण कभी कभी ननदों के ताने या टहलनियों के अवाजे तवाजे सुनने पड़ते थे, पर शायद शरीर भरा गहना पहिरने से बहोत सा दुःख सहा जा सकता है, शायद मोती के सतलड़े और जड़ाऊ टिकड़े की चमक से मन का बहोत सा दुःख दूर हो जाता है।

पर भाइ हम तो इस शास्त्र के ऐसे पंडित नहीं है। सोना चांदी कभी परखा नहीं, जड़ाउ जवाहिर भी बहोत देखने मे नही आया, उनकी कीमत भी नहीं जानते। हीरे की चमक दमक से मन की मलीनता और अंधेरा कहां तक दूर हो सकता है, यह तो ज्ञानी मानी धनवान और धनवती जी ही जाने हम तो केवल इतना ही कह सकते हैं कि बहोत देर तक तारा रानी से बात चीत करते करते और उसके मुंह की तरफ बार बार देखते देखते बैजनाथ जी के मनमे कुछ संदेह हुआ। उने मालुम पड़ा कि हीरे जड़ाउ से भूषित ललाट पर मानो अभी से चिन्ता की एक आध रेखा की छाया पड़ गइ है हंसी से खिले हुए आंखो के कोने मे भी शायद कभी कभी चिन्ता की झलक मार जाती है। क्या असलीयत मे यह चिन्ता की छाया है या शमादान की टिमटिमाती रोशनी की छाया है या इस युवती के सौन्दर्य्य पूर्ण ललाट पर भावी जीवन ने अपनी छाया डाल रखी है।

॥ छटा परिच्छेद ॥

काम काज की बातें ।

भोजन समाप्त करके बैजनाथ जी बाहर बैठक खाने में आए। देखा कि रमानाथ अकेले बैठे हुए नाक पर चशमा चढ़ाए दिए को टिमटिमाती हुई रोशनी में एक कागज उलट पुलट कर देख रहे हैं। यह कोई मासिक, साप्ताहिक या दैनिक समाचार पत्र नहीं है, एक पुराना दस्तावेज है। अमीन साहब उसी को ध्यान से पढ़ रहे थे। उमर पचास के करीब है, रंग कुछ सांवला, शरीर कुछ स्थूल, सिर के सामने के कुछ बाल पक गए हैं, चेहरे से धनी या रहीशी का कुछ भाव नहीं मालुम पड़ता। जो लोग रुपया कमा जाते हैं, उनके चेहरे से रहीसी नहीं टपकती, जो उनके बाद दौलत उड़ाते हैं उन्हीके चेहरे पर अमीरी झलकती है, अस्तु रमानाथ भी योहीं साधारण चतुर काम काजी आदमी से मालुम पड़ते थे, इन्होंने बैजनाथ के आते ही हाथ का कागज रख दिया और बोले। आओ बेटा आओ, बैठो। बैजनाथ जी भी सामने कुछ दूर पर बैठ गए।

इधर उधर की शिष्टाचार की बातें होने के बाद बैजनाथजी ने अब असल काम की बात छेड़ी। रमानाथ बिना कुछ हिले डुले धीरे धीरे उनकी बातों का जवाब देने लगे।

बैजनाथ। बहोत दिन पर आप घर आए हैं, आप से मिल के बात चीत करके तबियत बहोत खुश हुई, सो यदि आज्ञा दीजिए तो जो दो एक काम काज की बात है, उन्हें कह डालूं।

रमानाथ। हां, हां, क्यों नहीं कहो न, उसमें भला और आज्ञा क्या दूंगा, जो कहना हो कहो, मैं सब सुनता हूं।

बैजनाथ। हमारे श्वसुर साहब जो थोड़ी सी जमीन जुतवाते थे, उसी का जिकर कर रहा हूं।

रमानाथ। हां, कहो।

बैजनाथ। उस जमीन को हमारे श्वसुर साहब अपनी जिन्दगी भर जुतवाते रहे और बराबर उनी के कब्जे में भी रही। उनके

पहिले उनके पिता के कब्जे में थी, यह भी आपको मालूम ही है।

रमानाथ। मालूम क्यों नहीं। विश्वनाथ के पिता के पहले उनके पिता उस जमीन को जुतवाते थे, जो हमारे और विश्वनाथ दोनों के दादा होते थे। उस समय हम लोगों की उम्र बहोत कम थी, पर बातें सब याद हैं। दादाजी के मरने पर मेरे ही पिता सारी जमीन जुतवाते थे। यद्यपि विश्वनाथ के पिता बड़े थे; पर उन्हें काहरी काम काज में कुछ ऐसा दखल नहीं था, इसलिए हमारे ही पिता संयुक्त परिवार में सारी जमीन जुतवाते थे। फिर जब विश्वनाथ के पिता हमारे ताया अलग होगए तो पेट भरने के लिए हमारे पिता ने उन्हें कई एक बीघा जमीन जोतने को दे दिया था। विश्वनाथ भी अपने जीवन भर उसी जमीन को जुतवाता रहा, बस यही तो सारी बात है। जमीन सारी संयुक्त परिवार की है। यह सब बातें तुम भला क्या जानो, लड़कपन में तो तुम गांव में रहते नहीं थे, बांकीपुर या कलकत्ते में लिखते पढ़ते थे।

जमीन संयुक्त परिवार की है, बैजनाथ जी ने आज यह बात नई सुनी। उनके ताज्जुब का ठिकाना न रहा। रमानाथजी की यह नवीन तर्कना प्रणाली सुनके उन्हें कुछ हंसी भी आई, पर आज वह बहस करने तो आए नहीं थे, वह तो मामला आपुस में निपटाने आए थे, इसलिये हंसी रोक कर बोले, इसमें भला कौन सन्देह है कि पुराने समय की बात आप मुझसे ज्यादे जानते होंगे, मुझे केवल इतना ही कहना है कि मेरे ससुर साहब अपनी जिन्दगी भर जिस जमीन को अलग जुतवाते रहे उसमें से उनकी दोनों अनाथ कन्याएं कुछ उम्मीद कर सकती हैं या नहीं?

बैजनाथ। अहा! बिचारी बच्ची इसी उम्र में बिना मा बाप की होगई, सोचते हुए कलेजा फट जाता है, आहा! आज विश्वनाथ होता ऐसी सोने की पुतली लड़की ऐसे गुणवान दमाद के साथ गृहस्थी कर पाता तो आज इतना सोचनाक हो पाता, इतना खर्च करके फिर क्या उसको जोतने हुई जमीन

हमें संभालनी पड़ती ? क्या करें, भगवान की जैसी मरजी । विश्वनाथ तो चले गए । हमी को सब बोझा उठाना पड़ा; संयुक्त परिवार की जमीन का जो हिस्सा हमें जुतवाना पड़ता है उसमें कुछ ऐसा फायदा भी नहीं है, उसे अब तक संभाल रखने ही में आमदानी से ज्यादे खरच हो चुका है, पर क्या करें पुश्तैनी जमीन दूसरे के हाथ में चली जाय, जमींदार दूसरे को दे दे, यह भी तो आंख से देखा नहीं जाता ।

बैजनाथ । तब क्या ससुर साहब की जमीन से उनकी लड़कियां कुछ भी आशा नहीं कर सकतीं ?

रमानाथ । आशा और क्या करेंगी, भई देखो हम लोग उस जमाने के बुड्ढे आदमी और तुम लोग आज कल के कालिज में पढ़े हुए नौजवान लड़के ठहरे, तुम लोगों को सब बातें बिना खुलासा कहे क्या मतलब साफ होता है ? बसन्ती तो मेरे घर की लड़की ठहरी, जैसी मेरी तारा, तैसी बसन्ती, जब तक मेरे घर में एक मुट्ठी आटा है, तारा और बसन्ती दोनों बांट के खाएंगी, उसमें फिर जमीन का हिस्सा ही क्या और उम्मीद, उम्मेद ही क्या ।

बैजनाथ जी ने देखा कि चतुर रमानाथ से सकना कठिन है । इनके घुमाव फिराव की बातों का फेर अजीब है, बहोत देर तक उसे ठिकाने लाने की वृथा चेष्टा के बाद अन्त को बैजनाथ बोले । बाबूजी, अगर आप नाराज न हों और इजाजत देंतो एक बात और कहूं ।

रमानाथ । कहो कहो, इसमें नाराज होने की कौनसी बात है, तुम तो हमारे लड़के की तरह हैा, तुमसे भला नाराज होंगे ?

बैजनाथ । आप शायद जानते होंगे कि ससुर साहब जिस जमीन को अपनी जिन्दगी भर अलग जुतवाते रहे, वह जमीन शामिल मिलकीयत (इजमाली) में है, यह हम नहीं मानते ।

रामनाथ । तुम भला क्यों मनोगे । तुम लोग कालिज में पढ़े हो, अंगरेजी शिक्षा पाए हो, तुम भला संयुक्त परिवार में

रहना क्या जानो, सुनते ही हैं न कि आज कल के अंगरेजी पढ़े लिखे, भाई भाई, बाप बेटा एक साथ नहीं रह सकते, फिर वह इजमाली की बात क्या जानेंगे, पर भाइ हम लोग तो उस जमाने के बुड्ढे बुढ़े आदमी ठहरे, हम लोग इजमाली में रहनाही ज्यादे पसंद करते हैं। आहा! आज बिचारा विश्वनाथ जीता रहता तो वह जानता कि यह जमीन बाजपेई घराने की शामिल मिलकियत (इजमाली) में है या नहीं ?

बैजनाथ । खैर, चाहे जो हो यह तो आपको मालुम हो ही गया कि हम लोग इस जमीन को इजमाली नहीं मानते और इजमाली हो या न हो, शायद उस जायदाद के एक हिस्से की उम्मीद हम भी कर सकते हैं। हमारे ससुर साहब जिस जमीन को अलग जुतवाते थे, उस जमीन को अब यदि मैं अपनी स्त्री की तरफ से अलग जुतवाऊं तो क्या आपको कुछ उज्र है ?

रमानाथ कुछ भी नाराज न हुए, जरा सा मुसकरा कर कहने लगे। अरे राम राम। तुम पढ़े लिखे समझदार हो के ऐसी बात कहते हो? बाजपेई घराने की संयुक्त परिवार की जायदाद क्या अलग की जा सकती है। यदि यही होता तो उस जमीन की कीमत से दसगुना खरच करके उसे अपने हाथ में क्यों रखता। कायदे की बात कहो तो सुने भी, बेकायदे की बात भला क्योंकर सुनी जाय? "अरे भीखा एक चिलम तमाखू तो देजा", बड़ी रात गई, कल रात को अच्छी नींद नहीं आई, नींद के मारे पलकें भारी हो रही हैं।

बुड्ढे का यह फरेब देख कर बैजनाथ जी को कुछ क्रोध चढ़ आया, पर जब उन्होंने सोचा तो हकीकत में अपनीही बात असंगत मालुम पड़ी। जिस जमीन पर रमानाथ ऐसे चतुर काम काजी आदमी आज दस बरस से दखल जमाए हुए हैं, उसे उन्हें छोड़ देने को कहना असंगत नहीं तो क्या है? थोड़ी देर तक सोच बिचार कर बैजनाथ फिर बोले "अच्छा अगर आपके सोने का वक्त होगया हो तो जाइए, मैं भी आपको ज्यादे देर तक बैठा रखना नहीं चाहता,

पर हां एक और बात है, यदि आप कहें तो निवेदन करें।

रमानाथ। नहीं नहीं जाने की जल्दी मत करो, देखो कितने दिन बाद तुमसे मुलाकात हुई है, तुम्हें देख के कलेजा ठंडा हुआ, तुम्हें छोड़ने को जी नहीं चाहता पर हां, आज बड़ी गरमी है, इसीसे शरीर कुछ अलकसा रहा है। सो क्या अभी हम सोने नहीं जाते, अभी देरी है, क्या कहते थे, कहो न।

बैजनाथ। आप इस जमीन को छोड़ना नहीं चाहेंगे, यह तो हम लोगों को पहिले ही से मालुम था, पर क्या इस जमीन के बदले हम लोग कुछ उम्मीद कर सकते हैं? मेरी बिलकुल इच्छा नहीं है कि इसके लिये मामला मुकद्दमा किया जाय, जहां तक आपुस में निपट जाय वही अच्छा है। अगर लाचार होकर अदालत जाना ही पड़ा तो आप ही विचार देखिए कि वहां यह जायदाद शामिल मिलकीयत (इजमाली) साबित हो सकेगी या नहीं और इसका एक हिस्सा हमें मिल सकेगा या नहीं, यह सब खूब विचार देखिए, पर जहां तक आपुस में निपट जाय वही अच्छा है। अदालत तक जाने की मेरी बिलकुल इच्छा नहीं है।

रमानाथ जानते थे कि बैजनाथ जरा उग्र प्रकृति का आदमी है, क्या ताज्जुब कि चट से नालिश ठोंक दे और उन्हें यह भी पता था कि यह सलाह बात के लिये वकीलों के पास भी आना जाना कर रहा है। यह यदि मुकद्दमे का खरच चला सका तो नतीजा क्या होगा यह भी अमीन साहब से छिपा नहीं था, इसलिये आपुस में निपटाने की बात से वह भी मनोमन राजी थे। थोड़ासा रुपया देकर विश्वनाथ का हक्क एक दम से खरीद लेंगे। यह राय पहले भी उन्होंने जाहिर की थी, पर जो रुपया देना चाहते थे वह बहोत ही कम था। अस्तु अमीन साहब कहने लगे। देखो भाई अगर अदालत कचहरी जाना चाहो तो फिर हमें भी उसी रस्ते चलना पड़ेगा, मामले मुकद्दमा में बड़ा रुपया उड़ता है पर शायद अपनी जायदाद बचाने के लिये हम सब खरचा बरदास्त कर सकेंगे,

तुम सकोगे कि नहीं यह तुमहीं जानो और अगर यह सब बातें छोड़ के सच मुच ही आपुस में निपटाना चाहो, तो बसन्ती बेटी को हाथ उठा के कुछ दे देंगे इसमें भला मुझे क्या उज्र हो सकता है ? भाई हम लोग तो पढ़े लिखे नहीं है, मुरख आदमी हैं, तुम लोगों की तरह आइन कानून भी नहीं पढ़े पर हां बांकीपुर में अदालत की अमीनी करते करते मेरे भी बाल सफेद होगए हैं, मामला मुकद्दमा भी सैंकड़ों देखा सुना और आइन कानून भी कुछ कुछ समझते हैं । मामला लड़ कर कोई बाजपेई घराने के जायदाद का हिस्सा लेलेगा यह तो हम समझते हैं कि जरा टेढ़ी खीर है, अगर तुम्हारी मनशा हो तो कोशिश करके देख लो । पर हां अगर सच मुच ही यह सब कुबुद्धि छोड़ दो, अगर कालिज की अंग्रेजी शिक्षा ने तुम्हें अपने बड़ों से झगड़ना न सिखाया हो अगर बुड्ढे बुड्ढे लोगों पर थोड़ी बहोत श्रद्धा रख कर उनकी आज्ञानुसार चलना सीखे हो तो कायदे की बात कहो, उसमें मैं कभी भी उज्र करने का नहीं । देखो भाई, हम एक बात के आदमी हैं, बहोत हेर फेर हमें अच्छा लगे न हम करना जानें, हम एक ही बात पसंद करते हैं, सो अगर ३००) रुपए लेकर तुम इस जमीन का हक्क बिलकुल छोड़ दो तो हम राजी हैं । जानते ही हो कि हम मामूली तनखाह की नौकरी करते हैं । ३००) कमाने में सिर का पसीना पैर पर पड़ता है, रुपया बड़ी मुश्किल से आता है । पर क्या हुआ, बसन्ती अपने घर की लड़की है, उसे अपने हाथ से पाल पोस के बड़ा किया, व्याह करवाया, उसे रुपया देंगे यह और कौन सी भारी बात है ! हमी ने तो बसंती का व्याह करवाया था, न हो और एक गहना दिया सही । एक गहने में भी तो दो तीन सौ रुपया लग जाता ! सो देखो भई, अगर बुड्ढे की यह बात मंजूर हो तो कहो नहीं तो भई तुम लोग पढ़े लिखे होशियार हो जो अच्छा समझो करो ।

बैजनाथ । बाबूजी ३००) रुपया तो बहोत ही कम होता है । इस जमीन में साल में २००) के धान की पैदावार है ।

रमानाथ । उसमें से बीए का दाम, मजूरी, जमीदार का खजाना,

रोड सेस वगैरे देकर साल आखरी में क्या बचत है, वह भी हिसाब किया है।

बैजनाथ। हां, बचत तो थोड़ा ही है।

रमानाथ। इस जमीन को संभाल रखने में हमें कितना खर्च करना पड़ा है, यह भी जानते हो ?

बैजनाथ। जी, नहीं वो तो नहीं मालुम।

रमानाथ। फिर किस तरह कहते हो कि दाम कम है ? देखो भई मैं और इस बारे में ज्यादे जवाब सवाल नहीं किया चाहता। मैं एक बात का आदमी हूं, इससे ज्यादे नहीं दे सकूंगा। अगर ३०१) कहोगे तो भी देने का नहीं। जो मैंने कह दिया उसमें अगर राजी न हो तो जो सूझे करो।

बैजनाथ ने थोड़ी देर तक सोचा, इतने कम दाम में जमीन छोड़नी पड़ती है, यह जान कर मन में बड़ा दुःख हुआ पर फौरन ही बसन्ती को नेक सलाह का ख्याल आया, तब धीरे धीरे बोले। "जी आपने कृपा करके जो दिया वही आपकी बड़प्पन है, मैं उसी में राजी हूं"।

रमानाथ का हमेशा का हंसमुख चेहरा इस समय कुछ रुखा हो आया था, यह उनके बात चीत के ढंग से ही कुछ कुछ मालुम पड़ चुका होगा, पर बैजनाथ की यह बात सुनते ही फिर पहले की तरह चेहरा खिल उठा और हंसते हुए बोले "क्यों नही' बेटा, तुम राजी हो जाओगे यह तो मैं पहले ही से जानता था, तुम्हारे ऐसे समझदार लड़के क्या आजकल देखने मिले हैं ? न जाने कितना देख सुन के तब बसन्ती के साथ तुम्हारा ब्याह किया था। हम क्या बिना अच्छी तरह देखे सुने कोई काम करने वाले हैं ? क्यों न हो, तुम अंगरेजी पढ़े लिखे हो कालिज में शिक्षा पाई है, तुम नही अच्छे होगे तो क्या गांव गंवई के भूतने छोकरे अच्छे होंगे आज तुम्हें देख के कितना खुश हुआ हूं, तुमसे क्या कहूं ? और दो एक बीड़ा पान लाओ"। "अरे भीखा भीतर से चार बीड़ा पान तो ले आ"।

बैजनाथ । जी, नहीं आपके सोने का बखत हुआ, अब जाता हुं।

रमानाथ । सोने का बखत कहां हुआ? हम तो रात बारह बजे के पहले सोते ही नहीं, और कल रात को खूब सोए थे, आज तो एक बारही नींद ही नहीं आती।

बैजनाथ मनोमन हंसे पर कुछ बोले नहीं।

रमानाथ । और देखो तो, तुम इतने दिन बाद आए हो, तुम्हें छोड़ के सोना? बैठे बैठें दो चार बात चीत ही करूं, और देखो भई रुपया लेके एक दस्तावेज लिख देना ही अच्छा है। तुम तो अंग्रेजी पढ़े लिखे हो, तुम्हारी बातही सौ दस्तावेजों के बराबर है। पर जानते हो कि नहीं एक कायदा चला आया है उसी मुताबिक चलना ठीक है।

बैजनाथ । हां क्यों नहीं, कोई काम हो कायदे के मुताबिक ही होना चाहिए।

रमानाथ । सोते हैं ही है, तुम लोग अंग्रेजी पढ़े लिखे हो, तुम्हें क्या यह सब बातें समझा के कहनी पड़ेगी, और तुम दस्तावेज लिख देते हो, बन्ती दस्तखत करेगी, तुम गवाह होगे तो फिर रजिस्टरी कराना तो फकत काम बढ़ाना है, पर जानो हो कि नहीं एक कायदा चला आया है।

बैजनाथ । जरूर, जरूर गवाह हुंगा, दस्तावेज को रजिस्टरी भी होगी, जो जो जरूरी कार वाई हैं सब होगी।

रमानाथ । क्यों नहीं, सो क्या तुमारे ऐसे समझदार लड़के को समझा के कहना पड़ेगा? और क्या जानो हो, दस्तावेज के स्टाम का खर्च है, रजिस्टरी आफिस में आने जाने का गाड़ी भाड़ा, सनाक्त करने का खर्च, रजिस्टरी का फीस, इन सब कामों में भी ८) १०) तो लगी जायगा। बसन्ती मेरे घर की लड़की है, उससे मैं यह रुपया नहीं लेता, पर क्या करूं वही १००) ही मुझे बड़ा महाता है इस पर से और एक पैसा भी देना दुस्वार समझो।

बैजनाथ जरा हंसे और मनोमन कहने लगे "कि रमानाथ जी एक रात नाच तमाशा में १००) रुपया खर्च कर देते हैं । १०) में मुझ गरीब की महीने भर की गृहस्ती चल जाती है" पर जाहिरा इतना ही बोले "हां हां, मैं सब देने में राजी हूं" ।

रमानाथ । क्यों नहीं, सो तो होहीगे तुमारे एसे भले मानुष लड़के के क्या यह सब बातें कहनी पड़ेंगी ।

और भी बहोत देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं ॥ चतुर रमानाथ ने एक एक करके सारे नियम अपने ही सुबीते के तय कर लिए । दुनियादारी के फेर से अनजान बैजनाथ जी ने किसी मे भी कुछ उज्र नहीं किया । डेढ़ पहर रात जाने के बाद रमानाथ ने बैजनाथ की बहोत कुछ तारीफ करके और बांकीपुर मे बहोत जल्दी नैाकरी लगवा देने की प्रतिज्ञा कर और समय पाके तुम भी एक अच्छे धनी मानी रईस हो जाओगे यह सब दिलासा देकर उन्हे बिदा किया । बैजनाथ जी भी ससुर साहब के शिस्टाचार की बड़ाई करके घर आए ।

इसे लिखते लज्जा आती है कि इतनी शिष्टाचार की लंबी चौड़ी बातें होने पर भी दोनो ने दिल की बात एक दूसरे से नहीं कही बैजनाथ जी घर आते हुए रसते में सोचने लगे कि "सूद खोर लुच्ची अमीर से सूद का एक हिस्सा छुड़ा भी लिया जा सकता है पर धनी मानी चतुर अमीन साहब के पेट से एक पैसा निकालना जरा टेढी खीर है । रमानाथ भी पलंग पर लेटते हुए अपनी गृहणी से कह रहे थे" देखो तो आज कल के कालिज के पढ़े लिखे लड़के कैसे हरामजादे होते हैं और देखो यह बैजनाथ भी कैसा गंवार है, कहता है कि ससुर के बड़े भाई से मुकद्दमा लड़ेंगे, कहते लज्जा भी नहीं आवती । जल्दी जहन्नुम में जायगा" । मालकिनी जी ने इन सब बातों पर कुछ कान नही दिया वह अपने धन वान समधी का स्वप्न देख रहीं थीं ।

॥ सातवां परिच्छेद ॥

॥ बाल्य सखा ॥

डेढ़ पहर रात गए बैजनाथ जी ने घर आके देखा कि बसन्ती देवी खड़ी हुई उनका आसरा देख रहीं हैं। बैजनाथ जी को देखते ही उसका शान्त मुख खिल आया आंखों मे हंसी दिखाई दी और पति की तरफ प्रेम भरी दृष्टी से देखती हुई बोली "बड़े भाग्य, कि अब आए, मैंने तो समझा था कि घर का रस्ता भूल गए या तारा की बात नही टाल सके, आज ताया जी के यहां ही रह गए"

बैजनाथ। क्यों क्या हुआ, आज इतनी हंसी क्यों कर रही हो, क्या बहोत रात होगई?

बसन्ती हंसती हुई बोली "नही बहुत रात कहां, यही बस दोपहर रात ही तो गई है! संध्या से तुमरे एक दोस्त बैठे हुए तुमारा आसरा देख रहे हैं।

बैजनाथ। कौन? कौन? कौन?

"आओ देखो, यह कह कर बसन्ती आगे और पीछे बैजनाथ चले, घर के भीतर पैर रखते ही एक गोरे रंग का युवक उठ कर इनके तरफ बढ़ा। बैजनाथ ने उसे पहचाना नही, कुछ ठिठक रहे, (यह देख कर बसन्ती मुंह पर कपड़ा ढांप कर मुसकराने लगी), फिर थोड़ी देर में पहचान के बोले, ओ हो, तुम हो शिवनाथ! कलकत्ते से कब आए? ओ: तुम कैसे बदल गए हो कि मैं एका एकी पहचान नही सका, मैंने बस तुमे तुमारी बहिन कामनी के ब्याह के समय देखा था। उन दिनों तुम बांकीपुर में पढ़ते थे, बस उनी दिनों जब एक दफे घर आए थे तब हमारी तुमारी मुलाकात हुई थी, तब तुमारी उम्र तेरह चौदह वर्ष की थी, अबतो खासे जवान होगए हो दाढ़ी मोछें निकल आई हैं अब क्या सहज। चिन्हाई देती हो।

शिवनाथ। नौ दस वर्ष में बहोत कुछ अदल बदल हो जाता है, इसमें क्या संदेह है? बेबे के ब्याह के बाद ही बाबूजी का परलोक वास हुआ। उसके बाद मा भी यहां से बांकीपुर जा रही,

इसीलिए फिर मेरा भी यहां आना नहीं हुआ। मैं एन्ट्रेंस पास करके कलकत्ते चला गया, इसलिये मां भी अब यहां ही आ रही हैं, यही अबकी गरमी की छुट्टी में यहां आना हुआ है। नै। वर्ष बाद आप मुझे बदला हुआ पावेंगे यह तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है। मैंने तब क्या देखा था, अब क्या देख रहा हूं। बसन्ती बेबे मुझसे दो बरस बड़ी है। हम दोनों लड़कई में एक संग खेलते थे। मैं बाजपेई जी के घर जाता था बसन्ती बेबे चम्पा को गोद में लेके मेरे घर आती थी। अमरूद के पेड़ के नीचे चम्पा को बैठा के लग्घी से अमरूद तोड़ तोड़ के खाती थी, वही बसन्ती बेबे आज घर की गृहणी, मालकिनी, दो बच्चे की मा होगई हैं।

बसन्ती भी हंसती हंसती बोली "अपना गुण नहीं कहते, तुम्हारे उत्पात के मारे कुंदनपुर की आम की बारी में आम नहीं रहने पाता था, अब कलकत्ते जा के लिख पढ़के, कालिज के विद्यारथीयों में बड़े विद्यारथी बने हो। पहले पेड़ चढ़ने वालों में सब से ज्यादे नामी थे।

शिवनाथ। बसन्ती बेबे, सो भी तुम्हीं लोगों के लिये। तुम्हारी ताईजी कच्चा आम खाने मना करती थीं और मैं सांझ के बखत छाड़दिवाड़ी फांद कर छिपा के रसोई घर में आम दे आता था कि नहीं, बतलाओ? बैजनाथ जी जोर से हंस कर बोले। रहने दो एक दूसरे के गुण बखान करने की क्या जरूरत है। बहोत से गुण जाहिर हो पड़े हैं! मैं भी तुमारे घर जाता था, चम्पा को भी कभी वहां देख पाता। चम्पा उस समय चार पांच वर्ष की बच्ची थी। "क्यों चम्पा गुरूजी के घर जाने की बात याद है? तेरी बेबे तुझे गोद में करके ले जाती थी, शिवनाजी की बात कुछ याद है?

चम्पा। शिवनाथ जी की बात कुछ कुछ याद आती है। बेबे आप अमरूद तोड़ के खाती, मैं तोड़ नहीं सकती थी, शिवनाथ जी मुझे गोद में उठा कर अमरूद तोड़ के खिलाते थे।

इसके बाद बैजनाथ जी ने बसन्ती से पूछा। "तुम लोग सब कोई खा पी चुकी हो। शिवनाथ ने खाया" ?

शिवनाथ। हां! बसन्ती बेबे ने आज जैसी चटपटी कच्चे आम की चटनी खिलाई है वैसी कभी भी नहीं खाई थी।

बसन्ती। क्यों, नौ वर्ष पहले जब इस पेड़ से उस पेड़ पर छलांगे मारा करते थे, तब ?

शिवनाथ। हां, तब खाई थी सही, पर उस समय तो ऐसा कोई रसोई बना देने वाला नहीं था।

बसन्ती। नहीं क्यों था ? यही कहो कि उजलत बनी रहती थी।

बैजनाथ। चम्पा खा चुकी ? तुम खा चुकी ?

बसन्ती। चम्पा खा चुकी है, मैं यही खाने चली। तुम और कुछ नहीं खाओगे ?

बैजनाथ। अरे राम राम ! और क्या कुछ खा सकेंगे। तुम्हारे ताया जी के यहां से जो पेट भर के खा आए हैं ? जाओ तुम खाओ पियो, बड़ी रात गई।

बसन्ती चौके की तरफ चली। चम्पा बैजनाथ जी के लिये अब तक जाग रही थी, अब चबूतरे पर चटाई बिछा के लेटते ही सोगई। चन्द्रमा की शीतल चांदनी और ठंडी हवा के झकोरों ने उसे शीघ्रही गहरी नींद में सुला दिया। सारा कुन्दनपुर गांव इस समय चांद की ठंडी चांदनी और ठंडी हवा से चुप चाप सोया पड़ा था।

बैजनाथ और शिवनाथ दोनों उसी चबूतरे पर बैठे हुए बहोत देर तक बात चीत करते रहे। वाजपेई और शुक्लजी के घराने में पहले विवाह का सम्बन्ध था। बैजनाथ और शिवनाथ दोनों की बचपन की मुलाकात और मुहब्बत थी। आज थोड़ी सी बात चीत करने पर बैजनाथ को शिवनाथ के धीर प्रकृति, बुद्धिमत्ता, दृढ़ प्रतिज्ञा और उन्नत हृदय का पता लग गया और शिवनाथ भी अपने बाल्य सखा के उन्नत तेज पूर्ण अन्तकर्ण का परिचय पाकर परम सन्तुष्ट हुए। संसार में तो हमारे सैकड़ो मुलाकाती दोस्त होते हैं पर मन शायद किसी बिरले ही से मिलता है, इसलिये मन

मुताबिक मनुष्य को देख कर ही हृदय उसकी तरफ दौड़ जाता है, वैजनाथ और शिवनाथ को बात चीत में जितना ही ज्यादे समय बीतने लगा उतना ही दोनों का दिल एक दूसरे की तरफ खिचने लगा। बैजनाथ शिवनाथ को छोटे भाई की तरह स्नेह करने लगे, और शिवनाथ को उनके प्रति बड़े भाई ऐसी भक्ति और श्रद्धा हो आई। इन लोगों की बात चीत हो रही थी कि इसी बीच में बसन्ती मा पी के वहां आ बैठी और चम्पा के सिराहने तकिया नही था इसलिये सोई हुई बहिन का सिर अपने घुटने पर रख के उसके गुच्छे गुच्छे घुंघराले केशों को स्नेह से संवारने लगी।

बहोत देर की बात चीत के बाद बैजनाथ ने पूछा। "तुम तो अब एफ० ए० मे पढ़ रहे हो छः सात महीने ही मे तुमारी परिक्षा होगी। फस्ट डिभीजन मे पास होगे और स्कलर सिप मिलेगी इसमें तो कोइ संदेह ही नही, इसके बाद क्या करना विचारा है ?

शिवनाथ। अभी कुछ भी ठीक नहीं है। मेरी बी० ए० तक पढ़ने की इच्छा है पर मां गांव मे रहती है वह कहती हैं कि बस यही परिक्षा देकर गांव में आ रहो अपनी जमीन जायदाद देखो भालो। देखिए क्या होता है जायदाद भी कुछ ऐसी विशेष नहीं है, साल में सात आठ सौ से ज्यादा मुनाफा नहीं है अगर कोई अच्छी नौकरी लग गई तो कर लेंगे। नौकरी लगने पर मां भी वहां मेरे साथ रहेगी यहां आदमी जमीन वगैरह देखे भालेगा।

बैजनाथ। वह तो जो कुछ होना होगा तुमारी परीक्षा के बाद होगा। यह छै महीना बीच में है, कलकत्ते रह कर खूब मन लगा कर लिखो पढ़ो। जैसे सम्मान के साथ एंट्रेन्स पास किया है वैसे ही एफ० ए० भी पास करो।

शिवनाथ। इच्छा तो ऐसी ही है। शीघ्र ही कलकत्ते जाकर पढ़ना शुरू करूंगा। मैं मनोमन सोचता हू कि आप लोग भी एक दफे कलकत्ते क्यों नहीं चलते, क्या सारा जन्म यहीं गांव में ही बिताइएगा ? आज नौ वर्ष हुआ आप कई एक

महीने कलकत्ते रहे थे । बसन्ती बेबे ने भी कभी कलकत्ता देखा नहीं । एक दफे दोनों जने चलिये तो कैसा? धान की रोपाई हो जाने के बाद ही आइए । आके हमारे डेरे पर रहियेगा फिर भादों महीने में धान कटने के वक्त चले आइएगा ।

बैजनाथ । शिवनाथ तुम हम लोगों से मुहब्बत रखते हो इसी लिए यह कह रहे हो । मै भला कलकत्ते जाके क्या करूंगा? तुम तो पढ़ो लिखोगे, परिक्षा दोगे नौकरी करोगे, मै जाके क्या करूंगा?

शिवनाथ । क्यो आप क्या किसी तरह की कोशिश नहीं कर सकते? इतना पढ़ लिख के क्या सारी जिन्दगी योहीं बिता दिजीयेगा । सुना है कि कालिज छोड़ने के बाद आपने बहोत सी किताबे देखी हैं जिसे असली शिक्षा कहते हैं, बहोत से बी० ए० पास भी आप ऐसे विद्वान नहीं हैं, आप की शिक्षा, धैर्य्य के साथ परिश्रम करने का अभ्यास और सदाचार इत्यादि का क्याकुछ भी फल नहीं होगा?

बैजनाथ । शिवनाथ! मेरी शिक्षा विशेष नही है, जब और कोइ काम नहीं रहता तो बैठा बैठा पुस्तकें पढ़ा करता हूं । और कलकत्ते ऐसे इतने भारी शहर मे मेरे से हजार गुण बढ़ के गुणवान विद्वान लोग नौकरी के लिये टक्कर खाते फिरते हैं, मैं जब कालिज मे था देख चुका हूं । यदि गुण हो भी तो इतने लोगों के बीच गुण का परिचय देना भी कठिन है, फिर मेरे ऐसा गुणहीन आदमी तीन चार महीने में कुछ भी नही कर सकेगा, बेफायदे हलाकान होके फिर आना पड़ेगा ।

शिवनाथ । खैर यहि सही, तो इसमे हर्ज क्या है? आप लोग यदि कृपा करके मेरे डेरे पर रहेंगे तो आप का भी कुछ ऐसा खर्च नही होगा, सब लोग एक दफे कलकत्ता देख भी लेंगे और आप भी एक दफे उन्नति की चेष्टा कर देखिएगा, मुझे पूरा भरोसा है कि विशाल मनुष्य समुद्र के बीच आप के ऐसी शिक्षा, सद्गुण, सख्ताह बहोत जल्दी जाहिर होगी और

उसका फल मिलेगा। और यदि कुछ न भी हुआ, तो घर फिर आइएगा, इसमें नुकसान ही क्या है?

बैजनाथ कुछ देर तक सोचते रहे फिर बोले" शिवनाथ, तुम हम लोगों को अपने डेरे पर रखा चाहते हो, यह तुमारी बड़ी कृपा है, पर यदि सच मुच ही हम कलकत्ते गए तो अलग मकान ले के रहेंगे, तुमारे पढ़ने लिखने के बाधक नही होंगे। और जो हो, आज रात ही को तो तय हुआ नही जाता। रमानाथ जी बांकीपुर जाने कह रहे हैं, तुम कलकत्ते जाने कहते हो, मेरी भी इच्छा है कि एक दफे कहीं जा कर उन्नति की चेष्टा करके देखूं। जरा सोच विचार के, तुमारी सलाह से जो कुछ होगा तय करेंगे।

शिवनाथ। बसन्ती बेबे! तुमरा क्या इरादा है? क्या एक दफे कलकत्ता देखने को जी नहीं चाहता?

बसन्ती। चाहता तो बहोत है, पर हो सके तब तो। और सुने हैं कि वहां बड़ा खरच होए है, हम लोग साधारण आदमी ठहरे, इतना रुपया भी कहां से लावें।

शिवनाथ। अपने मन से चाहे जितना खरच कर दो, नही तो कुछ ऐसा खरच नहीं है। मैं ठीक कहता हूं कि अगर वहां जाकर आप लोग मेरे डेरे पर रहेंगे तो मेरी लिखा पढ़ी में कुछ भी बाधा नहीं पड़ेगी, और कभी कभी जब पढ़ते पढ़ते मन उकता जाता है तो अपने आदमियों से बात चीत करके मन फिर हरा हो जाता है।

बसन्ती। हां, क्यों नहीं, और जब पढ़ने का वखत होगा, तब घर के भीतर आके लड़काई के आमरूद तोड़ने का गप्प हांकना शुरू करोगे। इस में खूब पढ़ाई लिखाई होगी!

शिवनाथ। और जब कभी रोटी से अरुचि होगी तो कच्चे आम की चट पटी चटनी भी तो चटाने को मिलेगी; मैं तो देखता हूं कि मुनाफा ही ज्यादा है।

बसन्ती। हां क्यों नहीं आज कल तुमारा नसीबा जग रहा है! वही कल तो सुना था कि चटनी बनाने वाली जलदी आने वाली है।

शिवनाथ । कौन ?

बसन्ती । वाह ! जाने कुछ जानतेही नही हो ? मा जो तुमरे ब्याह कां तज वीज कर रहीं हैं ।

शिवनाथ कुछ शरमिंदे से होके बोले । "यह सब किसी काम की बात नहीं है ।

बैजनाथ । क्या तुमारी मां ने तुमारे ब्याह का कहीं ठीक ठाक किया है ?

शिवनाथ । मा तो इतना कुछ जिद्द नहीं करती, पर बेबे की बड़ी इच्छा है कि मेरा जलदी ब्याह हो जाय और वही बांकीपुर में न कहां लड़की ठीक कर रहीं हैं । परसों से जब से यहां आई हैं मा को भी पट्टी पढ़ा रही हैं, पर मैंने मा से भी और बेबे से भी कह दिया है कि बिना यह परीक्षा दिए और बिना कुछ रोजगार का ठिकाने लगे मैं ब्याह नहीं करुंगा ।

बसन्ती । आहा ! कामनी से भी भेंट हुए बहोत दिन हुआ । लड़कई में तारा, मैं और कामनी तीनों जनी एक संग खेलती थी, कामनी मुझ से छः महीना छोटी है और तारा कामनी से छः महीना छोटी है, हम तीनो सदा एक संग रहंती, पर अब देखो बरस बरस छः छः महीना बीत जाए है मिलना नहीं होता ! कल एक दफे तुमरे घर जाउंगी, और तारा से भी एक दफे मिल आउंगी ।

शिवनाथ । बेबे कल तारा के यहाँ जायगी, बसन्ती बेबे तुम भी वहीं चली जाना, तीनों का एकही जगह मुलाकात हो जायगा ।

बसन्ती हां, यह तो और भी अच्छा है । आहा ! मुझे कामनी से मिलने का बड़ा जी करे है । मेरे ब्याह के पहले कामनी का ब्याह हुआ है, आहा, तब से बिचारी कितना दुःख पा रही है । अच्छा शिवनाथ, तुमारी मा ने जान बुझ के ऐसे घर लड़की क्यों दी ? ब्याह पर लड़के को देखा था, लोक कहते थे कि उसकी उम्र चालिस वर्ष की थी ।

शिवनाथ । बसन्ती बेबे, यह बात मत पूछो । मा की मनसा नहीं थी, पर पड़ोसी पड़ौसी, ब्राह्मण पुरोहित सब जिद्द करने लगे कहने लगे कि लड़के का घराना बड़ा अच्छा है, जात बड़ी अच्छी है, इस जिले मे ऐसा कुलीन लड़का मिलना मुशकिल है, बाबू जी ने भी सम्मति देदी, फिर भला मा क्या करतीं । ब्याह होने के बाद से सदा मा यही कहती रहती है कि "लड़की को पानी मे बहा दिया"। हमारे बहनोइ साहब की उम्र इस समय करीब पचास वर्ष की है, सदा बिमार रहते हैं, उनके गृहस्ती की बीसें दाइ टहलनीयों में मेरी बेबे को भी एक टहलनी समझ लो । सवेरे से संध्या तक धन्धा करती श्रौर दोनो बेला पेट भर खा छोड़ती है । बेबे उसी में राजी है । बिचारी सीधी सादी लड़की के मन मे श्रौर किसी तरह की श्रकांक्षा नहीं है । हमारी गृहस्तीयों में कहीं कहीं जैसी धार्म्मिष्ट तपस्वी नें हैं, वैसे शायद ही श्रागे के ऋषी मुनी होते होंगे ।

कामने की श्रवस्था का ख्याल करके बसन्ती के श्रांखों में श्रांसू श्रागए । बहोत देर के बाद तब शिवनाथ बोले । "श्रच्छा तब श्राज मैं जाता हूं, बहोत रात गइ । फिर कल भेंट होगी श्रौर जब तक मैं यहां हूं, कभी कभी तुमारे कच्चे श्राम की चटनी चखने जरूर श्राया करूंगा, श्रौर श्रगर कृपा करके तुम लोग कलकत्ते चलो तो फिर तो कहनाही क्या है" ?

बसन्ती ने हंसते हुए कहा । "श्रच्छा जाश्रो, कलकत्ते जाने न जाने की बात कल तय हो गी, पर जाना हो या ना हो, तुमरे लिए एक चटनी बनानेवाली का इंतजाम जल्दी करना पड़ेगा । कल तुमरी बेबे से इस का सलाह पक्का कर लूंगी । कुछ फिकर मत करो" ।

हंसते हुए शिवनाथ बसन्ती श्रौर बैजनाथ से बिदा हो कर बाहर श्राए । चम्पा तब भी सोई हुई थी, दो पहर रात की निर्म्मल चांदनी में उसके फूल सरीखे ललित होठ दोनों खिले हुए थे चिकने चिकने काले काले घुंघराले बाल गोरे गोरे गोल भुजाश्रों पर

बिचर रहे थे। सरला बालिका बिल्ली के बच्चे के साथ खेलने या बचपन में अमरूद खाने का स्वप्न देख रही थी।

घर से बाहर निकल कर शिवनाथ थोड़ी देर तक निर्म्मल आकाश की तरफ देखते हुये मनोमन कहने लगे। मैंने बांकीपुर और कलकत्ते में सैकड़ों गृहस्थ और धनियों का परिवार देखा है, पर आज इस अदने से गांव के सामान्य घर में जैसी सरलता, सच्चाई, असली स्नेह, प्रेम और धर्म देखा वैसा कहीं देखने में नहीं आया है, जगदीश "बैजनाथ जी का परिवार सदा फले फूले और सब आपदाओं से दूर रहे"। लड़कपन से अकेले रहते२ और बराबर पढ़ने लिखने में लगे रहने से मेरी जिंदगी निरस ऐसी हो गई है, मेरे हृदय की कोमल वृत्तियां सब सूख गईं हैं। "आहा! बैजनाथ जी के प्रेम और बसन्ती बेटे के स्नेह से मानों मेरा सूखा हृदय आज फिर हरा हो आया, भगवान करें कि इस पवित्र स्नेहपूर्ण परिवार के पास रह कर मैं फिर से मनुष्योचित स्नेह और प्रीति लाभ कर सकूं" इसी तरह की नाना प्रकार की चिन्ता करते करते शिवनाथ घर की तरफ चले।

। आठवां परिच्छेद।

॥ बसन्ती की मित्र मंडली ॥

दूसरे दिन तड़के ही बसन्ती ने उठ कर घर द्वार में झाड़ू बुहार दिया और घरके पीछे की पोखरी में बासन मांज रही थी कि इसि बीच में किसी ने घर का दरवाजा खट खटाया, बैजनाथ या चंपा अभि किसी की नींद नही खुली थी, इस लिए बसन्ती ने बासन मांजना छोड़ के भीतर आके द्वारा खोल दिया तो देखा कि खिलावन की स्त्री आइ है। बसन्ती बच पन ही से खिलावन की स्त्री को अय्या कहके बुलाती थी, अब भी उसी नाम से बुलाया करती थी, सो उसके आते ही बोली "कौन अय्या, आज इतने तड़के ही कैसे आइ? यह तेरे हाथ में क्या है, यह?

खिलावन की स्त्री। यह कुछ नही है, बीबी जी, मन किया कि आज सबेरे जाके मिल आवे, चंपा बीबी को घोनी दे के जमाया हुआ दही बड़ा अच्छा लगे है, सोइ कल रात को दही जमा रखा था वही चंपा बीबी के लिए लेआइ हूं। चंपा बीबी उठी हैं?

बसन्ती। नही अभी नही उठी है। हैं, तुम लोग गरीब आदमी ठहरी, रोज रोज इतना दूध दही क्यों ले आवो हो? रोज रोज इतना कहां से लावेगी?

खि-स्त्री। नही बीबी जी कौन सा ऐसा चीज लाऊ हूं। यह तो घर की गऊ का दूध है कुछ खरीद के थोड़े ही लाइ हूं। बीबी जी गऊ भीतो आप लोग की है मेरा घर द्वार भी सब तुमारी ही है तुमरे ही भरोसे तो दो मुट्ठी अन्न खा के जीए हैं, सो अपना चीज तुम नही खाओ थोओगी तो कौन खायगा, बीबी जी?

बसन्ती। अच्छा बहिन, दही छीके पर लटका के रख दे, भात के संग खाऊंगी। अय्या तुझे दही जमाना अच्छा आवे है, चंपा को तेरी दही बड़ी भावे है! एं, यह क्या! तेरे आंख मे पानी क्यों एं, रोवे काहे है?

सचमुच ही खिलावन की स्त्री आंखों से टपा टप आंसू की धारा बहाती हुइ ऊहूं ऊंहूं करके रोने लगी। खिलावन बिचारा बड़े बड़े मुसकिल से अपनी गृहणी जी के शरीर के मुनाबिक धोती जुहाता था, पर उतनो बड़ी धोती से भी लंबी चौड़ी पच हत्थी गृहणी का शरीर मुसकिल से ढकता, फिर आंख पोछने को आंचर कहां से आवे। खैर किसी तरह से बड़े बड़े मुसकिल से इनका रोना कुछ थमा, पर आंसू की धारा एक दफे चली तो फिर काहे रुकने लगी थी, खिलावन पत्नी फिर ऊहूं करके और भी ऊंचे स्वर से रोने लगी।

बसन्ती। एं, तु तो अच्छी आदमी है, रोवे क्यो है?

खिलावन अच्छा तो है?

खि-स्त्री । अच्छा ·क्यों नही, उस मुंमौंसे को क्या भला कभी कुछ होए है ? ऊंहूं-ऊंहूं ?

बसन्ती । तेरा लड़का तो अच्छा है न ?

खि-स्त्री । हां सो तुमारे असीस से सब अच्छे है ।

बसन्ती । फिर बेफायदे खाली खाली सबेरे सबेरे रोवे क्यों है? क्या हुआ क्या है ?

ख-स्त्री । यही सबेरे शुकल जी के घर गई थी जी, से वहां-ऊंहूं-हूं,

बसन्ती । वहां क्या हुआ, क्या किसी ने कुछ कहा है, गाली दिया है ?

खि-स्त्री । नही, गाली भला कौन देगा ? क्या किसी का कुछ खाऊ हूं, या किसी की जमा मारी है जो कोइ गाली देगा । मरदुवा चाहे मुंहझौंसा हो, फुट्टे करम हो चाहे जैसा हो, मजूरी करके खाए है, मुझे भी खानाकपड़ा दे सके है, हम लोग गरीब हैं तो क्या, अपने मान इज्जत से हैं, किसी की क्या मजाल है, जो गाली देगा ? ।

किसान के स्त्री के स्वामी भक्ती सूचक, दर्प पूर्ण वचन सुन के बसन्ती को जरा सा हंसी आगइ, हंसती हुइ बोली । "सोइ तो मै पूछुं हूं कि रोवे क्यों है ? क्या खिलावन ने कुछ कहा है" ?

इतना सुनते ही खिलावन की गृहणी का पच हत्या शरीर क्रोध से कांपने लगा, आंखे लाल हो आइ और गुस्से से भरी हुइ उसने जो कुछ कहा उसमे से फकत इतना ही सुन पड़ा "मुहवा, मुंहझौंसा, मौया, वह कुछ कहेगा ?

उसे क्या अपने जान का डर नहीं है! किस मुंह से कहेगा? उसकी गृहस्ती कौन कर रहा है ? घर का धन्धा कौन करे है ? मैं न होती तो वह कौन से चुल्हे में जाता ? बात कहेगा, कहना न होगया खिलवाड़ होगया, वगैरः वगैरः, । अबकी दफे बसन्ती हंसी नही रोक सकी, फिर जरा जोर से बोली, "तो फिर तू खाली खाली सबेरे के पहर आंसू क्यों बहा रही है, बोल तो, हुआ क्या है ?

खि० स्त्री । नहीं बीबी जी कुछ हुआ नहीं है, वही आज सवेरे सुकुलजी के घर सुना, उहूं-हूं ।

बसन्ती । रख भइ तुझे फैल करना हो बैठी किया कर, मैं तो अब खड़ी नहीं रह सकती । बर्तन उर्तन सब मांजने को पड़ा है, चुल्हा सुलगाना है अभी लड़के उठते ही दूध मांगेंगे ।

यही बात हो रही थी कि चम्पा सवेरे की खिली हुई पद्मिनी की तरह आंख पोंछती हुई आ खड़ी हुई । बसन्ती ने कहा "यह लो चम्पा उठी" आज इतने तड़के ?

चम्पा । बेबे आज तड़के ही नींद खुल गई । एक बड़ा मजेदार सुपना देखा, इसीलिये नींद टूट गई ।

बसन्ती । कैसा सुपना ?

चम्पा । ऐसा मालुम पड़ा मानो हम लोग फिर से लड़कई की तरह शिवनाथजी के घर अमरूद खाने गई हैं । तुम तोड़ तोड़ खा रही हो और शिवनाथजी मुझे गोद में लेके अमरूद तोड़ रहे हैं, उसी समय वह सहसा पैर फिसल के गिर पड़े । ऊः, ऐसी चोट लगी है ।

बसन्ती । अरे सो क्या ? क्या सपने में गिरने से भी चोट लगे है ।

चम्पा । हां, बेबे, ऐसा ही मालुम पड़ा कि मानों बड़ी चोट लगी है, शिवनाथ जी मानो पेड़ तले उसी गड़हे में गिर गए ।

बसन्ती ने हंसते हुए कहा । ओ हो ! ऐसी दुर्दशा ! आज शिवनाथ को आने दो तो पूछूंगी कि उनके पैर में दर्द तो नहीं है हाथ पैर तो नहीं टूटा ?

चम्पा । नहीं बेबे, नहीं टूटा ।

बसन्ती । तू ने किस तरह जाना ।

चम्पा । क्यों फिर जो उसी बखत उठके मुझे गोद में ले के अमरूद तोड़ने लगे । अबकी बसन्ती खिल खिला के हंसी पड़ी और बोली । शाबाश शिवनाथ । आज आने दो उनके सब गुण जाहिर करूंगी ।

हंसी बन्द होने के बाद फिर बोली । अम्मा आज तेरे लिये चीनी दे के जमाया हुआ दही लाई है, भात के संग खाइयो । छीके पर लटका के रखाया तो । मैं तब से चुल्हा बालूं, लड़कों के उठने का वखत होगया ।

सरला बालिका घुंघरारे केशों को नचाती हुई दही लेकर छीके पर रख आई और फिर ताल के किनारे दौड़ गई । बसन्ती भी चौके में जाने की तय्यारी करने लगी, तब तक खिलावन पत्नी ने आंसू टंसू पोंछ ज़रा खखारा गला साफ करके फिर पूछा । क्यों बीबी जी, बात का सच्ची है !

बसन्ती । कौन सी बात भाई ?

खि-स्त्री । यही जो सुना है ?

बसन्ती । क्या सुना है रे ?

खि-स्त्री । हां, तो सच्ची होगा ? आ हा, इतने दिन बाद क्या भाग्य में यही था । आहा, चंपा बीबी को जिस दिन नहीं देखूं हूं, कलेजा फटने लगे हैं ।

अबकी दफे खिलावन पत्नी खूब जोर जोर से रोने लगी । खिलावन पत्नी का पंच हत्था काला भुजंग डील डौल वाला शरीर जिस पर खिलावन डरता हुआ निगाह उठाता था और सदा डरता हुआ पूजा करता था, वही शरीर रोने के वेग से कांपने लगा । घर में बैजनाथ सोए हुय थे, पहले तो उन्हें भूमिकंप सा मालुम पड़ा फिर ऊंचे स्वर का रोना सुन के नींद खुल गई, फौरन ही शय्या से उठ के चिल्ला के बोले" । "घर में कौन रो रहा है? "यह कहते हुए घर से बाहर आए । आकर फिर बसन्ती से पूछा । सवेरे सवेरे घर में रो कौन रहा है" ?

बसन्ती । कोई नहीं, यही अय्या न जाने कहां से कुछ बुरी खबर सुन आई है सोई रो रही है ।

बैजनाथ । यह कौन, खिलावन की जोरू है ? क्या हुआ है रे ? घर में कुछ अमंगल तो नहीं हुआ ? कोई बिमारी सिमारी तो नहीं हुई ?

खिलावन की स्त्री ने मालिक को देख के, गले का स्वर बन्द किया, आंसू पोंछे, कपड़ा ठीक बांध कर किसी तरह घुंघट काढ़ के, खखार के गला साफ करके, फिर आंसू पोंछ के धीरे से बोली। "नहीं महाराज कुछ अमंगल नहीं यही एक बात सुनी थी, सो बीबी जी से पूछने आई हूं"।

बसन्ती। पर वह बात क्या है, मैं तो अब तक नहीं निकाल सकी। तुम सको सो निकालो।

बैजनाथ। औरतों की बातें औरते ही जानें, हम जाते हैं तब से शिवनाथ से एक दफे मिल आवें।

यह कह कर हंसते हुए बैजनाथ घर के बाहर चले गए।

खि-स्त्री। ओह, ओह। ठीक है, मैंने जो सुना है, वही ठीक है!

बसन्ती। ऐं, तेरे सिर पर आज कुछ चढ़ा है क्या? ऐसा क्यों कर रही है?

खि-स्त्री। वही, शिवनाथ महाराज के घर आज सवेरे जो सुना।

बसन्ती। अरे क्या सुने हैं, सो भी तो बोल?

खि-स्त्री। अच्छा कहूं हूं बीबीजी, गरीब की बात से गुस्से मत होना। झूठ सच नहीं जाने, वही सुकुलजी के घर का नौकर मुंहझौंसा मुझसे बोला, मोए के मुंह में लूका, तभी से मेरा कलेजा दो दो हाथ उछल रहा है, बीबी जी नहीं विश्वास हो तो हाथ लगा के देख लो।

बसन्ती। भई, मुझे देखने की फुरसत नहीं है, मैं अपने धन्धे में लगुं हुं। यह कर बसन्ती चौके के तरफ चली।

खबकी खिलावन पहो बसन्ती का आंचर पकड़ के खड़ा करके बोली। "नहीं बीबीजी, गुस्से मत हो, तुम लोगों के लिये जी कैसा कैसा तो करे है, इसीलिये आई हूं, नहीं तो दूसरे के लिये क्या आती, आहा चम्पा बीबी को एक दिन नही देखुं हुं तो मन कैसा कैसा—(बसन्ती फिर चौके की तरफ चली) सुनो सुनो नहीं सुकुलजी के घर का नौकर सोया बोला कि-उसके मुंह में चुआंती, उसकी, उसकी जोरू के मुंह में लूका, उसके घर में उल्लू चरे (बसन्ती ने चौके की

तरफ एक कदम बढ़ाया) नहीं नहीं, मैं कहुं हुं कि मोया बोला कि थोः ऐसी बात भला कोई मुंह से निकालता होगा ? ऐसा भी क्या कभी हो सके है । तुम लोगों को जदा दया माया भी तो है, (बसन्ती का चौके के भोतर जाना, खिलावन पक्षी का पीछे पीछे जाकर चौके के दरवाजे के चौकठ पर बैठना) नही नहीं, मैं तो कहती थी कि वह मोया नौकर कहिस क्या कि बीबीजी तुम हम सबों को छोड़ के कलकत्ते चली जायेगी । आहा ! बीबीजी तुम्हें लड़काई से खिलाया है, तुमसे फिर भेंट नहीं होगी ? अहा, चम्पा बीबी मुझे कितना चाहे है, चम्पा बीबी को कहां ले जाउगी ? ऊं हूं, हूं, (फिर रोना शुरू हुआ) बसन्ती कुछ खिसिया गई थी, पर अब हंसी नहीं रोक सकी—बोली एँ रे भय्या इसी बात के लिये इतने देर से रोया कर रही थी? रोवे क्यों हैं भयया, हम लोगों के जाने का अभी तो कुछ ठीक नहीं हुआ है, खाली शिवनाथ कल कहते थे, सो हम लोग क्या चाले थोड़े हां चले हैं ? वहां का जो खरच है ।

खि-स्त्री । अरे राम राम ? बीबी जी, वहां भी भला कोइ जाता होगा । सुने हैं कि कलकत्ते जाने से जाति मारी जए है, वहां जाति पांति का कुछ चारा विचार नही है, हिंदू मुसलमान के छूवा छूत का कुछ विचार नही, ऐसे शहर मे भी भला कोइ जाए है । तुमे कमी किस बात की है, यहीं बैठी हुइ राज करो । शिवनाथ महाराज को क्या, उनकी तो घर गृहस्थी जोरु बेटा नहो है, खाली कालिज मे पढ़े है । बीबी जी, कालिज के लड़के जो न करें सो थोड़: सुने तो हैं कि कालिज के लड़के समुद्र पार विलायत जाए हैं । हाय हाय, तब तो वह जीते आदमी के गले मे छूरी भी फेर सके हैं हां, बीबी जी विलायत कहां है, वह जो गंगा सागर की बात सुनें हैं, क्या उसके भी पार जाना होए है । सुने हैं कि लंका न तो कहां जाना होए है ।

बसन्ती । अरे, कितने समुद्र पार होके विलायत जाना होए है, लंका छोड़ के भी न जाने कितनी दूर जाना होए है ।

खि-स्त्री । अरे दय्या रे दय्या, गंगा सागर की जो बड़ी बड़ी लहर सुनें हैं, उसमे क्या आदमी की जान बचे है? लंका से क्या कोइ फिर के आया है, सुने हैं, कि कोइ आवे भी है तो राक्षस होके आवे है, जीते आदमी के गले मे छुरी फेरने लगे है। ना, बीबीजी, तुमे बिलायत जाने का भी काम नहीं, कलकत्ते जाने का भी काम नहीं, घर की लक्ष्मी घरही में रहो। अच्छा बीबीजी, तब मैं जांऊ हूं।

बसन्ती दूध औटती हुइ बोली "अच्छा अय्या"

खि-स्त्री। और दही कैसी जमी है खाके कहियो। चंपा क्या कहे है कहियो।

बसन्ती। हां, कहुंगी, कहुंगी।

खिलावन की स्त्री दो चार कदम जाकर फिर, फिर आइ और बोली, देखी बीबीजी, गरीब की बात टालना मति। कहीं कलकत्ते कलकत्ते जाओगी घर की लक्ष्मी घर उजेला किए बैठी रहो"।

बसन्ती। सो देखा जायगा। हम लोगों के जाने का अबी भी कुछ निश्चय नही हुआ है, अगर गए भी, तो थोड़े दिन के लिए, जांयगे फिर धान कटने के समय आजाएगे। गांव छोड़ के भला हम लोग कही रह सकते हैं?

खिलावन पत्नी कुछ सन्तुष्ट होकर धीरे धीरे घर की तरफ चलीं। सवेरे उठके खाट पर गृहणी जी को न देख के खिलावन कुछ सोच में पड़ा हुआ था। यह हमे मालुम नही कि खिलावन की पत्नी के बिरहने सताया या आज सवेरे सवेरे जोरू जी की भाड़ू जूती से जान बची यह जान कर उसने अपने भाग्य को सराहा' पर दुःख या सुख चाहे जो हो, संसार की यावत वस्तुओं की तरह, खिलावन के लिए यह भी छिन भर का था क्योंकि सुरज की धूप के साथही गृहणी जी के पंच हत्थे शरीर की छाया आंगन में आ पड़ी, और उनके गले का स्वर सुन के खिलावन बिचारा सहम गया।

इस दिन दो-पहरिया को बसन्ती की पड़ोसन मुनिया

ग्वालिन अपनी विधवा पतोहू के साथ बसन्ती से मिलने आई। जब तक मुनिया का लड़का जीता था यह लोग आराम से थीं, पांच चार गवों का दूध होता था, उसे बेच कर और थोड़ी सी जमीन थी, उसकी जुताई बोआई से इन लोगों का गुजारा मजे में होता था। पर लड़के के मरने के बाद छोटी सी विधवा का बोझा सिर पर आ पड़ा, इस लिए स्वयम मुनिया जमीन वगैरे का इंतजाम नही कर सकी, दुसरे को ठेका देदिया। मामूली खजाना मिलने लगा, गय्या भी सब बिक गई, फकत दो एक रह गई। अब उन्ही का दूध बेच के किसी तरह दुःखम सुखम दोनों सास पतोहू अपना गुजारा करती थीं। सास पतोहू दोनों सदा बसन्ती के यहां आया जाया करतीं और जब कभी बसन्ती के बच्चे बिमार होते या उसका हाथ नही रहता तो घर का बहोत सा धन्धा भी कर देती थी, बसन्ती कुछ ऐसी धनवान तो थी ही नहीं जो इन लोगों की विशेष सहायता करती, पर हां साल आखरी मे जब धान कट के आता तो थोड़ा सा पड़ो सन के यहां भिजवा देती, कभी कभी बुढ़िया के लिए दो एक पुरानी धोती घर से निकाल देती या बुढ़िया कभी बिमार होती तो कभी जरा सा साबूदाना, मिसरी या क्यूनाइन की पुड़िया भिजवा देती थी। बिचारी गरीबनी इतने ही से बसन्ती बीबी का बड़ा उपकार मानती और विपद आफत के समय बसन्ती के स्नेह पूर्ण मीठे बचनो से अपना सब दुःख भूल जाती और उसे जी जान से चाहती थी। बसन्ती बीबी गांव छोड़ के कलकत्ते चली है, सुन के मुनिया बहोत कुछ रोई धोई। बसन्ती ने उसे समझा बुझा दिलासा दे और उसकी पतोहू को एक पुरानी धोती देके बिदा किया।

मुनिया के जाते ही, पनारू जुलहे कि स्त्री बसन्ती से मिलने आई। इसका रंग बड़ा काला और शरीर बड़ा दुबला पतला था, ऐसी काम धन्धा नही कर सकती थी, इस लिए हर दम साब की बकनी लात झाड़ू खाती थी। गए वर्ष इसके पीठ मे बड़ा दर्द हो गया था। जाड़े का दिन था, कमजोरी होने के कारण तालाव के

पानी का गगरा होके नहीं ला सकी थी, इस लिए सास ने दो तीन झाड़ू के ऐसे हाथ दिए कि बिचारी के पीठ का चमड़ा उपड़ आया। वह बिचारी किसके पास जाय। रोती हुई बसन्ती बीबी के यहां आई। बसन्ती के पास इतना रुपया कहां कि इसको दवा मंगवादे पर रोज धूप में बैठा के उसके पीठ मे किरासन तेल की मालिश कर देती थी। इसीसे पांच चार दिन मे पनारु की जोरु का दर्द जाता रहा। तभी से जब कभी फुरसत मिलती वह बसन्ती बीबी के पास आ बैठती थी।

हमें लिखते लज्जा आवती है कि पनारु की स्त्री के जाते ही, कहांरों के मुहल्ले से मानकी कहारिन बसन्ती के पास आ बैठी। मानकी का स्वामी पालकी ढोता है, अच्छी दो पैसे की आमदनी है, पर जो कमाता है शराब पी के उड़ा देता है, घर आके रोज जोरू को मारता उत्पात करता है। बसन्ती ने एक रोज बैजनाथजी से कह के उसे खूब डांट डपेट करवा दिया, तब से कुछ तो बैजनाथजी और कुछ बसन्ती के ताया रमानाथजी के डर से, शिवचरण कहार ने अपना जुल्म कम किया। मानकी विचारी की जान बची। आज मानकी अपने छोटे बच्चे को एक नया कुरता पहिना के गोद में ले के बसन्ती बीबी से मिलने आई है। आते ही बोली बीबीजी, अबकी तुमारे असीस से हाथ में दे चार रुपया आया है, बहोत दिनों से घर की छावनी नहीं हुई थी, सो अबकी साल नई छावनी डलवाई है, और देखो बच्चे के लिये प्यारे से यह नया कुरता लाई हुं, बसन्ती ने लड़के को आशीर्वाद दे के विदा किया।

इसके बाद गांव की यशोदा मिश्रानी, प्यारी मालिन, चमीटी धोबिन कई एक औरतें बसन्ती का कलकत्ते जाना सुन इसके पास आके रोने धोने लगीं। हम अब इन लोगों को बसन्ती बीबी के पास छोड़ के विदा होते हैं। हम में से बहोतों की बसन्ती से दो पैसे ज्यादे की आमदनी है। इसलिये आशा है कि जब हम कहीं से दूसरे जगह जांयगे, तो हमारे लिये भी कोई कोई आदमी मन में कुछ दुःखी होंगे, और भी उम्मीद है कि जब हम इस संसार से

विदा होंगे, तो जिसमें कुछ परोपकार का काम कर जा सकें, खाली यह नाम न छोड़ जांय कि हम पराई निन्दा, ईर्षा और दूसरों का सर्व्वनाश करके बड़े आदमी हुए हैं।

॥ नवम परिच्छेद ॥

लड़कई की सहेलियां।

शाम को बसन्ती ताई जी के यहां गई और बहोत दिनों पर लड़कई की सहेलीयां तारा और कामनी से मिल कर बड़ी खुश हुई। तीनों बचपन की सहेली, इस समय अलग अलग तीन गृहस्ती की स्वामिनी हुई है, पर बचपन का स्नेह, लड़कई की मुहब्बत सब के हृदय में ज्यों की त्यों अब तक बनी हुई है। बहोत दिनों पर तीनों का मिलाप हुआ है, इसलिये दोपहर से शाम तक का समय केवल सुसराल की बातें, गृहस्ती का हाल चाल और संसार के दुःख सुख की कथा ही में बीत गया। कामनी बचपन से ही बड़ी काली थी, बसन्ती से उसका रंग ज्यादे श्याम था पर तौ भी किसी जमाने में उसके चेहरे पर पानी था, अब भी सूखे हुए मुंह और दोनों शान्त आंखों से एक तरह का भोलापन टपकता है। पर मुंह बड़ा सूखा है, आंखे दोनों गड़हे में धंस गई हैं, गले की हड्डी दिखाई दे रही है, सूखे पतले हाथों में सोने के दो पोले कड़े पड़े हैं और गले में एक जंतर लटक रहा है। कपड़ा भी साधारण हैं, और सिर के सामने का बहोत सा बाल उड़ गया है। कामनी बचपन में जरा खिलली लड़की थी, अब भी बड़ी, सरल सीधी सादी है। सुसरार का धन्धा करती, दोनों वेला पेट भर खा ओढ़ती और चुपचाप बैठी रहती थी।

बसन्ती बोली। कामनी, आज न जाने कितने दिनों पर तुझसे मिली हूं, तू क्या अब चिन्हाई पड़े है?

कामनी। बसन्ती बेबे ? मिलना होय किस तरह, जब से ब्याह हुआ बांकीपुर में ही रही हूं। बाप के घर क्या आने मिले है।

तारा। क्यों कामनी बेबे, तुम कभी कभी बाप के यहां आ के रहती क्यों नहीं ? मैं तो देखो हरसाल देवी पूजे पर आऊं हूं।

कामनी। अरे भैन, तुम्हें क्या फिकर है, बीसों आदमी नौकर चाकर हैं, काम धन्धा कुछ झंझट ठहरा नहीं, जब जी चाहा पालकी पर चढ़ के चले आए। मेरे यहां तो सो होने का नहीं, बड़ी भारी गृहस्ती ठहरी, काम धन्धे का जो झंझट रहे है, और मेरे सुसरार में तो दाई मजदूरनी रखने की चाल नहीं है, हम में से कोई बाप के घर चली आवे तो बतलाऊ काम किस तरह चले ? यही जो अबकी आई हूं, मेरी एक ननद है उसे कितना हाथ पैर जोड़ के अपना काम सपुर्द कर आई हूं। दो चार दिन काम संभाल देगी, तीसों दिन तो करेगी नहीं।

बसन्ती। सुने हैं कि तुम लोगों की जमींदारी की बहोत आमदनी है और तुमारे पति बीसों गाड़ी घोड़े भी रखे हुए हैं, तो फिर घर में दाइ नौकर क्यों नहीं रखते ?

कामनी। नहीं बेबे आमदनी कुछ ऐसी वैसी नहीं है, सुने हैं कि खरच भी बहुत होए है, कुछ देना भी होगया है, सो मैं तो घर के भीतर रहूं हूं, मुझे सब पक्का हाल तो मालुम नहीं। हम लोगों का एक बगीचा है, वह तो वहीं रहे हैं, घर पर तो सायद ही कभी आवें हैं, तबियत भी ठीक नहीं रहे है, काम काज भी कुछ देखते भालते नहीं; मेरी तीनों चचेरी सास हैं, वही सब घर का इन्तजाम करती हैं। दाई किस तरह रखें, घर की तो यह चाल नहीं है, बड़ा नेम धरम है, बाहिर के आदमी से चौका किस तरह धुलावें। इसलिये घर की पतोहू हीं को सब धन्धा करना पड़े है।

बसन्ती। अच्छा भैन जब तुम लोगों को देना होगया है, तो खरच क्यों नहीं कम करती ? सुने हैं कि तुम्हारे स्वामी हजारों रुपया खरच करके साहब लोगों कों खाना खिलाते है, बीसों गाड़ी

घोड़े अस्तबल में बंधे रहे हैं सो इतना लंबा खरच पीछे क्यों बांध रखा है, तू अपने स्वामी को समझाती नहीं कि आमदनी देख के खरच करो।

कामनी। अरे राम। मैं उनसे यह सब बातें कह सकुं हुं ? वह बाहर अन्दर का काम काज सब समझते बूझते हैं। मैं बहू हो के किस मुंह से उनसे यह सब बातें कहुं ? पर हां जब कभी कदाच वह घर आवें हैं तो मेरी चचेरी सास इस तरह की दो एक बातें उनसे कहें हैं, सही।

बसन्ती। तो वह क्या कहें हैं ?

कामनी। कहें हैं कि हम लोगों का नामी घराना है, सारे शहर में जैसा नाम है, साहब लोग भी बुनियादी बड़ा घर जान के इज्जत करते हैं, सो क्या बिना साहब लोगों को खाना बगैर खिलाए काम चल सके है ? सुने हैं कि साहब सब उन्हें बड़ा चाहें हैं, यही क्या तो कमेटी ना क्या कहें हैं, बांकीपुर में जितनी है, वह सब मे हैं, और यही बिमारी का शरीर ले के रोज दोनों वखत गाड़ी चढ़ के साहब लोगों से मिलने जांय हैं, साहब लोगों में उनकी बड़ी खातिरी है सब बहोत माने हैं।

सीधी सादी कामनी के मुंह से उसके स्वामी की तारीफ सुन के बसन्ती ने जरा सा हंस दिया और अभिमाननी तारा ने ईर्षा से जरा भैांहें टेढ़ी करली।

बसन्ती। अच्छा कामनी, तेरे यहां आज कल मालिकिनी कौन है ?

कामनी। सास तो हैं नहीं, वही तीनों चचेरी सास ही मालकिनी हैं। बड़ी तो भलीमानुष है। किसी के बखेड़े में नहीं रहती, मझली ही जरा क्रोधी हैं। इसलिये सब उसे डरे हैं, बहूएं तो थर थर कांपे हैं। आहा उस दिन छोटी चचेरी सास की पतोहू चौके से कड़ाही भरी गरम दूध लाती हुई गिर पड़ी, गरमागरम दूध से बिचारी के हांथ पैर में छाले पड़ गए। इसका उसको कुछ खयाल नहीं था पर सास के डर से बिचारी के प्राण सूख गए। जब मझली चचेरी सास ने नहा के आ के

सुना कि दूध गिरा है, झाड़ू ले के बिचारी पर चढ़ दौड़ी, हाय हाय, बिचारी को ऐसा बका, मा बाप बखान के बिचारी को ऐसा गाली सुना दिया कि आंसू के मारे बिचारी को हिच की बंध गई। आहा, दस बरस की जरोसी लड़की, डर के मारे तीन दिन तक अच्छी तरह भात नहीं खा सकी।

तारा। तो क्या तुमें भी ऐसेही बके झके है?

कामनी। बकेगी नहीं, कुछ भूल होने ही से बके हैं, नहीं तो क्या गृहस्ती चल सके है?

तारा। तुमे जब बके है तो क्या करो हो?

कामनी। क्या और करूंगी भैन, चुप करके रोऊं हूं।

अभिमाननी तारा जरासा हंस के बोली। मुझसे तो भइ यह नहीं होता, मुझे बात बर दाश्त नहीं होती।

कामनी। हैं, बसन्तो बेबे' भला तुम्ही कहो, सुसरार में कोइ गाली दे तो क्या करें? एक बात का जवाब दें तो दस और सुनना पड़े है। इससे भइ यही अच्छा है कि सास हो या ननद हो जब किसी ने दो चार बात कही तो चुप चाप इस कान से सुन लिया, फिर उस कान से निकाल दिया। बात तो कुछ शरीर मे चुभ नहीं जाए है, क्यों बसन्तो बेबे?

बसन्ती। अच्छा करोहो भैन, बात सह लेना ही अच्छा है, पर हां सब से सही भी तो नहीं जाती। अच्छा, सुने हैं कि तुमरी छोटी चचेरी सास भी क्रोधी है।

कामनी। हां क्रोधी है तो सही, पर मझली से तो बके नहो है, दो एक बात कहके घर के भीतर कुंडा चढ़ा के बैठो रहे है, बाहर से मझली एक के बदलो सौ बात सुना दे है। मझली के पास कुछ रुपया भी है, कि नहीं, वह अपने लड़कों को अच्छी अच्छी मिठाइ खिलाती है और लड़को से कह देती हैं, कि जाओ छोटी चाची के घरमे बैठ के मिठाइ खाओ। छोटी बिचारी के लड़कों को मिठाइ मिलती नहीं बिचारे टुकुर टुकुर ताका करते हैं और छोटी के चौके के पास मझली ने एक मोरी

बनवाई है। छोटी कितना बोली बकी, मेरा छोटा देवर खुद उनके पास घर याद ले के गया, वह भी एक दिन घर आके अपनी मझली चाची को समझाने गए, पर वह भला किसकी सुने। मझली का बोलना बकना सुनके, वह भी गाड़ी पर चढ़ के बगीचे भाग गए, मझली ने आप खड़ी होके मजूरों से मोरी बनवाली तब पानी पिया।

तारा। शाबाश! औरत हो तो ऐसी हो।

कामनी। अरे तारा, तुमसे क्या कहूं, घर मे रात दिन जो लड़ाइ झगड़ा किच किच मची रहे है. कि सुन के भूत भी भाग जाए। पर हम लोगों को सब सह गया है, और मैं किसी के बीच में रहती भी नहीं, अगर किसी ने कुछ कहा भी तो चुपके सुन लिया और भुला दिया, मेरा क्या?

बसन्ती। तुमरी चचेरी सास सब तो विधवा न हैं। उनकी उमर क्या है?

कामनी। उमर कुछ ऐसी वैसी नहीं है। उनका और मेरी बड़ी चचेरी सास का उमर एक है, और मझली और छोटी उनसे पांच सात बरस छोटी है। मेरे ससुर के बाप के बड़े लड़के आज जीते रहते तो सत्तर बरस के होते। उनके होने के बाद पन्द्रह सोलह वर्ष तक और कोइ संतान नहीं हुई, उसके बाद तीन लड़के हुए। जिस समय मेरी सास तीस बरस की थी, उस समय मेरी चचेरी सास सब अभी नइ बहु आईं थी। इसके दो एक बरस बाद उनका पहला ब्याह हुआ था।

तारा। क्यों कामनी बेबे, तुमरी फुफेरी सास भी तो उसी मकान मे रहे है?

कामनी। हां वह तो है ही है, दो फुफेरी सास और एक ममेरी सास भी हैं, तीनों ही विधवा है, उनके लड़के लड़की, बहू नाती पोते सभी उसी मकान मे रहे हैं। एक ममेरी सास भी हैं, वह सधवा हैं, उनके स्वामी पूरब में ढाके न कहां नौकरी करने गए थे, वहां जाके न जाने और एक ब्याह कीया है कि

क्या, तेरह बरस से घर नहीं आया है, रुपया पैसा भी कुछ भेजा नहीं, इस लिए मामी जी अपने दोनों लड़कों के साथ यहीं रहती हैं। आज तीन चार वर्ष हुआ, यहीं इन दोनों लड़कों का ब्याह भी हुआ है।

तारा। वह लड़के दोनों कैसे हैं?

कामनी। छोटा तो अच्छा है, स्कूल में पढ़े लिखे है, पर बड़ा एक दम से अवारा हो गया है। साहब लोग से कह सुन के उन्होंने कहीं नौकरी करवा दी थी सो वह कुछ रुपया पैसा चुरा के भाग गया। सब कहने लगे कि साहब लोग छोकरे को जेलखाने भेजेंगे, पर उन्होंने साहबों से बहोत कुछ कह सुन के घर से नुकसान पुरा करके उसे बचाया। छोकरा घर में रहता नहीं, रोज शराब पीए है, जब घर आवे है तो रुपए के लिए मार कूट के जोरू की हड्डी चूर करे है, बहू बिचारी का रोना सुन के हम लोगों को भी रोना आवे है। बहू बिचारी रुपया कहां से लावे, जो दो एकगहना है, बन्धक रख के स्वामी को रुपया ला देती है, नहीं तो क्या बिचारी की जान बचती।

तारा। ओः तब तो तुम लोगों की गृहस्ती बड़ी भारी है।

कामनी। सो ही तो कहे हैं, तारा, तुम लोग बड़े आदमी के घर की पतोहू ठहरीं, तीनों दिरानी जिठानी तीन कोठरी में बैठी रहो हो, सास रसोई पानी का धन्धा देखें भालें हैं, तुम भला काम काज का झंझट क्या समझोगी बतलाओ। तुमारे दोनों देवर तो घर ही पर हैं, तुमारे स्वामी क्या कलकत्ते जा रहे हैं।

तारा। बरस भर से वह कलकत्ते ही में हैं, मुझे कलकत्ते ले जाने के लिए अपनी मा के पास आदमी भेजिन था, उनोने भी यही जेठ या आषाढ़ में भेजेने कहा है।

कामनी। हां, शिवनाथ कहता तो था कि तुमरे स्वामी ने किसी बड़ी सड़क पर बड़ा भारी मकान लिया है, बहोत कुछ खरच करके मकान सजाया है, उनके पास एक सादी और काले घोड़े की जोड़ी है, ऐसी सुने हैं बड़े बड़े राजो महा-

राजों के यहां नहीं है, और भी सुना है कि एक बड़े बगीचे के खरीदने की बात चीत हो रही है, बगीचा मानों इन्द्रपुरी है। वैसा फल फूल, संगमर्मर की जमीन वाला कमरा कलकत्ते में दुसरा नहीं है। तारा, तैं बड़े सुख से रहेगी। तारा के लाल लाल पतले होंठों में जरा सी मुसकराहट दिखाई दी, पर उज्वल नेत्रों पर मानों एक चिन्ता की छाया आ पड़ी, वह धीरे धीरे बोली कामिनी बेबे, अगर काली सफेद जोड़ी और संगमर्मर के घर से सुख होता होगा तो मैं भी सुखी होउंगी, पर भाइ भाग्य की बात कैान जाने? चतुर बसन्ती लख गइ कि यह कह कर तारा ने एक लंबी सांस ली।

थोड़ी देर तक सब चुप रहीं, फिर तारा बोली "बसन्ती बेबे, हम लोगों की लड़कई में गांव में एक साधू आया था, तुम्हें याद है? उसने हम लोगों का हाथ देख के क्या कहा था याद है"।

बसन्ती। नहीं मुझे तो याद नहीं आता।

तारा। एँ, बेबे तुम मुझसे बड़ी हो, तुम्हें याद नहीं? शायद कामनी बेबे को याद होगा।

कामनी। नहीं तो, मुझे भी कुछ याद नहीं।

तारा। तब शायद वह बात मेरे मन में लगी थी, इसीलिये मुझे अब तक याद है। ठीक बारह बरस हुआ होगा, यही वैशाख महीने में एक दिन संध्या के बखत हम लोग खेल रहे थे, जरा जरा अंधेरा हो आया था, और जरा जरा चांदनी खिली थी कि एक जटाधारी साधू उसी जंगल के भीतर से निकल आया। हम सब डर से कांपने लगीं, पर साधू पास आ के बोला "कुछ डर नहीं है, तुम लोग पैसा ले आओ, हम तुमारा हाथ देखेंगे। मुझे मां ने उस दिन चार पैसा दिया था, सोइ डर के मारे मैंने साधू को दे दिया, तब साधू खुश हो के मेरा हाथ देख के बोला 'बेटी, तैं बड़े आदमी के घर की बहू होगी, कुछ फिकर मत कर'। तब कामनी बेबे भी हाथ दिखाने के लिये घर से एक पैसा ले आईं, साधू पैसा ले के उसका हाथ देख कर बोला

"तेरे धन दौलत नहीं होगा, पर बड़े घर की बहू होगी।".

बसन्ती ने हंस कर कहा। "और जटाधारी साधू माहाराज ने मुझे क्या कहा"।

तारा। सोह, कहूं हूं, तुमरी मां पानी ले ने गई हुई थीं उनके पल्ले पैसा उसा रहता भी नहीं था सो तुम खाली हाथ हाथ दिखाने गई। साधू हाथ देख के बोला, "बेटी तेरे भाग्य में पैसा भी नहीं है, बड़ा घर भी नहीं है। गरीब के घर की गृहस्ती करके पेट भर भात खाएगी"। यह कह के और पैसे सब तुमरे हाथ में रख के साधू चला गया।

बसन्ती ने हंसते हुए कहा, साधू ने तो ठीक कहा था, हां अब याद आया, गांव के लोग उसे रामप्रसाद सरस्वती कहते थे।

तारा। हां, हां, वही सरस्ती महाराज। जब तुमरी मां तलाब से जल लेके आई तो मैं ने उनसे सब कहा। तब वह आंचर से तुमरे आंसू पोछ के बोली "अच्छा क्या हुआ, बेटी जीए, ब्याह हो, गरीब के घर की दुलारी हो के रहेगी, धन्धा करके पेट भर भात खाएगी, क्या हुआ सुख से तो रहेगी"।

बेटा, धन या बड़े घर से सुख नहीं होता, मुझे धन या बड़ा घर नहीं चाहिए। बसन्ती बेबे, वही बात रह रह के मेरे मन में आती है कि धन या बड़े घर से ही सुख होता तो दुनियां में फिर किसी को किसी बात की कमी नहीं रहती।

बसन्ती। ऐं, यह क्या तारा! लड़कई की एक बात याद करके तुम आंसू क्यों बहा रही हो। तुझे भला किस बात की कमी है? तू ही अगर फिकर करेगी, तो फिर हम लोगों का कहां ठिकाना लगेगा।

तारा। नहीं बेबे मुझे दुःख कोसी बात की नहीं है। दुःख से नहीं रोती हुं। पर न जाने क्यों कलकत्ते जाने की बात याद करके आज के दिन से मन कैसा २ कर रहा है। आगे की बात भगवान जाने। अच्छा बसन्ती बेबे तुम भी तो कलकत्ते चली हो, और कामनी के स्वामी भी तो कलकत्ते जाय आयें हैं। उनके

संग न हो। कामनी भी चली आवेगी । मेरे मन में रह रह के यही उठे है कि लड़कई में जैसी हम तीनों सगी बहिन सी थीं, वैसी ही सदा आपुस में वर्तती रहें ।

एका एकी तारा के मन का विकार देख के, बसन्ती और कामनी कुछ चिन्तित हुई, उन्होंने आंचर से तारा के आंसू पोंछे और बहोत कुछ दिलासा दे के एक पहर रात गए अपने अपने घर आई ।

---:o:---

॥ दसवां परिच्छेद ॥

कलकत्ते की यात्रा ।

इसके कई एक दिन बाद बैजनाथ, सभी बाल बच्चों के साथ कलकत्ते रवाने हुए । घर से चलने के एक रोज पहले बसन्ती गांव के सारे नाते रिस्ते और मेली मिलापीयों से मिल के बिदा हो आई । कुन्दनपुर में उस रोज बहोत सा आंसू बहा ।

जाने के दिन बसन्ती फिर एक दफे ताईजी से बिदा होने गई । ताईजी सचमुच बसन्ती को जी से चाहती थीं, इसलिये उसके जाने से उनके जी में सच मुचही दुःख हुआ । बहोत कुछ रोई धोई, कहने लगी "आ हा बेटी तुम लोग मेरे पेट की बच्ची ठहरी, मुझे जैसी तारा तैसी तूं और चंपा । अहा तुम लोगों को इसी हाथ से पाला पोसा बड़ी किया तुमें छोड़ते जी कैसा कैसा करे है । अच्छा बेटा जाओ नारायण जी करें बैजू की कलकत्ते में कोई अच्छी नौकरी लग जाय, तुम लोग राजी खुशी रहो, सुनके कलेजा ठंडा होगा । तारा बेटी भी ससुरार गई है, उसे भी सुने हैं कि कलकत्ते ले जायगा, यही जेठ महीने में ले जाने के लिये मेरा जमाई जिद्द कर रहा है । सुने हैं कि उसने कलकत्ते में भ एक नया घर खरीदा है, बगीचा लिया है घोड़ा गाड़ी लिया है, वही मुकुन्द जो के घर का मिट्ठू उस रोज कह रहा था कि वैसा घोड़ा गाड़ी शहर भर में

किसी के पास नहीं है । क्यों न हो ? रघुनाथपुर के जमींदार का घराना है कि हंसी खेल है ? इतना रुपया, ऐसी अमीरी चाल चलन तो और कहीं है नहीं । अभी गए महीने मैं समधिन के घर गई थी, समझे कि नहीं, ले के नीचे से तितल्ले तक सारा बिल्लौर का झाड़ टंगा हुआ है । और नौकर चाकर चोज बस्त की तय्यारी क्या कहूं । उस दिन पचास साठ औरतों को खिलाइस, समझे कि नहीं सब को चांदी को थाली गिलास कटोरी में खाने का परोसा गया । और मेरे समधिन की बात चीत भी कैसे ओठी कि सुनके आदमी का जी पिघल जाय। अरे भइ उन लोग बहोत बड़े आदमी हैं, उनकी चाल ही निराली है । सुने हैं कि मेरे दामाद ने भी नया घर लिया है और झाड़ फानुस, दिवालगिरि से खूब सजाया है, समझे कि नहीं कुरसी गलीचा मखमली चद्दर, न जाने सोने चांदी संगमर्मर की कितनी चीजें सजाइस है कुछ गिनती है । तुम लोग तो आंख से देखोगी भी, मैं ने तो इन आंखो से देखा भी नहीं कलकत्ते से एक आदमी आया था, वही कहता था कि............... ....इत्यादि इत्यादि ।

अच्छा बेटा जीती रहो मेरी तारा से मेल मिलाप होगा दोनों जनी बहिन के माफिक रहियो । अहा ! बेटा, तुम्ही लोगों से मेरी घर गृहस्ती हैं, तुम लोगों के बिना किस तरह रहूंगी ? (रोना) अच्छा बेटा जा, तारा भी जल्दी ही जायगी, उनसे मिलियो जुलियो न हो कुछ दिन तक उन्हीं के घर जा रही यो उनका घर तो कुछ ऐसा वैसा नहीं है, बड़ा भारी घर दरवाजा है समझे कि नहीं ....इत्यादि इत्यादि बहोत कुछ आंसू बहा के ताइजी से बिदा हो के बसन्ती अब की दफे शिवनाथ जी की माता से बिदा होने गई। जब से शिवनाथ जी कलकत्ते जाने लगे, उनकी माता अकेले ही घर में रहती थीं । शिवनाथ जो ने बहोत कुछ कह सुन के एक दाई रख दी थी पर रसोई पानी के लिये एक मिसरानी रखने में वह किसी तरह से भी राजी नहीं हुई । घर खूब लंबा चौड़ा था । बाहर भी एक पक्की कोठरी थी । शिवनाथ जी जब कलकत्ते

से आते तो यहीं अपना पोथी पतरा रखते और पढ़ते थे । आंगन के भीतर भी दो तीन पक्की कोठरी थी और एक कच्चा रसोंई घर था । पिछवाड़े एक छोटा सा तालाब था, शिवनाथ उसे हर साल साफ कर वाया करते थे ।

शिवनाथजी की माता का रंग गोरा, कद लंबा और शरीर दुबला था । पति के मरने कें बाद से वह शरीर के तरफ कुछ ध्यान नहीं देती थी, इससे और भी दुबली हो गइ थी । क्या जाड़ा क्या गरमी हर मौसम मे इड़े तड़के उठ कर स्नान करतीं और फकत एक रामनामी के सिवाय दूसरा चदरा नहीं ओढ़ती थी । स्नान करके हर रोज दो तीन घंटे तक पूजा ध्यान करती, फिर अपने हाथ से रसोंइ करके खाती । पति की मृत्यू और कामनी के दुःख की चिन्ता से विधवा दिन पर दिन सूखी जा रही थी, सिर के सामने के कुछ केश सफेद हो आए थे, बुढ़ौती के चिन्ह एक एक करके प्रगट हो रहे थे । सारा दिन इश्वरी पाठन और परमात्मा के याद मे बीतता था । शिवनाथ को ज्ञानी मानी विद्वान देख के मरुं, बस इसी भरोसे पर विधवा के जीवन का दीया टिम टिमा रहा था ।

बैजनाथ, बसन्ती और चंपा को असीस देके बृद्धा बोली । जाओ बेटा, नारायण जी तुमरा भला करें, तुम लोग फलो फूलो, शोभू बेटा कुल का नाम रखे, यही आंख से देख के मरुं । इस उमर में मेरी और कुछ मनोकामना नही है । देखियो बेटा शोभू, इन लोगों को खाने पीने का कुछ दुःख न होय, बसन्ती के दोनों बच्चों को जिसमे कोइ तकलीफ न होय, बेटी चंपा अभो बच्ची है, उसे कुछ तकलीफ़ न होने पावे

चंपा के नाम लेते ही बुढ़िया की आंखों से आंसु की धारा बह चली, बिचारी बैध्यव्य यंत्रना खूब जानती थी, हाय ! इस अनजान बच्ची को नरायण जी ने ऐसा कष्ट क्यों दिया ?

और और बहोत सी बात चीत के बाद शिवनाथ जी की माता ने बसन्ती और चंपा को बहोत कुछ सद उपदेश दिया,

बैजनाथ को कलकत्ते जा कर हुशियारी से रहने को कहा और शिवनाथ को मन लगा के लिखने पढ़ने की ताकीद की। अंत को बूढ़ा ने बच्चों को फिर से असीस दिया। सब ने बूढ़ा की चरण की धूल सिर पर चढ़ाइ। शिवनाथ प्रणाम करके बोले। माता जी आपकी सारी बातें मैं मन मे गांठ बांध के रखूंगा, यत्न से पालन करूंगा, जिस दिन आपकी आज्ञा उल्लंघन करूं उस दिन ईश्वर करे मेरी जिन्दगी न रहे।

सब लोग चले गए। बूढ़ा आंखों मे आंसू भर कर जब तक दिखाइ दिया, इन लोगों के तरफ देखती रही, अन्त को शुन्य हृदय से केवल रास्ते को तरफ बहोत देर तक देखती देखती चलीगइ। बैजनाथ जी ने घर आके देखा कि राम खिलावन आया है। कलकत्ते जाने के पहले बैजनाथ जी ने अपनी जमीन उसे बंटवारे मे देदी थी, इसी लिए उपकार मान के आंखों में आंसू भरे हुआ, खिलावन फिर से महाराज को एक दफे दंडवत करने आया है। खिलावन के साथ उसकी स्त्री भी आइ थी, और एक दोने मे चीनी का जमाया हुआ दही भी लेती आइ थी। बसन्ती ने बहोत कुछ मना किया, पर कृषक पत्नी ने एक न सुना, बोली कि गाड़ी मे जगह न होगी तो मैं हाथ मे करके स्टेशन तक पहोंचाए आंउगी। अस्तु चंपा गाड़ी मे चढ़ के गोद मे दही का दोना लेके बैठी गाड़ी के भीतर दोनों बच्चों को लेके बसन्ती और चंपा बैठीं। बैजनाथ और शिवनाथ दोनों ने पैदल हो चलना पसन्द किया। बैल की गाड़ी धीरे धीरे चलती है, सबेरे कुंदनपुर से चल के दिन के ग्यारह बजे यह लोग आरे के स्टेशन पर पहोंचे।

स्टेशन के पास एक धरमशाला थी सब लोग वहीं ठहरे। जलदी जलदी रसोंई पानी करके खा पी तय्यार होगए। आखरी दफे चम्पा बीबो ने भात के साथ कुन्दनपुर की मीठी दही भी खा ली।

दिन के तीन बजे गाड़ी छूटती थी, अस्तु बैजनाथ जी प्लेट फार्म पर टहलते हुए यात्रियों का समागम देखने लगे। ठीक तीन बजे गाड़ी खुली, दुसरे दिन सबेरे सात बजे यह लोग हबड़े स्टेशन

पर पहोंच गए। शिवनाथजी ने एक गाड़ी किराए कर ली और सब लोग तुलापट्टी शिवनाथ के डेरेकी तरफ चले। गंगा जी के पुल पर सैकड़ों जहाजों के मस्तुल देख के बसन्ती चकित रह गई और दूसरी तरफ कलकत्ते के घाट और मकानों के कतार देख के उसके ताज्जुब का ठिकाना न रहा । गाड़ी बड़ी बजार की तरफ चली शिवनाथ को कुछ कपड़ा वगैरे खरीदना था, इसमें कुछ देरी लगी। बसन्ती और चम्पा कभी कुन्दनपुर के बाहर नहीं गई थी, इसलिये पहले पहल हिन्दुस्तान का सब से बड़ा शहर देख के दोनों चकरा गई। सड़क के दोनों तरफ दुकान, कहीं कहीं पतली गलीयों में भी दोनों तरफ दो मंजिले तिमंजिले दुकानों से रस्ता अंधेरा हो रहा है। न जाने कहां कहां की कितने तरह की चीजें सजी हुई हैं; बिलायती थान, देशी कपड़े, बनारसी साड़ी, बम्बई की साड़ी, चीना सिल्क, छींट, अलवान तरह तरह की सामग्रीयों से दुकाने सजी हुई हैं खिलौनेकी दुकानमें तरहर के खिलौने, हलवाइयोंके दुकानोंमें मिठाई की कतारकी कतार थालीयां लगी हुईहैं, कड़ाही चढ़ी हुई है, किताबों की दुकानों में अलमारी में जिल्द बंधी किताबें रखी हुई हैं। सिल जो एक खरीदने से तीन पुश्त चले, बसन्ती ने सैकड़ों देखी, लोहे के दुकानों में तवा, झरना, सड़सी न जानें कितनी चीजों से दुकान भरा हुआ है, बर्तन की दुकानों में सजे हुए कांसे पीतल के बर्तनों की चमक से आंख चौंधियाइ जाती है। कांच की दुकानों में शीशा लंप, ग्लास न जाने कितनी सुन्दर सुन्दर चीजें चमक दमक रही हैं, काठ के दुकानों में अगणित काठ की चीजें सजी हुई हैं, बढ़ई सब छील रहे हैं, तराश रहे हैं। पालिश कर रहे हैं, बक्स की दुकान में टीन का लोहे का, चमेड़ा का बक्स सब सजा हुआ है, और और दुकानों में बसन्ती और चम्पा ने न जाने कितने तरह की चीजें देखीं जिसकी कुछ गिनती नहीं। रस्तों में भीड़ इतनी कि गाड़ी चलना मुशकिल, भीड़ के मारे आदमियों को आगा पीछा नहीं सूझता, गाड़ी की आवाज, खरीददार, फेरी वाले के कोलाहल के मारे कान बहिरा हुआ जाता है। बसन्ती मनोमन सोचने लगी,

शहर क्या है आदमियों का समुद्र है। इसमें आदमी कहां से आते, कहां जाते हैं और इतनी चीज ही कौन खरीदता लेता है, कहां चली जाती है। आज कुन्दनपुर नाम के एक छोटे से गांव से बहन्ती इस विशाल मनुष्य समुद्र में लीन होने आई है, उसे क्या इस महानगरी के किसी कोने में जगह मिलेगी? सब सड़क के दोनों तरफ की इन्द्रप्रसाद तुल्य इमारतों को देख कर उसकी बुद्धि चकरा गई। शिवनाथ ने बड़े लड़के को गोद में लिया हुआ था, बैजनाथ जी छोटे लड़के को गोद में लिये चुपचाप कलकत्ता नगरी का प्रताप देखते हुए चले जा रहे थे और मनोमन सोच रहे थे कि क्या मेरा उद्देश्य सफल होगा? आगे की बात कौन जाने? शान्त निस्तब्द कुन्दनपुर की कुटिया छोड़ कर आज इस महानगरी में आया हुं, यहां के चंचल मनुष्य समुद्र के किसी निराले गुफा में क्या मुझे खड़े होने को जगह मिले गी।

———— o ————

॥ ग्यारहवां परिच्छेद ॥

कलकत्ते का बड़ा बजार।

बसन्ती। चम्पा, चम्पा, जरा इधर तो आ भैन।

चम्पा। क्या बेबे, मुझे बुलाओ हो?

बसन्ती। हां भैन, वह जो एक कपड़ा धो के रखा है, छत पर सूखने डाल आ तो, तब तक मैं कूवें से दो घड़ा पानी निकाल के चटपट नहा लूं। धूप निकल आया, ग्वालिन आती होगी चुल्हा सुलगाना है। कलकत्ते के कूवें के पानी से नहा के जी नहीं भरे है, इससे हम लोगों के गांव की ताल दिग्घी अच्छी, जिसमें उतर के गोता लगा के नहाया जाए है, और न जाने कूवें के पानी में एक तरह का कैसा तो बो आवे है।

चम्पा हंस के बोली, तुझे ते बेबे कलकत्ते की सभी चीज बुरी लगे है। क्यों यहांका कल का पानी कैसा सुन्दर है। दाई एक घड़ा देज जावे है कैसा साफ निर्म्मल और मीठा होए है।

बसन्ती । रम, मैं न तेरे कलकत्ते की तरीफ़ और खुबी नहीं जानती।

चम्पा । क्यों बेबे, तुमने बुरा क्या देखा बतलाओ, कितना बड़ा शहर, कैसा बजार, दुकान हाट, गाड़ी घोड़े कितनी तरह की चीजें आदमी नौकर चाकर यह सब क्या कुन्दनपुर में कभी देखा था। ऐसा दो तल्ला घर क्या कुन्दनपुर में था ?

बसन्ती । न हो न सही, हमरे कुन्दनपुर का घर ही सोने का घर है। चारो तरफ़ हिलने डुलने का जगह तो है, सांझ सबेरे ठंडी साफ हवा तो शरीर में लगे है, दोपहरिया को आंगन में धूप तो आवे है, दो चार नीबे का पेड़ आम का पेड़ तो है। यहां क्या है बतलाओ। गाड़ी घोड़ा जिनके होगा, उनको होगा, और दो तल्ला पक्का घर ले कर क्या धो के पीऊं ? घर में न हवा खेले न धूप आवे, महल्ले वाले पड़ोसी पड़ोसी किसी से मिलना जुलना नहीं, पालकी बिना घर से निकलना मुश्किल, अरे रम ! यह क्या ! जैसे पिंजरे में पंछी कैद हो।

चम्पा । क्यों बेबे उस दिन हम लोग गाड़ी चढ़ के कितना घूम फिर आए, चिड़ियाखाने में शेर भालू सब कुछ देखा। गाड़ी करके बाहर निकलने ही से न आने कितनी चीजें देखने में आवें हैं।

बसन्ती । नहीं भई मुझे तो गाड़ी चढ़के फिरना अच्छा नहीं लगे है, अपना कुन्दनपुर ही लाख दरजे अच्छा। सांझ सबेरे तालाब घाट पर आती जाती, वही अच्छा था। वहां सब से भेंट मुलाकात होती, सब के घर आना जाना होता, सब कोई अपने को कितना चाहते, पूछते थे। यहां कौन किसे पूछे और कौन किसे जाने ?

चम्पा । सो क्या बेबे, एक ही दिन में कोई थोड़ी ही जाने सुनेगा। देखो न उस दिन देवी बाबू के घर की दाई आई थी, हम दोनों को बुलावा आया था, और कल देखो गोपाल बाबू ने कितनी मिठाई वगैरे भेजी थी।

बसन्ती । हां क्यों नहीं रहते रहते, भेंट मुलाकात तो हो ही थी।

घर बात क्या जावे है, चम्पा, उन लोग बड़े आदमी ठहरे। हम लोग ठहरे गरीब, उन लोगों से बराबरी के कै दिन निभेगा; उन लोग मुंह उठा के हम से दो बात करें है यही उनकी बड़ी भल मनसाहत समझो। हां, अब कलकत्ते आई हुं, तो दो एक जने से मेल मिलाप हो ही गा, इसमें क्या सन्देह है।

चम्पा। और शिवनाथ जो भी तो रोज संध्या को हम लोग के यहां आवे हैं, कितने तरह की बात चीत करे हैं, कितने आदमियों का हाल सुनावें हैं सेसे मुझे उनकी बातें सुनते बड़ा अच्छा लगे है।

कुसुम्ती। आहा। शिवनाथ ऐसा लड़का क्या आज कल दिखाई दे है? इकजामिन के लिये उसे दिन रात पढ़ना लिखना पड़े है, तौ भी हम लोग कैसे हैं पूछने खबर लेने रोज आवे है। कलकत्ते आ के हम लोगों का मन उदास न हो जाए इसलिये रोज शाम को एकदफे आवे हैं। जब तक उसके घर थे उसका पढ़ना लिखना सब हवा होगया था, खाली हम लोगों के आराम के फिकर में घूमता था। उसे न रुपए का घमण्ड न पढ़ने लिखने का अभिमान और जी में माया दाया कैसी है उसके ऐसा लड़का आज कल के जमाने में होना मुशकिल है।

चम्पा। लो सेसे ग्वालिन आ गई।

बसन्ती। क्योंरे आज जरा अच्छा दुध लाइ है कि बस कल की तरह निरा पानी ले आइ है। कलकत्ते मे तो कल के पानी की कमी नही है और तुम लोगों को दूध की भी कमी नहीं है। बस दुध का रंग रखने ही से हुआ?

ग्वालिन। नही बीबी जी, तुम लोगोंके घर क्या ऐसा वैसा दूध दिया जा सके है? देखो न, पीने ही से अच्छा बुरा मालुम पड़ जायगा।

बसन्ती। अरे बहोत देखा है, आहा, गांव में घरमे सेर तीन पाव दूध होता था वही लड़के लोग पी के अघा जाते थे। यहां तु सवा सेर दूध दे है, तिसपर भी लड़कों का पेट नही भरता, और कड़ाही में जब दूध डालूं हुं तो दूध तो नही, पानी की तरह झोंझो हो जाए है।

ग्वालिन । अरे बीबी जी गांव गंवई ऐसा दूध यहां कैसे मिले बत-
लाओ ? वहां गऊ घर के खाय है, अच्छी तरह रहे है । हम लोगों की घर बंधी गऊ क्या वैसा दूध दे सके है ?

बसन्ती । और जो कल थोड़ा सा दही लाने कहा था, लाई है ?

ग्वालिन । हां, यह लो दही लो ।

बसन्ती । हाय हाय, यही चार पैसे की दही है ।

ग्वालिन । और नहीं तो क्या, चार पैसे की दही और कितनी होगी ? अपनी दाई के हाथ बजार से मंगवा के देख लो, इससे बेसी लावे तो दाम मत देना । अरे, बीबीजी, हम लोग तुमारे आसरे है, क्या तुमी को ठगेंगे ?

बसन्ती । अनी, चंपा, आ देख तेरे दुलारे कलकत्ते की चार पैसे की दही देख ? थोड़ा सा पानी मिला के खाइयो वहिन नही तो पूरा नही पड़ेगा, कौन है, दाई आई है ?

दाई । हां, बीबी जी, कहो क्या है ?

बसन्ती । अच्छा आज ज़रा जलदीही बजार जाइयो । वह दस बजे बाहर जाने कह गए हैं । सौदा सलुफ जलदी से ले आइयो । न जाने क्या तरकारी ले आती है, कुछ ठीक नही ? क्या परवर भिंडी कुछ नही मीले है ?

दाई । मिले क्यों नही है बीबी जी, जो दाम है, क्या हाथ लगाया जाय है ? छः आने सेर परवर, पैसे को चार ठो भिंडी ।

बसन्ती । अरे तू कहे क्या है ? क्या कलकत्ते के लोग खाए पीएं नही है, खाली गाड़ी घोड़े पर चढ़ के फिरें हैं ?

दाई । खांए क्यों नही है, बीबी जी । जो जैसा खरचे हैं, वैसा खाय है । एक एक लौवे का दाम पांच पैसा छः पैसा, दो आना । क्या कहूँ, कलकत्ते के बजार मे तो सदा आग लगी रहे है । कलकत्ते मे क्या मेरे ऐसे गरीब आदमी का रहना हो सके है, यही तुम लोग दोनों बेला पेट भर भात देदो हो सोही पड़ी हूं, नही तो क्या कलकत्ते मे रह सकती ?

बसन्ती । अच्छा भई दो आना पैसा ले जा, जो अच्छा समझियो ले

लाइयो । दे। पैसे का आलू, एक पैसा की मूली, धेले की इमली और एक पैसा का लौवे का या चौलाई का जाहे जा साग होय ले आइयो ! हरे राम ! लौवे का साग भी यहां पैसा देके लेना पड़े हैं, घर के मैदान पर इतना लौवे का साग होता था कि खाते नहीं अघाते थे । दे। पैसे की तुरई और दो एक पैसे का निमुवा या बैंगन जो अच्छा मिले लेती आइयो ।

मुहा धो के, ग्वालिन को विदा कर, दाइ को पैसा दे, बसन्ती चौके मे गई और चुल्हा सुलगा के दूध औंट के उपर ले गई। लड़के दोनों उठे थे, उने दूध पिला के बिछौना चटाई उठा के रखा और घरमे झाड़ू बुहार दिया । थोड़ी देर बाद दाइ बजार से तरकारी वगैरे ले आई, तब दोनों लड़को को दाइ के पास छोड़ के बसन्ती फिर चौके मे चली गई । घरमे सिवाय एक दाइ के और कोइ नही था,दोनों बहिन आपही रसोंइ पानीका सब धन्धा करती थीं । नए घरमें आके चंपा बीबी भंडारी बनी हैं, बड़ी खुशी खुशी हंडिए मे से नोन, तेल, मसाला निकाल के चौके मे ले आइ, तरकारी बनाके चावल धो के, बेबे के सामने ला रखा । बसन्ती ने सबे हाथ रसोंइ चढ़ा दी ।

पाठकों को मालुम हो गया होगा कि पहले कलकत्तें मे आके बैजनाथ कुछ रोज तक शिवनाथ ही के डेरे पर रहे, पर पीछे से उनोने उनी के घर के पास बारह रुपए महीने पर एक छोटा सा दो तल्ला मकान किराए ले लिया और उसीमे सपरिवार आ रहे । शिवनाथ ने इस फजूल खर्चीं के लिए उने बहोत कुछ रोका समझाया अपने यहाँ रहने के लिए उनका बहोत हाथ पैर जोड़ा पर शिवनाथ के लिखने पढ़ने में विघ्न होगा इस लिए उसके यहां रहने में वह किसी प्रकार से भी राजी नही हुए । इस लिए लाचार हो, शिवनाथ जी ने खोज खाज के बारह रुपए महीने का एक निहायत छोटा सा घर किराए ले दिया । शिवनाथ जी कलकत्ते मे बहोत दिन से रहते थे, इस लिए बहोतों से जान पहिचान भी हो गई थी । बैजनाथ से उनोने इन सब लोगों का परिचय करवा

दिया, और हाइकोर्ट के वकील हैं, कोइ किसी बड़े आफिस के बड़े बाबू हैं, कोइ पुश्तैनी रईस हैं, किसी के जर जमादाद के बारे मे सन्देह है, पर न ड़ी घोड़े की कमी नही है। किसी ने नए आए हुए शिष्टाचारी बैजनाथ जी से कुछ खुब ही अच्छा व्यवहार किया खातरी की, बैठाया, किसी ने बड़े बजाए झाड़ फानुस और मखमली कुर्सी से शोभित बैठक खाने मे बैजनाथ जी को आने की इजाज़त दे के और दो एक दम्भ-पूर्ण बातें कह के अपना बड़प्पन दिखलाया, किसी ने बैजनाथ जी की बात चीत और सदाचार से खुश होके शिवनाथ के साथ उन्हे दो एक दिन खाने का न्योता दिया और कोइ महाशय नई सभ्यतानुसार बैजनाथ जी का 'एकूएनटैंस' फार्म करके, भेरी हैपी, हुए। किसी काम काजी बड़े आदमी के सुसज्जित बैठके मे बहोत देर तक बैठ कर भी बैजनाथ जी को उनके मुलाकात नसीब नही हुए, और कोइ बड़े आदमी काम काज के बड़े झंझट में थे, जोड़ी पर बाहर जाते वखत फिटन से मुह बढ़ा के हंसते हुए बैजनाथ जी से बोले "आप कलकत्ते आ कर तुलापट्टी में ठहरे हैं, सुन कर मुझे बड़ी खुशी हुइ। आज तो मैं बड़ा बीजी हुं पर मैं 'होप' करता हूं कि दो एक दिन मे फिर अच्छी तरह से मुलाकात होगी। और अगर आप मेरा बाग देखा चाहें तो शनीवार शाम को वहां आ सकते हैं। एक बड़ी सैल है। वहां मैं आप को 'रीसीभ' करके बहोत 'हैपी' होउंगा। गड़ गड़ाती हुइ जोड़ी चली गइ, इवेलर घोड़ों की टापों से दो एक कीचड़ का छीटा बैजनाथ जी के कपड़े पर पड़ गया। बैजनाथ इन बड़े आदमी की बातों से अपने को धन्य मानते हुए धीरे धीरे घर आए।

बड़े बजार की सैल करते करते, बैजनाथ जी ने कलकत्ते माहानगरी के दुनिया के बाजार का भी कुछ कुछ परिचय पाया। लड़कपन में वह जानते थे कि कलकत्ते का बड़ा बजार ही सब से बड़ा और लंबा चौड़ा है, पर अब आके देखा तो बड़ा बजार से भी बड़ा कलकत्ते में एक बजार है, जिसमें ढेर के ढेर माल गुदाम में भरे हैं, जिने खरीदने के लिए दीए के पतंगे की तरह लोग

टूटे पड़ते हैं। लड़कपन में हिन्दी की दूसरी किताब में उन्होंने पढ़ा था कि विद्या ही से इज्जत होती है, पर उनका यह बाल स्वप्न यहां शीघ्र ही हवा हो गया क्योंकि यहां इन्होंने देखा कि सम्मान, इज्जत, सेर, मन के हिसाब से बजार में बिक रही है कोई, साहबों को, अफसरों को खाना खिलाके, महफिल दिखाके, कोई गार्डन पार्टी देकर, कोई द्रव्य देकर, कोई दूसरे के पैसे से, हाथ पसार पसार कर यह अमृत खरीद रहे हैं और बड़े आनन्द से आंख मूंद कर इसे पान कर रहे हैं। सजे सजाए, सुन्दर बैठक खाने, बड़े बड़े महलों के झाड़ फानूसों से यह अमृत की बूंदे झर रही हैं, तस्वीर और आयने में इसका प्रतिबिंब दिखाई दे रहा है, सोनहले शराब के साथ उक्त अमृत मिलकर एक जान हो रहा है, तवायफ और वेश्याओं के कोयलों को मात करने वाली सुरीली तानों से इस अमृत के झरने का शब्द सुनाई दे रहा है! मनुष्य रूपी मक्खियां झुंड की झुंड इस अमृत की तरफ उड़ी चली जा रही हैं। कभी कुक * कंपनी के यहां से गड़ गड़ाता हुआ यह अमृत निकला चला आ रहा है, कभी असलर † कंपनी की दुकान में चमक दमक रहा है, सारा संसार इसकी चमक दमक से रोशन हो रहा है, और कभी महाप्रभू कर्त्तारों के यहां से बड़ा बेग से इस अमृत की धारा बहकर निकल रही है, जितने बड़े आदमी, पंचायत के बड़े बड़े समाज पति पंच चौधरी, देश के बड़े बड़े इज्जतदार माननीय, आनरेबल, इस धारा में खुशी खुशी नहा रहे हैं, चुभकी खा रहे है, डूब रहे हैं उतरा रहे हैं, अपने जीने को धन्य मान रहे हैं! और कभी कभी तो विलायती 'पैक' किया कल से कसा हुआ मोहर लगाया हुआ अछूता बकसों में भर भर कर यह माल आ रहा है, दो एक फोकले, पोले या गिलट की हुइ चीजों के संग ढेर को ढेर खुशामद मिला कर विलायती सौदागर लोग देशी बुद्धिमानों को भुलावा देकर यह

---

* कलकत्ते में गाड़ी घोड़ों का एक अंगरेज सौदागर।

† कलकत्ते में विलायती कांच की चीजों का एक अंग्रेज सौदागर।

बेच रहे हैं। और मज़ा यह देखिए कि इस बाजार में इस माल की कदर कैसी है! "असली बिलायती सम्मान पत्र"! "असली विलायती पदवी"! इसी गौरव ध्वनि से बजार गुलजार हो रहा है।

इस लंबे चौड़े बाजार में कहीं "देशहितैषिता" "समाज संशोधन" वगैरः बिलायती माल बिलायती दाम से बिक रहा है, इस मंडी में बड़ाही गोलमाल भीड़ भाड़ और आदमियों की धक्कम धुक्की है, लोगों की चिल्लाहट से कलकत्ते का टाउन हाल, कौंसिल हाल, म्युनिसिपल हाल, की छतें फटी जा रही हैं। बैजनाथ जी ने देखा कि मजदूरे रात दिन मरम्मत करके भी इन इमारतों को अटूट नहीं रख सकते हैं। दिवाल और छत फट कर चिल्लाहट आकाश मार्ग से होती हुई सारे भारतवर्ष में व्यापी जा रही है, और एक दिल्लगी देखिए, इसी मंडी के ठीक सामने एक औरही तरह का माल बिक रहा है, दुकानदार सब बड़े बड़े नगाड़ों को पीट पीट कर चिल्ला रहे हैं "देखो भाई हमारा यह असल देशी माल है इसका नाम है "समाज रक्षा' "सनातन धर्म्म" इसमे बिलायती चीजों का मेल जोल बिलकुल नहीं है, सब महाशय गण जरासा चख के देख लीजिए। बैजनाथ जी ने जरासा चखा तो देखा कि माल सोलह आना बिलायती है, बिलायती बर्तनों में बिक रहा है, बिलायती सामिग्रीयों से बना है, फकत जरा सा देशी घी में छान लिया गया है। बैजनाथ जी गरीब थे तो क्या, खाने पीने के शौखीन थे। उन्हें मालुम पड़ा की घी भी अच्छा नहीं है, असली सच्चा देशी घी नहीं है। कुछ सड़ गया है और बू भी आती है। इसी सड़े घी में छना हुआ यह गरमा गरम असली देशी माल बिक रहा है। झुण्ड के झुण्ड खरीदार इस मंडी के तरफ दौड़े चले आ रहे हैं। सेर, मन, के हिसाब से हंडिए में कुंडे में भर२ कर यह माल लिए जा रहे हैं, मजूरे बिचारे इतना माल उठा के ले नहीं जा सक रहे हैं, इसकी सुगन्धी से सारा शहर सुगन्धित हो रहा है।

इसके बाद भलमनसाहत का बाजार, बुद्धिमानी का बाजार, पण्डिताई का बाजार, बैजनाथ बिचारे कितना देखें? पंडिताई भी

ऐसी वैसी नहीं, असाधारण, एक शास्त्र की नहीं, सर्व्वशास्त्रों की, एक भाषा की भी नहीं सब भाषाओं की, एक विषय की भी नहीं सब विषयों की और किसी में कम बेसी भी नहीं सब में बावन तोला पाव रत्ती, थोड़ी बहोत भी नहीं, सेर के मन के भाव से कुंडे के कुण्डे भरी हुई पंडिताई अपना बड़प्पन जाहिर कर रही है। इतनी गाढ़ी पंडिताई के बोझ से दो एक कुंडा फूट पड़ा, सारा गली रस्ता पंडिताई की कीचड़ से लथपथ होगया, चींटीं और मक्खियों की झुण्ड की झुण्ड आ बैठीं, बैजनाथजी से अब और खड़ा नहीं रहा गया, इस पंडिताई के पनाले से नाक में कपड़ा दबा के भाग आए।

इसके बाद धर्म्म का बाजार, यश का बाजार, परोपकारिता का बाजार देख देख कर बैजनाथ के होश हवास जाते रहे। वाह! कलकत्ते का भी क्या ही महात्म है। ऐसा कोई चीज ही नही है कि यहां जिसका खरीदार न मिले। जिसमें दो पैसे की बचत है, बस उसीका एक दुकान खोल दिया गया है, माल, गुदाम में भरा जा रहा है, माल चाहे हो कैसा ही, एक चटकदार साइन बोर्ड सामने गाहकों की आंखे चौंधिया रहा है। लड़कपन में वह बड़े बाजार के सौदागरों ही को बड़ा चतुर समझते थे, पर आज इस बाजार की लीला देख कर उनकी बुद्धी चकरा गई, चालाकी ही से माल ज्यादा बिकता है, चालाकी ही में मुनाफा भी ज्यादे है, और इसी चालाकी ने लोगों की आंखों पर परदा डाल रखा है।

कलकत्ते में बहोत दिनों तक रहते रहते बैजनाथ जी ने थोड़ा बहुत असली सच्चा माल भी देखा। कभी किसी छोटी सी दुकान या अन्धेरी झोपड़ी में थोड़ी सी सच्ची देश हितैषीता, या जरी सी सच्ची परोपकारिता या थोड़ी सी असली पण्डिताई, उन्हे नजर आई पर इस माल को कौन ले, कौन पूछे? कलकत्ते के गौरव शाली बड़े बाजार में इस माल की आमदनी भी बहोत कम है और पढ़े लिखे सुसभ्य खरीददारों में इसकी वैसी पूछ भी नहीं है।

——o——

॥ बारहवां परिच्छेद ॥

छोटे मुंह बड़ी बात ।

असाढ़ महीना आया, बरसात शुरू होगई, आकाश में बादल छा गए, बैजनाथ जी का भावी आकाश भी मेघाच्छन्न होने लगा। वह कलकत्ते में किसी काम काज या नौकरी के लिये ज्यादे परेशान नहीं थे, पहले ही वे निश्चय कर चुके थे कि कुछ नहीं होगा तो छः महीने बाद गांव लौट जाएंगे, पर जब काम काज ढूढ़ने ही के लिए कलकत्ते आना हुआ है तो उन्होने इसके लिये कोई बात उठा भी नहीं रखी। अपने भरसक इसकी कोशिश और खोज में लगे रहे, पर अभी तक कोई सिलसिला बैठा नहीं था। कलकत्ता नगरी रूपी महासागर में चारों तरफ से अनगिनत् मनुष्यों की धारा बही चली आवती है, इस अनन्त जन समुद्र में बैजनाथ बिचारे अकेले क्या कर सकते थे।

सन्ध्या के समय घूमते फिरते थक कर घर लौट आते थे। छोटी सादी बसन्ती उनके लिये जलपान तय्यार कर रखती थी। एक मुट्ठी भीगा हुआ चना घी में तल कर, एक टुकड़ा अदरक और एक दो छोटी सी निमकीन मिठ्ठी रिकाबी में सजा कर रख छोड़ती थी। बैजनाथजी घर आते ही उनका हाथ पैर धुला कर बैठने के लिये चटाई ला देती और जलपान की रिकाबी सामने ला रखती और आप सामने बैठ कर इधर उधर की दो चार बातें करती या स्वामी को पंखा झलती थी। जैसा गांव में वैसे ही यहां भी स्वामी सेवा ही बसन्ती का एक मात्र धर्म्म था और बच्चों के पालन पोषण में हीं उसका सब कुछ आनन्द था। सबेरे से संध्या तक वह इसी काम में लगी रहती थी। शाम के वक्त दोनों बच्चों के साथ छत पर जा बैठती और कभी दिवार के मोखे से रास्ते के आदमियों का आवागमन देखा करती थी। उसका शरीर पहले से कुछ ज्यादे दुबला और मुंह कुछ ज्यादे सूखा हुआ प्रतीत होता था।

रोज सन्ध्या के वक्त शिवनाथ बैजनाथजी से मिलने आते थे। सोने के कमरे में चटाई बिछा कर बसन्ती दिया जला कर रख देती थी और सब उसी चटाई पर बैठ कर बहोत रात तक इधर उधर की बात चीत किया करते थे। बैजनाथ जी कलकत्ते में जो जो चीज देखते सबका हाल बयान करते थे और शिवनाथ जी कालिज की बातें, पुस्तकों का जिक्र शिक्षक या विद्यार्थियों का हाल, कलकत्ते के शहर की नाना प्रकार की गप्प शप्प, तरह तरह की बातें, दुनियादारी के दुख सुख की गाथा, संसार के धनी और दरिद्रों की कथा बहोत देर तक कहा करते थे। बात चीत में उनका नया उमंग धार्मिक भाव और दृढ़ता प्रगट होती थी। संसार के महान पुरुषों के उत्साह, महत्व और दृढ़ प्रतिज्ञा की कहानी कहते कहते शिवनाथ को रोमांच हो आता था, दुनिया की दगेबाजी झूठ और जुल्म का जिकर करते हुए इस युवा की आंखे तम तमाने लगती थीं। बैजनाथजी बड़े भाई की तरह स्नेह की दृष्टि से शिवनाथ की तरफ देखते हुए उनकी बातें सुन कर बड़े सन्तुष्ट और प्रसन्न होते थे, बसन्ती अपने बाल्य सखा के मन की यह सब ऊंची भावना और श्रेष्ठ विचार सुन कर पुलकित होती थी और मनोमन शिवनाथ की सौ सौ तारीफ करती थी। बालिका चरखा सोना भूल जाती थी। एकाग्र चित्त से उस युवा के दिप्तमान चेहरे की तरफ एक टक से देखती और उनकी अमृत मई बाणी सुनती रह जाती थी। शिवनाथजी की तेजोमयी कहानी सुनते हुए बालिका का सरल हृदय आनन्द और उत्साह से भर जाता था और उनकी की दुःख की कहानी सुन के बालिका की आंखे डब डबा आती थीं।

बैजनाथजी हर रोज शाम को शहर की देखी हुई चीजों का जिकर करते थे। एक दिन कलकत्ते के बड़े बजार के महात्म की तारीफ करके हंसते हुए बोले "शिवनाथ, यह मैं मानता हूं कि देश से हित रखना या दुसरे की भलाई करना मनुष्य जन्म का प्रधान कर्तव्य है पर इन सद्गुणों के बहाने से तुमारे कलकत्ते में जैसी अनन्त चतुराई चल रही है उसे देख कर मेरी बुद्धी चकरा गई है।

माना कि हमरे गांव गवई में असली देशहितैषिता नहीं है पर साथ ही इसका झूठा आडंबर और चतुराई का जाल भी नहीं है।

शिवनाथ। आपका कहना ठीक है, इसमें कोइ सन्देह नहीं कि बड़े बड़े शहरो ही में बड़ी बड़ी चालबाजियां होती हैं पर क्या सच्ची देशहितैषिता, सच्चाई, विद्यानुराग वगैरेः सदगुण कलकत्ते में आपने कहीं नहीं देखा ?

बैजनाथ। मैं यह नहीं कहता कि कलकत्ते में यह सद्गुण एक भी हैं नहीं, वरंच यहां ऐसे बहोत से सद्गुणों को देख कर तृप्त हुआ हुं। यहां जैसा सच्चा देशानुराग, अपने देशी भाइयों की भलाई के लिये जैसी लगा तार कोशिश, पुरुषार्थ, उत्साह देखा है, वैसा गांव गवई में देखने में नहीं आता, पुस्तकों के सिवाय अन्यत्र लखाई भी नहीं देता। विद्या का अनुराग भी वैसा ही है। कलकत्ते आने के पहले असली विद्यानुराग क्या है, मैं नहीं जानता था फकत विद्या की वृद्धी के लिये अपने भाइयों में विद्या प्रचार करने की अनन्त चेष्टा, युवा अवस्था से लेकर प्रौढ़ा अवस्था और प्रौढ़ावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक की लगा तार अविश्रान्त चेष्टा मैंने कलकत्ते ही में देखी है, और भी तो एक बात है यशोलाभ की इच्छा, जान की बाजी लगा कर अच्छे कर्म्मों का संपादन करते हुए महान पुरुष होने की उत्कट अभिलाषा भला गांव गवइ में हम क्योंकर देख सकते हैं। यह भी हमने कलकत्ते ही में देखा। शिवनाथ, मैंने कलकत्ते का एक नहीं सैकाड़ों सद् गुण देखा है, पर एक बात है, कि जहां कही एक सच्चा सद्गुण है तो दस उसका झूठा नकल मौजूद हैं, अगर दस सच्चे देश हितैषी है तो सौ देशहित के नाम से व्यर्थ हौरा मचा कर भंडपना कर रहे हैं, दस आदमी सच्ची समाज रक्षा का यत्न कर रहे हैं तो सौ मनुष्य इसका बहाना करके लोगों की आंख में धूल झोंक कर पैसा इकट्ठा कर रहे हैं यही बात बुरी है।

शिवनाथ। यह दोष हमारा है, कि उनका? बसन्ती बोले "तुमारी चटाइ मे खटमल है क्या" ?

बसन्ती। क्यों शिवनाथ, काटे है ?

शिवनाथ। नही काटते नही हैं, योंही पूछते हैं कि है कि नही ?

बसन्ती। नहीं भाई मेरे घर ऐसी चीज नहीं है। मैं अपने हाथ से बिछौना रोज धूप में डालती हूं और सब चीजों को झाड़ बोहार के ठीक रखती हूं। मैला कुचैला तो मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता।

शिवनाथ। उस दिन बैजनाथ भैया और हम देवी बाबू के घर गए थे, देवी बाबू घर के भीतर हम लोगों को खिलाने ले गए, तुमसे क्या कहूं बसन्ती बेबे, कि चटाई पर बैठते ही खटमलों ने काट काट के नाक पर दम कर दिया। इस का सबब क्या है, बतलाओ ?

बसन्ती। सबब और क्या है, यही गन्दा रखना। चीज वस्तु गंदी रखने ही से यह सब पैदा होते हैं।

शिवनाथ। बसन्ती बेबे, इसी तरह समाज गंधा रखने से, उसमे छल रूपी खटमल पैदा होते हैं! हम यदि दूसरों की निन्दा चाहेंगे, तो परनिन्दा बाजार में बिकेगी, हम यदि पंडितभिमानी मूर्खता पर लट्टू होकर मुंह बाए उसकी तरफ देखते रहेंगे, तो बजार में वही मुर्खता ही विद्या के नाम से बिकने लगेगी। हम यदि खाली मुंहजबानी देश हितैषिता के पीछे पीछे लगे डोलेंगे तो उसी देहितैषिता की भर मार होजायगी। अकसर देखने में आता है कि बजार मे जब किसी खास फैशन के कपड़े को लोग ज्यादे खरीदने लग जाते हैं तो उसी कपड़े की धुंआ धार आमदनी होने लगजाती है और उसका दाम भी चढ़ जाता है। हम लोगों की भी जैसे सद्गुणों में रुचि है वैसेही सद्गुण पैदा हो रहे हैं। यह उनका दोष है कि हम लोगों का ?

बसन्ती। अच्छा मैं एक बात पूछूं हुं, चटाइ बिछौने वगैरः में खटमल उटमल होए है तो धूप मे देने या धोबी के यहां भेजने से साफ हो जाए है, पर समाज मे ऐसे खटमल पैदा हों तब क्या करें बतलाओ ? क्या समाज भी धूप में सुखाया या धोबी के यहां भेजा जा सके है ?

शिवनाथ। वसन्ती बेबे, समाज साफ करने का भी उपाय है। जैसे सूरज की रोशनी से चटाइ के खटमल सब घरा घर निकल जाते हैं, वैसेही, सच्ची शिक्षा के गुण से समाज की सारी दुःखदाइ सामग्रीयां भी एक एक करके समाज को छोड़ देती हैं। यदि शिक्षा का यह फल न हो, तो मैं कहूंगा कि वह शिक्षा, शिक्षाही नहीं है। यदि मुंहजबानी देशहितैषिता पर हम मोहित न हों तो तुमी बतलाओ फिर वह कै दिन टिक सकतो है? पंडिताभिमानी मूर्खता देख कर यदि हम मुसकरा कर वहां से चलते बने तो बतलाओ ऐसी पंडिताइ कै दिन चल सकती है? यह सब नकली चीजें जो आज कल इतनी ज्यादे पैदा हो रही हैं, इसमे गलती हमी लोगों की है उनकी नहीं।

बैजनाथ। शिवनाथ, तुमारा उत्साह देख कर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ, पर तौभी शिक्षा से समाज की सारी चाल बाजी, छल कपट और चलाकी जाती रहेगी, मुझे तो ऐसी आशा नहीं है। शिक्षित देशों में जितने हथकंडे, चालाकियां हैं, उतनी इस देश में नहीं हैं। मनुष्य हृदय मे कुमति और सुमति का जब तक निवास रहेगा तब तक संसार मे सचाइ और कपट दोनों ही रहेंगे, पर हां शिक्षा प्रचार से समाज के कर्तव्य बढ़ जाते हैं यह मैं भी मानता हूं।

बसन्ती। क्यों जी, तुम लोगों के कालिजों मे आज कल जो पढ़ाइ होती है उसमे क्या इस तरह की शिक्षा नहीं दी जाती?

शिवनाथ। बसन्ती बेबे? बहोत से लोग कालिज के शिक्षा की बड़ी निन्दा करते हैं, पर मैं ऐसा नहीं करता। जिस शिक्षा के प्रताप से हमे बड़े बड़े महान पुरुषों के जीवन चरित्र उनकी कार रवाइयों से परिचित होते हैं, जिस शिक्षा के बल से हम प्रकृति के अदभुत गुणों से जान कार होते हैं, वह क्या बुरी शिक्षा है? जो इससे फायदा नहीं उठा सकते यह उनके मन का दोष है कुछ शिक्षा का अवगुण नहीं है।

बैजनाथ भय्या ने कलकत्ते के जिस बड़ी देश हितैषिता, उन्नति की इच्छा का नाम लिया, है क्या पचास वर्ष पहले उसका कहीं नाम निशान भी था। इसी कालिज की शिक्षा ही की बदौलत जो कुछ थोड़ा बहोत हुआ है सो हुआ है, सौ पचास बरस और जाने दो, फिर देखो क्या होता है ? सैकड़ो बरस में हम लोग यूरोपियनों के समान हो सकेंगे कि नहीं, इस में भी संदेह हैं, पर तौ भी मुझे पूरा भरोसा है, कि भगवान की कृपा से हम लोग धीरे धीरे आगे बढ़ रहे हैं।

स्वार्थ त्याग और कर्तव्य साधन के लिए अनन्त उत्साह और लगातार परिश्रम इस उन्नति का एक मात्र रास्ता है, भला बतलाओ तो सही इतने दिनों में हमने स्वार्थ त्याग, निष्काम कर्तव्य साधन करने का सबक कितना सीखा है ? सोचते भी हृदय को पीड़ा होती है।

बात चीत में बहोत रात हो गई। शिवनाथ घर जाने के लिए उठे। बैजनाथ जी भी उनके साथ साथ दर वाजे तक आए, देखा कि रस्ते मे गरमी की संध्या को चंद्रमा की ठंढी चांदनी खिली हुई है, और ठंडी ठंडी हवा चल रही है, अत सब दो चार कदम चलते हुए वह भी शिवनाथ के साथ कुछ आगे बढ़ गए। देवी बाबू आज शाम को हवा खाने निकले थे, बैजनाथ और शिवनाथ को देख कर वह भी उनके साथ हो लिए और शिवनाथ के घर तक साथ गए। लौटते हुए, बैजनाथ जी ने देवी बाबू से कहा, "मैंने कालिज के सैंकड़ो लड़के देखे हैं, बहोतों से मिला जुला हूं, पर शिवनाथ के एसा बड़ा शिक्षित, उन्नत हृदय, श्रेष्ठ विचार शील और उत्साही युवक नहीं देखा"।

देवी बाबू बोले "हां, लड़का अच्छा है, इश्वर करे जीता रहे, कुल का नाम रखेगा। और लिखना पढ़ना भी सीखेगा सही, पर लड़का हो कर बूढ़ो के ऐसी बातें क्यों करता है ? मुझे डरे लगे है कि कहीं अंत को फाजिल न हो जाय"।

तेरहवां परिच्छेद ।

देवी बाबू ।

तुलापट्टी के खत्रियों में देवी बाबू एक नामी रईस हैं । उमर कोई पचास के करीब होगी, शरीर स्थूल, कद नाटा और रंग गोरा है, मुंह पर सदा हंसी छाई रहती है, इनकी मीठी बातों से सब प्रसन्न रहते हैं । पहले तो इनका ज़माना अच्छा नहीं था लड़काई में इन्होंने बहुत कुछ तकलीफ उठाई थी और बचपन ही में पिता माता के मर जाने पर इन्होंने किराने की दलाली करनी शुरू कर दी थी, इसी से ज्यों त्यों कर गुजारा होता था । धीरे धीरे इनका भाग्य चमका, एक अंग्रेज़ सौदागर से भेंट हो गई । उसने भी कलकत्तेमें नया "हौस" खोला था । देवी बाबू पर इस साहब की कृपा-दृष्टी होगई और यह उस हौस के दलाल बन गए । जब दिन अच्छे आते हैं तो चारों तरफ से लक्ष्मी की बौछार होने लगती है । देवी बाबू के एक मामा थे, उनका एक मात्र पुत्र जाता रहा हाल ही में उनकी भी मृत्यू होगई थी, अतएव उनकी लाख डेढ़ लाख की सम्पत्ति भी देवी बाबू के हाथ लगी । हौस की दलाली चमक चली, अस्तु अब इन्हें किसी बात की कमी न रही । पक्का चौमंज़िला मकान, नीचे बैठका, जिस में तख्तपोश पर गद्दी तकिया लगा रहता और बीच में बीस बत्ती का एक झाड़ और दिवाल के आमने सामने दो दो जोड़ी दिवालगीर खोली से ढकी हुई लगी थी । आमने सामने पांच चार तस्वीरें लटक रही थीं, तस्वीरों का कुछ मेल नहीं था । एक काली जी का चित्र है तो बगल में एक रोमियो जूलियट की तस्वीर लगी हुई है । देवी बाबू के घर में ठाकुर जी की सेवा भी होती थी, हर साल दोल जन्माष्टमी अन्नकूट पर खूब महोत्सव भोग राग होता था, अस्तु यह एक नामी परिवारवाले गृहस्थ थे । कलकत्ते आने के थोड़े ही दिन बाद बैजनाथजीसे देवी बाबूकी भेट मुलाकात हुई । देवी बाबू अकसर उन्हें बड़ी खातरी से अपने बैठके में ले जाते और कभी

कभी खिलाते पिलाते भी थे। बैजनाथ जी को जब कभी मौक़ा मिलता देवी बाबू के यहां जाते और उनसे अपने कलकत्ते आने का उद्देश्य भी कहते। देवी बाबू बहुत कुछ दम दिलासा देते और कहते, "आप ऐसे गुणवान आदमी को सांझ सवेरे ज़रूर कोई न कोई काम मिल जायगा। घबराते क्यों हैं, मैं खुद आप को 'हौस' के बड़े साहब के पास ले चलुंगा और आप को एक अच्छी जगह दिलवा दुंगा। आप हमारे दोस्त ठहरे, बे खटके रहिए" इत्यादि, देवी बाबू की बातों से बैजनाथ जी को बहुत भरोसा होता, पर यह भरोसा केवल भरोसाही रहा, देवी बाबू में यह बड़ा गुण था कि उनके पास चाहे जो कोइ आवे चिकनी चुपड़ी बातों से उसे खुश कर देते थे। उनके पास सैंकड़ो उम्मेद वार आते बात की कमी किसी से भी नहीं थी पर काम—इस में अभी ज़रा भद्रा थी। अस्तु देवी बाबू के बैठके में हरदम उनको दश पांच आदमी घेरे बैठे ही रहते थे इधर काम काज की तरफ जो कुछ हो, बात चीत और भलमन-साहत के बर्ताव में देवी बाबू ने कुछ कसर नहीं रखी। दो एक दिन बैजनाथ और शिवनाथ को घर बुला कर खिलाया पिलाया और बैजनाथ जी की स्त्री को अपनी स्त्री से भेंट करने के लिए कई दफ़े बुलावा भेजा। बसन्ती बिचारी रातदिन घर के काम धन्धे में लगी रहती थी, इस से उसको फुरसत नहीं मिलती थी कि कहीं जाए आवे पर देवी बाबू की गृहणी जी बुरा न माने इस डर से, एक दिन सवेरे ही सवेरे रसोई पानी से निश्चिन्त हो, पालकी मंगा कर चम्पा और दोनों बच्चों के साथ देवी बाबू के घर गईं। देवी बाबू उस समय आफ़िस गये हुए थे। बाहर बैठक खाने में सन्नाटा था पर बसन्ती ने भीतर जाके देखा तो घर लोगों से भरा हुआ है दाइयां झाड़ू दे रही हैं, घर धो रही हैं, कोई कपड़ा सुखा रही हैं कोई तरकारी बना रही हैं और कोई सब कामों का निचोड़ काम खड़ झगड़ रही है। कलकत्ते के दाइयों के बड़े मिज़ाज मालकिनीजी की एक बात भी नहीं सहती फिर यदि उनके घर की और कोई स्त्री ज़रा कुछ बोली तो यह भला क्यों बरदाश्त करने लगीं

एक के बदले सौ गुना कर तब छोड़ती, बिचारी भले घर की स्त्री इस मबल बौछार से जान बचा कर आंसू पोछती हुई कोठरी में शरण लेती। नीचे कल के हौज में दाइयों और बहू बेटियों की मजलिस गुलजार हो रही है। दो पहर के वक्त सब वहीं स्नान करने गई हैं तरह २ की बातें ताने अवाजे तवाजे हंसी दिल्लगी हो रही है, साथ ही साथ उस जगह जो जो घरवाली मौजूद नहीं हैं उनके चाल चलन, चरित्र की अपूर्व समालोचना हो रही है, कोई मिस्सी से दांत मांजती हुई बोली"। क्यों उस दिन नई बहू का ठाट देखा गहने के मारे मानो धरती पर पैर ही नहीं पड़ते थे, उसके खसम को न जाने अब की दफे कहां से बहुत सा रुपया मिला है, अरे मिला है तो मिला है इतना घमंड काहे का ?

कोई जूड़ा खोलती हुई बोली। "अजी बेबे, सब खाली ठाठ ही देखलो और कुछ है सो नहीं और उस की सास कैसी हरामजादी है बाप रे बाप ऐसी बहू कटौनी सास तो कहीं नहीं देखी, स्त्री को उसका आदमी जरा चाहता है तो बुढ़िया मानों कटकटाय पड़ती है।" कोई नई बहू पैर में झामा रगड़ती हुई बोली। "अरे घर घर यही हाल है सास भला कभी मां की तरह होती है, वही देखो न बकनी सुनते सुनते हम लोगोंकी जान जाती है। अरे चुप चप, अभी नहाने आती होगी सुन लेगी तो शरीर को एक हड्डी नहीं बचने पावेगी, सो भी बेबे, औरों से अपना घर हजार गुण अच्छा है। सुने नहीं कि कन्हैया के घर की सास ने बहू को चुआंसी चुआंसी पीटा है, अरे वह जैसी बहू तैसी सास उसने भी तो सुने हैं कि सास पर गुस्से हो कर हाथ की चूड़ी तोड़ डाली थी तभी तो सास ने मारा। गुस्सा न करे, रात दिन तो जलती रहे हैं, सदाह खोआर खसम मिला है। शराब पीके न जाने कहां पड़ा रहे है, तो बतलाओ तो उस बिचारी का क्या अपराध है ?" इत्यादि इत्यादि।

रसोई घर में नाते रिश्ते को कोई २ बुढ़िया बैठी हुई थीं, कोई मालकिनी जी के लिए भात की बटलोह उतार रही थीं, कोई दो एक बात करने के लिए आई थीं, कोई गोद में बच्चा ले के

सींच रही थी, जमना की मां कुछ कुछ डर के, बोली । ऐजी यह पालकी पर चढ़ के कौन आई हैं ? वही जो बरामदे से सीधी बराबर मालकिनी जी के घर की तरफ चली गई । बच्चों की मां बोली 'तुम नहीं जानी हो । यह जो ब्राह्मणी हैं, न जाने पटने क कहां किसी गांव से आ के यहीं तुला पट्टी में रहे है, वही जो बड़ी है उसका खसम मालुम पड़े है कि बाबू जी के आफिसमें नौकरी करनेको आया है और छोटी उसकी एक विधवा बहिन है, मालकिनी ने शायद बुलाया या कोई मिलने आई हैं ।

"यह भला कैसी भले घर की ब्राह्मणी हैं, हाथ में कड़ा बांह में अनन्त कुछ भी नहीं, पिंडे से सोने का एक तार भी नही, खाली पिंडे भले आदमी के घर आते शरम नहीं लगती?" "अजी बेबे, इन लोग अभी गांव गवई से आई हैं, शहर का चाल हाल क्या जाने, सीखते २ सीखेंगी ।" "अब कब सीखेंगीं ? दो लड़के की मां हो कर नहीं सीखी तो कब सीखेगी ?" अरे भाई गरीब गुरबे क्या सब कोई के यहां गहना पहना होए है" "तो ऐसे गरीब गुरबों को बुलाने से मतलब"? मालकिनी की भी जैसी अक्ल है, भला बुरा पहचानतीं तो फिर हम लोगों को इतनी जूती झाड़ू क्यों खानी पड़ती ? यही जब मैं अपनी मौसेरी बहिन के घर थी, तो वह मेरा कितना खातरी करती, मेरे लिए दोनों वखत दूध की बंधी लगी हुई थी । उनके घर आदमी की कदर थी । मालकिनी को आदमी की पहचान ही होती तो फिर हम लोगों की यह दुर्दशा हो ? अरे, मालकिनी का ही क्या दोष है ? जैसे बाप की बेटी हैं वैसाही तो स्वभाव होगा, पैसा होने से तो जात नहीं छिपती" इस प्रकार से उक्त वृद्धा बहुत देर तक अपनी मानहानि और मालकिनी और उनके बापदादा के कुल का सुयश बखान करती रही ।

बसन्ती चम्पा के साथ रेलदार बरामदे से होती हुई माल-किनी जी के शयनागार (सोने के कमरे) में गई । जा के देखा कि मालकिनी जी तेल मालिश करवा रही हैं, उनकी एक आश्रिता उनका केश खोल रही है और दूसरी छाती पर रगड़ रगड़ कर तेल

झक रही है । न जाने कैसा तो मालकिनीजी के कानोंमें दर्द रहता है (बड़े आदमियों की गृहणीयों को ऐसा कुछ न कुछ रहता ही है) सो कविराज जी ने स्नान के पहले घन्टाभर अच्छी तरह से तेल मालिश करने की व्यवस्था दी है । मालकिनी जी अपने स्वामी की तरह हृष्ट पुष्ट नहीं थीं, बदन दुबला पतला, चेहरा रूखा और मिजाज भी जरा चिड़ चिड़ा था । इस परिवार की नाते रिस्ते वाली बहू बेटी, ननद, दाई, टहलनी सबको रोज संध्या सबेरे इस मिजाज का स्वाद चखना पड़ता था, और सुनते हैं कि रात को देवी बाबू भी इसके स्वाद से वंचित नहीं रहते थे । देवी बाबू पहले गरीब थे, अपने हाथ से धन कमाया है, इस लिए इनके मिजाज में कुछ ऐसा घमंड नहीं था, पर एका एकी गरीब के घर से आकर नई बहू राज पर चढ़ी थीं, फिर उनके मिजाज का कहनाही क्या था, जमीन पर पैर नहीं पड़ते थे, मिजाज मानों आकाश पर चढ़ा जाता था । बसन्ती के घर में पैर रखतेही, मालकिनी जी बोली । "तुम लोग कौन हो ?" ।

बसन्ती । यही हम लोग कुंदनपुर से आके तुलापट्टी में ठहरे हुए हैं, बाजपेई ब्राह्मण हैं । आपने कई दफे बुला भेजा था, पर घर के काम धन्धे से फुरसत नहीं मिलता था जो आती, सो आज मन में किया कि कई दफे बुलाइन हैं, चलो टो आवें ।

गृहणी । हां, हां, अब समझो, आओ, बैठो । अगले जमाने में महल्ले में कोई भी नया आदमी आता तो अड़ोसी पड़ोसी से पहले मेल मिलाप करता था, पर भाई अब वह रीत नहीं रही, अबतो लोगों को न जाने घर से बाहर निकलते क्या होय है ? खैर तुम आइ तो, यही बड़े भाग्य । कुंदनपुर कहां है ? वहां भले मानुषों की बसती है ?

बसन्ती । हां, है, क्यों नहीं, तीस चालीस घर भले मानुषों की बस्ती है, और बहोत से छोटे आदमियों की बस्ती भी है । आरे का नाम तो सुना ही होगा, बस वहां से छः सात कोस पर हमरा गांव है ।

गृहणी। "हां, हां, वही आरा, पटना, हमरे यहां की दाई सब वहीं की हैं," यह कह कर मालकिनी जी जरा मुस्कराईं। बसन्ती चुप रही। थोड़ी देर बाद गृहणी जी बोली "यह दूसरी शायद तुमरी बहिन है? हाय, हाय, इसी उमर में विधवा हो गई! क्या करोगी, नारायण की जैसी मरजी, सब के भाग्य में सुख थोड़े ही होए है किसी के पल्ले रुपये होए है, कोई कंगला है, भगवान की जो इच्छा किसी को बड़ा करें हैं, किसी को छोटा करें हैं।

आश्रिता नम्बर एक,—जो उनका जूड़ा खोल रही थीं, अवसर समझ के बोली। "और नहीं तो क्या,यही देखो तो भगवान की इच्छा से बाबूजी पर जैसी लक्ष्मी की कृपा है, रुपया पैसा है, घर गृहस्थी है, वैसा क्या सबके भाग में होए है, जैसा जिसके नसीब का लेख"।

आश्रिता नम्बर दो, जो तेल मालिश करते करते हांफ गई थी, उनोने देखा कि चलो इसी बहाने दो बात कह कर मैं भी जरा सुस्तालूं, बोली "अजी, बेबे, क्या, खाली रुपये पैसा—रुपया पैसा, मान इज्जत, जैसा नाम वैसीही लिखा पढ़ी, साहब लोग के यहां कैसा नाम है। लछमीमाई तो माने। उस पलंग के पावे से बंधी हैं"। मालकिनी जी के चेहरे पर हंसी दिखाई दी, बात उनके मन ऐसी हुई थी अस्तु।

आश्रिता नम्बर दो पर उनकी जरा दया दृष्टी हुई और बोलीं "आहा! तुम अब कब तक तेल मलती रहोगी? तुमारा जो दम फूल गया और सब जनी कहां गईं,कामके वखत किसी की सूरत तो भला दिखाई दे जाय, सब चौके में, चुल्हे में पड़ी हैं, काम कौन करे"।

मालकिनी जी ने यह बातें जरा जोर से कहीं थी, इस कान से उस कान होते हुए बात नीचे कल के हौज तक जा पहुंची, वहां से बहू, बेटीयों द्वारा चौके में गई, जो चूल्हे में लकड़ी लगा रही थी सहम गई, जो मौंच रही थी वह चैतन्य हो गई जमना और बच्ची की मा दोनों गृहणी का गुण बखान करते करते सहसा कांप गईं, दौड़ती हुई चौके से आके मालकिनी जी के कमरे में दाखिल हुईं।

जमना की मा। क्यों जी आज छाती कैसी है? मैं तो यही चुल्हे में लकड़ी दे रही थी इसी लिए आ नहीं सकी, अच्छा लाओ न तेल मल दूं?

गृहणी। धन्य भाग्य की आइतो। चौके से बाहर नहीं निकला जाता। आदमी जीता है कि मर गया जरा खबर तो लेना होय है। ओः ओः न जाने हत्यारा कैसा दरद है, निखसमा कविराज महीने भर से देख रहा है, न कुछ होय न हवावे। कविराज ही का क्या दोष है, घर के लोग जरा देखें सुनें तब तो अच्छा होय? किसी को क्या गरज पड़ी है जो दूसरे की आफत आप ओढ़े"। जमना और बच्चों की मा, बिना कुछ बोले मालकिनी के दोनों तरफ बैठ कर मालिश करने लगी, मालकिनी जी पैर फैला के मुंह पर तेल मलती हुई, फिर बसन्ती से बात चीत करने लगीं।

गृहणी। तुमरे बच्चे दोनों अच्छे हैं? ऐसे दुबले क्यों है?

बसन्ती। यह जन्मसे ही ऐसे हैं, कभी कभी बुखार हो आवे है, और छोटे के पेट में भी कुछ बिमारी हो गई थी अब कुछ अच्छा हुआ है।

गृहणी। सोई तो देखें है। एक दम सुकल हड्डी हो रहे हैं! जरा सेवी करके दूध नहीं पिलाने सको हो, जिससें लड़के मोटे ताजे हो जांय, यही देखो न हमरे लड़कों के लिए, लड़के पीछे सेर दूध की बंधी लगी हुई है, आध सेर सवेरे और आध सेर शाम। इतना भी दूध नहीं मिलेगा तो भला लड़के पलेंगे कैसे?

बसन्ती। दूध तो पिलाऊं हूं, ग्वालिन जो दूध दे है, आधा पानी आधा दूध, उससे भला क्या होगा, तुम्हीं बताओ?

गृहणी। अरे राम राम! तुम ग्वालिन का दूध पिलाओ हो, हमरे घर में भला ग्वालिन पैर रखे तो सही। घर में गऊ है, उस दिन वह किसी साहब की गऊ ८०) में खरीद के लाए हैं, पांच सेर दूध देती है। घर की गऊ का दूध पिलाए बिना क्या लड़के पले हैं, ग्वालिन का भला दूध-दूध तो नहीं धरा हुआ पोखरी का पानी है।

बसन्ती जरा धीरे धीरे बोली—"हां, पर सब कोई की तो एकसी हालत नहीं रहे है, नारायण जी ने आप के ऐसा धन कै आदमियों को दिया है? हम गऊ कहां पावें बतलाओ, जो पावें हैं उसीसे बच्चों को पालना पोसना पड़े है।

मालकिनी जी जरा खुश हो के बोली "हां सो तो है ही है। फिर क्या करोगी, जिस तरह होए बच्चों को बड़ा करो। जब जिस चीज की जरूरत हो हमरे पास आ जाया करो, हमरे घर में दूध की कमी तो है नहीं जब जो मांगोगी मिल जायगा।

बच्ची की मां। हां, क्यों नहीं, इस घरमें कमी किस बात की है? दूध दही का तो पनाला बहे है, हमी लोग खाके नहीं अघांतो, नौकर दाई खाके समाप्त नहीं कर सके हैं। तुमे जब जो जरूरत हो, मालकिनीजी के पास सीधी चली आना, मालकिनी जी के मन में जो माया दया है, तुम भी तो ब्राह्मण की जाति ठहरी, मांगने में लज्जाही काहे का है।

जमना की मा। हां, क्यों नहीं, भगवान की कृपा से जैसा धन दौलत है, दान पुण्य भी वैसाही है। मालकिनी जी के बदौलत अड़ोस पड़ोस की पांच जनी खाके गुजारा करें हैं।

गृहणी। तुमरे स्वामी की कहीं नौकरी ऊकरी लगी? उनके पास आया था न?

बसन्ती। हां, आए तो थे, बाबूजी ने कहा भी है कि कुछ करवा देंगे। सो आप लोग मन में करें तो नौकरी लगना कौन सी बड़ी बात है।

गृहणी। हां, क्यों नहीं, साहब लोगों के यहां इनका बड़ा मान है, इनकी बात कोई नहीं टाले है? वही अभी उसी दिन तो आर-तुलों के घर के एक छोकरे को २५) पर नौकर रखवा दीन हैं, ब्राह्मण के घर का लड़का जूती चटकाता फिरता था पैसे पैसे को मोहताज था, सोही उनसे कहके नौकरी लगवा दिया, और यही मुहल्ले में एक रसतोगी रहे है उनका लड़का हमरे घर का काम धन्धा करता साग सब्जी, लाता था, उसकी जोरू एक रोज मेरे यहां आके पैर

पर पछाड़ खाके गिर पड़ी, सोची को घर में चावल दाल कुछ नहीं है, क्या करें उसे भी एक नौकरी लगवा दी। पर क्या करें जानो ते हे, आज कल सभी ऐसे होगए हैं पैसा ते किसी के पास है नहीं सब कंगले दाने दाने के मोहताज हो रहे है, हमें खा खाके चेरते हैं, हम से ते यह नित्य का बिमारी का शरीर लेके चला नही जाता, मानों गंगा किनारे के कंगले, हाड जला खाइन्। अच्छा, तुम अपने स्वामी के उनके पास भेज देना, देखो क्या होता है।

डेढ़ घन्टे बाद मालकिनी जी की मालिश खतम हुई, मालकिनी जी स्नान के लिए उठीं।

बसन्ती सदाही से बड़े शान्त स्वभाव की थी, संसार के बहोत से दुख क्लेश उसे सह गए थे, पर बड़े आदमियों के दर वाजे आकर खड़े होना उसने अभी तक नहीं सीखा था, सो यह पहली शिक्षा उसे जरा कड़ुवी लगी। अस्तु गृहणी जी से विदा होकर छोटी बहिन और बच्चों के साथ वह धीरे धीरे बाहर आकर पालकी पर सवार हो घर चली आई।

॥ चौदहवां परिच्छेद ॥

डाक्टर मोतीलाल ।

कलकत्ते आने के बाद कइ एक सप्ताह तक चंपा बड़े आनन्द से थी। नई नई चीजें देखती सुनती और घर का काम काज बहोत कुछ नए ढंग से करती थी। सरला बालिका का मन इससे बड़ा प्रसन्न रहता था। यद्यपि कलकत्ते की कड़ी गरमी, गांव से इन्हें ज्यादे सताती थी और गांव की छाया पूर्ण ठंडी फूस की झोपड़ी की अपेक्षा कलकत्ते का यह छोटा सा पक्का दो मंजिला मकान, दोपहर के वख्त गरम आग मालूम पड़ता था, पर चंपा इन सब कष्टों को तुच्छ करके बड़े उत्साह से घर का काम धन्धा करने लगी। यद्यपि उसका सदा का हंसमुख चेहरा कुछ मलीन, और शरीर कुछ दुबला हो आया था, पर वह हरदम घर के काम मे लगी रहती और सब

कभी फुरसत मिलती खेलने दौड़ जाती, अतएव उसके शरीर का यह थोड़ा सा परिवर्तन बैजनाथ या बसन्ती किसी ने नही लखा ॥

बरसात लगते ही, कलकत्ते की बरसाती हवा से चंपा को बुखार आगया ॥ एक रोज शरीर में बड़ी कमजोरी मालूम पड़ने लगी ॥ शाम को लड़की घर का कुछ धन्धा नहीं कर सकी ॥ सोने की कोठरी में एक चटाई बिछा कर पड़ रही ।

संध्या को बसन्ती ने उस घर में आके देखा कि चंपा सोई हुई है, देख के बोली "ऐ, चंपा आज इस वखत कुबेले क्यों सोइ है ? कुवेले सोने से तबियत दिक जो हो जायगी । चल, छत पर चलें । चंपा । नही, बेबे, मैं आज छत पर नहीं जाउंगी ।

बसन्ती ने चंपा के शरीर पर हाथ रक्खा तो देखा कि शरीर गरम है, मत्था तप रहा है, बोली "चंपा, तुझे बुखार ऐसा मालूम पड़े है, उठ, बिछौना कर दुं हुं । उसी पर सो रहो" ।

चम्पा । ना बेबे, यह बीमारी कुछ नही है, अभी अच्छी हो जायगी, मैं अब अच्छी हूं, उठने का जी नही करे है ॥

बसन्ती । नही बहिन, उठ के सो, तुझे बुखार हुआ है, सिर में दर्द हो रहा है, ऐसे में क्या धरती पर सोते होंगे ?

बसन्ती ने बिस्तरा बिछा कर, बहिन को उठा कर सुलाया और आप पास बैठ के उस के शरीर पर हाथ फेरने लगी ॥

रात को बैजनाथ और शिवनाथ आए, बहोत देर तक बिछौने के दोनों बगल बैठे हुए दोनों धीरे धीरे बात चीत करते रहे ॥ रात दस बज चुका तब बसन्ती बैजनाथ जी के लिए रोटी करने गई ॥ शिवनाथ को भी ब्यालू करने को कहा, पर वह बोले कि मैं घर जा के खाउंगा" ।

रोटी होगई, बैजनाथ रोटी खाने गए । शिवनाथ अकेले चम्पा के पास बैठे हुए उसकी सेवा करने लगे ॥ लड़की का शरीर इस वखत खूब गरम हो आया था और दोनों आंखे लाल हो गई थी पीड़ा से कड़की, छिन छिन से करवट बदल रही थी घड़ी घड़ी पानी मां-

मती और सिर के दर्द से बीच बीच में रोती थी। शिवनाथ ने बड़े यत्न से उसके आंख के आंसू पोछ दिए, मत्थे और शरीर पर हाथ फेरने लगे रोगी के सूखे ओठों में दो एक बूंद पानी देकर, बड़ी सावधानी से अपने दुपट्टे से उसका मुंह पोंछ देने लगे॥

बैजनाथ चटपट खा के आगए और शिवनाथ से बोले 'बहोत रात होगई है अब तुम घर जाओ। शिवनाथ ने देखा कि चम्पा का रोग बढ़ता ही जाता है, बोले कि "नहीं आज रात को यहीं रहूंगा"॥

बसन्ती भी खा पी के निश्चिन्त हो आई तब शिवनाथ बोले "बसन्ती बेबे, आज मैं यहीं रहूंगा अगर दो एक पिरौंठी होए तो मेरे लिए रख छोड़ना"॥

बसन्ती। हां, पिरौंठी है चम्पा के लिए आंटा गूंधा था सो उसने तो खाया नहीं, सोई है, पर रात जागरन काहे करोगे, हमलोग दोनों हैं ही हैं, चम्पा को देखेंगे, तुम घर जाओ, दो पहर रात होचुकी।

शिवनाथ। नही बसन्ती बेबे, तुमरा छोटा बच्चा भी बीमार है तुम्हे उसे भी देखना पड़ेगा और बैजनाथ भय्या आज बहोत चले हैं; थके मांदे है, रात को जरा सोएंगे नहीं, तो बिमार हो जाएगें। हम दोनो जने रहेंगे तो बारी बारी से रात भर जाग सकेंगे।

बसन्ती। अच्छा तो चलो ब्यालू कर लो।

शिवनाथ। एक थाली मे करके यहीं घर के एक कोने में ढांप के रख दो मैं थोड़े देर बाद खाउंगा।

बसन्ती। सो क्या पिरौंठीजो ठंडी मिट्टी हो जायगी, इतनी रात गई अब कब खाओगे?

शिवनाथ। खाएंगे जी, हमे बासी पिरौंठी ही अच्छी लगे है। तुम रख तो दो।

बसन्ती चौके में गई और वहां से थाली में करके चार पिरौंठी, एक पथरी में रसे की तरकारी और अचार सजा कर पत्ता ढांक के उसी घर के कोने में लारक्खा। बस दोनों सोगए थे,

उन्हें उठा कर खाट पर सुलाया। और दिन तो चंपा, बसन्ती और दोनों बच्चे एक खाट पर सोते थे, पर आज बैजनाथ जी के पास दोनों बच्चों को सुला कर बसन्ती बहिन के पास आ बैठी, चंपा के सिरहाने बैठे हुए शिवनाथ तब तक बराबर चुप चाप उसकी सेवा कर रहे थे।

शिवनाथ। बैजनाथ भय्या, आप अब जरा आराम कीजिए, फिर भोर रात को आप को जगा के मैं सोऊंगा॥ चंपा का शरीर बहोत ज्यादे गरम होगया है, और बड़ा छटपटा रही है॥ हम में से एक आदमी का उसके पास बैठे रहना अच्छा है। बसन्ती बेचे अकेली नहीं रह सकेगी।

बैजनाथ सोने गए। शिवनाथ और बसन्ती दोनों रोगी के पास बैठे हुए उसकी सेवा करने या तकिए के सहारे से औंघते हुए रात बिताने लगे। रोगी को जरा भी नींद नहीं आती, बड़ा छट पटा रही थी, सिर के दर्द से अधीर होकर कभी बेचे का गला बांध के रोती या कभी प्यास से व्याकुल होकर पानी मांगती शिवनाथ भूख प्यास निद्रा सब बिसार कर उन सूखे होठों में जल सींचन करते रहे।

अढाई पहर रात बीत गई, तब बसन्ती ने बहोत बहोत जिद्द करके शिवनाथ को भोजन के लिये उठाया। उस समय चम्पा का बुखार जरा धीमा पड़ा था, और शरीर की गरमी भी कुछ कमी थी, पीड़ा की कुछ कमी होने से बालिका सो गई थी।

बसन्ती बोली "शिवनाथ, अब तुम घर जाओ चम्पा की जरा आंख लगी है, तुम भी अब जाके सोओ सारी रात जागने से शरीर खराब हो जायगा"।

शिवनाथ। तुम्हें क्या सारी रात जागना अच्छा है, सारा दिन घर गृहस्ती का धन्धा किए हो, फिर कल सारा दिन करना पड़ेगा। मेरा क्या, कल कालेज न गया सही।

बसन्ती। नहीं शिवनाथ, हम लोगों को तो रात जागने की आदत

है, लड़के वाले बीमार होते हैं तो सारी रात जागना पड़े है, हम लोगों को कुछ नहीं होता। तुम लोग मर्द मानुष ठहरे, तुम्हें क्या रात जागना सहेगा, मेरी बात मानो, जाओ। न हो तो कल सबेरे फिर एक दफे आके देख जाना।

चंपा की सचमुच आंख लग गई थी, यह देख कर शिवनाथ जी को भी कुछ धीरज आया और रात के सन्नाटे में रस्ते से होते हुए, सबेरे चार बजे घर आकर शयन किया।

छः बजे तड़के ही उठकर शिवनाथ अपने एक मुलाकाती डाक्टर मोती बाबू के पास गये। मोती बाबू हालही मे मेडिकल कालिज से पास कर के निकले हैं। तुलापट्टी ही मे उनका घर और दवा खाना है, धीरे धीरे अपनी डाक्टरी फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। यह बड़े मेहनती, मनयोगी, बुद्धीमान और विद्वान पुरुष थे, पर डाक्टरी बैदगी कुछ एक दिन में तो चल नहीं निकलती, अत एव अभी तक इनका कुछ ऐसा पसार नहीं हुआ था। इनके बड़े भाई गोपालदास हाइकोर्ट के एक नामी वकील थे इनीकी मदद से इनो ने एक दवा खाना खोला हुआ था, पर इसमे नफा तो कुछ ऐसेही वैसा, नुकसान की सम्भावना ही ज्यादे थी। दुनिया में लाखो आदमी अपने अपनी उदर चेष्टा में घूम रहे हैं, इसके बीच मे एक युवा का आगे बढ़ना जरा कड़ी मंजिल है, चारों ओर का रस्ता बन्द, भीड़ भाड़ से रुका हुआ, पर मोती बाबू मेहनती और धीर प्रकृति के आदमी थे, मेहनत, यत्न और अपने गुण से धीरे २ उन्नति का मार्ग साफ करने की ठान कर दृढ़ संकल्प और स्थिर चित से अपने काम में लगे हुए थे। इसी बीच में दो एक घरों में उनका अच्छा नाम हो गया था, जिस घर मे यह दो चार दफे जाते उस घरवाले फिर दूसरे डाक्टर को नहीं बुलाते थे। सबेरे सात बजे शिवनाथ मोती बाबू को लेके, बैजनाथ जी के घर आए। मोती बाबू ने बहोत देर तक बड़ी सावधानी और यत्न से चंपा को देखा। बुखार इस वखत कम होगया था मगर

तौभी थर्मामिटर में १०१ डिगरी दिखाई दिया । नाड़ी गिनी तो १२० गम्भीर मुंह किए हुए डाक्टर साहब बाहर आए ।

बैजनाथ जी ने पूछा । "कैसा देखा, रात से तो बुखार बहोत कम होगया है, मालूम पड़े है कि आज फाका करने ही से बुखार छूट जायगा"

मोती बाबू । नहीं, जनाब मैं समझताहूं कि ऐसा नहीं है । मुझको रिमीटन्ट फीवर के सारे लक्षण दिखाई देते हैं । इस वखत थोड़ा कम है, अभी भी अच्छा ज्वर है और दिन के वखत और बढ़ जाय तो कोइ ताज्जुब नहीं" ।

बैजनाथ जी जरा डरे । इन दिनों कलकत्ते में "रिमीटेंट ज्वर, से बहोत से लोग मर रहे थे, बोले "बुखार कब तक रहेगा?" ?

मोती बाबू । सो मैं अभी ठीक नहीं कह सकता और एक दफे देख कर तब कहूंगा 'रिमीटेंट ज्वर' मालूम होता है, अगर वही हुआ तो जरूर कुछ भुगावेगा । आप लोग कुछ डरिए मति, डर की कोइ बात नहीं है ।

यह कह कर दवा का नुसखा लिखा और बोले 'दो दो घंटे पर यह दवा खिलाना, शाम तक खिलाना, शाम को हम फिर आके देखेगें । रोगी का मत्था बड़ा गरम हो गया है, आंखें लाल हो गई हैं, सारा दिन सिर पर बरफ रखनी और पानी मांगे तो बरफ खिलाना और खाने के लिए अरारुट या नेसनल्स मिल्क देना, दिन में तीन चार दफा खिलाना । इस रोग का खाना ही दवा है ।

फिर शिवनाथ के संग घर से बाहर आके बोले "शिवनाथ जी, आपको मेरा एक काम करना पड़ेगा"

शिवनाथ । कहिए ।

मोती बाबू । मौका पाकर बैजनाथ जी से कहियगा कि इस चिकित्सा के लिए मैं कुछ ग्रहण नहीं करूंगा ।

शिवनाथ । क्यों ?

मोती बाबू । देखिए आपसे हमारी कितने दिन की दोस्ती है, आप के गांव के आदमी से मैं फीस नहीं लूंगा । और बैजनाथ जी कुछ ऐसे बड़े आदमी भी तो नहीं है, उनसे मैं फीस नहीं लूंगा ।

शिवनाथ । बैजनाथ बाबू गरीब आदमी हैं तो क्या हुआ, मैं उनको अच्छी तरह जानता हूं, मुफ्त मे इलाज करवाने के बदले अगर आप रुपया लेकर इलाज करेंगे तो वह ज्यादे संतुष्ट होंगे ।

मोती बाबू । नहीं शिवनाथ जी आपको मेरी यह बात माननी पड़ेगी मुझे यह विश्वास नहीं है कि यह रोग जलदी आराम हो जायगा, मुझको बहोत दिनों तक आना पड़ेगा, हमेंशा आना पड़ेगा यदि बिना फीस के आवकेंगे तो जब जरुरत होगी चले आवेंगे कुछ संकोच नहीं होगा" ।

शिवनाथ । अच्छा आपकी बात मानताहुं, वैसाही करुंगा, पर आप के समय का भी तो मूल्य है, रुपए को जरुरत भी है, बिना फीस के रोगीयों को देखने से आपका रोजगार किस तरह चलेगा ?

मोती बाबू ।"नहीं, शिवनाथ बाबू, मेरा समय कुछ ऐसा कीमती नहीं है अभी तक भी मेरी कुछ ऐसी चलती नहीं हुई है, घर में ही बैठा रहता हुं । इस बारे में आगे क्या होगा यह भी मैं नहीं, जानता फकत एक इसी रोगी के इलाज का फीस न लेने से मेरी कुछ विशेष हानि नहीं होगी । अपने दोस्त का एक काम करो, मेरी यह बात मानो" । अगत्या लाचार शिवनाथ ने डाक्टर बाबू की बात स्वीकार की और उनके जाने के बाद दवा, बरफ अराहट मिसरी रोगी के लिये जो जो जरुरी चीजें थी, खरीद लाए । उन्होंने उस दिन रोगी की शय्या के पास बैठे रहने के लिए बड़ा जिद्द किया, पर बैजनाथ जी ने उनकी एक न मानी, उन्हें घर जोरसे कालिज भेजा ।

शाम को फिर मोती बाबू को साथ लेकर शिवनाथ आए । डाक्टर साहब रोगी को देखतेही समझ गए कि वह जिस बात से डरते

थे, वही सामने आई, '१०५' रिमीटेंट ज्वर' था। रोगी की दोनों आंखें और भी लाल हो आई थीं, सारा दिन सिर पर बरफ रखे रहने पर भी तपन कम नहीं, चंपा का स्वभाविक गोरा चेहरा ज्वर के प्रकोप से लाल हो आया था, सारा दिन छट पटाती इस करवट उस करवट करती रही, कभी ज़रा सा आंख लगा तो कभी उठ कर ज़िद्द करके बेबे का गला थाम के रोती, छिन भर मे थक कर फिर सो जाती, दिन भर यही हाल रहा। मोती बाबू ने थर्मामिटर लगाया तो १०५ डिग्री बुखार और नाड़ी की गति प्रतिमिन्ट १५० पाइ, कुछ चिन्तित हुए। घड़ी घड़ी दवा खिलाना मना किया और एक दुसरा नुसखा लिखकर बोले, दिन मे तीन दफे और रात को जब अपने आप जागे तब एक दफे पिला देना। पथ्य का विशेष व्यवस्था किया और शिवनाथ को निराले मे ले जाके बोले "इस रोग का खाना ही दवा है, घड़ी घड़ी पथ्य देना, यदि यथेष्ट भोजन नहीं मिला तो रोगी की जान नहीं बचेगी"।

कइ दिन तक चंपा इस भयंकर ज्वर से कष्ट पाती रही। शिवनाथ ने अब बैजनाथ की एक न मानी, लिखा पढ़ी सब छोड़ के रात दिन उन्ही के घर रहने लगे, दवाइ पथ्य बजार से खरीद लाना, रोगी को समय पर औषधी पथ्य देना सब अपने हाथ से करते थे, गृहस्ती के काम काज के कारण बसन्ती कभी रोगी की शय्या से उठ कर अन्यत्र जाती तो शिवनाथ वंही चुपचाप बैठे रहते। यदि बैजनाथ जी कभी थकावट या चिन्ता से सो जाते तो शिवनाथ बिना पलक झपकाए रोगी की सेवा मे लगे रहते थे। जब बुखार की प्रचंड गरमी से बालिका चंपा छट पटाने लगती तो शिवनाथ आहार निद्रा थकावट सब भूल कर तरह तरह की बातें, तरह तरह के किस्से, नाना प्रकार से दिलासा देकर चंपा को शान्त करते थे, असह्य ज्वर की पीड़ा मे शिवनाथ जी की इन बातोंसे चंपा बिचारी को कुछ शान्ति मिलती थी। कभी सिर पर हाथ फेर कर, उसे धीरे धीरे सुला

देते, कभी उसके दुबले पतले गौर वर्ण रक्त शून्य बाहुलता को अपने हाथ में लेकर रोगी को तुष्ट करते, सिर गर्म होने पर सारा दिन उस पर बरफ रखे बैठे रहते थे। दोपहर रात को रोगी की धीमी अवाज सबसे पहले उनीके कान में पहोंचती, बालिका के सूखे होंठ उनके हाथ से एक घुंट पानी या एक चमचा अराहट पाते, नींद खुलते ही बालिका को उनके हाथ से औषधि और पथ्य मिलता था।

दस बारह दिन मे चम्पा बहोत कमजोर हो गई, अब उठने बैठने की ताकत भी नहीं रही आंख से अच्छी तरह दिखाई भी नहीं देता था, मुंह एक बारही सूख के पीला ठांठर हो गया, पर तौभी बुखार कमा नहीं। सवेरे १०२ डिग्री से कमता नहीं था और शाम को १०५ डिग्री तक चढ़ जाता था।

मोती बाबू जरा चिन्तित हुए, बोले" शिवनाथ! चौदहवें दिन यह रोग आराम होना चाहिए, यदि ऐसा न हुआ तो रोगी के जान का खटका है। बालिका जैसी कमजोर हो गई है, इससे मुझे मालूम पड़ता है कि और ज्यादह दिन तक तकलीफ बरदाश्त नहीं कर सकेगी"।

तेरहवें दिन डाकटर बाबू दिन भर रोगी के पास रहे और हरदम रोग पर दृष्टी रखी। शाम को बुखार जरा कमा, पर बहोत मामूली, उससे कुछ भरोसा नहीं किया जा सकता था। डाकटर बाबू बोले "देखो शिवनाथ बाबू, आज रात भर रोगी को खूब सावधानी से देखना, कल सवेरे थर्मामेटर लगा के देखना यदि ९८ होय ९९ होए यदि १०० से जरा भी कम होय तो उसी वखत पांच ग्रेन क्यूनाइन खिला देना, आठ बजे के भीतर ही मैं आऊंगा"। शिवनाथ ने यह सब बातें बैजनाथ या बसन्ती किसी से भी नहीं कही। शाम को घर से भोजन करके आके चंपा की शय्या के पास बैठ गए, रात भर अपनी जगह से हिले तक नहीं, छिन भर भी पलक नहीं झपकाई। पौ फटने की सफेदी खिड़की से नजर आई, उस समय सारे घर में सन्नाटा

छाया हुआ था। बैजनाथ जी सोए हुए थे, बसन्ती भी सारी रात जाग के दोनों बच्चों के पास सो गई थी, बच्चे दोनों भी सोए हुए थे। पहली रात को बहोत कुछ छट पटाने के बाद चंपा की भी इस समय आंख लग गई थी। घर में एक दिया जल रहा है, टिमा टिमाते हुए दीपक की मन्द ज्योति रोगी के सूखे हुए पीले मुख पर पड़ रहे हैं।

शिवनाथ धीरे धीरे उठे, रोगी के अतिशय क्षीण हाथको धीरे धीरे पकड़ कर उठाया, नाड़ी ऐसी तेज थी कि गिन नहीं सके। फिर थर्ममेटर लगाया, घड़ी के तरफ देखते हुए गाल पर हाथ रख के बैठे रहे। इससमय उनका कलेजा धक्‌ २ कर रहा था। घड़ी टिक टिक बोलने लगी, एक मिन्ट, दो मिन्ट, चार मिन्ट पांच मिन्ट बीता, उन्होंने थर्मामेटर रोगी के बगलसे निकाला। निकाल कर दिए के पास गए, कलेजा उछल रहा था, हाथ कांप रहा था। पहले तो दिए की धीमी रोशनी में उन्हें कुछ सुभाई नहीं दिया। हाथ से सिर के बाल हटाकर मत्थे का पसीना पोंछा, निद्राशून्य चक्षुअेांको एक दफे, दो दफे पोंछा, फिर थर्मामेटर के तरफ निगाह डाली क्या देखा? देखते ही चौंक पड़े! पर नहीं दिए की रोशनी का ठीक बिश्वास नहीं, सायद गलती हुई हो। दिल बांध के खिड़की के पास जाके सुबह के उजियाले में फिर थर्मामेटर को देखा, १०३ डिग्री दिखाई दी। मत्थे पर हाथ मार कर, वहीं धरती पर गिर पड़े।

इनके गिरने के आवाज से बसन्ती की नींद खुल गई। बहिन के पास जाके देखा तो वह सो रही है, खिड़की के पास देखा कि शिवनाथ धरती पर सोए पड़े हैं! मन में कहने लगी" आहा! शिवनाथ बिचारा सारी रात जाग के थक गया है यहीं जमीन ही पर पड़के सो गया, आहा! हम लोगों के लिए इसने कितनी तकलीफ उठाई है। शिवनाथ कुछ नहीं बोले,

उनके दिल में जो भीषण पीड़ा हो रही थी बसन्ती को उसका भागी क्यों बनाते ?

और भी एक हफ्ते तक बुखार रहा। चम्पा इतनी कमजोर हो गई कि करवट भी नहीं बदल सकती थी, पानी पीने के लिए सिर भी नहीं उठाया जाता था। झाड़ू के सींक की तरह जरा जरा अंगुली हिलाती थी। चम्पा का मुंह ऐसा हो गया था, कि उसके तरफ देखा नहीं जाता था, पर निराशा से ज्ञान शून्य होकर चुपचाप मिट्टी के पुतले की तरह बैठे हुए शिवनाथ सारी रात उसके मुंहकी तरफ देखते रहते थे। गरीब की लड़की बचपन में खाने पहिरने की तकलीफ सह के भी पली थी, दुर्दैव से बालपन में विधवा हो कर भी, बहिन के स्नेह से, यह छोटा सा फूल ग्राम की कुटिया में कइ एक दिन के लिए खिला था। आहा! आज शायद उस पुष्प ने फिर से मुंह बन्द कर सिर नीचा कर लिया। दरिद्रा बालिका का जीवन-इतिहास शायद आज समाप्त होने लगा है। बीसवें दिन से डाकटर बाबू भी रात दिन बैजनाथ जी के घर रहे। शिव-नाथ को निराले में ले जाके कहा "देखो भाई तुमसे हम कोई बात छिपाएंगे नहीं, और एक दिन में यदि ज्वर नहीं छूटेगा तो इस कमज़ोर मुर्दे शरीर में प्राण टिका के रखना आदमी की ताकत से बाहर है दो तीन दिन हम और देखेंगे, फिर हमें बिदा करना। मुझ से जो कुछ होसका किया पर प्राण रखना या लेना भगवान के हाथ है"।

बाइसवें दिन शाम को बुखार ज़रा कमती हुआ, पर उससे कुछ उम्मेद नहीं की जा सकती थी। रात को दोनों रोगी की शय्या के पास बैठे रहे। उस दिन रात भर चम्पा सोई रही। यह आराम होने का चिन्ह है या मरने की कमजोरी की पहली निशानी है ? बड़े लड़के शिवनाथ ने फिर थर्मामिटर लगाया। थर्मामिटर लेकर खिड़की के पास गए। न जाने क्या देखा

सिर पर हाथ मार के चुपचाप जमीन पर गिर पड़े।

मोती बाबू जरा नहीं घबड़ाए। बिपद के समय धीरताही चिकित्सकों का वीरत्व है। धीरे धीरे उन्होंने शिवनाथ के हाथ से थर्मामिटर लिया, देखा और धीरे से शिवनाथ का हाथ पकड़ के उठाया।

शिवनाथ ने निराश होकर पूछा "हूं। तो अब बालिका की आयू समाप्त हो गई"?

डाकटर। नहीं, ईश्वर बालिका को दीर्घायू करें, अबकी तो वह बच गई।

थर्मामिटर देखने में शिवनाथ ने गलती की थी, ९८ डिग्री दिखाई दे रहा था। चम्पा के शरीर पर हाथ फेर के देखा तो ज्वर छूट गया है, बुखार छूटने से कमजोर बालिका गहरी नींद में सो रही है। सिर से बाल हटा और मत्थे का पसीना पोंछ कर शिवनाथ घर आए, हफ्ते भर तक उन्होंने रात जागरन किया था, मुंह सूख गया था, आंखों के नीचे श्यामताई छागई थी पर आज उनके मन की सारी घबराहट जातीरही।

॥ पन्द्रवां परिच्छेद ॥

॥ गोपाल दास ॥

बिमारी आराम होने के बाद चम्पा कई दिन तक बिछौने से उठ नही सकी। बिछौने से उठने के कई एक दिन बाद तक घर से बाहर नहीं निकल सकती थी। इसके बाद धीरे धीरे उठके बरामदे में टहलने लगी या कभी शिवनाथ जी की मदद से छत पर जरा जा के बैठती थी। हलका चिड़िए ऐसा दुबला पतला शरीर शिवनाथ जी अनायास ही दोनों हाथों से उठा कर छत पर ला रखते और फिर छत से नीचे ले आते थे।

अब उन्होंने कालिज जाना भी शुरू कर दिया, पर हर रोज शाम को बैजनाथ जी के घर आते और नाना प्रकार की बातें, किस्से कहानी कह कर चम्पा को प्रसन्न रखते थे। नौ बजे चम्पा के सोने के बाद आप घर जाके सोते। चंपा भी हर रोज शिवनाथ जी का आसरा देखती रहती थी, उनके पैर की आहट पहले उसी को सुनाई देती, शिवनाथ सीढ़ी चढ़ते ही पहले चंपा का सूखा हुआ शान्त, सफेद, हंस मुख चेहरा देख के तृप्त होते थे।

छत पर लेजा कर शिवनाथ घंटों चंपा को इधर उधर की बात सुनाया करते। कुन्दन पुर की बात, लड़कपन के खेल की कहानी, चंपा की गरीब माता की अवस्था, अपनी माता की कहानी बहिन की अवस्था, इत्यादि नाना प्रकार की बातों से उसका दिल बहलाते थे। चंपा भी एकाग्र मन से शिवनाथ जी की मीठी मीठी बातें सुनती और उनके हंसमुख चेहरे की तरफ निहारती रहती थी। रोग या शोक में जब हमारा शरीर कमजोर, हृदय बलहीन हो जाता है, उसी समय हमें अपने मित्रों की दया और स्नेह का पूरा अनुभव होता है। किसी समय में घमंड से जो सलाह नहीं मानी थी, उस समय वही सलाह याद आती है, दूसरे किसी समय में जिस स्नेह को तुच्छ समझते थे उस उमय उसी स्नेह से कलेजा ठंडा होता है, क्योंकि इस समय दिल कमजोर रहता है स्नेह का आसरा देखता है। जैसे लता बड़े पेड़ के आसरे से धीरे धीरे बढ़ती और फूलती है, चंपा भी त्योंही शिवनाथ जी के अमृत मय वचनों से तृप्त होती थी। रात तक उनके अमृतमय वचनों को सुनती रहती, उस अमृतपूर्ण, स्नेह शाली, प्रसन्न मुख की तरफ देखती रहती या थक कर उनके हृदय पर सिर रख देती। यत्न के साथ ही शिवनाथ जी का स्नेह बढ़ने लगा। वह बालिका का दुबला पतला हाथ अपने हाथ से पकड़ के उसका सिर अपने हृदय पर रख कर तृप्त होते थे। एक दिन दोनों इसी तरह छत पर बैठे हुए थे कि वहां बैजनाथ जी आए और शिवनाथ को देख के बोले

"शिवनाथ, आज गोपाल बाबू ने हम लोगों को न्योता दिया है, चलोगे नहीं" ?

शिवनाथ। हां, हां, मैं तो भूल ही गया था, मेरी कहीं भी जाने की इच्छा नहीं होती, पर बिना गए सरता भी नहीं।

बैजनाथ। नहीं, देखो चम्पा की बीमारी के दिनों में गोपाल बाबू हम लोगो को दिलासा देने और अपने भाई को इलाज की तागीदी करने के लिये रोज आते थे, उनके घर तो जाना ही होगा। चलो अभी चलना होगा।

शिवनाथ और चम्पा दोनों उठ खड़े हुए। बैजनाथ जी ने चम्पा को पकड़ के धीरे धीरे सीढ़ी उतारा और उसे घर में सुला कर आप घर से बाहर निकले। रास्ते में चलते चलते शिवनाथ से बोले "तुमने भाई, इस बीमारी में हमारे लिए जो किया है, उसका बदला हम इस जन्म में नहीं चुका सकते, पर इसके सबब से तुम्हारी पढ़ाई लिखाई में भी बड़ी हानि पहोंची है, महीने भर से कालिज नहीं गए हो, अबी भी तुम्हारी पढ़ाई ठीक से नहीं हो रही है, मन लगा के लिखापढ़ी करो। तुम्हारी परीक्षा में अब ज्याद: देरी नहीं है"।

शिवनाथ जी कुछ देर तक चुप रहे, फिर बोले "हां, अब समय तो थोड़ा ही रह गया है, अब जरा मन लगा कर पढ़ना जरूरी भी है। चम्पा अब अच्छी हो गई है पर बसन्ती बेबे से कह देना कि जब कभी फुरसत मिले उसे रोज छत पर लेजाके बात चीत से उसका मन बहलाए रक्खे। डाक्टर बाबू ने कहा है कि मन बहला रहने से चम्पा का शरीर बहुत जल्द पुष्ट हो जायगा। बातचीत करते हुए दोनों गोपाल बाबू के घर जा पहुंचे।

मोती बाबू के बड़े भाई गोपाल दास बड़े बाजार के एक नामी रईस थे। इनकी उमर तीस से ज्यादा नहीं थी, पर यह बड़े बुद्धिमान, देशहितैषी और उत्साही पुरुष थे, इसी उमर में हाईकोर्ट के नामी वकीलों में इन की गिनती हो गई थी। म्युनिसिपलिटी के मेम्बर भी थे और शहर की उन्नति के लिये यथासाध्य चेष्टा

किया करते थे । घर इनका बहुत बड़ा नहीं था, पर साफ सुथरा और शौकियाने ढंग का बना हुआ था । बाहर दो, एक मंजिला बैठका था, उनके बैठके में एक टेबिल पांच छः कुरसी, पुस्तकों से भरी हुई दो कांच की आलमारी और दिवाल पर आमने सामने पांच चार नफीस तस्वीरें लटक रही थी । जमीन चटाई से मढ़ी हुई और सारा घर साफ सुथरा, स्वामी के रुचि और बुद्धिमता का पता दे रहा था । टेबिल पर मोमबत्ती का दो समादान जल रहा था । इन दोनों के आते ही गोपाल बाबू ने हंस कर खातरी से बैठाया और बैठे हुए बहुत देर तक इधर उधर की बातें करने लगे । इनका स्वभाव बड़ा गंभीर था ज्याद: बोलते नहीं थे पर वर्ताव बड़ा यथोचित था । चम्पा की बीमारी के समय रोज बैजनाथ के घर जाते, उनको यथासाध्य सहायता करते और बातचीत से उन्हें खुश रखते थे ।

बहुत देर तक की बातचीत के बाद बैजनाथ जी बोले "कल-कत्ते आकर आप से पुरुषों से भेंट कर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ हूं । मैं गांव गवंइ का रहने वाला, वहां बुद्धिवान विद्वान आदमी के कदाचित ही कभी दर्शन होते हैं, और आप लोगों के ऐसे उत्साही और देशहितैषी सज्जन भी वहां बहुत कम दिखाई देते हैं ।

गोपालदास । केवल मुहजबानी देशहितैषिता है, या मनमें ऐसी इच्छा हो भी तो वह कर्म में नहीं आती । हम लोग मामूली आदमी ठहरे, देश के लिये क्या कर सकेंगे ? अख्तियार ही क्या है ? इस का उपयुक्त स्थान या समय भी कहां है ?

बैजनाथ । जो जितना सके यदि उतना ही करे तो बहुत कुछ हो सकता है । सुनते हैं कि म्युनिसिपल कमेटी के मेम्बर हो कर आप बहुत कुछ उपकार कर रहे हैं और सब लोग आप की तारीफ भी करते हैं ।

गोपालदास । उपकार क्या है, कर्तार लोग जो कुछ हुकुम देते हैं वही होता है, हम लोग भी वही कर छोड़ते हैं । कलकत्ते वालों को अपने मेम्बर चुनने का अख्तियार मिला है । लाट

रिपन साहब सारे भारतवर्ष के खास खास शहरों को यह अखितयार दे कर लोगों के सन्मान पात्र हो गए हैं, हम लोग और भी अखितार पाने की कोशिश कर रहे हैं देखो मिलता है कि नहीं।

बैजनाथ। मुझे तो पूरा विश्वास है कि हम लोगों को और अखितयार अवश्य मिलेंगे, और मिलने से हम लोगों का उपकार भी होगा।

गोपालदास। बहुत उपकार होगा, इसमें भला क्या सन्देह है? देशशासन करने का ढंग हम लोग सैकड़ों बर्ष से भूले हुए हैं, ग्राम शासन की चाल भी भूल गए हैं, केवल आपस में मुंह जुबानी एक दूसरे की निन्दा और गाली गलौज करना यही हम लोगों की जातिय उन्नति का उद्यम रह गया है। पर तौ भी मुझे पूरा भरोसा है कि धीरे धीरे हमारी उन्नति होती जायगी और अधिकार भी मिलते जायंगे। जैसे रात के बाद सबेरा अवश्य ही होता है, वैसे ही शिक्षा के बाद हम लोगों के अधिकार का विस्तार भी अवश्य ही होगा।

शिवनाथ। आप की बातों से मैं बड़ा सन्तुष्ट हुआ, मेरे मन में भी ऐसी ही आशालता उग रही है, पर हम लोगों के इस कठिन परिश्रम से हमदर्दी दिखाने वाले कै सज्जन हैं? हम लोगों की ऊंची अभिलाषाएं दूसरों की दिल्लगी का लक्ष्य है, हमारे उद्यम की बिफलता से वह खुश होते हैं, हमारी जातीय चेष्टा, जातीय जीवन संचार के कठोर उद्यम पर वह लोग दिल्लगी उड़ावते, चुटकी बजाते हैं। मरन्नापन जाति जिस समय फिर से उठने की कोशिश करने लगे, कुछ आशा बांधे तो क्या वह किसी की जरासी हमदर्दी की उम्मीद भी नहीं कर सकती?

गोपालदास। शिवनाथ जी आप की उम्र में मैं भी ऐसा ही सोचता था, किसी अंगरेजी अखबार में जरा सा ताना तरेज देख कर मेरा हृदय दुख जाता था। पर विचार कर देखिये केवल हमदर्दी वगैरे जो कुछ सद्गुण हैं, यह सब फोंकला पोला माल है

देखने में बड़ा सुन्दर दिखाई देता है, पर उसका मूल्य कुछ नहीं है। यदि इसे देते और लोगों को ऐसा ही कष्ट होता हो तो अपने बक्सों में बन्द कर रखें, हमें इसकी जरूरत नहीं। अगर दिल्लगी ही उड़ाने में उन्हें मजा आता हो तो उड़ावें. उनकी यही दिल्लगी हो हमारे जातीय जीवन का बन्धन होगी। शिवनाथ जी, हम लोगों की समता हमारी ही योग्यता और साधुता पर निर्भर है कुछ दूसरों के हाथ में नहीं है। आओ हम मिल के काम करना सीखें, फिर दूसरों की हमदर्दी का आसरा न तकेंगे, दूसरे के उपहास, तानों की परवाह नहीं करेंगे, दिन पर दिन आगे बढ़ते जायंगे, फिर हमारी उन्नति का मार्ग कौन रोक सकता है ?

मोती लाल। मेरा भी ऐसा ही विश्वास है कि हम लोग धीरे धीरे उन्नति कर रहे हैं, पर भाई यह उन्नति कितने धीरे २ हो रही है। राज नीति की बात छोड़ दीजिए, समाज की ही बात लीजिये। मुंहजबानी, पुस्तकों समाचार पत्रों में हम लोग कितनी बहस, तर्क वितर्क करते हैं। पर वास्तव में एक भी सामाजिक उन्नति करने में कितनी देरी लगती है, बीसों वर्ष के आन्दोलन और लेकचर बाजी से एक भी सामाजिक कुरीति नहीं उठने पाती।

गोपाल बाबू। मोती भाई, मैं तो इसे इस जाति का दोष नहीं गुण समझता हूं। जो जाति या समाज चट पट अपनी रीति नीति बदलने में तत्पर रहती है वह ज्यादे दिन टिकती नहीं। तुमने तो फ्रांस का इतिहास भी सुना होगा, सौ वर्ष का जमाना हुआ, फ्रेन्च लोगों ने एक दम से सारी कुरीतियों को उठा देने का निश्चय किया था, उसका नतीजा क्या हुआ, भयंकर राज विप्लव, धर्म्म विप्लव, समाज विप्लव, यह तो तुम जानते ही हो। किसी रीति रिवाजके बदलनेमें समाजको चटपटी नहीं करनी चाहिये नहीं तो लाभ के बदले हानि अधिक होगी।

मोती। पर जिन रीतियों से एक दम से सर्वनाश हो रहा है, क्या उनको भी नहीं उठाना चाहिए।

गोपाल। बहुत कुछ समझ बूझ के, आलोचना करके तब उनमें हेरफेर करना उचित है। आलोचना, आन्दोलन से भी कुछ ऐसा विशेष लाभ होता नहीं दीखता। यदि समाज में जान होगी, मुर्दा नहीं होगी तो समयानुसार सुबीता समझ के लोग आप ही हानिकारक रीतियों को त्याग देंगे। जिन्दा समाज का यही लक्षण है, उसका सुधार धीरे धीरे स्वयमेव हो जाता है।

मोती। मैं भी यही कह रहा था। यह सच है कि हमारे समाज का सुधार हो रहा है, पर हमारे जीवन की नाड़ी बड़ी क्षीण है, इस लिये सुधार की गति भी निहायत ही धीमी है। दूसरे तरफ देखिए व्यापार ही में हम लोगोंकी क्या उन्नति हो रही है। इसमें तो नए कानून की जरूरत नहीं, न राजाज्ञा की अपेक्षा है, न समाज के रस्म रिवाजों से कुछ वास्ता है, जरा से कोशिश की, उद्यम की जरूरत है। सो भी हमसे नहीं होता। अपने देश की रुई से अपना वस्त्र नहीं बना सकते, यूरोप से कपड़ा न आवे तो लंगोटी भी पहिरने को न मिले दिन पर दिन देशी जुलाहों का सर्वनाश हुआ जा रहा है।

बैजनाथ। भला कल के कपड़े का मुकाबला जुलाहे बिचारे हाथ से बिन कर किस तरह कर सकेंगे। मैंने ग्रामों के बहुत से हाट, बहुत से गरीबो के घर देखे हैं। मुझे याद आता है कि पहले सब के घर में एक एक चरखा रहता था, पर अब खोजिए तो एक चरखे के भी दर्शन नहीं होंगे। उसका सबब यह है कि अब बढ़िया से बढ़िया बिलायती सूत थोड़े दामों को बिकता है। हाट में जो देशी कपड़ा १॥) रु० को बिकता है, वैसे ही बिलायती कपड़ ॥।≶) को मिल जाता है। इससे आम लोगों को बहुत फायदा हुआ क्योंकि थोड़े दामों में उन्हें अच्छा कपड़ा मिलता है, पर जुलाहे हाथ से कपड़ा बिनके कल का मुका-

सका कभी नहीं कर सकेंगे, यह निश्चय है ।

मोती लाल । मैं भी यही कहता हूं । आज कल सभ्य देशों से हाथ का काम उठता जा रहा है, इसलिए सब बिना कल के काम किए हमें भी कोइ चारा नहीं हैं । फिर इस भारतभूमि को कलों से क्यों न पाट दें ? हम लोगों में क्या इतना उत्साह, इतनी विद्या बुद्धि नहीं है ।

गोपालदास । मोती भाई, यहां विद्या बुद्धि की कमी नहीं है, रुपए की कमी है । बिना भारी पूंजी लगाए एक कल नहीं चल सकती और सब से भारी हम में एक शिक्षा की कमी है, हम लोगों ने अभी दस जने मिल कर कोई काम करना नहीं सीखा है, यही शिक्षारी सभ्यता की प्रधान सहायक है । देखो हमारे देश में विद्वान हैं, धनी हैं, राजनीतिज्ञ, धर्म्मप्रचारक सभी हैं, बुद्धिमानो की भी कमी नहीं है पर दस आदमी का मिलके एक काम करना यह शिक्षा और ही वस्तु है, यह हम लोगों को अभी तक नही आई । दस विद्वान मिलकर कोई उपकार का काम कर रहे हों या दस राजनीतिज्ञ मिल कर एको फैला रहे हों या दस धनी मिल कर कोई बड़ा व्यापार कर रहे हो, ऐसा दृश्य तो शायद ही दिखाई देता है । सभी आप आप को प्रधान हैं । पर तो भी हमें उम्मेद है कि और शिक्षाओं के साथ हम यह भी सीखेंगे, क्योंकि बिना यह सीखे हमारा सभ्य होना दुस्वार है ।

योंही बात चीत हो रही थी कि भीतर से नौकर ने आकर खबर दिया कि भोजन तय्यार है, सब लोग भोजन करने भीतर गए, भोजन के उपरान्त पान तमाकू से सब की खातिरी कर थोड़े देर तक और बात चीत करके गोपाल बाबू ने सब को बिदा किया । शिवनाथ जी अपने घर गए । बैजनाथ जी गोपाल बाबू की बातें सोचते सोचते ऐसे लवलीन हुए कि उन्हें बिलकुल खबर ही न रही कि किधर जा रहे हैं । रास्ते में चन्द्रमा की ठंडी चांदनी से उजियाला हो रहा था, ठण्ढी ठण्ढी हवा चल रही थी, बैजनाथ जी टहलते

टहलते चीतपुर की तरफ जा निकले 'वहां पहुंचने पर होश आया, न जाने कितनी रात गई, यही सोचते हुए लौट पड़े तो पीछे से गाड़ी की गड़गड़ाहट सुनाई दी। मुंह फेर के देखा तो फिटन की जोड़ी दौड़ी हुई चली आ रही है। सफेद बड़े बड़े घोड़ों की टापें मानो धरती को छूती नहीं हैं घोड़े उड़े चले आ रहे हैं, फेटिन गड़गड़ाती हुई बैजनाथ जी के बगल से होती एक बगीचे के फाटक के भीतर चली गई। उसके बाद फिर ऐसी ही एक जोड़ी आई, दो काले हूलर एक ब्रेन्हो गाड़ी में जुते हुए थे। वह गाड़ी भी गड़गड़ाती हुई बगीचे के फाटक में घुस गई। फाटक के भीतर जाते समय किसी स्त्री के खिल खिला कर हंसने की आवाज आई।

बैजनाथ जी जरा उत्सुक हुए, विशेष देखने के लिए बाग के फाटक के पास गए—देखा कि फाटक पर नरपतसिंह, मेघा ओझा, निर्म्मल दूबे, गलमुच्छा चढ़ाए हाथ में लठ लिए दरबान लोग छाती ऊंची किए टहल रहे हैं। बगीचे के भीतर पत्थर की बड़ी सुन्दर सुन्दर पुतलियां और एक तालाब दिखाई दिया। तालाब के ऊपर ही एक आलीशान इमारत थी, जिसके खिड़कियों में लेट के परदे टंगे हुए थे और उनमें से छन कर बिजली की तेज रौशनी बाहर पड़ रही थी और रह रह के बाजे का आवाज और स्त्री कण्ठ निसृत गीत सुनाई दे जाती थी।

बैजनाथ जीने धीरे से एक दरवान से पूछा "दरबान जी, यह किसका बगीचा है" दरबान जो ने जरा दाढ़ी उमेठी और मोछ पर ताव देकर बोले वाह तुम नहीं जानता शहर का सब बड़ा आदमी जानता है, तुम जानता नहीं, तुम नया आदमी है क्या ?

बैजनाथ। हां भाई, हम नए आदमी हैं, इधर कभी आना नहीं, हुआ, इसी लिए पूछते हैं।

दरबान। कोई होगा। यहां सब कोई यह बगीचा जानता है! कलकत्ते का जित्ता बड़ा बड़ा आदमी है, जमीदार, वकील, कौंसली सब इस बगीचा में आता, सब यह बगीचा जानता।

बैजनाथ । ऐसाही होगा, हम गरीब आदमी हैं, हम भला यह सब बात किस तरह जानें !

दरबान । ठीक है, तुमरा माफिक आदमी यह बगीचा नहीं जानता आज बड़ा नाच होगा । बहुत रईस लोग आए हैं । बड़ा जलसा है ।

बैजनाथ । नाच करवाता कौन है ? बगीचा किसका है ?

दरबान । रघुनाथपुर के जमीदार चौधरी विजयनरायण जी !

बैजनाथ जी के सिर पर मानों आकाश टूट पड़ा ।

"हाय, हत भागिनी तारा । यदि धन से, संगमर्मर मंडित इन्द्र पुरी तुल्य महल से, काली या सफेद जोड़ी से ही सुख होता, तो आज तेरे करम क्यों फूटते ?

॥ सोलवां परिच्छेद ॥

॥ चौधरी विजय नरायण जी ॥

जिस दिन से बैजनाथ जी विजयनरायण जी का बगीचा देख आए थे, उस दिन से हमेशां चिन्तित और गंभीर रहते थे, एका एकी खोल के बसन्ती से भी नहीं कह सके, जिससे उसे सुनके तारा के लिए मन मे दुःख न हो, और बसन्ती से यह बात छिपाते हुए भी उने बड़ी तकलीफ होने लगी ॥ क्या करें ? कौन उपाय करें ? बिचारी हत भगिनी तारा की खबर क्योंकर लें ? क्या तारा को किसी तरह की मदद पहोंचा सकेंगे ?

यही सब सोचते बिचारते कई दिन बीत गए, अन्त को उन्होंने निश्चय किया कि चाहे जो हो एक दिन विजयनारायण के घर जरूर जांयगे॥ लड़कई में जब विजयनरायण कभी कुन्दनपुरमें आते तो उनको बहोत मानते थे, शायद अब भी बैजनाथ जी की दो एक सल्लाह मान लें, और नहीं तो एक दफे अपनी आंखों से तारा की हालत तो देखते आवेंगे फिर जो होगा, उपाय किया जायगा ।

बैजनाथ जी ने यही सब बातें मनोमन ठीक की, पर विजयनरायण जी से मुलाकात होना कोई हंसी खिलवाड़ तो था नहीं॥ कलकत्ते शहर में चौधरी विजयनरायण जी बड़े नामी धनवान रईस थे, उनके सैंकड़ों दोस्त, काम काज का लगातार झंझट बैजनाथ ऐसे मामूली आदमी से मुलाकात करने की उन्हें फुरसत कहां? विजयनरायण जी शोभाबजार में रहते थे, बैजनाथ जी के पास गाड़ी जोड़ी तो थी ही नहीं जो सवार होकर विजयनरायण जी से मिलने जाते सो एक दिन पैदलही उनकी बादशाही महल में गए॥ फाटक के दरवानों ने इनकी मामूली शकल देख के उधर निगाह भी नहीं की और न इनकी बातों ही पर कुछ ध्यान दिया बहोत कहने सुनने से भी खटिया रूपी सिंहासन पर से कोई नहीं उठा। कोई ऊंघ रहा है, कोई खोआसी ले रहा है, कोई दाल चुन रहा है, कोइ घर की दाई से हंसी दिल्लगी कर रहा है। बहोत देर के बाद उनमें से एक ने कृपा करके बैजनाथ जी की ओर दृष्टी उठाई और पूछा "क्या है, बाबू? तुम सबेरे से क्यों बैठे हुए हौ"?

बैजनाथ। हम विजयनरायण जी से मुलाकात करने आए हैं, क्या उनसे भेंट होगी। बड़ी दूर से आए हैं, जरा जाके खबर तो करो, कहना कि कुन्दन पुर से बैजनाथ बाबू मुलाकात करने आए हैं।

दरवान। गांव के बहोत से आदमी आया करते हैं, महाराज जी सबसे मुलाकात नहीं कर सकते, उनको इतनी फुरसत कहां।

बैजनाथ। अच्छा, एक दफे जाओ, तो, बड़ी जरूरत है, एक दफे मुलाकात हो जाय तो अच्छा है।

दरवान। सभी कोई एक न एक जरूरत लेके आते हैं, महाराज जी से सभी गांव के लोगों का कुछ न कुछ जरूरत है, सभी कुछ न कुछ आसरा रखते है। तुमरा गांव कहां, कुन्टनपुर है, वहां लुटेरा लोग बसते हैं?

बैजनाथ। नहीं दरवान जी कुन्दनपुर है, कुन्टनपुर नहीं जहां तुमारे मालिक का कुचहार है। तब एक महाशय जो

खटिए पर अध लिटे हुए सब बातें सुन रहे थे ओसाओ लेकर उठ के बोले " हां, हां हम जानते हैं, उसी कन्दनपुरके गांव में महाराज जी विवाह की हिन हैं। तुम क्या महाराज जी के सुसरार के आदमी हो?

बैजनाथ। हां, उसी गांव के हैं, महाराज से रिश्तेदारी भी है।

अब इनमें से दो तीन बुद्धिमान गलमुच्छे वाले थोड़ी देर तक आपुस में कुछ सलाह करने लगे। एक बोला "अह: गांव गंवई से सैकड़ों कंगले आया करते हैं, निकाल बाहर करो" दूसरा कहने लगा "नहीं, नहीं, महाराज जी के ससुरार का आदमी है, इसे एकाएकी निकाल देने से मां जी सुनेंगी तो नाराज होंगी"। तीसरे ने यह फैसला किया कि "अच्छा थोड़ी देर और बैठाओ"।

बैजनाथ जी और भी थोड़ी देर तक बैठे। यह ज़रा चिन्ता-शील समालोचना प्रिय थे, बड़े आदमियों के दरबानों की सभ्यता और सामाजिक आचार व्यवहार की विशेष समालोचना का मौका इन्हें हाथ आया, और इससे इन्होंने बहुत कुछ उपदेश भी पाया।

जब दरबानों ने देखा कि यह कंगला टलताही नहीं तो उनमें से एक बड़े आराम की खटियासे मुश्किल से उठा और एक दफे ओआसी लेकर लंबे चौड़े हाथों को आकाश की तरफ फैलाकर, ज़रा शरीर तोड़ अंकड़ाई ले, दाढ़ी उमेठ, धीरे धीरे ऊपर गया। बैजनाथ जी आसरा देखते रहे आध घंटे के बाद दरबान जी ने ऊपर से आके खबर दिया "जाओ इस वखत मुलाकात नहीं होगा।

बैजनाथ। हमरा नाम कहा था।

दरबान। अरे नाम क्या कहें। इतने सबेरे सबेरे क्या महाराज जी से मुलाकात होती है। महाराज जी अभी सोके नहीं उठे हैं। दस बजे उठते हैं, उसके बाद आना।

बैजनाथ जी क्या करें, लाचार होकर लौट आए। एक दिन दस बजे के बाद गए, उस वखत महाराज जी घर पर नहीं मिले। एक दिन शाम को गए, महाराज जी बगीचे चले गए। एक दिन चार बजे गए, महाराज जी कहीं महफिल में चले गए हैं। चार पांच

दिन योंहीं वृथा दौड़ धूप कर के एक दिन फिर शाम को गए, सौभाग्य से उस रोज विजयनारायण जी घर पर थे।

दरवान ने पूछा " तुम्हारा क्या नाम है ? धामनाथ कि जामनाथ ?

बैजनाथ। नहीं, नाम बैजनाथ है, कुन्दनपुर गाव से आए हैं।

दरबान ने ऊपर जा के खबर किया, नीचे आके बोला "उपर जाइए। बैजनाथ जी ऊपर गए। रघुनाथपुर के पुस्तैनी चौधरी घराने के दीवान साहब के वारिस चौधरी विजयनारायण जी की उम्र करीब पचीस वर्ष की होगी। उज्ज्वल गौर वर्ण, शौखीनी और पोशाक लिबास का तो कहना ही क्या है। इस समय अपने खास दोस्तों के साथ उक्त चौधरी साहब विराजमान थे। उन्होंने बड़ी खातरी से बैजनाथ जी को मखमली कुरसी पर बैठाया। बैजनाथ जी ने अपने को धन्य माना। सहसा कोई बात नहीं कह सके, इस बैठके की शोभा निरख कर कुछ देर तक मोहित हो रहे। अब तक उनोने चौरंगी के बड़े २ अंगरेजों के महलातों के बरामदे में फरांसीसी पंखा चलते सड़क से देखा था, लाट साहब की कोठी के फाठक तक हो आए थे, ताक झांक करके दो एक अंगरेजी दुकानो का भीतरी ठाठ भी कुछ कुछ देखा था, पर ऐसे सजे सजाये नवाबी ठाट के कमरे के भीतरे जाने का सौभाग्य उने आज तक प्राप्त नहीं हुआ था। कमरे की जमीन पर निहायत उमदा गलीचा मढ़ा हुआ था, उसमें की गुलाब लता, पत्ते, शाखाओं पर बैठी हुई चिड़ियायें अजब बहार दिखा रही थीं। ऐसे फर्स पर चार जगह से पैबन्द लगा धूल भरा हुआ जूता रखते हुए बैजनाथ जी को कुछ संकोच हुआ। गलीचे पर आबनूस के लकड़ी की गद्दीदार लंबी चौड़ी नानाप्रकार की हरे मखमल से मढ़ी हुई कुरसियां थी। ऐसे मखमल का कोट कभी बैजनाथ जी बच्चों को भी पहिरना नसीब नहीं हुआ होगा। संगमरमर के टेबल, मूर्तियां, ऊपर से बिलौरी झाड़ में बिजली की रोशनी चमक रही थी, जिस से घर में दिन ऐसा उजेला हो रहा था, बैठकेकी खिरकीसे रोशनी नीचे सड़क पर पड़ रही थी एक तरफ

संगमरमर के टेबल पर सितार, इसराज, बीन वगैरे बाजे रक्खे हुए थे, एक कोने में बड़े बड़े बूटेदार छींट की गिलाफ़ से ढका हुआ एक पियानो रक्खा था, बगलमें छोटे छोटे कई संग मर्मरके टेबल थे, उन पर कांच का एक बड़ा डिकेंटर और कई ग्लास रखे हुए थे। दिवाल पर चारों ओर अक्सयर कम्पनीके यहांके बड़े २ आयने लगे हुए थे, जिनमें बैजनाथ अपना दरिद्र चेहरा चारों तरफ़ प्रतिबिंबित देख कर और भी लज्जित हुए। ऊपर कई एक निहायत खूब सूरत आयल पेंटिंग टंगे हुए थे, जिनमें मानो इन्द्रपुरी से स्वयम आन कर चित्रलेखा मेनका रम्भा विलास कर रही थीं।

खैर, बैठके का वर्णन तो एक तरह से हुआ, अब विजय गौरी-शंकर जी की मित्र मंडली का वर्णन क्यों कर किया जाय? यद्यपि आज ज्यादे भीड़ भाड़ नहीं है, पर तो भी चौधरी जी के चुने हुए, कई एक गुणवान प्रिय मित्र बैठका गुलजार किए बैठे हैं, मानों विक्रम की सभा में नवरत्न विराज मान हैं। इस मित्र मंडली का पूरा वर्णन करना तो मेरी ताकत से बाहर है पर दो चार बातों में पाठकों को इनकी पहिचान करा देते हैं।

चौधरी जी के दहिने तरफ़ बन्नू बाबू जौहरी बैठे हुए हैं, उम्र करीब तीस बत्तीस की होगी, रंग गोरा और चेहरा खूब सूरत है। काले किनारे की चुनी हुई देशी धोती, अध्धी का पंजाबी काट का कुरता और चुना हुआ दुपट्टा कंधे पर है, सिर पर लखनौ के कटाउ की बहोत नफीस टोपी लगी हुई है, पैरों में काला वार्निशदार पंप शू चमक रहा है। यह नाम को जौहरी है, जवाहिरात का रोजगार करते तो इन्हें कभी देखा नहीं पर हां अक्सर अमीरों के दहिने तरफ़ इनका आसन रहता है। गाने बजाने में, हंसी दिल्लगी से अमीरों के मन बहलाने में इनके ऐसा होशियार आदमी दूसरा नहीं था, और ऐसा भी सुने हैं, कि मामले मुकद्दमें कार बार में इनकी बुद्धी विलक्षण थी। यह शहत की मक्खी की तरह प्रत्येक खिले पुष्पों से शहत चूसने में बड़े दक्ष थे, बहोत से मधूपांडों से शहत ला ला कर अपने आईरन सेफ रूपी मधूभांड में भर रक्खा

थे। ऐसा भी पता लगा है कि सोम्ब, हेग्ड मोट् वगैरे गूढ़ यंत्रों में भी यह विशेष दक्ष थे, नाबालिक या युवक धनी सन्तानों के प्रति अकसर इन यंत्रो का प्रयोग किया करते थे पर हम लोगों के, इन बातों पर विश्वास नहीं करते, हम तो इनकी मीठी मीठी सरस बातों ही पर लट्टू हो रहे हैं।

शम्भू बाबू के बगल में गोकुल बाबू बैठे थे, इनके ऐसा सुलक्षण विद्वान, कार्य्य कुशल, हंसने बोलने में अद्वितीय पुरुष मिलना दुर्लभ था। हाइकोर्ट के वकील थे, अंगरेजी बोलने में खास विलायती गोरे को भी मात करते थे, कोट पेण्ट, अंगरेजी चाल चलने में इनको सानी का कौन था? शेम्पेन, ह्विस्की या क्लारेट का गुणा गुण इनके सिवाय कौन परख सकता था? इनके ऐसा प्लाटफर्म लेक्चरार कौन था? कलकत्ते का कौन ऐसा शिक्षित होगा जिसका दिल इनकी मेथनेस्टी का लेक्चर सुन कर न पसीजा हो। इनके समान होना कालिज के युवकों का उच्चाभिलाषा था, इनसे दोस्ती करने के लिए अमीर लोग तरसते थे और इनसे रिश्तेदारी करना लड़की वाले सदेह स्वर्ग मानने थे।

इनके पीछे सिरमंगे हरिशंकर बाबू बैठे हुए, आधे हाथ का पंजाबी कुरता पहने, सोने का चेन झुलाए मुसकरा रहे थे। हरिशंकर बाबू पुराने जमाने के आदमी हैं पर बहादुरी कैसी है? कौन अंगरेजी पढ़ा लिखा इनके ऐसी नौकरी पा सका है? यह सिर पर पुराने ढंग का सफेद फेंटा बांध कर रोज आफिस जाते है, पुराने ढंग की अंगरेजी बोलते हैं बड़े बड़े साहब अफसरों के खिलौने हैं, सब इनको सहोस चाहते हैं, सनातन धर्म्म के स्थम्भ स्वरूप हैं, नव सुधारक युवकों को हरिशंकर जी दो चार खरी खोटी सुनाने और उपदेश देनेसे नहीं चूकते। इनके एक तरफ यूरोपीयन सभ्यता के अवतार मिष्टर बैनरजी विराज रहे हैं। इनके कोट पेंट नेकटाइ, सोने की कमानी का चश्मा, वेस्कोट का दोहरा चेन, हाथ का छेरी का स्लाव देख कर भला कौन कह सकता है कि वह यूरोपीयन नहीं हैं? पर हाय। रंग ने बड़ा धोखा दिया? काला

कहाँ तक गोरा होऊं? तौभी क्या हुआ, यूरोपीयनों का जूठा जो मिले वही परम श्लाघ्य है। मिस्टर बैनरजी सारे यूरोप में घूम आए हैं, पर तौ भी स्याह चेहरा सफेद नहीं कर सके। कल्लू बाबू कभी कभी इनके पीछे खड़े हो कर दोस्तों से कहते "अब यूरोपियन सभ्यता का अर्थ समझे, मिस्टर बैनरजीके चेहरे की अपेक्षा पौशाक की शोभा ही कुछ ज्यादे है।"

हरिशंकर बाबू के पास विश्वम्भर बाबू बैठे हैं। यह महल्ले के एक बड़े भारी रईस हैं, बिरादरी के पंच हैं, किसी बड़े हौस के मुत्सद्दी हैं। इनके धन दौलत का वारा पारा नहीं हैं, नया आली-शान छः मंजिला महल, गाड़ी घोड़ा किसी बात की कमी नहीं थी। इनके बगल में सिद्धेश्वर बाबू, गृधेश्वर बाबू पुश्तैनी रईस लोग विराजमान थे, कहां तक वर्णन करें। तात्पर्य यह है कि धन रूपी मधु चक्रके चारों तरफ शहद की मक्खियां भिन भिना रही थीं। धन रूपी तख्त ताऊस के रत्न चमक दमक रहे थे, बैजनाथ जी ने कई एक महीना कलकत्ते रहके देखा कि फकत विजय नरायण के यहां ही क्यों, आज में चारों तरफ यह रत्न विराजमान हैं। यह महानगरी इन रत्नों की चमक से चौंधियाई जा रही है।

भला ऐसी समाज में बैजनाथ बिचारे क्या बोलते और क्या कहते। "हंस मध्ये बको यथा" की तरह कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहे। एक दफे बड़ी मुश्किल से विजय नरायण जी के बगीचे की बात छेड़ी, बस फौरन ही सारी मित्र मंडली हजार मुंह से उस बगीचे की तारीफ करने लगी, विजय नारायण जी ने बैजनाथ जी को एक रोज बाग़ ले जाने का न्यौता देकर धन्य किया, बैजनाथ बिचारे शरमिन्दे हो रहे। फिर कुन्दनपुर का जिकर छेड़ा, बांकी-पुर के जमीन का जिकर छेड़ते ही चौधरी जी ने जरा सिर नीचा कर लिया, इस बात को सब लोग सुनी अनसुनी कर गये। मित्र मंडली जरा अधीर होने लगी, कोई सितार लेकर उसका कान उमेठने लगा, कोई तैल चित्र की तरफ देखने लगा, किसी को घड़ी के टाइम की याद आ गई।

वैजनाथ जी ने वहां का रंग ढंग देख के विजय बहादुर जी को हाथ जोड़ा और सीढ़ी ऊपर चढ़ते चले।

क्या एक दफे जनाने महल में जांय? विजय ने एक दफे भी घर के भीतर आने को नहीं कहा? पर क्या इस भागिनी तारा को बिना देखे ही चले जांय। चौकमें आके वैजनाथ जी कुछ सोचा सोचा करने लगे। इसी समय गड़ गड़ाती हुई दो चार गाड़ियां फाटकके पास आके खड़ी हुई। गाड़ी से उतरके हंसी की खिलखिलाहट से सारा मकान गुंजाती हुई न जाने कौन ऊपर गई। महफिल जमी, सितार तबले की आवाज सुनाई देने लगी साथ ही किसी स्त्री के मधुर कण्ठ की सुरीली तान से सारा घर गूंज उठा।

वैजनाथ जी धीरे धीरे एक दो कदम चल कर एक बाद दिवारी पार कर जनाने आंगन में आ खड़े हुए। कहीं कोई शब्द भी तो नहीं सुनाई देता। किसी आदमी की सूरत या किसी के गले की आवाज कुछ भी नहीं सुनाई देती। अन्धेरे में कुछ देर तक खड़े रहे। आंगन में खड़े हुए उनका दिल धड़कने लगा। किसी को बुलावें क्या? केवल चौमंजिले की एक कोठरी में दिये की रोशनी दिखाई दे रही थी। वैजनाथ जी बहुत देर तक उस रोशनी की तरफ देखते रहे। आवाज देने की हिम्मत नहीं हुई। थोड़ी देर बाद एक दुबला पतला हाथ उस कमरेकी खिड़कीमें दिखाई दिया। धीरे धीरे खिड़की बन्द हो गई। रोशनी बुझ गई सारा अंधेरा हो गया कलेजे को दोनों हाथों से थाम के वैजनाथ जी चुपचाप घर से बाहर निकल आए।

॥ सत्रहवां परिच्छेद ॥

॥ अभागिनी तारा ॥

बैजनाथ जी घर आके सोचने लगे कि "मैंने बड़े बेवकूफी का काम किया है" ॥ स्त्री के कष्ट के समय स्त्री ही दिलासा दे सकती है। आज सब बातें खोलके स्त्री से कहुंगा, वह जो कर सकेगी करेगी। घर में आते ही बसन्ती ने देखा कि पति का मुंह बड़ा गंभीर, बड़ा सशोक है, अस्तु उने देखते ही बोली "आज क्या हुआ है जी? तुम्हारा मुंह ऐसा क्यों हो गया है?

बैजनाथ। कहे हैं, बैठो। चंपा सो गई?

बसन्ती। चंपा खा पी के सोई है। कोई बुरी खबर तो नहीं है?

बैजनाथ। कहे हैं सुनो। यह कह कर बैजनाथ जी ने तारा के पति विजयनारायण का यावत चरित्र वर्णन किया बसन्ती ने सुन कर आंचर से आंसू पोंछा और बोली "यह ऐसा होगा, यह तो मैं जानती ही थी, अभागिनी तारा भी जानती थी"।

बैजनाथ। किस तरह?

बसन्ती। यह तो मैं नहीं जानती पर मालूम पड़े है कि कलकत्ते से पहलेही उसने कुछ उड़ती पुड़ती खबर सुनी थी, वह जरा चुप्पी लड़की है, किसी से कुछ बोली नहीं, पर कुन्दनपुर से जाते समय तारा बिचारी अपना रोना रोई थी सही।

बैजनाथ। अब क्या करें? जो सब रंगढंग देख आया हूं, उससे तो मालुम होता है कि दिवान जी के घराने की दौलत दो एक बरस में स्वाहा हो जायगी, विजयनारायण जी जन्म के रोगी हो जांयगे और तारा बिचारी दो ही वर्ष में दाने दाने को मोहताज हो जायगी।

बसन्ती। वह तो दो बरस बाद की बात है, इस समय तारा है कैसी? वह स्वभाव ही से कुछ अभिमानिनी है, अपने पति का चाल चलन किस तरह बरदास्त कर रही है? कुन्दन पुर से जाके इतने बड़े मकान में अकेली लड़की किस तरह से है?

उसका मैं और लड़का बाला, बड़ी अकेली कोई भी नहीं है, जिससे मनकी बात कहे। तुमही एक दफे जाके उससे दो बात तो कर आते?

बैजनाथ। हमारी तो हिम्मत नहीं पड़ी, तुम एक दफे जाके जो मुनासिब समझो करो, आगे नरायण जी की जैसी मरजी।

इसके दूसरे दिन खा पीके दोनों, बच्चों को चंपा के पास छोड़ कर, बसन्ती पालकी पर चढ़ के तारा से मिलने गई। चंपा भी तारा बेबे से मिलने के लिए उत्सुक हुई पर बसन्ती ने उसे यह कह कर कि "आज नहीं बहिन, फिर दूसरे दिन आऊंगी तब तुझे लेती जाऊंगी" घर छोड़ती गई।

ऊंचे चौड़े सोने के कमरे में जाके बसन्ती ने देखा कि तारा अकेली बैठी हुई, परांदा बट रही है, दाई नौकर सब नीचे हैं। तारा को देख के बसन्ती चौंक गई। ऐं! यही क्या वह कुन्दन पुर की तारा है, जिसकी खूबसूरती की चर्चा चारों तरफ फैली हुई थी? मुंह का रंग काला हो गया है, आंखों के नीचे श्यमताई छा गई है, गले के दोनों हाड़ दिखाई दे रहे हैं, बाह दोनों बहोत ही पतली, शरीर सूख के कांटा हो गया है। चार महीने पहले बसन्ती ने जिस शरीर में नई जवानी का भरपूर उमंग देखा था आज वह शरीर तीस बर्ष की रोगी स्त्री सा दीख पड़ा। गले के हाड़ पर से मोती की माला लटक रही थी, हीरे के दोनों कड़े हाथों में ढल ढल कर रहे थे।

बसन्ती के पैर की आहट पाके तारा ने मलीन मुंह पीछे फेरा परांदा रख के उठी। और मलीन मुंह से बोली "आः बसन्ती बेबे तुम आई हो, मैं हर रोज तुझे याद करती थी। तुम अच्छी तो हो? लड़के वाले अच्छे हैं?

तारा की यह धीमी बातें सुनते ही बुद्धीमान बसन्ती तारा के दिल की हालत और चार महीने की यावत् कहानी समझ गई। बड़ी मुश्किल से मन का आवेग रोक कर तारा के दोनों हाथ धर के बोली "हां बेबे सब कोई अच्छे हैं? चंपा को बड़ा

बुखार आता था, अब वह भी अच्छी है। तुम अपना हाल कहो? बड़ी दुबली हो गई हो!

तारा। कुछ नहीं बसन्ती बेबे, मुझे भी कलकत्ते आ के खांसी की बिमारी हो गई थी, वह तो अच्छी हो गई है, अब जरा खांसी हो जाती है। कलकत्तेका पानी हम लोगों को नहीं सहता, कुन्दन पुर ही में हम लोगों की तबियत ठीक रहती है। बसन्ती के सूखे मुंह पर जरासी हंसी दिखाई दी।

बसन्ती। फिर कुन्दन पुर जाने का मन करे है? हम लोग यही नौरात्रे बाद जांयगे? तुम भी चलोगी क्या?

तारा। हां, पर यह तो मेरे अधीन नहीं है। वह माने तब तो। मैं समझती हूं कि वह जाने नहीं देंगे।

बसन्ती। तो फिर यहां तुम्हे देखे सुनेगा कौन?। हम लोग रहे इतनी दूर, और बच्चों को छोड़ कर हर रोज आ भी तो नहीं सकते। तुम्हे खांसी हुई है। शरीर दुबला हो गया है, तुम्हें देखने सुनने वाला आदमी भी तो चाहिये।

तारा। क्यों बसन्ती बेबे, रोज दोनों बेला डाक्टर आवे है, उन्हो ने एक अच्छा डाक्टर लगा दिया, उन्ही की दवा खाऊं हूं।

बसन्ती। सो तो ठीक है, पर कोई अपना आदमी हुए बिना क्या इलाज ठीक से हो सके है और तुमरे शरीर का यह हाल है, गृहस्थी कौन देखे है। अच्छा तो ताई जी को चिट्ठी लिख के बुला लो न, जब तुमरा जी कुछ ठिकाने आ जायगा तो वह चली जांयगी। न हो तुम भी कुछ दिन गांव पर आ रहना।

तारा। नहीं, मां को बुला के क्या होगा। मेरी बीमारी का इलाज हो ही रहा है। और घर में दोसों दाई नौकर चाकर हैं किसी बात की तकलीफ नही है मा को बुला के क्या होगा?

बसन्ती। तो भी बैन मुझे ऐसा मालूम पड़े है जैसो होनी चाहिए, तुमरी वैसी पूछ नही हो रही है, मा जैसो टहल क्या और कोई कर सकेगा। हजार हो पेट की बेटी ही तो हो। अच्छा विजयनारायण तो पूछे ताछे हैं न?

बड़े धीरे से तारा ने जवाब दिया "हां, मैं जब जो चाहू हूं मिल जाय है किसी बात की कमी नहीं है। पूछे नहीं है तो यह सब होय किस तरह से है।

बुद्धिमान बसन्ती ने देखा कि यद्यपि तारा के सारे सुख और सुख की आशा पर पानी पड़ गया है पर घोर अभिमान के कारण वह अपनी असली पीड़ा का हाल छिपा रही है। "मैं हो यह बात पूंछू क्योंकर"? अन्त को सोच विचार के बसन्तीने कहा "नही भैन मैं समझुं हूं कि ताइ जी कुछ दिन यहां आके रहें तो अच्छो है देखो भाइ दुःख सुख बीमारी सीमारी हम सब के पीछे लगी ही हुई है, ऐसे समयमें अपना आदमी जैसा करेगा वैसा क्या गैर कर सके है। यही देखो न, चंपा बीमार हुइ, पिग्रनाथ था, कितना सेवा टहल कीस तब आराम हुई। तुम भी सूख के कांटा हो गई है, सदा खांसती रहो हो, इस लिए अभी से जरा संभल के चलना अच्छा है। मेरी बात मानों, ताई जी को आज ही चिट्ठी लिखो, न हो कहो तो मैं ही लिखूं। आहा! तारा भैन तुम क्या थी और क्या हो गई है। कह यह कर बसन्ती ने प्यार से तारा के मत्थे पर हाथ फेर कर उसके सिरके सामने के बाल संवार दिए।

यही इतना सा स्नेह तारा को बहोत दिनों से नही मिला था, इससे उसका जी उमड़ आया। आंखे डबा डबा आई और एक लंबी सांस लेके धीरे से बोली "बसन्ती बेबे तुम मुझे लड़कइ से ही बड़ा चाहती हो—और ज्यादे बोल नही सकी आंचरसे आंसू पोंछने लगी। बसन्ती ने बड़े प्यार से कहा 'क्यों तारा रानी तुम क्या मुझे नही चाहती हो? ।

तारा। आहा! तुमे नही चाहेंगे जब तक जीयंगे तुमे चाहेंगे।

बसन्ती। तो भैन, आज मुझसे इतना छिपा क्यों रही हो? मैं क्या तुमरे मन का दुःख नहीं जानती? दुनियां में तुमरे सुख की आशा पर पानी फिर गया है यह क्या मैं नहीं समझती? विवाह के बाद पहले पहल जिस पति के प्रणय से तुम मुग्ध थी, मुझसे मिलते ही जिसका जिकर करती थी, वह प्रणय को

सुख समाप्त हो गया, यह क्या मुझ से छिपा है ? तुम यह सब बातें मुझ से छुपाती क्यों हो मैं क्या बेगानी हूं ? मेरा तुमारा तो जी जान एक है, तारा भैन, तभी तुम गैर होगी तो दुनिया में फिर अपना कौन होगा ?

अब यह स्नेह तारा सह नहीं सकी, आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई, अपने माथा को बसन्ती बेबे के गोद में सिर लुका के, तारा बिचारी एक दफे जी खोल के रोई । बसन्ती बेबे की गोद से आंसु से डबडबाई आंखे उठा कर, तारा बोली "बसन्ती बेबे तुम से क्या कभी मैंने कुछ लुकाया जो आज लुकाऊंगी । पर आज माफ करो, यह सब बात फिर किसी रोज कहुंगी" ।

बसन्ती । नहीं । भैन, मैं आज ही सुनूंगी । मन का दुःख मन में दबा रखने से और ज्यादा कष्ट होय है, अपने आदमी से जी खोल के कह देने से जी बहोत कुछ हलका होजाए है ।

तारा । जो कहो, कहूं ?

मैं पूछूं हूं कि, विजय अब पहलेसा तुमे चाहे हैं, देखे सुने हैं ?

तारा । बसन्ती बेबे, नहीं चाहें है, यही किस तरह से कहुं, जब जी दरकार होए मिले है, डाक्टर बुलवा के इलाज करवा रहे हैं, देखें सुनें नहीं हैं, यही किस मुंह से कहूं ।

बसन्ती । तारा, तैने क्या मुझको मर्द मानुष समझा है कि यह सब बातें कह कर भुलावा दे रही है ? क्या रोटी कपड़े और दवा पानी से ही पति का यत्न समझा जाता है ? वह क्या पहले की तरह तुमे प्यार करें हैं, पहले की तरह जी खोल के तुम से प्रेम करें हैं, पहले की तरह क्या तुमरे प्रेम से सुखी होएं हैं ? तारा रानी, क्या औरतों को यह बात औरतों से मुंह खोल के पूछना पड़े है ? पति का जो प्रेम और स्नेह धनवती स्त्री का धन, दरिद्रा नारी का आनन्द और सब स्त्रियों का एकमात्र आधार और जीवन है, मैं पूछूं हूं वह तुमें प्राप्त है या नहीं ?

बिचारी अभागी तारा "नहीं" यह शब्द उच्चारण नहीं कर सकी, फकत सिर हिलाकर, फिर बेबे की गोद में मुंह छिपा लिया।

बसन्ती का मुख गंभीर हुआ, धीरे धीरे बोली "तारा रानी यह रत्न गंवाने से तो काम नहीं चलेगा, तुमने क्या इस रत्न की रखवाली का पूरा यत्न किया था ?

तारा रोती हुई बोली। नरायण जाने, मेरा प्रेम तिल भर भी कमा नहीं है, अब भी उने देख के मेरा जी ठंडा होए है।

बसन्ती। तारा, तुमरा स्नेह मैं जानती हूं, तुम पतिव्रता हो, इस जिन्दगी में तुमरी चाहना घटेगी नहीं, पर देखो भैन खाली प्रेम से पति का स्नेह नहीं टिकता और न गृहस्ती ही चल सके है। औरतों का और भी कुछ कर्त्तव्य है, हम लोगों को और भी कुछ सीखना पड़े है।

तारा। बसन्ती बेबे, जो पति हैं, तन मन के स्वामी हैं, हमें भोजन वस्त्र देते हैं सब तरह से रक्षा करते हैं, हम स्त्रियां सिवाय प्रेम के इसके बदले उने और क्या दे सकती हैं ? हम अबलाओं का और क्या है बतलाओ ?

बसन्ती। हां तारा, तेरा कहना ठीक है, पति को जी जान से चाहना यही हम लोगों का मुख्य धर्म्म है, पर नहीं इसके अलावे हम लोगों को और भी कुछ सीखना होए है। जो स्वामी हमारे लिए इतना करें हैं, हमें चाहिए कि उनका मन खुश रखने, गृहस्ती सदा आनन्दमयी रखने के लिए हम भी जरा यत्न करना सीखें। जरासी मीठी जबान से बहोत सा मन का दुःख जाता रहे है, गुस्सा ठंडा हो जाए है, हम लोगों की थोड़ी सी चेष्टा और हंसमुख चेहरे से गृहस्ती आनन्दमयी हो जाती है। हमें चहिए कि गृहस्ती के क्रोध को क्रोध न समझें आंख मूंद के इस कड़ुवे काढ़े को पी जांय, किसी के क्रोध वाली बात कहने पर भी हंस के टाल दें, कोई छोटी बड़ी बात कह भी दे तो मौन हो जांए, अपने को तकलीफ हो तो हो, जहां तक बन पड़े दुसरों को कष्ट न होने दें, दास दासियों से

कोई अपराध हो भी जाय तो उसे समझा के क्षमा कर दें, इन्हीं सब बातों से गृहस्थी में सुख होए है, और इन्हीं बातों में बे परवाही करने से सारी जिन्दगी कड़वी हो जाए है।

तारा रानी ! मैंने तो बहोत से संबे भले औरत मर्द देखे हैं, उनमें मुहब्बत भी होते देखा है, पर तोभी उनकी गृहस्थी स्मशान होगई देखी, कारण क्या ? यही जरा सा ठंडा मिजाज धीरज, संसार के मार्ग को सुगम कर देता है, इन्हीं बातों के न रहने से गृहस्थी कंटक जाल हो जाए है, उस समय लोग सोचते हैं कि पहले से इन सब बातों का जरा यत्न रखते तो जिन्दगी सुख से बीतती, ऐसा क्यों होता ? पर "अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत," गया मौका हाथ नहीं, आता। गृहस्थी का एक मात्र बन्धन स्वामी स्त्री का प्रेम एक दफे टूट जाने से फिर नहीं जुड़ता, कहावत हैं, मन और दूध फटा फिर नहीं मिलता, जिन्दगी का खेल एक दफे समाप्त हुए पीछे फिर उस खेल को नए सिरे से शुरु करने का हमें अखित्यार नहीं है।

तारा। बसन्ती बेबे ! लड़कई में तुमी से यह बातें मैंने सुनी थीं। कुन्दन पुर में तुमरी गरीब की गृहस्ती देख के, यह शिक्षावन मैंने सीखी थी, भगवान जानते होंगे ! कि यदि मैंने इन बातों में कुछ कसर की हो, कोई गलती की हो, लोग मुझे कहते हैं कि "इसे धनका बड़ा घमंड है," पर नहीं मेरे परम गुरु स्वामी मुझे हमेशा हीरे मोती जड़ाउ गहने पहिराकर तृप्त होते थे इसी से मैं पहिरती थी लोग मुझे कहते थे कि इसे अपने सुन्दरता का बड़ा घमंड है, पर बेबे तुम तो जानती ही हो इसी रूप पर वह उन दिनों मोहित थे, इसीका मुझे घमंड था, उन्हे संतुष्ट रखने के सिवाय संसार में मेरा और कोई व्रत नहीं था॥ कलकत्ते आके अपना यत्न मैंने दूना कर दिया, क्योंकि मेरे सिवाय इस घर में औरत जानी और कोई थी नहीं, मैं यदि उनकी सेवा टहल में यत्न नहीं करती तो और कै न करता ?

बसन्ती। तारा बैन मैं तो पहले ही से जानती थी कि तुम ऐसा करोगी। मैं तुझे लड़कई से जानूं हूं, और लोग तुमरी निन्दा चाहे भले ही करें पर मैं तुमे बुरा नहीं कहती। धीरज, क्षमा, स्वामी के प्रति यत्न, स्नेह, हंसमुख रहना, यह सब गुण तुम सीखी हो, वे स्त्री इन गुणों को धारण करने वाली हैं। पहिले जमाने में हम लोग बड़ी बड़ी गृहस्तीयों में बहू, बेटी हो कर रहतीं, सास ननद, मा बाप के डर से हम लोगों के अल्हड़ पन का गरम मिजाज बहोत कुछ दबा रहता था, मुंह बंद किए रहती थीं, सास की आज्ञा से गृहस्ती चलती थी। अब सब कोइ अलग अलग रहना सीखें हैं, लड़के भी मन मानो करते हैं, बहूए भी अपना कर्तव्य भूल जाती हैं, गृहस्ती का सुख मटिया मेट हो जाता है।

तारा। बसन्ती सेसे। मेरे जी में भी कभी कभी यही बात उठे है कि एक संग रहने की चाल अच्छी थी, लड़के भी अवारे नहीं होने पाते थे और बहुएं भी विधाह सीखती थीं।

बसन्ती। तारा रानी दुःख सुख तो सभी तरह से है। देखो न कामनी तो बड़े भारी गृहस्ती में है, हाय, वह क्या सुखी है? एकट्ठे रहने का क्या यही सुख है?

तारा। कामनी के दुख का कारण और है। बूढ़े स्वामी से विवाह हुआ है, पति का प्रेम किसे कहते हैं, यह उसने स्वप्न में भी नहीं जाना।

बसन्ती। अरे भइ पति का प्रेम तो किनारे रहा, वह बिचारी बजारू मजूरे की तरह सबेरे से संध्या तक खटती है और बिना अपराध रसते के भिखमंगे से भी गइ बीती गाली गलौच सहती है, भला बतलाओ तो इसका क्या कारण है?

तारा। सुने है कि उसकी चचेरी सास सब बड़ी कर्कसा है, इसीसे बिचारी का यह हाल है।

बसन्ती। पर भाइ बड़ी गृहस्ती में सभी अच्छे होंगे, इसीका क्या ठिकाना है? यदि कोइ एक आदमी भी खराब या चिड़ चिड़ो

हुआ तो सारा दिन झींकती मरती रहती है, जो कामकी ऐसी सीधी सादी है, मरन उसी बिचारी की है। यही सब देख सुन के जिनके पल्ले दो पैसा होता है, वह अलग रहने लगते हैं, नहीं तो अपने आदमी को अपने भर सक कोई छोड़ना नहीं चाहता। खैर इस तरह अलग रह के भी यदि हमें जो चाहिए उसी तरह का बर्ताव करें, सास के भय से जो सीखते थे, वह अपनी खुशी से सीखें तौ भी गृहस्ती में बहोत कुछ सुख आनन्द मिल सके है। आज कल की लड़कियां यह सब बातों को विशेष सीखती नहीं हैं, शायद आगे चलके सीखें।

यही सब बातें हो रहीं थी कि नीचे सड़क पर जोड़ी की आवाज सुनाई दी, एक गाड़ी फाटक पर आके खड़ी हुई। तारा तो इसका मतलब समझ गई इस लिए देखने नहीं उठी, पर बसन्ती उठके खिड़की में से झांक के देखने लगी। देख के उसके आंखों से आंसू बहने लगे। बिजय नरायण जी बगीचे से आए थे। उनका पौशाक लिबास मुसा मुसाया, केश बिखरे हुए और आप एक दम से बेहोश थे, दो नोकर डंडा डोली करके उने उपर उठा लाए।

आखों में आंसू की धारा बह ती हुई, बसन्ती ने दोनों हाथ पसार कर तारा को कलेजे से लगा लिया और बोली "तारा भैन, आहा, नरायण जो साक्षी है कि स्त्री जहां तक तकलीफ सह सकती है, तुमने बरदाश्त की है, इस दुःख से अब तारा, तारा नहीं रही। मालुम पड़े है कि रात जाग जाग के, भूखी रह रह के रो रो के तुमारी यह दशा हो गई है, बिमारी भी हो गई है, क्या करोगी भैन, जो सहना पड़े सहो, अपने तरफ से उनकी सेवा टहल में कुछ कमी मत करना, कभी कड़ी बात जबान से मत निकालना नहीं तो और भी खराबी होगी, इस बिमारी की यह दवा नहीं है। चुप चाप यह तकलीफ बरदास्त करो, जब मौका मिले मीठी बातों से उने खुश करना, कभी बात चीत या इशारे से भी उनका अपमान मत करना। अगर रोना होए तो छिप के रोना। जिनके साथ बिजय आज इतना मौज उड़ा रहे हैं, दो दिन में हो तो उस पर

नाराज हो सकते हैं । बुरे से बुरे चाल चलने वाले आदमीयों ने भी अपनी चाल छोड़ी है फिर से पवित्र स्निग्ध गृहस्ती का शान्ती दायक स्नेह खोजा है, यह मेरे आखों देखी बात है । मैं तुमारी मा को आज ही चिट्ठी लिखुंगी, धीरज धरो, आशा बांधे रहो, "मेरे प्राणों की तारा रानी" भगवान की लीला अपार है, उनके आगे कोइ बात कठिन नहीं है, हो तो थोड़े दिनों में वह तुमरे सब दु:खो का अन्त कर देंगे । दोनों बहिन परस्पर गले गले लग के बहोत देर तक रोती रहीं । तारा ने बसन्ती की बातों का कुछ जवाब नहीं दिया, फकत मनो मन कहा "हां, थोड़े ही दिनों में भगवान मुझे मौत देने की कृपा करे तो दु:खों का अन्त हो" ।

अठारहवां परिच्छेद ।

श्रौर एक श्रभागिनी ।

बसन्ती आके पालकी से उतरने भी नहीं पाई थी कि चंपा सिड़ी उतरती हुइ नीचे आके बोली । बेबे, बेबे, आओ देखो कौन आया है,

बसन्ती । कौन है ?

चंपा । आयो न आप ही देखोगी, यही सोनेके कमरे में बैठा हुआ है ।

बसन्ती । कौन, शिवनाथ ?

चंपा । नहीं वह नहीं हैं ॥ अच्छा बेबे शिवनाथजी अब क्यों नहीं आते ।

बसन्ती । उन्हें क्या और कोई काम नहीं है । थोड़ेही दिनों मे उनकी परिक्षा होने वाली है, पढ़ने लिखने से छुट्टी नहीं मिलती, इस लिए शायद रोज़ नहीं आसके हैं ।

चंपा । परिक्षा कब होगी बेबे ?

बसन्ती । यही जाड़े के दिनों में होगी ।

चंपा । अच्छा तब आवेंगे तो ?

बसन्ती । आवेंगे क्यों नहीं ? अब भी कभी कदाच आही जाते हैं, पर हां रोज़ नहीं आ सके हैं । जब फुरसत मिलेगा तभी आवेंगे ॥

ऊपर कौन बैठा है ?

चंपा। अच्छा बतलाओ तो कौन है ?

बसन्ती। क्या गोपाल बाबू के घर से आई हैं ? वह तो कभी कदाच आती जाती हैं ही हैं।

चंपा। वह नही हैं।

बसन्ती। नही तो शायद देवो बाबू की स्त्री होंगी। इतने दिनों पर शायद गरीबों पर दया करके पधारी हैं ?

चंपा। नही वैसे वह भी नही है। कामनी बेबे आई हैं ?

बसन्ती। हैं कामनी ! कलकत्ते कब आई ? मुझे तो कुछ खबरही नही। यह कहती हुई बसन्ती ने ऊपर आके कामनी को देखा। बहोत दिनों पर उससे मिल के बड़ी खुश हुई बोली "हैं, कामनी, तुम कलकत्ते कब आई ? सब राजी खुशी है तो ?

कामनी। यहो पांच सात दिन आए हुआ। धन्धे के झंझट से अब तक तुमसे मिलने आ नहीं सकी। आज मझली सास को बहोत कह सुन के तब आई हूं॥ सब राजी खुशी नही है ?

बसन्ती। क्यों क्या हुआ है ? किसी को कुछ बिमारी बिमारी हुई है क्या ?

कामनी। उनकी तबियत बहोत खराब है, उनी के इलाज के लिए कलकत्ते आना हुआ है, बांकीपुर में सैकड़ो इलाज हुए, पर कुछ फल नहीं हुआ अब कलकत्ते के अंगरेज डाक्टर का इलाज हो रहा है। जो नरायण की मरजी" इतना कहके कामनी रोने लगी।

बसन्ती। बिमारी क्या है ?

कामनी। बुखार और आंव लहू का दस्त। न तो बुखार ही उतरता है और न दसही बन्द होय है। आह ! उनका शरीर पतला सीख सरीखा हो गया है।" फिर आंखो पर कपड़ा रखके कामनी रोने लगी।

बसन्ती। अच्छा तो रो क्यों हो, भैन, रोने से क्या होगा, तुमी बतलाओ। इस समय अच्छी तरह से इलाज कराओ। बिमारी हुई

है आराम हो जायगी, कविराजी इलाज क्यों नहीं करातो। पुराने बुखार और लहू के दस्त का जैसा इलाज कविराज कर सके है- वैसा क्या अंगरेज डाकटर कर सकेगा ?

कामनी। अरे वसन्ती बेबे, क्या कविराज बाकी बचा है ? सब कविराजों ने हार मान ली, तब अंगरेज डाकटर बुलाया गया है "बांकोपुर के जितने अच्छे कविराज थे, सबका इलाज किया गया, कलकत्ते से नामी नामी कविराजों को बुला के इलाज करवाया गया, कुछ भी तो नही हुआ।

वसन्ती। अच्छा, अब देखो अंगरेज डाकटर के इलाज से कैसा रहता है। तुम लोगों का डेरा कहां हैं ?

कामनी। बड़ी दूर है बेबे, काली घाट में ठीक गंगा किनारे एक किराए का मकान लेके हैं।

वसन्ती। इतनी दूर काली घाट में क्यों ? क्या कलकत्ते इतने बड़े शहर में कोई मकान नही मिला ? और सुने हैं कि आजकल बरसात के दिनों में काली घाट में बहोत से लोग बिमार हो रहे हैं, जरा खुलासे जगह में रहना था ?

कामनी। सो किस तरह से होय वसन्ती बेबे ? उन लोग क्या कलकत्ते आना चाहते थे, मेरी सास सब कहने लगी कि वहां जाति पांति का विचार नहीं आचार निभे क्योंकर। अन्त को बड़ी बड़ी मुशकिल से कालीघाट के एक पंडे के मारफत एक घर ठीक करके तब हम लोग आए॥ रोज सब लोग गंगा नहावें हैं, काली जी की पूजा होए है। रात दिन पूजा पाठ, अनुष्ठान हो रहा है न जाने काली जी के आगे कितने तरह की मानता मानी गई है, मेरी सासो ने जोड़ी भैंस बलि देने की मानता मानी है, मेरे पास क्या है, वसन्ती बेबे, पर मैंने अपनी चांदी की करधनी बेच कर जोड़ी बकरे के बलि दान देने की मानता मानी है, आहा ! वह यदि इस दफे अच्छे हो गए, तभी तो ठीक है, हम लोगों की भी जान बचेगी, नही तो बेबे यह इतनी भारी गृहस्ती सब तीन तेरह

है। आदमी ॥ मान सम्भ्रम, रुपया पैसा, जमीन जायदाद, नाम सुनाम, कुल गौरव जो कुछ है सब उन्हीं से है, वही सब के सिर हैं, अकेले सब करते धरते गृहस्थी चला लेते हैं, वह न रहेंगे तो फिर हम लोगों को किसका सहारा रहेगा ! हे भगवान ! जन्म भर के लिए इस कंगालिन का करम मत फोड़ना"। जन्म भर में जिसने कभी भी पति के प्रेम का सुख नहीं पाया है, प्रेम या प्रणय क्या चीज है, जो जानती भी नहीं वही आज पति वियोग चिन्ता की यातना से धरती पर लोट रही है। धन्य हिन्दू स्त्री का पति प्रेम !

बसन्ती ने बहुत तरह से कामनी को दिलासा दिया, बोली। "डर क्या है भैन, इलाज तो होही रहा है फिर डर किस बात का है। वह हैं, तुमरा भाई शिवनाथ है, सब कोई देखे भालेंगे, बीमारी जल्दी आराम हो जायगी। यही देखो न, चंपा कितनी मांदी हो गई थी, शिवनाथ ने कितना मेहनत किया, दिन रात खाना सोना छोड़ के रोगी की सेवा की, तब चंपा अच्छी हुई, नहीं तो क्या चंपा इस रूसे बचती ?

कामनी। शिवनाथ क्या रोज़ यहां आवे है ?

बसन्ती। आगे तो आता था आज कल परीक्षा का दिन पास आ गया है, शायद लिखने पढ़ने में लगा रहे है, इसी लिए अब तो इधर महीने भर से नहीं आया है।

कामनी। बसन्तो सेवे, उसे कभी कदाच बुला लिया करो, यहां आ के घंटा दो घंटा इधर उधर की बात चीत से दिल बह-लाता रहेगा तो अच्छा रहेगा, दिन रात पढ़ पढ़ के बिचारे का चेहरा झांवरी पड़ गया है। आंखें गड़हे में धस गई हैं। कल मुझ से मिलने आया तो मैं तो उसे सहसा पहचान ही न सकी।

बसन्ती। "हें यह क्या ! हमें तो कुछ पता भी नहीं है जब यहां आता जाता था तब तो चेहरा मोहरा अच्छा था, इसी बीच में ऐसा हो गया है ? यों भी भला पढ़ते लिखते होंगे ?

न हो, परीक्षा न देना न सही, तो क्या इस लिए बिमारी मोल लेगा ? मै उनसे अभी कहती हूं, शिवनाथ को एक रोज बुला लावेंगे, न हो कभी कभी शनी या रविवार को यहीं आके रहा करे तो हर्ज क्या है ?

इसके बाद तारा की बात छिड़ी, बसन्ती ने जो कुछ देखा था बहुत कुछ दुःख करते हुए कामनी को सब सुनाया, कामनी भी सुनके रोई। अन्त को बसन्ती बोली "मैं आज ही ताई जी को लिखती हूं, वह आके जो करना होगा करेंगी, मुझसे तो अब यह दुख देखा नही जाता। किसी तरह कलकत्ता छूटे तो जान बचे, कुंदन पुर जा के हड्डी में हवा लगे।

कामनी। तुम लोग तो यही भादो महीने में न जाने वाले थे ? भादों महीना तो खतम हो चला।

बसन्ती। बात तो थी, पर हो जो नहीं सका। तारा अलग बीमार है, तुमरे घर में इतनी बड़ी मांदगी छोड़ कर किस तरह जाऊं। अब तो दशहरे बाद जाना होगा। नौराते को भी ज्यादे देरी नहीं है। कोई महीना भर होगा ?

कामनी। तो तुमारी जमीन की फसल कौन देखे भालेगा ?

बसन्ती। आते वखत वह खिलावन को जमीन बटवारे में दे आए हैं। खिलावन हम लोगों का पुराना आदमी है, हमरा हिस्सा उस्से में बन्द कर रखेगा, उस का कुछ फिकर नहीं है।" और थोड़ी देर तक बात चीत करने के बाद कामनी बिदा हुई।

शाम को बैजनाथ जी घर आए। बसन्ती ने मामूली जलपान की सामग्री सामने ला रखी और दोनों सलाह करने लगे।

बैजनाथ। इधर तारा की बीमारी और दुर्दशा उधर कामनी के स्वामी की कड़ी बीमारी, और तुम कहो है कि शिवनाथ भी नादानों की तरह शरीर की तरफ कुछ ध्यान न दे के लिख पढ़ रहा है। किस किस तरफ देखें ? क्या करें ? मेरी तो भाई किसी आफत विपत के समय तुमी मंत्री हो। क्या उपाय ठीक किए हो।

बसन्ती । नसोब का लिखा न राजा की फौज से टलता है, और न मन्त्रो की मन्त्रना से टलता है, पर हम लोगों की जितनी सामर्थ है करेंगे ।

बैजनाथ । तो भी क्या करना ठहराया? तारा को क्या कह आई ?

बसन्तो । कह और क्या आऊंगी ? मेरे पेट में जो कुछ भी वही दे आई हूं । आज कल के मनचले चंचल स्वामियों के बस करने का जो मंत्र जानती हूं, वही सिखला आई हूं ।

बैजनाथ । भला वह महा मंत्र क्या है जरा मैं भी तो सुनूं ।

बसन्ती । सुनो न, तारा के घर में एक बड़ा सा कटहर का पेड़ है । मैं कह आई हूं कि इसी की एक मोटी डाल से एक खूब भारी सा मुगदर बनवा के अपने स्वामी को उससे अच्छी तरह सिखावन देना । यही महा मंत्र है ।

बैजनाथ । नहीं, बृहस्पति जी का ऐसा महा मंत्र कभी भी नहीं हो सकता ।

बसन्ती । तब क्या ?

बैजनाथ । यही कच्चे आम की चटपटी चटनी बना देना, आम रस बना देना, इत्यादि बृहस्पति जी के दो एक महा मंत्र तो मैं जानता हूं । और भगवान जाने ।

बसन्ती । अच्छा तब वही सिखा आई हूं । और ताई जी को चिटठो लिखुंगी, उनके आने से तारा का मन भी लग जायगा और विजय भी हो तो सरमा सरमी कुछ दिन के लिए सुधर जायगा ।

बैजनाथ । ताई जी भला दामाद के घर क्यों आने लगी ?

बसन्ती । मेरे सब बात लिखने ही से आवेगी, हजार हो आखिर तो मा का मन है ।

बैजनाथ । और कामनी का क्या उपाय किया ?

बसन्ती । यह तुमरे जिम्मे रहा।तुमरी नौकरी चाकरी तो खूब हुई, अब रोज एक दफे काली घाट जाके, रोगी की टहल करनी पड़ेगी । उस घर में कोई भी समझदार आदमी नहीं है,

शायद काशी जी का परसाद खिला खिला के लोग रोगी का रोग और भी बढ़ा देंगे, जिस में इलाज ठीक तरह से हो, यह तुमको देखना होगा।

बैजनाथ। मैं अपने भर सक कुछ कसर नहीं रक्खूंगा। कल तड़के ही जाऊंगा। अच्छा शिवनाथ का क्या इन्तजाम किया? तुम रही एक तरफ मैं रहा दूसरी तरफ। इधर शिवनाथको कौन देखे भालेगा?

बसन्ती। हां कोई तो मुझे तो उस पगले छोकरेकी बात याद ही नहीं रही। अरे चंपा, तू जरा शिवनाथ जी की सेवा टहल कर सकेगी। नहीं तो वह पड़ पड़ के शरीर मिट्टी कर लेगा।

चंपा छत पर खेल रही थी, दौड़ती हुई आके बोली "क्यो देवे मुझे बुलाया था?

बसन्ती हंसती हुई बोली "हाँ रानी बुलाया था! मैं कहुं हुं कि तू जरा शिवनाथ की सेवा टहल कर सकेगी"।

लड़की का मुंह लज्जा से लाल हो गया, दौड़ के भाग गई।

उन्नीसवाँ परिच्छेद।

विजय दसमी।

आश्विन महीने की नवरात्रि नजदीक आने लगी। लड़कों की खुशी का वारा पार नहीं रहा। नया नया कपड़ा, नया जूता नई सजावट, नई टोपी पहनेंगे, इसकूल में छुटी होगी, देवी पूजा में नाच तमाशा नाटक देखेंगे। देवी जी के भसान के दिन गाड़ी पर चढ़ के मेला रोशनी आतिशबाजी देखेंगे, मारे आनन्द के लड़के फूले नहीं समाते थे।

गृहिणीयों की खुशी का कहना ही क्या था? कोई बड़ी भारी त्योहारी की तय्यारी कर रही हैं, नए दामाद के यहां भेज कर समधिन को तुष्ट करेंगी। कोई बड़ी भारी त्योहारी की उम्मीद कर रही हैं, बी० ए० पास लड़के की शादी करके भारी गठरी आरिन है। लड़के का घड़ी चेन अच्छे फैशन का नहो था, इस

लिए उसे तोड़ फेंक कर समधिन जी की बकरी बिकवा कर नवीन पद्धो चैन बबूल कीन है, और शाम के वक्त पैर पर पैर रख के छत पर बैठी हुई अपनी बुद्धिमान अन्य पड़ोस की गृहिणीयों से सलाह कर रहीं हैं "अब की देखूंगी न समधिन कैसी त्योहारी भेजे हैं, अगर मन माफिक नही हुआ तो लात मार के फेंक दूंगी ब्याह के वक्त आंख में धूल-झोंक दीन, अब को देखूंगी न किस तरह धोखा देती है। मेरा लड़का क्या पानी में बह के आया है, ऐसा लड़का कलकत्ते में कोई एक निकाल तो दे,। उनकी बुद्धि तो सठिया गई है. हं:, ऐसे लड़के को ऐसे घर ब्याह दीन, अच्छा देखूंगो न त्योहार पर पाई पाई न समझ लूं तो बाप की बेटी नही"। रोती हुई बालिका वधू आज तीन महीने से पिता के घर जाने के लिए व्यर्थ आंसू बहा रही है। मालकिनी जी बिना त्योहारी देखे बहू को नही भेजेंगी।

साधारण गृहस्त की युवतियां भी दिन गिन रही हैं। पति परदेश में नौकरी करें हैं, दशहरे की छुट्टी में घर आके स्त्री का मुंह देखेंगे। अगर अब की न आए तौ? यदि अब की साहब ने छुट्टी न दी? ऐंजी,क्या साहब लोगों के मन में जरा भी दया माया नही है? स्त्री बाल बच्चों के लिए क्या उन लोगों का मन कभी कैसा कैसा नही करता?

शौकीन बाबुओं की खुशी का क्या कहना है? कोई बजरा ठीक कर रहे हैं। नाच तमाशे की तय्यारी कर रहे हैं, साथ ही साथ न जाने और भी क्या क्या तय्यारी कर रहे हैं, हम क्यों कर जाने? अपने को क्या मतलब? अपने काम से काम।

बंगदेश के गांव गंलइयों में भी लोगों के चेहरे पर हंसी दिखाई दे रही है। माता वसुन्धरा की कृपा से, किसान सब भादों महीने में अनाज काट के, जमिदार को खजाना दे रहे हैं, बनिए का कर्ज पटा रहें हैं, आज साल में दो तीन महीने के खाने लायक धान जमा कर चके हैं। किसानों की स्त्रीयां चोरी से उसी में का थोड़ा सा धान धार करके हाथकी चांदी की चूड़ी बनवा रही हैं या हाटमें

जाकर नई साड़ी खरीद रहीं हैं।बरसातके बाद सुन्दर बंगदेश जल से स्नान कर हरी भरी पोशाक पहिर कर अजीब शोभा दिखा रहा है, चंद्रदेव शरद ऋतु की निर्म्मल चांदनी की निराली छटा अलग दिखा रहे हैं। न ज्यादे गरमी ही है, न सरदी ही है, मन्द मन्द वायू प्राणीयों को आनन्द देती हुई बह रही है। गृहस्त का घर धन धान्य से पूर्ण हुआ, बिचारे गरीब किसान गृहस्तों के मन में जरा खुशी हुइ। झोंपड़ी पर नई छावनी डलवाई गई, घर का घेरा मरम्मत करवाया गया। बंगदेश में नवरात्रि की दुर्गा पूजा के इतनी धूम धाम होने का यही सबब है। और कोई सबब तो हमें मालूम नहीं।

यद्यपि शरद ऋतू के आगमन से सब ओर आनन्द छाया हुआ है, पर दुःखियों के भाग्य में इस समय भी सुख नसीब नहीं था, दुःखियो का दुःख तो दूर भी होसकता था पर शोकार्तो का शोक दूर होना कठिन था। तारा की मा कलकत्ते आई,बसन्ती भी घड़ी घड़ी तारा को देखने जाती पर तारा की बिमारी बढ़ती ही गई। सास के आने पर पहले तो बिजयनरायण जी कुछ दिनों तक जरा अनमने से रहे, पर बहोत दिन की आदत पड़ जाने से उनको चाल चलन सुधर नहीं सकी। अब उन्होंने घर के भीतर आना जाना भी बन्द कर दिया। बाहरही खाने पीने का इन्तजाम कर लिया। तारा की मा गांव लौटने की तय्यारी करने लगीं, पर दिन पर दिन लड़की की हालत खराब होते देख के उसे छोड़ नहीं सकीं। तारा बिचारी और भी दुबली हो गई, बरसात बीतने पर उसकी खांसी और भी बढ़ गई; मुह एक दम सूख गया, आंखे गड्ढे में धंस गईं, पर इस हालत पर भी वह मुंह से हाय भी नहीं निकालती थी, अपने फूटे भाग्य की चर्चा कभी किसी से नहीं करती, हर रोज धीरे धीरे गृहस्ती का नियमित धन्धा करती, बसन्ती से मिलती जुलती बात चीत करती, माता की सेवा टहल करती और पति के लिए तरह तरहका पाक व्यंजन तय्यार करके बाहर भेज देती थी।

बैजनाथ जी की देख भाल और सेवा टहल से कोमली के पति को बीमारी कुछ कमी, पर एक तो बुढ़ौती उमर दूसरे इसमे भारी गृहस्ती का रोज तरह तरह का उपद्रव, कालीघाट के पंडों की नित्य नई लीला, बड़ी बड़ी मुशकिल से यदि जरासा आराम होता, तो एक दिन की बद परहेजी से सब बात बिगड़ जाती थी, इस लिए बैजनाथ जीको इनके आराम होने की विशेष आशा नहीं हुई।

बसन्ती कभी कभी शिवनाथ को बुला भेजती पर इन दिनों उनकी पढ़ाई की बड़ी धूम धाम थी इस लिए आ नहीं सकते थे, अच्छी तरह पढ़ेंगे नहीं तो परिक्षा क्योंकर देंगे ? बसन्ती भी ज्यादे जिद्द नहीं करती, फकत रोज नए नए तरह का व्यंजन बना के भेज देती थी। चंपा बड़े यत्न से मिश्री का पन्ना बना कर, पपीता बना के, मुंग की दाल भीजा के अपने हाथ से थाली में सजा कर दाई के हाथ शिवनाथ जी के यहां भेज देती थी। शिवनाथ जी बहोत मना करते, पर लड़का जरा पेटू था, क्योंकि मुंग की दाल वगैरे चट पट खा पी के एकही घुट में मिश्री का पन्ना पी जाता था और फिर दाई को कहता "दइया कल से यह सब मत लाना, उन लोग रोज रोज इतनी तकलीफ क्यों करें हैं ? हम सब करें हैं, हमें कुछ जरूरत नहीं है"। दाई खाली बर्तन हाथ में उठा कर जाते हुए कहती "हां सो तो देखेंही हैं"। पर पेटू लड़के का कहना न मान के चंपा हर रोज मिश्री का शरबत बना के भेजती। इसी तरह से कई सप्ताह बीत गया। अन्त को नवरात्रि दुर्गा पूजा आन पहोंची। गोपाल बाबू के साथ बैजनाथ जी कई बंगाली रईसों के यहां प्रतिमा दर्शण नाच तमाशे में नाटकों में गए, अन्त को विजय दशमी भसान (प्रतिमा विसर्जन) का दिन आ पहुंचा, बड़े धूमधाम से भसान हो गया, कलकत्ता महा नगरीमें चारो तरफ आनन्द छाया हुआ है। बाजे गाजे और गाने बजाने की ध्वनि से सारा शहर गुलजार हो रहा है। सड़कों में लड़के, बूढ़े, बच्चे, युवा, स्त्री पुरुष नीच ऊंच सब तरह के लोग नदी की धारा की तरह आ जा रहे हैं। गरीब से गरीब आदमी भी एक नया वस्त्र

पहिर कर खुशी हो रहा है। दुर्गा पूजा का उत्सव इस महा नगरी को कंपायमान और आनन्द स्रोत से स्नात करा के समाप्त हुआ। इसके बाद परस्पर भाई सखा मित्र माता पुत्र सब प्रणाम नमस्कार आशीर्वाद गले मिलन इत्यादी से तृप्त हुए, मानों आज संसार ने अपना द्वैत भाव त्याग दिया, शत्रु ने शत्रु को, अपराध ग्रस्त ने अपराधी को क्षमा किया। मनुष्य हृदय की कोमल वृत्तीयां सब जाग उठी, दया करुणा, क्षमा स्नेह प्रीति से आज बंगवासी सब स्नात हो रहे हैं। शरद ऋतु की चांदनी रातमें कलकत्तेकी सड़कों पर प्रेम मुहब्बत आनन्द की लहर बहर होने लगी। दुनिया-दारी के खेल देखते हुए हमने बहुत सा दुख बहुत सा शोक, बहुत सा पाप और छल देखा और इस कठोर लेखनी से उन्हें लिखा भी, पर आज इस पुण्यमयी रात्रि को, थोड़ी देर के लिए खड़े होकर जो आनन्दलहरी देखी, जी भर आया। आज की रात को यदि कहीं अपवित्रता हो, कहीं पाप का बीभत्स दृश्य होता हो, तो उस उस पर परदा डाल दो, उसे आज देखना नहीं चाहते।

इस दिन रात दस बजे के बाद बसन्ती चौके से भोजन करके उठी। लड़के दोनों सोए हुए थे, चंपा सोई थी, और बैजनाथ जी भी सो गए थे, दाई घर जा चुकी थी, बसन्ती सदर दरवाजे का कुड़का चढ़ाकर, उपर चढ़ही रही थी कि किसी के द्वार खट खटाने की आवाज आई। इतनी रात को कौन आया है? बसन्ती जरा आगा पीछा करने लगी, फिर आवाज आई "कौन है? दरवाजे पर कौन खड़ा है?" कुछ जवाब नहीं आया, फिर आवाज आई, "क्या करें? क्या उपर जाके उन्हें उठावें? नहीं आज बहोत चल फिर के थक गए हैं सो गए है" अस्तु हिम्मत करके बसन्ती ने आपही जाकर दरवाजा खोल दिया। कौन पुरुष भीतर आया, पहले तो पहचान नहीं सकी, पर देखा कि शिवनाथ है। पर ऐं! यह क्या? शिवनाथ जी की यह कैसी शकल हो गई है। बड़े बड़े लंबे रूखे केश ललाट और आंखों पर पड़े हुए हैं, आंखे गड्हे में धंस गई हैं, पर अग्नि सी जल रही हैं, मुंह बड़ा गंभीर सूखा हुआ, शरीर

दुबला, फकत एक मुंबलाया दुपट्टा ओढ़े हुए बसन्ती के सामने आ खड़े हुए। दोनों भीतर आए, शिवनाथ बोले "बहोत दिन से आ नही सके, कुछ बुरा मत मानना बसन्तो बेबे, आज दशहरे का प्रणाम करने आया हूं।"

बसन्ती। जीते रहो शिवनाथ, तुमारी बड़ी उमर हो, ब्याह हो, घर गृहस्ती करो, भगवान करें इन आंखों से देखती जाऊं, छोटे भाई को और क्या असीस दूं।

बसन्ती की स्नेह भरी बाणी सुनके शिवनाथ जी के आंखो से आंसू गिरने लगे, कुछ बोल नहीं सके, बसन्ती के दोनों चरण पकड़ कर प्रणाम किया, उसने बहोत सी असीस देकरके हाथ पकड़के उठाया और बोली "शिवनाथ, तुम बहोत दिन से यहां नहीं आए हो तो क्या हुआ, मैं रोज तुमारी खबर लेती थी, और यह पूरा भरोसा था कि हम लोगों पर कुछ भी तकलीफ पड़ने ही से तुम जरूर आओगे। पर ऐसा भी कोई लिखाई पढ़ाई करता होगा? शरीर पहले कि लिखा पढ़ी पहले? आहा! तुमरी दोनों आंखे बैठ गई हैं, मुंह सूख गया है, शरीर दुबला हो गया है, बाह! इस तरह दिन रात जाग कर कोई भला पढ़ता होगा? तुमी एक अनोखे पढ़वइया हुए हो। देखो शिवनाथ तुम अब बच्चे नहीं हो, समझदार जवान लड़के हो, तुमे भी क्या समझाना पड़ेगा। अपनी बेबे की बात मानो, रात को अच्छी तरह से सोया करो, समय सिर भोजन किया करो, तुमरे ऐसे लड़के को परिक्षा में पास होने की क्या परवाह है?"

शिवनाथ के सूखे होठों में जरासी हंसी दिखाइ दी, धीरे धीरे बोले "बसन्ती बेबे परिक्षा ही देने से क्या जिन्दगी का सुख बढ़ता है? देखो कैजनाथ भय्या ने क्या कोई परिक्षा दी है, पर उन के ऐसे सुखी दुनिया में कै आदमी हैं?

बसन्ती। तब परिक्षा के लिए इतनी फिकर काहे को? शरीर मट्टी किस लिए कर रहे हो?

शिवनाथ। परिक्षा की मैं जरा भी परवाह नहीं करता।

बसन्ती। फिर इतनी चिन्ता किस बात की लगी है?

शिवनाथ जी ने कुछ जवाब नहीं दिया, बसन्ती को वहीं चबूतरे पर बैठाया आप पास बैठे, बसन्ती के दोनों हाथों को पकड़ के सिर नीचा करके आंखों से बड़ी बड़ी आंसुओं की बूंदे बहाने लगे।

बसन्ती। ऐं! यह क्यों शिवनाथ? रोते कैसों हो? जी में कुछ दुःख हुआ है क्या? तो मुझसे कहते क्यों नहीं? शिवनाथ, बचपन से लेके आज तक ऐसी कौन सी बात हुई, जो तुमने मुझसे नहीं कही, मैंनेही तुमसे कभी कोई बातें लुकाई है? इतने दिन का स्नेह क्या आज भूल गए। अपनी बसन्ती बेबे को क्यों बेगानी समझा?

शिवनाथ। बसन्ती बेबे! जिस दिन तुमे बेगानी समझेंगे, उस दिन फिर दुनिया में मेरा अपना कोइ भी नहीं रह जायगा। मैं मन की पीड़ा तुमसे नहीं छिपाऊंगा मैं बड़ाही अभागा पापी हूं

बसन्ती ने देखा कि शिवनाथ जी-थर थर कांप रहें हैं, आंखे अग्निसी जल रहीं हैं वह भी जरा घबड़ा गइ, फिर धीरज धर के धीरे २ बोली "शिवनाथ, कुछ संकोच मत करो, मन की बात मुझसे कह डालो"।

शिवनाथ। बसन्ती बेबे, मेरे मन की बात मत पूछो, मैं बड़ा पापी हुं, मेरा मन पाप चिन्ता से काला हो गया है। बड़े भाइ के तुल्य मित्र के घर आके मैंने असद् आचरण किया है, अपने बहिन के अमृत रुपी स्नेह के बदले उसे विष दिया है। बेबे, मेरे मन की बात मत पूछो, मेरा हृदय घोर पाप की कालिख से कलंकित है।

शिवनाथ जी ने बसन्ती के दोनों हाथ छोड़ के उसके दोनो भुजाओं को पकड़ा, इतने जोर से पकड़ा कि बसन्ती की दुर्बल कोमल भूजायें लाल हो गइं। शिवनाथ जी थर थर कांप रहें हैं, आंखों से मानों अग्नि की चिनगारीयां निकल रही हैं।

बसन्ती ने शिवनाथ की ऐसी अवस्था कभी नहीं देखी थी, वह डर गइ। क्या इस आदर्श चरित्र छोटे भाइ के जी में कोइ पाप चिन्ता है? बसन्ती स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं कर सकी। पर आज इस सन्नाटे की रात में, इस पागल सरीखे युवक को देख के

अकेली औरत कुछ डर गई, पर बुद्धीमान बसन्ती ने उस भव को छिपा के स्पष्टस्वर से कहा "शिवनाथ, तुम्हें बचपन से मैं अपना छोटा भाई समझती हूं, तुम भी मुझे बेबे कहके बुलाते हो अपनी बड़ी बहिन से छोटा भाई जो कुछ कह सकता है बिना संकोच के कह डालो" ।

शिवनाथ । मैंने जो बुरा आचरण किया है, जिस पाप वासना को मन में जगह दी है, वह बड़ी बहिन के सामने कहने लायक नहीं है, मैं महा पापी हूं ।

इस पर बसन्ती गुस्से होके बोली "अच्छा, तो फिर मुझ से वह बात कहने की कोई जरूरत नहीं, मेरा हाथ छोड़ दो, अपनी बहिन की इज्जत रखो." ।

शिवनाथ जी ने बसन्ती की बांह छोड़ दी, फिर उसकी गोद में मुंह झुका के बच्चों की नांई रोने लगे । बसन्ती के कुछ भी समझ में नहीं आया । बच्चे की तरह जिसका शुद्ध आचरण है, बच्चे की तरह जो पैर पर गिर के रो रहा है, क्या उसके मन में कोइ पाप वासना रह सकती है ? उसने धीरे धीरे शिवनाथ जी का मुंह ऊपर उठाया, अपनी आंचर से धीरे धीरे उनके आंसू पोंछ दिए, फिर धीरे से बोली "शिवनाथ, तुमरे मन में ऐसी चिन्ता उदय नहीं हो सकती, जो मेरे सुनने लायक न हो तुम्हें जो कहना हो कहो, मैं सुनूंगी" ।

शिवनाथ । परमात्मा इस दया के लिए तुमें सुखी करें । बसन्ती बेबे, मुझे एक बात का अभय देदो कि यदि मेरी बिनती निष्फल हो, प्रतिज्ञा करो कि यह बात किसी से कहोगी नहीं । मेरी पाप चिन्ता मेरे प्राण के साथ शीघ्रही लय हो जायगी, संसार में जिस में यह बात जाहिर न होने पावे ।

बसन्ती । अच्छा मैंने माना ।

शिवनाथ जी थोड़ी देर तक कुछ सोचने लगे, फिर दोनों हाथों को हृदय पर रखके मानों मन के आवेग को रोकने की कोशिश करने लगे, और फिर वे बसन्ती का दोनों हाथ पकड़ उसके पैर तक

अपना सिर नीचा कर के धीमी आवाज से बोले " पुण्य हृदया वत्सा विधवा चंपा से मेरा ब्याह कर दो"। बसन्ती के सिर पर मानों आकाश टूट पड़ा। पल भर में उसने यावत छः महीने की घटना का सारा मर्म जान लिया।

शिवनाथ जी रुंधे हुए कन्ठ से कहने लगे " बसन्ती बेबे, मैं बड़ा पापी हूं, आज छः महीना हुआ जिस रोज पहले पहल मैंने चंपा को कुन्दन पुर में देखा उसी रोज मेरा मन डोल गया। सिवाय किताब पढ़ने के मैं और व्यसन से अनजान था, पुस्तकों के सिवाय और किसी तरह के प्रेम से मैं बेखबर था, उसी दिन से सीधी, साधी, अनुपम सुन्दरी, तेरह वर्ष की लड़की को देख के मेरा हृदय उथल पड़ा। मैंने समझा था कि समय पाके दिल की यह कमजोरी जाती रहेगी, पर नहीं दिन पर दिन कलकत्ते में अधिक विष पान करने लगा, मेरा शरीर मन, आत्मा सब छिन्न भिन्न हो गया। बसन्ती बेबे तुम शुद्ध मन से मुझे रोज अपने घर आने देती थी, मैं हर रोज तुमरे घर आता, बैजनाथ भय्या बड़े भाई के तुल्य स्नेह करके रोज मुझे अपने घर आने देते, मैं मन मे कालकूट विष धारण कर, पाप वासना साथ लेकर, हर रोज इस पवित्र गृहस्थाश्रम में आता था। ओह ! परमात्मा क्या यह महा पाप महा-छल क्षमा करेंगे। बसन्ती बेबे तुम क्या क्षमा करोगी? चंपा की बीमारी के बाद अब हर रोज उसे दिलासा देने आते, बहोत देर तक बैठे हुए दोनों जने बातें किया करते या आकाश के नक्षत्र गिनते थे, उस समय मैं होश हवास खोकर क्या पापचिन्ता करता था, बसन्ती बेबे तुम्हें सुनाऊं। मेरा ब्याह होगा, गृहस्ती होगी, सुन्दरी चंपा उस गृहस्थी की रानी होगी, मेरी जिन्दगी को आनंद मय करदेगी, इसी सोच में मैं उन्मत्त हो जाता था, आकाश के तारोंमें यही चिन्ता पाठ करता, वायू के झकोरोंमें यही शब्द सुनता था।रोज आते२, मेरे होश हवास जाते रहे यहांतक कि पढ़ाई में विघ्न हो रहा है कहके बैजनाथ भय्य ने मुझे एक रोज टोका तब मुझे होश आई। जहन्नुम मे जाय पुस्तकें और परिक्षा, मुझे इसकी कुछ भी परवाह नहीं थी,पर जिस

भारी तूफान में मेरी जिन्दगी की किश्ती पड़ी है, शायद कहीं सीधी सादी चंपा बिचारी भी उस आफत में न पड़ जाय, यह भय एका एकी मेरे मन में जाग उठा। बस उसी दिन से मैंने इस पुण्य आश्रम में आना छोड़ दिया। मैंने सोचा था कि चंपा को न देखने से मैं उसे भूल सकूंगा, पर नहीं वह आशा वृथा हुई। बसन्ती बेबे! मैं दो महीने से इस पाप चिन्ता को बिसार देने के लिए जी जान से लगा हुआ हूं, पर यह चेष्टा वृथा—नदी के वेग को हाथ से रोकने के तुल्य हुई। मैंने पढ़ने में मन लगाने की कोशिश की, थियटर तमाशे में जाकर इस चिन्ता को भुला देने की कोशिश की, संगी साथी यों से मिला जुला, गाने बजाने के स्थानों में गया, पर हाय इस काल चिन्ता को नहीं भुला सका। घर के दिवारों पर, रात को निर्म्मल आकाश में पुस्तक के हरेक लाइन में थियटर में तमाशे में, मैं हर जगह उसी सुन्दरी का सरल मुख देखता रहा हूं, बेबे, इस दो महीने से मेरी जो हालत हो रही है उससे रस्ते का कंगला अच्छा होगा। मैं पापी हूं, पर तुम मुझे घृणा मत करना, तुमी घृणा करोगी तो फिर दुनियां में मेरा स्नेह करने वाला कौन रहेगा? मैं कहां सिर लुकाऊंगा? इतना कहके फिर शिवनाथ जी रोने लगे, आंखों से आंसू की धारा बहने लगी। बसंती ने चुपचाप बैठ कर शिवनाथ जी की सब बातें सुनी। क्या जवाब देती। शिवनाथ की बातें, पागल की बातें हैं, पर यह कह देने से होतो यह उन्मत्त युवक आजही आत्मघात कर लेगा।

बसन्ती ने धीरे से शिवनाथ जी के आंसू पोंछ दिए और बोली,

"छी: शिवनाथ, अपने को ऐसा दुःखी क्यों करते हो? ऐसा धिक्कार क्यों देते हो! तुमे मैं बचपन से छोटे भाई सरीखा जानती हू, तुमे क्या मैं घृणा कर सकती हूं। इसमें घृणा की कौनसी बात है? यही तो कि, हम लोगों में बिधवा विवाह की चाल नहीं है, पर ऐसा विवाह होसके है कि नहीं, उनसे पूछूंगी, जो होगा वह करेंगे इसमें अपने को इतना दुःखी करने की क्या जरूरत है, तुमरी इस बोल से यह चाहे जो कुछ दिखला

करें, यह निश्चय समझो कि इस जिन्दगी मे तुम पर वे इस लोगों का स्नेह कदापि घटने का नहीं" ।

शिवनाथ । बसन्ती बेबे, तुमरा मुंह मीठो हो, तुमने मुझ पर इतनी दया की, । आज मुझे घृणा करके निकाल बाहर नही किया, तुमारो यह दया मैं इस जिन्दगी में कभी नहीं भूलुंगा ।

बसन्ती । शिवनाथ, मालुम पड़े है कि आज अभी तक तुमने कुछ खाया पिया नही है, कुछ खाओगे? मुंह हाथ धो । उनके लिये पूरी की थी, उसमें को बची हुई कई एक रखी हैं । आओ ऐके बरफी के संग खालो ।

शिवनाथ । नहो बेबे, आज कुछ नही खाऊंगा, मुझे भूख नही है ।

बसन्ती । अच्छा तो कल सवेरे एक दफे आना, उनसे सलाह किया जायगा ।

शिवनाथ । तुमरे हाथ जोड़ू हूं, माफ करो, भय्या जो कहें, तुमी मुझ से कह देना, इसके पहले मैं उन्हें मुंह नही दिखा सकूंगा ।

बसन्ती । कल न आए न सही, पर कभी कदाच आया जाया तो करो, अपने को इस तरह से दुःख देओगे तो बीमार जो हो जाओगे ।

शिवनाथ । माफ करी बेबे, माफ वरो, इस बात का कुछ किनारा, हुए बिना मैं चंपा को मुंह नही दिखाउंगा । देखो बसन्ती बेबे, खूब होशियार रहना जिसमें चंपा यह बात किसी तरह न सुन पावे उसका मन डोलने न पावे यदि मेरी आशा पूरी न हुई तो दुनियां में एक अभागा रहेगा और एक बिचारी को अभागिनी करने की जरूरत नहीं है ।

बसन्ती । अच्छा, इस बारे में उनकी जो मरजी होगी, तुमे चिट्ठी में लिख कर भेज दूंगी ।

शिवनाथ । नही बेबे, चिट्ठी में यह बात मत लिखना, मैं आप आके तुमसे पूछ जाऊंगा । कब आंऊ बतलाओ । मेरे भाग्य में विधाता ने कुछ लिखा है कि दुःख इसकी सूचना मूझे कब मिलेगी ।

बसन्ती । शिवनाथ, यह बात कोई दो एक दिन में तय होने की तो

है ही नहीं, बहोत कुछ देखना सुनना बनाइ बात, सोचना बिचारना पड़ेगा । अच्छा तुम पन्द्रह सोलह दिन बाद आना ।

जगन्नाथ । सोई सही मैं दिवाली की रात को फिर आऊंगा, बीच में जो कई दिन है, मेरी मुर्दे की सी हालत रहेगी ।

———:o:———

॥ बीसवां परिच्छेद ॥

स्त्रीसमाज की सम्मति ।

ज्योंहिं शिवनाथ जी घर से बाहर निकले त्रिवेणी बाबू के घर की एक दाई हाथ में बड़ी सी थाली लिए हुए भीतर आई । थाली रख कर बोली "आज दसहरे का दिन है सोई मालकिन जी ने कुछ फल फलेरी और मीठा भेजा है । कई जगह जाना रहा सोई इतनी रात हो गई" ।

बसन्ती । अच्छा, उसी चौंतरे पर थाली रखदे, खाली करके कल अपनी दाई के हाथ भेज देंगे ।

दाई ने थाली चौतरे पर रखी, फिर सिरकी धोती जरा सरका के, मुंह फिरा के, गाल में अंगुली देके मुसकाने लगी ।

बसन्ती । क्योंरे क्याहुआ है जो हंस रही है, क्या कहीं से कुछ तमाशा तमाशा देखके आई है ।

दाई । हां, तमाशाही है और क्या ? भले आदमी के घर होय तो तमाशो, और हम लोगों के यहां होए तो चट से लोग काना फूसी करने लग जांय ।

बसन्ती । सो क्या ? कहां क्या तमाशा हुआ है ?

दाई । नही बीबीजी, हम लोग गरीब आदमी ठहरे, हमें इन सब बातों से क्या मतलब, पर यह तो जानो ही हो कि देखने वाले लोग बिना काना फूसी किए नही रहते ।

बसन्ती । अरे क्या देखे है, सो कुछ खोल के बोल भी ?

दाइजी ने अबकी दफे जरा सिर के कपड़े को और सरकाया और मुसकरा के बोली 'मै कहूं हूं, कि जो छोकरा इतनी रात को तुमरे घर से अभी निकल के गया वह कौन है ?

बसन्ती जरा डरो । बाहर का दरवाजा अभी तक बराबर खुला रहा । क्या दाई ने खड़े खड़े सब सुन तो नहीं लिया ? जरा क्रोधित होके बोली "तेरी आंख फूट गई है क्या ? शिवनाथ आया था और कौन था ? पहचाने नहीं ? आज क्या यहां नखरा करने आई है ?

दाई । आंख नहीं फूटी । बीबी जी आंख नहीं फूटी, शिवनाथ जी थे यह तो पहले ही से देख लिया था, पर क्या भले आदमी के लड़के भले आदमीयों के घर की औरतों से इसी तरह हाथा पाई करते होंगे ? क्या जानूं भाई, तुम लोगों के गांव गवई की क्या चाल है, मैं तो आज तीस बरस से कलकत्ते में नौकरी करूं हूं ऐसी चाल तो कहीं नहीं देखी । हो जी भले आदमियों के घर की बातों से अपने को क्या मतलब ? किसी तरह सांझ सबेरे रूखा सूखा खाके पेट भर जाय वही बस है, अपने को इन सब बातों से क्या मतलब ?

बसन्ती ने पहलेही से लखा हुआ था कि देवी बाबू के घर की दाई सब बड़ी बेहया हैं, पर आज इस दाई के ताने और बेअदबी के सवालों से उसे बड़ाही गुस्सा आया, पर क्रोध जाहिर करने से और भी हानि होगी, यह सोच कर उसने गुस्से को रोका और बोली " अरे हइया, तू क्या जाने है ? बात यह है कि शिवनाथ की मां तो उसका ब्याह करती नहीं, इसी लिये अकेला घर में रह रह के और पढ़ पढ़ के पागल सा हो गया है । क्या कहे है, क्या बके है, उसका कुछ ठिकाना है ।

दाई । अरे, पागल हुआ है तो, दूसरों के घर के भीतर आके ऊधम क्यों मचावे है ? ब्याह के लिए पगला हुआ है तो जाय जाके ब्याह करे, तुमसे हाथा पाई क्यों करे है ? क्या तुमसे ब्याह करना चाहे हैं ?

बसन्ती । चल मुंह झौंसो । तेरे जबान में क्या कोई बात अटकती ही नहीं ? जो मुंह में आवे है, बके जाए है । शिवनाथ एक लड़की देख आया है, उसी से ब्याह करना चाहे है, पर शरम के मारे घर में किसी से तो कह नहीं सकता सोई मुझसे कहने आया था ।

दाई। अरे बीबी जी, अब छिपाओ काहे हो ? मैंने क्या कुछ सुना नहीं है। मेरी आंख थोड़े ही फूट गई है कि कुछ देखा नहीं या बहरी हूँ कि कुछ सुना नहीं, वही चंपा चंपा का नाम ले ले के जो शिवनाथ जी रो रहे थे, चम्पा के लिए कलेजा फटा जाता था यह क्या मैंने सुना नहीं है ? तुम लोग भला यह बात मुंह से क्योंकर निकालो ? ऐसी बात क्या कभी कोइ भलामानुष जबान से निकाले है, या आज तक किसी ने कान से सुनी है। थें ! विधवा का ब्याह ? हरि राम, छिः। छिः। छिः। ऐसे भले आदमियों के घर को सौ सौ दण्डवत, हम लोगों के यहाँ कोई ऐसी बात करे तो उसी दम बिरादरी से निकाल दिया जाय ! हरे राम, छिः ! छिः ! छिः। ऐसी बदनामी की बात किसी ने कभी सुनी भी होगी ? यही भले आदमियों का घर है अरे, भंगी चमारों के घर में भी कोई ऐसी बात नहीं सुने होगा। राम राम। छिः। छिः। छिः मेरा तो होश गुम्म हो गया है, हाय ! हाय ! यह क्या ! यही भले घरों के करतूत हैं !

अबकी दफे वास्तविक ही बसन्ती डर गई। जब तक बड़े आदमी के घर की मुंहफट दाई उस पर अवाजा तवाजा फेंक रही थी तब तक तो वह सब बरदाश्त करती गई, पर चम्पा के नाम से यह कलंक फैलावेगी यह सोच कर उसके होश हवास जाते रहे। उसने निश्चय कर लिया था कि 'शिवनाथ की पगली बातें मैं कदापि स्वीकार न करूंगी" पर विधवा के लिए मामूली झूठा कलंक भी बड़ा भयंकर है. झूठ सच की खोज कौन करता है, इन सब बातों का कलंक फौरन चारों तरफ फैल जाता है, मिटाए नहीं मिटता।

बुद्धिमती बसन्ती ने बहोत कुछ सोच विचार के, बकस से एक रुपया निकाला। और कभी देवी बाबू के घर से कुछ खाने पीने की चीज आती, तो दाई को दो पैसा देके बिदा करती थी, पर आज दाई के हाथ में एक रुपया रख कर बोली "दइया, तू तो देवी बाबू के घरकी पुरानी आदमी है, आज दशहरे का दिन है, तुझे और

क्या हूं यह रुपया लेओ, एक नई धोती खरीद लीजो, और शिवनाथ जो पागल पन की बात बक गया है, उसका जिकर किसीसे मत करियो आज दसहरा है, शायद कहीसे भांग पीके आया होगा, इसी लिए पागलों की बातें बकता था। पागल की बात का भला क्या ख्याल करना। अरे, भले आदमी के घर क्या ऐसा काम होता होगा? हम लोगों का भी मान सम्भ्रम है, शिवनाथ जी की भी मां हैं, बहिन हैं, ऐसा काम भला कभी हो सकता है? जा, पागलपन की जो बातें सुने है, किसी को कहियो मति, देख खबरदार. जिससें इस पागलपन की खबर किसी को न हो।

चमचमाता रुपया देखके दाई का मन कुछ पसीजा (किसनोही का पसीज जाता है) रुपए लेके बोली हां 'बहूजी, क्यों नहीं', भला पागल की बातों का कोई ख्याल करता, होगा। शिवनाथ जी ने तो थोड़ीसी भांगही पी थी, यही देखो न हमरे घर के छोकरे सब बोतल पर बोतल न जाने क्या ला-ला के गटागट पीए जांए हैं। और चाल चलन भी बस दण्डवत करने लायक है। रात को घर नहीं रहते, न बाप मां का डर और घर में किसी की लज्जा शरम। क्या करें! आज कल घर घर यही हाल है, आज कल के छोकरों की बात का ख्याल ही क्या करना। अरे राम राम, वह सब बात क्या मैं मुंह में ला सकुं या किसी से कह सकूं हूं। मैं किसी से नहीं कहूंगी बहूजी, किसी से नहीं कहूंगी तुम बेखटके रहो।

दाई खुश होके अपने घर गई। जो लोग स्त्री चरित्र और स्वभाव से जरा भी जानकार हैं उन्हें यह बतलाना फजूल है कि तार के खबर की तरह बसन्ती के घर की यह बात थोड़ेही देर में सुलापट्टी बड़ी बजार पार होके काली घाट तक जा पहोंची। दुसरे दिन सबेरे सहर भरमें को को मच गया। देबी बाबू की गृहणी जी, पैर फैला के तेल मालिस करवा रही थी, इस खबर के सुनते ही जैसे मेढ़क देख कर सर्प फुफकार उठता है-- फुफकार उठी,

"हां, यह तो होना ही था, होगा क्यों नहीं! अब आज कल तो नीच ऊंच का विचार है नहीं, न जाने कहां गांव गंवइ से आ के

लोग ब्राह्मन बन बैठते हैं। उनके किसी पुरखा ने कभी किसी ब्राह्मण के साथ नाता रिश्ता किया है? वह क्या जाने ब्राह्मण का मान छि: छि: ऐसों को घर बुलाना! उनकी तो अक्कल मारी गई है, जो उन लोगों के साथ उठें बैठें है। आज घर आने तो दो, उनकी सब भलमनसी निकाल दूंगी, हूं, न अपने नाम का ख्याल न मान मर्य्यादा का ध्यान, बड़े भारी हौस के बाबू बने हैं, जिसके संग मन आया उठने बैठने लग गए।। अरे, यह तो मैं तभी जानती थी रे तभी जानती थी, जब यहां के किसी से मिलने के लिए घर से पैर नहीं निकालती थीं, बड़ी नाक, जब बुलाया गया तब आई मैंने तभी समझ लिया था कि कैसे बाहमन हैं। बस फिर तबसे मुंह नहीं दिखाया गया, और देखो न ठाठ कैसा, हूं, उस विधवा छोकरी को पाढ़ वाली साड़ी पहनाई जाय है, लाड़ प्यार किया जाय है। होगा नहीं? यह सब तो हो ही गा। जैसी जात है वैसी ही तो चाल चलन होगी, चमार मेहतरों के घर और क्या होगा, यह तो होना ही था। जैसा मुसल्मानों के यहां विधवा का निकाह होता है कि नहीं बस यह भी वही है, वही"।

बच्ची की मा। (मालकिनो जी के कलेजे के दर्द के लिए उने लगातार तेल की मालिश कर रही थी) और नहीं तो क्या होगा? यह भला बाहमन होगे। क्या बाहमनोंके घरकी विधवा योंही रहे हैं? हाय हाय और कुछ सुना है कि नहीं, यह छोकरी एकादशी के दिन बजार के दोने उड़ाती है, तेल उबटन लगाया जाय है, कंघी मिस्सी—छि:! छि:! छि:। यही देखो आज एकादशी है, भला कोई कह तो दे कि सबेरे से एक घुट पानी भी पीया है।

जमना की मां।(मालकिनी जी के केशोंमें तेल लगाती हुई) खाली इतना ही थोड़े है? गाड़ी चढ़ा के उस छोकरी को हवा खिलाने ले जाया जाय है, शिवनाथ जी रोज एक दफे उससे मिलने जांय हैं। छि:! छि:! राम! राम! लज्जा धरम सब हम से पानी में बहा दीव।

मालकिनी। ऐसी लड़की को भी धिक्कार है! लड़की की मां को भी धिक्कार है! ऐसी लड़की क्या पेट में रखनी होय है? पैदा होते ही नोन खिला के मार डालना होय है। विधवा हो गई तब भी जरा लज्जा शरम नहीं, फिर खोल के शिव नाथ के संग छत पर टहला जाय है, शिवनाथ के लिये मिश्री का शरबत भेजा जाय है। भला शिवनाथही का क्या अपराध है बताओ। आखिर तो मर्द का मन ठहरा। ब्याह शादी भी तो नहीं हुई है सो इस तरह से यदि दोनों बहिन मिल के उसे फुसलावेंगी तो वह भला लड़का आदमी भूलेगा नहीं? ऐसी लड़की का मुंह देखना होय है? मार झाड़ू मार झाड़ू।

इसी तरह से बकते बकते मालकिनी और उनकी दोनों बहिन का सुर धीरे धीरे सप्तम पर चढ़ने लगा, मालकिनी के कलेजे का दर्द बहुत बढ़ गया, दम पर दम कविराज जी आने लगे शाम को देवी बाबू मालकिनी जी की तबियत का हाल पूछने आए, मुंह से जबान निकालते ही वह बेभाव की पड़ी कि तुम दवा के बैठके में जा बैठे। मालकिनी जी के गले की आवाज सुन के नीचे हौज पर सब बहू बेटियां काना फूसी करने लगीं।

पहली। क्यों रे क्या हुआ है इतनी बका झकी क्यों हो रही है?

दूसरी। अरे, तैंने नहीं सुना है, सुनने लायक बात है।

पहली। नहीं तो, कहो न, कहो न।

दूसरी। ले सुन, वही जो कौन एक बैजनाथ बाह्मन कहां तो गांव गंवई से आके इसी मुहल्ले में रहा है न, वही जो उस दिन उसकी जोरू और साली अपने यहां आई थीं, सो वह साली तो विधवा न है, सुने हैं कि शिवनाथ के संग उसका ब्याह होगा।

तीसरी। चल मुंह झौंसी। विधवा का भला ब्याह होता होगा।

दूसरी। क्यों होएगा क्यों नहीं। सुने हैं कि वही विद्यासागर न तो

कौन एक बड़ाभारी बंगाली पण्डित है वह कहे है कि विधवा का विवाह होए है। वह कई एक विधवा का विवाह करवाइस भी है।

चौथी। अरे वह तो बड़ा रसिया है रे। विधवा का विवाह करवावे है। अच्छा, क्या वह बुड्ढी विधवा का भी विवाह करवावे है?

दूसरी। करावे क्यों नहीं है? लड़की राजी होने ही से हुआ।

चौथी। तब, बच्ची की मा और जमना की मा का भला क्या अपराध है? चोरी करके दूध मलाई उड़ाती हीं हैं, छुप छिप के चुरा के सिर में मालकिनी का खुशबो वाला तेल भी डालती ही हैं, तो फिर विद्यासागर को कहला के ब्याह कर लेने ही से हुआ, फिर इतनी चोरी चमारी क्यों करनी पड़े। खुल खेलें न।

पहली। अरे चुप चुप, कहीं सुन लेगी तो कलेजा निकाल डालेगी। अच्छा शिवनाथ जी तो सुने हैं, बड़े भले मानुस हैं, वह ऐसा काम क्यों करें हैं?

दूसरी। चल बैठ। बहोत से भले मानुस देखें हैं। मर्दों का मन डोलते क्या देरी लगे है। बस गोरी गोरी लड़की देख के मुंह से लार टपक पड़ी।

तीसरी। अच्छा बेबे जी, लड़की कितनो बड़ी है।

दूसरी। कोई तेरह चौदह वर्ष की होगी। रंग भी गोरा है, मुसका मुसका के शिवनाथ जी से बातें करे है। मिसरी का शरबत पिलावे है, और न जाने उसके संग और क्या तो पिलावे है, इसी लिए तो उनकी भी अक्कल मारी गई है। हजार हो, आखिर तो मर्द का मन ठहरा।

चौथी। अच्छा तब तो शिवनाथ जी से उस लड़की की बहोत दिन की मुलाक़ात है।

दूसरी। तब सुने क्या खाक? यह मजे की बात क्या समझी? मुलाकात तो वही गांव गंवइ से ही है। न जाने भाई वहां क्या

बुआ, बिना समझे बूझे दुसरे की निन्दा अच्छी नहीं पर कलकत्ते आके जो जो रंग रसिया मच रहीं हैं, बड़ी बजार भर में भला किसी से छिपी है। तू क्या जाने है? शिवनाथ ने पहले तो उस लड़की को लाके कुछ दिन तक अपने घर में रखा, उसके बहिन बहनोई भी उसी घर में थे, फिर बैजनाथ जी रंग रसैया बेढंगा देख के अलग किराए के घर में जा रहे, वहां जाते ही राधा रानी कृष्ण विरह व्यथा से बेहोश हो गई, बहाना किया गया कि बड़े जोर से बुखार आया है, बस फिर क्या था हमरे कृष्ण जी महाराज भी चटपट वहां जा पहोंचे। अरे कहां तक सुनेगी।। हो एक बात हो तो सुनाऊं। अरे, कृष्ण जी के माखन चोरी लीला की कथा सुने है कि नहीं, वही आज कल के छोकरे सब चोरी बरजोरी सब इल्म सीखें हैं, देख होशियार रहियो।

चौथी। चल, मुंह झौंसी!।

दाइयों की मजलिस अलग बैठ गई। बुढ़िया दाइयों की जबांनी सुन के युवती दाइयां सब भी सवेरे से, चौक सिढ़ी बरामदे, चौके में सब जगह काना फूसी कर रहीं थीं, एक लंबीसी युवती दाई बोली" अरे! सच्ची है क्या? क्या सचमुच बिधवा का ब्याह होगा क्या?

दूसरी मोटी ताजी युवती दाई बोली" अरे, तू नहीं सुने; सब ठिकठाक हो गया है, लगन भी आ गया, बैजनाथ महाराज ने सोनार को गहना बनने दिया है और तू पूछे है कि होगा की नहीं?

दुबली। तबतो यह चाल, चल जायगी। भले आदमियों के यहां होगा तो फिर छोटी जातों में भी होने लगेगा।

मोटी। क्यों क्यो? काहे क्या तेरा भी मन चले है क्या? क्या उस कहार के छोकरे से ब्याह करेगी? वह तो तेरा रिस्ते में कुछ लगे है न? वही, जो उस दिन सिढ़ी में खड़ी होके उससे कानफूसी कर रही थी।

दुबली। चल मुंहझौंसी। मुझे ऐसी बात। अपने मन की बात कहती होगी? वही जो तेरी जात का मुच्छू मोदी है, अभी उसी

दिन तो उसका जोरू मरी है, उसे दो मुट्ठी भात उबाल देनेवाला कोई नही है। तू जो नोन मिर्च खरीदने के बहाने दम पर दम उसके दुकान पर जाती है, क्या उसके घर अबाद करने का मन है क्या ?

मोटी। तेरे मुंह में लूका।

इसी प्रकार से दोनो युवती दासीयां अपने अपने मन की बात ज़ाहिर कर रही थी की एक बुढ़िया दाई आ मौजूद हुई, बोली "क्योंरे क्या हुआ है जो तुम लोग गाली गलौज कर रही हौ" ?

मोटी। नही कुछ नही, यही शिवनाथ महाराज के ब्याह की बात कर रही थी, अरे भाई भले आदमी जो करें सो थोड़ा, बस जितना जूता झाड़ू है, हमी लोगों के लिए।

बूढ़ी। अरे भले आदमी जो करें हैं, उसका कुछ भेद है। तब करें हैं, कि योंही करें हैं? तैं तो काम मे रुई ठूसे रहती है, तुझे भला क्या खबर ?

दोनों युवतीयां। एँ, क्या कहा ? बतलाओ, बतलाओ ?

बूढ़ी। तैं सुने नहीं है शायद? बैजनाथ महाराज को जो अब ब्याह करने के सिवाय कोई चारा नहीं है, तैं शायद पूरा दास्तान नही सुने है ?

दोनों। नही तो, सो क्या है, क्या है ?

बूढ़ी। अच्छा सुनना हो तो मेरे पास आ, कान में कहूंगी।

दोनों युवतीयां काम धन्धा फेंक के बुढ़िया के पास दौड़ी गई। बुढ़िया उनके कान के पास मुंह लेजाके बोली—वह अवाज तिमंजिले तक सुनाई दी--"अरे, तैंने सुना नही है? बैजनाथ महराज की साली को जो छः महीने का पेट है।"

सच्ची बात प्रगट होने लगी ?

बड़ी बाजार से कालीघाट तक खबर जा पहोंची। कामनी की तीनों सासों को उस दिन एका दशी का व्रत था, इससे एक तो पहले हीसे मिजाज कुछ बिगड़ा हुआ था, दूसरे यह समाचार सुनके एक दम से तेल के तड़के (बघार) की तरह जल भुन गई।

सबसे बड़ी जो जरा भली आदमी थी बोली "आज कल का जो जमाना हुआ है, न पाप पुण्य, न आचार विचार, जो जिसके मन में आवे करे है। जाय, जहन्नुम में जाय, जो जैसा करेगा, पावेगा। अपने को इन सब बातों से क्या मतलब ?

छोटी बोली "क्या क्या हुआ है क्या ? हमारे घर की बहू का भाई विधवा से ब्याह करेगा ? राम ! राम ! कैसे घृण की बात है, छिः ! छिः ! छिः ! आज कल क्या लोगों को अपने नाम इज्जत का कुछ भी ख्याल नहीं रहा, जो जी में आवे करें हैं ? अरे, ऐसा काम तो डोम चमारों के यहां भी नहीं होता। हाय। हाय। हम लोगो के कुल में कालिख लगेगा, छिः छिः न जाने कहां की लड़की ब्याह के अपना कुल डोबिन। हाय। हाय। रांम। राम छिः। छिः।

मझली तो एक बारही बड़े जोर से गर्ज कर कामनी से बोली "क्योरे, मुंहझौसी, हराम जादी, अरे तुम लोगों के मन में क्या यही था ? ऐ, झाड़ू पिट्टी क्या गले मे फांसी लगाने के लिये एक पैसे की डोरी नहीं मिली ? चुल्लू भर पानी में डूब नहीं मरी मरी नहीं मर, मर, । हम लोगों के कुल में यह लांछन । ऐं ! चमार की जनी अरे, क्या ससुर का कुल एक दम से डूबो दीस। आ तो बट्टे से कुचल के तेरा मुंह भरता करदूं तो सही। झाड़ू से तेरी पीठ की खाल उतार लूं तो मेरा नाम । तेरा सिर मुड़ा के, एक गाल में कालिख औ एक गाल मे चूना लगा के घर से नही निकला तो मेरा नाम नहीं" । कामनी बिचारी रो रो के हैरान हो रही। सन्ध्या को उसने बसन्ती को एक चिठ्ठी लिखी। "ऐं। बसन्ती बे बे। यह क्या सुनं हूं ? यह निन्दा यह कलंक यह अपयश हमलोगों के कुल में बसन्ती बे बे। यह काम मत करियो। शिवनाथ पागल होगया हो तो उसे घरमे मत घुसने दीजो। यह काम होगा तो मैं यहां ससुरार में मुंह नही दिखा सकूंगी। मेरी सास सब मुझे जीता नही छोड़ेंगी। फिर अपनी कामनी को नहीं देख पाओगी।"

कलकत्ते भर में यह खबर फैल गई। बसन्ती की ताईजी ने आदमी से कहला भेजा "अनी बसन्ती। तुझे और चंपा को मैं

अपने पेट की बेटी सरीखी जानु हूं, पेटकी बेटी की तरह पाला पोसा है। बूढ़ी ताई की बुढ़ौती खराब मत कीजो बेटी। बाजपेयी घराने में कालिख मत पोतियो बेटी", बसन्ती के सिर पर मानो बिजली गिर पड़ी। उसने देखा कि दाई को जो एक रुपया घूस दिया था उसका कुछ फल नहीं हुआ संसार भर में कलंक फैल गया है॥

—::o:o::—

॥ इक्कीसवाँ परिच्छेद ॥

॥ पुरुषों की सम्मति ॥

बसन्ती से सब दास्तान सुन के बैजनाथ को बड़ा दुःख हुआ, पर शिवनाथ जी पर वह जरा भी नाराज नहीं हुए और न उनकी बातों में कुछ अधर्म्म या पाप का लेश देखा, बैजनाथ बड़े शान्त धीर स्वभाव के आदमी थे, इस लिए वर्तमान काल की चलित प्रथा के विरुद्ध सहसा कोई काम करके अपने भाई बिरादरी, रिश्तेदार अड़ोसी पड़ोसी, मेली मुलाकातियों से बैर ठानना नहीं चाहते थे, और शिवनाथ पर पहले उनकी जैसी श्रद्धा थी वैसेही रही, तिल भर भी नहीं घटी, अस्तु उन्होंने बहोत कुछ सोच विचार, सलाह बात करके इस बात के तय करने का निश्चय किया॥

भाग्यवश उन्हें सलाह देने वालों की भी कमी नहीं रही। झुण्ड के झुण्ड सलाहगीर सब आ आ के उन्हें समझाने लगे। बहोत से हितैषी मित्र जिन्होंने अब तक बैजनाथ जी को कभी एक बात भी नहीं पूछी थी सलाह देने समझाने बुझाने आए, बड़े बड़े शास्त्री पंडित शास्त्रों की व्यवस्था बतलाने, समाज संस्कारक (सोशल रिफर्मर) असली संस्कार (रिफर्म) का तत्व समझाने और समाज संरक्षक (सनातन धर्म्मी) सनातन धर्म्म की दुहाई देने बैजनाथ जी के घर आ धमके। इतने दिनों से कलकत्ते आकर बैजनाथ गली गली धूल उड़ा रहे हैं, पर उन्हे अब तक पता नहीं था कि कलकत्ता नगरी में उनके इतने हितू शुभचिन्तक मौजूद हैं।

पहले तो बिरादरी के पंच, पण्डित द्वारकानाथ, गंगासरन, पं० लक्ष्मी नरायण' विद्याधर, लीलाधर, वगैरे बूढ़े चौधरी सब बैजनाथ के यहां पधारे। इधर उधर की बहोत सी बातें करके द्वारकानाथ बोले" आप ऐसे भद्र पुरुषों के यहां आ रहने से और विशेष कर आपके शिष्टाचार से हम लोग बड़े प्रसन्न हैं। हम लोग हमेशां आपकी खबर लेते रहते हैं और दिल से सदा आपकी भलाई चाहते हैं। अच्छा ! आपकी नौकरी का क्या हुआ ? एक दफे साहबों से मिल के कोशिश तो कीजिए, आप कहिए तो गिलंडर कंपनी के बड़े साहब से आपकी मुलाकात करादें, मेरा भांजा वहां का खजांची है, वगैरे वगैरे नाना प्रकार की अपनायत की बातों से अपनी मुहब्बत जतलाने लगे (जिसका परिचय इसके पहले बैजनाथ जी को कभी भी नहीं मिला था)। बहोत देर के बाद शिवनाथ जी की चर्चा छिड़ी गंगासरन जी बोले "अजी क्या कहैं आज कल अंगरेजी पढ़ पढ़ के सब लड़कों की मति खराब हो गई है, अपने कुल की विद्या रस्म रिवाज कुछ सीखे हों तब तो। तुमतो भाई समझदार लड़के हो, तुम ऐसा काम हरगिज मत करना, बैजनाथ ! हम लोगों को पूरा भरोसा है कि तुमरे ऐसा भला मानुष स्वप्न में भी कभी ऐसी मूर्खता नहीं करेगा। कोइ बेवकूफ हो तो समझावें भी।

लक्ष्मीनरायण। अरे भई, जानेही तो हो, जब तक दो चार हम लोग बुड्ढें बुड्ढे मरते नहीं तभीतक बिरादरी की खैर भी है, नहीं तो कौन किसके लिए सिर खपावे है। बिरादरी मे कोई आदमी भूल चूक से कोई ऐसा काम न कर बैठे, जिसमें पीछे से उसे दुःख उठाना पड़े इसी बात की रात दिन निगरानी रखनी पड़ती है। शिवनाथ तो अंगरेजी पढ़ के कुस्तान हो गया, जो जी में आता है करता है, हम लोगों की एक नहीं सुनता। जरा दिन जाने दो, फिर बचा जी को आप होश आवेगी। तुम उस बदमाश मुए छोकरे को अब घर में पैर मत रखने देना। जो हुआ सो हुआ,, थोड़े दिन में आपही बात ठंडी पड़ जायगी। कौन इतना याद रखता है।

विद्याधर । और नहीं तो क्या ? वही उस दिन पांडे जी के यहां जो एक वारदात हो गई तुम लोग तो जानते ही हो (यह कह कर उस वारदात का सविस्तार वर्णन किया गया) वो पांडे जी समझदार थे, मामला दबा गए अब बतलाओ तो वही कौन उसकी चर्चा करे करावै है" ॥

लीलाधर । और नहीं तो क्या? किसे गर्ज पड़ी है कि दूसरों की बात याद करता रहे । अपने काम काज से फुरसत मिलती ही नहीं, फिर दूसरों की चर्चा से कौन सिर खपावे । क्या कहें ? आज कल तो सब आप आप को प्रधान हो गए हैं,, दस वर्ष पहले महल्ले के बुड्ढे,पंचो से बिना पूछे क्या कोई भी काम हो पाता था। क्यों विद्याधर भाइ ठीक कहता हूं कि नहीं ? हम लोगों से पूछा बिना क्या कोई भी कुछ कर सकता था ?

विद्याधर । क्या मजाल कि करे ? और अब भी क्या हुआ, जो जरा भले मानुस समझदार आदमी है, हम लोगों से पूछे बिना कोई काम भी नहीं करते, वही देखिए न गए साल हरिबाबू की विधवा पतोहू के नाम से कुछ कलंक रटना हुइ (उस कलंक का सविस्तार वर्णन किया गया) हरिबाबू बिचारे बदहवास मेरे पास दौड़े आए बोले कि 'महाराज जी बतलाइए अब क्या करें ! इस विपत्तिसागर से आप बिना अब कौन उबारे । मैंने उसे फौरन सलाह दी कि "जब तुम हमरे पास आगए हो तो बेखटके रहो, मैं इसका कुछ न कुछ किनारा किए बिना रहने का नहीं ॥ क्यों भाइ लीलाधर, हम लोगों ने बहोत कुछ देखा सुना है, आपत्त बिपद के समय हम लोगों को खबर करने से कुछ न कुछ उपाय करही देंगे ॥

लीलाधर । और नहीं तो क्या ?

गंगासरन । सो उस समय सोच बिचार के हम लोगों ने हरिबाबू को सलाह दी कि अपनी पतोहू को वृन्दावन भेज दो, उन्होंने फौरन यह नेक सलाह मान ली और उस विधवा को वृन्दावन भेज दिया,अब बतलाओ तो वही किसकी मजाल है जो इसकी चर्चा तक उठा सके । अरे भाई आज कल के छोकरे छोकरी सब मनमानी

करने लगे हैं धर्म्माधर्म्म लोकलाज का कुछ भय तो है नहीं, तो बैजनाथ जी आप का इसमें क्या अपराध है ? मेरी बात सुनो, एक काम करो, अपनी साली को बृन्दावन भेज दो, वहां जाके जो जी में आवे किया करे, कोई देखने तो नहीं आयगा और तुमरी निन्दा भी नहीं होगी,, अब बैजनाथ जी से और बरदाश्त नहीं किया गया वह कंपित स्वर से बोले ॥ "आप लोगों की बातों का मर्म मेरे समझ में ठीक नहीं आया। शिवनाथ ने चलित रीति के विरुद्ध काम करने की राय जाहिर की है, मैं इसमें कहां तक राजी हूं, यह तो फिर सोचा जायगा, पर आप लोग यदि यह समझते हों कि शिवनाथ या मेरी साली के चाल चलन में कुछ फर्क आया है तो यह आपकी सरासर भूल है। इन दोनों के निर्म्मल चरित्र को कलंक छू नहीं गया है, और इन दोनों की नांई शुद्ध चाल चलन के आदमी भी मैंने कम देखे हैं"

गंगाचरन, लीलाधर और विद्याधर तीनों एक साथ बोल उठे "अजी नहीं जी नहीं, हमलोग क्या कोई कलंक लगाते हैं, भला ऐसी बात भी कोई भला आदमी मुंह से निकालता होगा ?

गंगाचरन। भला ऐसी बात कोई मुंह से कहता होगा ? किसी गृहस्थ के घरमें कुछ हो भी जाय तो क्या वह अपनी जबान से कहता है ? यही हरिबाबू ने क्या कुल बातें कही थीं फ़कत एक बहाने से आफ़त विदा की, सोई तो हम लोग भी तो यही कहते हैं कि तुमरी साली ने अगर कुछ किया भी हो तो, रामराम भला क्या वह बात हम लोग जबान से निकाल सकते हैं ? हम लोग ऐसे छिछोरे नहीं हैं। पर बात यह है कि यह सब बखेड़ा चटपट मिटा डालना ही अच्छा है। इन सब बातों में सीधासाधा रास्ता पकड़ना ही अच्छा है। सीधे मार्गही में धर्म्म है।

विद्याधर। और नहीं तो क्या। और नहीं तो क्या "यतोधर्म्म स्ततोजय: शास्त्र भी यही कहता है। गंगाचरन जीने जो बात कही, वह बहोत ठीक है, इसमें कोई सन्देह नहीं। तुम होशियार लड़के हो, न हो अबकी दफ़े ज्यों त्यों बात दबा दोगे। पर तुम भी अभी

लड़के ठहरे, घरमें क्या युवती विधवा को रखना मुनासिब है? किस वक्त क्या हो जाय, इसका कुछ ठीक है॥

विद्याधर। और नहीं तो क्या? शास्त्रों ही में लिखा है कि सहस्त्राक्ष इन्द्र देवता भी स्त्रियों के गुप्त आचरण नहीं देख सकते, चतुर्मुख ब्रह्मा भी युवतियों के भेद को नहीं पा सकते। तुम तो अभी उस दिन के लड़के हो।

गंगासरन। और नहीं तो क्या, बहोत करोगे अब की दफे दवा दोगे, पर शायद दैव की गति कौन जाने यदि समयानुसार युवती विधवा को बालक पैदा हो जाय तब क्या बात छिपाए छिपेगी? एक तो लोग योंही तिल का पहाड़ कर देते हैं फिर क्या ठौर ठिकाना रहेगा। अभी से ही लोग तरह तरह की चर्चा कर रहे हैं, इस से वृन्दावन भेज देना ही अच्छा है।' इत्यादि नानाप्रकार की उपदेशावली वर्णन कर बूढ़े चौधरी महाराज सब बिदा हुए। बैजनाथ जी गुस्सेके मारे कुछ जवाब नहीं दे सके, फक्त जलती हुई आंखोंसे एक बुन्द गरम आंसू पोंछा इसके बाद श्यामलाल, लोकनाथ, कन्हैयालाल वगैरे नए युवक सब बैजनाथ जी को सलाह देने आए। इन में से कोइ एफ०ए०तक पढ़े थे, कोइ एन्ट्रन्स तक पढ़के स्कूल छोड़ दीन था, फिर घर ही पर (रेनल्ड साहब के उपन्यास) बहोत कुछ पढ़ लिख के विद्वान हो गए थे। किसी का चाल चलन अच्छा था, कोई सभ्यसमाज के खेल खूद हंसी दिल्लगी की परिक्षा में पास हो गए हैं और आगे अध्ययन कर रहे हैं, पर सलाह देने में कम कोई नहीं है, सब ही बैजनाथ के परमहितैषी मित्र हैं।

पहले तो यह लोग नाना प्रकार की शिष्टाचार की बातें करते रहे हैं, बातों ही बात में श्यामलाल बोले। क्या कहें। भाई साहब आज सवेरे एक बात सुन के बड़ा दुःख हुआ। हम लोग कदापि इन बातों पर विश्वास नहीं करते। अपने मुहल्ले के एक विद्योत्साही युवक और सती साध्वी विधवा की झूठी अपकीर्ति हम लोगों से कदापि सही नहीं जा सकती। जिस ने जब जब हमें यह बात कही हमने उसे फौरन झूठा बतला दिया। आप की झूठी निन्दा का

विरोध करना ही हम लोगों का एकमात्र कर्तव्य है, इस लिए असली हाल जानने के लिए आप के यहां आए हैं, पर आप यदि सब बाते बतलाना उचित न समझते हों, तो हम लोग भी बरजोरी आप की घरउ बात जानने की इच्छा नहीं रखते, क्योंकि किसी के प्राइवेट मामले में दखल देना सभ्यता नहीं है, पर यदि सब बातों समझाने में आप को कोई उज्र न हो तो इत्यादि", इत्यादि नए ढंग की भूमिका बहुत देर तक चलती रही, बैजनाथ जी बिचारे क्या करें। चारों तरफ निन्दा फैल गई। जब असली बात से कहीं सौ गुणा बढ़ कर झूठी निन्दा का प्रचार हो रहा है, तो इस हालत में असली बात छिपा ही के क्या होगा। अस्तु इन बे बुलाए आए हुए नव युवकों की बातें यद्यपि उन्हें कुछ कड़वी लगीं पर तौभी धीरज के साथ उन्हों ने कुल असली हाल बयान कर दिया।

श्यामलाल। खैर, वह चाहे जो हो, हम लोगों को यह बात झूठ जान कर बड़ी खुशी हुई। इतनी भारी निन्दा का अधिकांश झूठा है, यह बड़े संतोष का विषय है। पर तो भी देखिए एक बात विचारने योग्य है। सब लोग तो चट से आप की बातों पर विश्वास करेंगे नहीं, और आप भी तो हरदम डेरे पर नहीं रहते, शिवनाथ भी बड़ा अहंकारी और स्वतंत्र प्रकृति का आदमी है, और स्त्री की लीला समझना भी हंसी खेल नही है, इस लिए इस मामले में यदि लोग कुछ संदेह करें,कानफूसी करें तो यह स्वाभाविक है। लोगोंको तो कोई बात मिलनी चाहिए फिर दो के चार करते क्या देरी लगती है जो हो, आप अब तक इस विवाह में राजी नहीं हुए हैं, यही बड़े आनन्द की बात है।

कन्हैयालाल। बहोत ठीक बात है। और भी एक बात विचार देखिए यदि समझिए कि हम समाज सुधार कर रहे हैं, सोशल रिफार्म कर रहे हैं, तो वास्तव में यह सुधार, सुधार नहीं कहला सकता। जिस से हम लोगों में एका फैले राजनैतिक और समाजिक उन्नति हो वही काम करना चाहिए। आप यह न समझिए कि पुराने ख्यालात के लोगों की तरह हमे कुछ " प्रेजुडिस "

(पक्षपात) है पर ऐसे कामों से हम लोगों में झगड़ा द्वेष फैलने के अलावे और कुछ उपकार नहीं होगा । जो कुछ एका है भी वह भी नष्ट हो जायगा । इस लिए हम लोगों की राय में यह काम अतीव अनुचित है ।

लोकनाथ । खाली यही क्यों, साइन्टिफिक् (वैज्ञानिक) तौर से विचार देखिए , मेलथस्साहब का कथन है कि आबादी जितनी जलदी बढ़ती है, अन्न उतना जलदी नहीं बढ़ता इस लिए सभ्य देशों में बहोत से स्त्री पुरुष क्वारे रहते हैं । इस देश में कोइ क्वांरा तो रहता नहीं, इस लिए कम से कम विधवाओं का तो फिर से विवाह न करना चाहिए, जिस में आबादी न बढ़ने पावे । एक तो यह देश यों ही कंगाल हो रहा है, फिर आबादी और बढ़ जायगी तो सब लोग भूखे मर जांयगे । इस लिये विधवाओं का विवाह होना कदापि योग्य नहीं है ।

श्यामलाल । और आप से यह बात भी तो छिपी नहीं है कि स्वदेश उन्नति, भारत वर्ष की उन्नति ही हम सबों का एक मात्र उद्देश्य है अस्तु यह काम विधवा विवाह से नहीं हो सकता । अपनी सामान्य कोशिश से जो कुछ उन्नति हो सकती है, मैं बाकी नहीं रखता । मैंने एक लाइब्रेरी खोली है, पुस्तकों के लिए भारत के सारे ग्रन्थ कर्ताओं को पत्र भेजा है, और हर सनीचर वहां दस पांच मिल के राजनैतिक विषयों पर बहस करते हैं । यदि फुरसत हो तो अगले सनीचर को कृपाकर एक दफे वहां अवश्य पधारिएगा आप के आने से हम लोगों को बड़ा आनन्द होगा ।

कन्हैयालाल । एक और बड़ी भारी बात विचारने योग्य है, देखिए हम लोगों के घरों मे जो सुशीलता, सदाचार विद्यमान है क्या धनवान क्या गरीब सब लोगों के घर के भीतर जो मधुरता छिपी हुइ है, वैसा आप किसी युरोपियन जाति के घर में खोज कर के भी नहो पाइएगा । विदेशी आचार की नकल मतकीजे, नहीं तो हम लोगों की गृहस्ती का अमृत कुंड विषमय हो जायगा । भारत का सब कुछ जा चुका है, केवल स्त्रियों का सदाचार, गृहस्ती

का अमृत मय आनन्द अब तक मौजूद है, यह चाल चल जाने से वह भी जाता रहेगा, सनातन धर्म्म का टिम टिमाता दिया एक दम से बुझ जायगा। यदि नकल ही करना है तो युरोपीयनों की अच्छी बातों की नकल कीजिए जिस से कुछ कल्याण हो, हम लोगों के घरों का सदाचार, नम्रता, विनय, मधुरता, बचे बचाए सनातन धर्म्म पर कुठार मत चलाइए।

कन्हैयालाल। ठीक कहते हैं। आप श्यामलालजी की बात जरूर मानिए। इन के ऐसे बुद्धीमान देश हितैषी सज्जन आज कल कम देखने मे आवते हैं॥ इनकी एक एक बातेँ लाख लाख रुपये की समझिए। और जिस निन्दा की बात सुनी है यदि वह सच हो, लोग तो सचमानही लेंगे, पर हम लोग पूरा सबूत देखे विना अपनी राय जाहिर किया नहीं चाहते—यदि यह बात सच हो तो ऐसे युवक युवतीयों का दिल बढ़ाने से भारत की उन्नति तो दूर रही, उलटी अधोगति होगी। बैजनाथ जी को इन नीचाशय युवकों की बातों का जबाब देते भी नफरत मालुम हुइ, चुप चाप बैठे रहे। थोड़ी देर बाद यह महाशयगण आप ही उठ के चले गए।

इस के बाद बिरादरी के दे। एक उचक्के बड़े बजार के एक बड़े भारी दिग्गज शास्त्री जी को लेके बैजनाथ जी के बैठके में पधारे। शास्त्री जी कुछ ऐसे वैसे शास्त्री नहीं थे घोर कृष्णवर्ण, सिर मुंड मुड़ा हुआ, माथे पर लंबा राम फटाका लगा हुआ, धोती उपरना ओढ़े हाथ में मोटी लाठी लिए, नाक में सुंघनी झोंकते, चुटिया फर्ट्राते खोंखते खांसते बैजनाथ जी के सामने पालथी मार के बैट गए। शास्त्री जी क्या, मानों हिन्दू धर्म्म के म्नुमेन्ट (लाट) थे, इनकी धर्म्म शास्त्र की विद्या पेसे-फिक ओशन, (प्रशान्त माहासमुद्र की नांई आगाध अगम्य थी। विद्या में सुण्डधारी गजानन और तर्क में साक्षात बन्यबराह अवतार थे। बेद वेदान्त, श्रुति स्मृति न्याय, दर्शन, पुरान, इतिहास, व्याकरण, कोष, सब इन्हें कण्ठस्थ था, सब में समान अधिकार था। बैजनाथ जी के, बैठके में पैर रखते ही इन्होंने अपनी असीम विद्या

समुद्र की तरंगों की चपेटों से उनका होश गुड़म् कर दिया, बैजनाथ जी बिचारे भकुवे से होकर चुपचाप बैठे रहे। बकते बकते जब शास्त्री जी का गला बैठ गया और बोलने की ताकत न रही (तर्कना प्रणाली की ताकत घटने की नहीं) तब खांसते खांसते उनकी जबान ने थोड़ी देर के लिए विश्राम लिया। इनके चुप होने पर बैजनाथ जी धीरे से बोले "शास्त्री जी महाराज इस काम के करने में मैं अब तक राजी नहीं हुआ हूं, इस लिए इसके लिए आपको विशेष कष्ट सहने की अभी कोई जरूरत नहीं है, पर मेरी छोटी बुद्धि और पुस्तकों के पढ़ने से मुझे जहां तक मालूम हुआहै, उससे यह सिद्धान्त निकलता है कि विधवा विवाह के बारे में शास्त्रों में दो राय है। जब जैसा समय था, वैसीही चाल चलती थी। वैदिक समय में विधवा विवाह की चाल थी, मनु वगैरे स्मृति कारों के समय में भी यह चाल एक दम से बन्द नहीं हुई थी, पर हां धीरे धीरे उठती जा रही थी। पीछे से पौराणिक समय में यह चाल एक दम से बन्द हो गई। मैं तो कोई शास्त्री नहीं हूं, और न इतनी विद्याही है कि शास्त्रालोचन करूं पर हां दूसरे पण्डितों से जो सुना है वही कहता हूं। सुनते हैं कि शास्त्रज्ञ पंडित शिरोमणी विद्यासागर महाशय भी कहते हैं कि विधवा विवाह शास्त्रों में है"।

बैजनाथ जी की बातें सुनते ही शास्त्री जी की जो अवस्था हुइ वह कलम से लिख कर बतलाना कठिन है, जिनोंने कभी रात को सहसा ग्राम में आग लगते देखा है, आकाश की लाली देखी है, अग्नि की सर्व संहारिणी लपटें देखीं हैं, वही इस समय इन दिग्गज शास्त्री जी की के चेहरे का भाव अनुमान कर सकते हैं। मानों कहीं अग्नि की ज्वाला गर्ज रही हो, ऐसेही स्वर से शास्त्री जी बोले।"ऐं! वह (खांसी) विधवा विवाह फैलाने वाला विद्यासागर पंडित? उसे पंडित कौन कहता है? हुं! वही लड़कों के पढ़ने की क, ख,की किताबें लिख कर पंडित हुआ है (और ज्यादे खांसी) एक नई चाल चलाने की चेष्टा करके देश का सत्यानाश करने बैठा है, धर्म पर कुल्हाड़ा चलाने को उद्यत हुआ है, मनुष्यों के कलेजे

के तह तक जड़ें मारनेवाला, हिन्दू धर्म्म पर अमिट कलंक का दाग लगानेवाला, हिन्दू नाम, हिन्दू गौरव, सनातन धर्म्म चाल चलन को अतुल समुद्र में डुबाने वाला (बड़ी जोर जी खांसी) उः (खांसी) यह पण्डित हैं, धर्मद्वेषी, म्लेच्छों का मद्दाह, विदेशी धर्म्मियों का पक्षपाती, धर्म्म शून्य, धर्माभिमान शून्य, आर्य्य वंश का कुलबोरन (लगातार खांसते खांसते बोली बंद हो गई) तब शास्त्री जी उठ खड़े हुए "चलो जी, चौधरी साहब अब इस घर में पल भर भी नहीं ठहरूंगा, यहां पैर रखना अधर्म्म है। जो सुना था सब ठीक है। यदि वह छोकरिया पेट गिरावे तो फौरन थाने में खबर कर देना।

बैजनाथ जी को क्रोध नहीं आया, वरं छिगनराज शास्त्रीजी का क्रोध और नाक मुंह का भाव देख के वह जरासा हंस दिए। इस दिन दिनभर बैजनाथ जो के सलाह गीर आते रहे। रोगदुःख दारिद्र्य के समय बैजनाथ जी ने इनमेसे एक का भी मुंह नहीं देखा था॥ उने अब तक यह पता नहीं था कि कलकत्ते मे उनके इतने हितैषी वर्तमान हैं॥ बड़ी बाजार से उड़ती हुई यह खबर शोभाबजार तक जा पहोंची॥ विजयनरायण जी के इन्द्र पुरी तुल्य बैठके मे अन्तरंग मित्रों की मजलिस जुटी हुई थी, नाचगाना, खाना पीना चल रहा था, वहां इस दरिद्र की चर्चा छिड़ी। विजयनारायण जी तो अपनी साली का कलंक सुनके कुछ बोले नहीं, फकत जरासा मुसकरा के चुप हो रहे। पर उनकी सभा और धर्म्म ध्वजी महाशय गण एक दम से चकित और स्तम्भित हो रहे, हिन्दू धर्म्म के स्तम्भ हरिशंकर जी स्तम्भित हो रहे, उनके हाथ से शराब का गिलास गिर के सौ सौ टुकड़े हो गया, बड़ी लंबी सांस ले के बोले "हा धर्म्मराज! तुमे क्या सब ने बिसार दिया? ऐं। भले आदमीयों के घरो मे यह क्या हो रहा है। हाय! हाय! सनातन धर्म्म शायद रसातल को चला"। गोकुल बाबू के हाथ से कांटा चमचा छूट पड़ा, सामने की रिकाबी मे गोश्तका बिन चखेही पड़ी रही, आंख फाड़ के 'हाय! अब शायद नैशनेलटी टिकती नही दीखती" केवल इतनाही

बोले । विश्वम्भर जी, सिद्धेश्वर जी, वृद्धेश्वर जी पुरानी रहस सब अपनी अपनी कुर्सी पर बैठे हुए कांप गए । यह महा अधर्म्म की बात सुन के हम लोगों का मुंह बन्द हो गया आज कल के कलियुगी छोकरों की भरपेट निन्दा कर अपने जमाने के धर्म्मानुष्ठान की जी जी खुल के तारीफ करने लगे ।

यूरोपीयन सभ्यता के साक्षात अवतार "मिस्टर बैनरजी" ने अपनी व हूबहू सम्मति प्रगट की । बोले कि "इस तरह का ब्याह पश्चिमी सभ्यता के बिल कुल विरुद्ध है ।। यह तो केवल युरोपीयन सभ्यता का छिछालेदर करना ठहरा । विधवा बाहर परदे से निकल कर जगत संसार के सामने आ खड़ी हो, सुन्दर विद्वान युवकों से मेल मिलाप करे (शीशे मे अपना मुंह देखकर) फिर लंबी कोर्टशिप के बाद एक सुपुरुष को चुनकर ब्याह करे, यही तो भाइ युरोपीयन सभ्यता है । पिंजरे मे बंद की हुइ विधवा का ब्याह कर देना पश्चिमी सभ्यता का सरा सर अपमान करना है" ।।

मिस्टर बैनरजी का लेक्चर सुन के सभा की स्त्री सभासद सब एक स्वर से बोल उठीं " क्यों जी, हम लोगों ने जगत संसार सब कुछ देखा, सुन्दर ऊंचे विचार वाले युवकों से मेल मिलाप किया, फिर हमे पश्चिमी सभ्यता (अर्थात खुब सूरत दुलहा) क्यो नही जुड़ता ? हम लोगो का विवाह क्यो नही होता ? इस मजलिस मे शराब के ग्लासों के साथ स्त्री और पुरुष दोनो सभासदो मे इस मजेदार दिल्लगी का सिल सिला बहोत देर तक जारी रहा, पाठक क्षमा करें, लेखक को उन बातों के खुलासा वर्णन करने की सामर्थ्य नही है ।।

सारे संसार के आवाजे तवाजे, निन्दा कलंक, सलाह मंत्रना, सुनते २ बैजनाथ जी घबड़ा उठे ।। शाम को सरस्वती के पास जाके बोले "सब लोग एक स्वर से विधवा विवाह का विरोध कर रहें हैं, इस लिए यह काम करने की मेरी इच्छा नही है । विद्वान, मूर्ख, भले, बुरे, मान्य अमान्य, सब मिलके एक स्वर से इस काम को मना कर रहे हैं ।

बसन्ती । और इसके अलावे इस काम से कितना कलंक, कैसीनिन्दा होगी। यह काम करने से निन्दा के मारे हम लोग किसीको मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।

बैजनाथ। नहीं, इसका तो कुछ ऐसा डर नही है। बिरादरी, के लोग अड़ोसी पड़ोसी, जान पहचान के लोग सब कृपा करके हम लोगों के नाम से जो कलंक फैला रहे हैं और विश्वास करा रहे हैं, उससे और ज्यादे कलंक होने की सम्भावना नही है। विधवा विवाह मे कोइ अधर्म्म नही है, पर हमारे हितैषी महात्मा सब विशेष कृपा कर शिवनाथ और सरला बालिका चंपा के बारे में जो पाप सूचक अफवाह उड़ा रहे है, उस पाप को यथा साध्य छिपा रखनेहीं से इन लोगों की राय मे धर्म्म रक्षा हो सकती है। धन्य, लोक मति !

॥ बाइसवां परिच्छेद ॥

॥ चंपा की चिन्ता ॥

जिस चंपा के विवाह की चर्चा से अड़ोसी पड़ोसियों की आहार निद्रा छूट गई है चलो पाठक एक दफे उस अनजान बालिका का भी तो कुछ समाचार ले आवें। देखें वह क्या कर रही है। बैजन थ और बसन्ती ने बहोत चाहा कि चंपा को यह सब हाल कुछ मालुम न होने पावे, पर सब चेष्टा वृथा हुइ। भला, जिस बात की चर्चा घर घर सारे शहर मे हो रही थी, वह क्या कभी छिप सकती थी। इसके अलावे जिस घरमे दाइ मजदुरनी हों वहां किसी संबाद का पहोंचना भी दुष्कर नही है, उन घर वालें को अखबार की भी जरुरत नहीं रहती। पर हां दाईजी नें बसन्ती के कहने का इतना भर मान रखा कि चंपा को सब खोल के नहीं कहा। चंपा के चाल चलन के बारे में जो निन्दा उठी थी, उसका ब्योरा उससे छिपा रखा पर 'शिवनाथ तुमसे ब्याह करने के लिए पागल हो रहे हैं, इसके लिए, रोरो के तेरी बेबे के पैरों पर पछाड़ खा खा के गिरे थे, कुल महल्ले सारे शहर में यह चर्चा फैल गई है"दाई जी ने अकेले में एक

रोज़ चंपा को यह सब हाल कह दिया। लज्जा और यातना से लड़की बिचारी कांप गई। "ओः हाय! हाय! ऐसे अधर्म्म की, सर्वनाश की बात, सारे शहर में चर्चा फैल गई! अब मैं लोगों को यह पापी मुंह क्योंकर दिखलाऊंगी? हाय! हाय! कामनी बेबे के सामने, शिवनाथ जी के मा के सामने, देवी बाबू के, गोपाल बाबू के घर में अब मुझसे क्यों कर मुंह दिखाया जायगा? हाय! फूटे करम! अब कौन मुंह लेके कुन्दन पुर जाऊंगी? छिः! छिः! हाय! शिवनाथ जी, तुमने यह क्या किया? अनाथिनी विधवा को लज्जा सागर में क्यों डूबो दिया? वह रस्ते में औरतें क्या बात करती आ रही है? शायद मेरे ही कलंक की चर्चा कर रहीं हैं! जीजाजी बेबे से निर ले में चुपके चुपके क्या बात कर रहें हैं! शायद इसी हत-भागी का रोना रो रहे हैं। मारे शरम, दुःख और चिन्ता के, लड़की बिचारी अधीर हो गई। किसी से मुंह फोड़ के दो बात भी नहीं कह सकती। सारा दिन तकिए में मुंह छुपा के रोती रही। शाम को बिना कुछ खाए पीए भूखी मलीन मुख रोती हुई, जाके सोरही अफ सोः शिवनाथ जी ने काहे ऐसा काम किया? बिचारी दुखिनी विधवा के नाम से यह कलंक काहे फैलाया? पर लाख निराशा और दुःख में भी मनुष्य का हृदय जिस तरह एक आशा रूपी सूर्य्य की किरण की तरफ धावता है, अभागिनी चंपा का सूखा हृदय भी वैसेही, इतनी लज्जा और यंत्रणा को लांघ कर आशा की एक क्षीण ज्योति की तरफ धावता भया। निराशा के घोर समुद्र में भी उसे एक आधार की छाया दिखाई देने लगी।

शिवनाथ जी ने ऐसा काम क्यों किया! उनके न आने से जैसे मैं उनका आसरा देखती रही हूं संध्या को अकेली बैठी हुई जैसे उनकी बात सोचती रहती हूं, वह भी शायद कभी कदाच मुझे याद करते हैं। शायद रात दिन वह यही लज्जा की बात सोचते रहते है, इसी लिए अधीर होके उन्होंने बेबे से यह लज्जा की बात कह डाली। मालूम पड़े है, शायद इसके लिए उनका दिल बहोत दुखता रहा है, नहीं तो क्या बेबे से, मुंह खोल के ऐसी बात कह सकते थे

दाई कहती थी कि वह बड़े दुबले हो गए हैं, हाय, इसी अभागिनी के लिए वह इतनी तकलीफ पा रहे हैं? मेरा बड़ा मन करे है कि उन्हीं के दोनों चरणों पर अपना हृदय रख दूं। यह, क्या होगा? विधाता ने क्या मेरे फूटे करम में ऐसा कुछ लिखा है। उन्होंने जो बात कही है, वह क्या हो सकती है? ओफः! यह बड़े पाप की, लज्जा की बात है, इस से मन में नहीं लाना चाहिए"।

धीरे धीरे चंपा की आंखों से एक बून्द आंसू टपक पड़ा। छोटे छोटे कोमल कर पल्लवों से आंसू पोंछ कर चंपा फिर सोचने लगी "अच्छा, उन्होंने जो बात कही है, यदि सचमुच ही वैसा हो जाय? यह दरिद्र बालिका यदि सचमुच ही उनकी स्त्री हो जाय? तब सवेरे पहले उठके वह कुन्दन पुर का उनका घर झाड़ू बहारु देके साफ सुथरा करेगी, बरतन मांज देगी, तन मन से उनके मा की टहल करेगी, अपने हाथ से उनकी रोटी पका के, भोजन के समय थाल में परोस के उनके पास बैठी रहेगी। शाम को उनके लिए ऊंख छील कर गंडेरी ठंडे पानी में भीजो के रखेगी, उनके लिए बेल का सरबत बना के रखेगी, मिसरी का पन्ना अपने हाथ से उन्हे पिलावेगी"। सहसा किसी के पांव की आहट पाइ, चम्पा चौंक पड़ी, शायद उसके मनकी यह बात कोई जान न जाय, पापिनी की पाप चिन्ता किसी को मालुम न हो जाय। "और यदि कहीं परदेश में उनकी नौकरी लगेगी, तो मैं भी दासी की तरह उनके साथ परदेश जाऊंगी। तन मन से उनकी सेवा में लगी रहूंगी। एक छोटीसी झोपड़ी में हम लोग डेरा करेंगे। इस कुटिया के किनारे दो नीबे के और दो कौहड़े के पेड़ लगाउंगी और पांच चार फूलों के पौधे अपने हाथ से बोऊंगी। कलकत्ते में, नहीं नही वही जो उस रोज कालीघाट में देख आइ थी जो देवी देवताओं की तस्वीरें चार चार पैसे को बिकती थी, उसीसे मैं सोने का कमरा सजाऊंगी। कौन कौन सी तस्वीरें होंगी। पार्वती जी, सिंह पर चढ़ के अपने पेके जा रही हैं, पार्व्वती जी की मा कन्या को आया देख सहसा दौड़ कर दोनो हाथ पसारे हुए उन्हें गोद में लेने के लिए आगे बढ़ रहीं

हैं, दासियां सब, कोई पंखा कोइ भोजन की थाली, कोई पानी की भारी कोइ फूलों की माला लिए दौड़ी आ रही हैं। वा अंधेरे में जंगल के बीच पति प्राणा दमयन्ती सो रही है, राजा नल उठके बैठके गाल पर हाथ रख के सोच रहें हैं। वा वृन्दावन के कुंजबन में राधिका जी गाल पर हाथ धर के सोच रहीं हैं, चंद्रावली उनके पास आके कृष्ण जी का संवाद सुना रही है, सुनके उनकी आंखों से आंसूवों की धारा बह रही है। इस प्रकार की तरह तरह की देवी देवतावो की तस्वीरों से घर सजाऊंगी, अच्छी तरह से झाड़ू बुहार देके बिछौना बिछा रखूंगी, संध्या को दिया बाल उनका आसरा देखती हुई बैठी रहूंगी। जब संध्या को वह घर आवेंगे, तो पानी का लोटा लेके अपने हाथ से उनके पैर धो दूंगी, उन्ही चरणों को पकड़ के आंखो में आंसू भर के कहूंगी। हे नाथ! तुमरी दया, तुमरे यत्न का बदला मैं अनाथ अबला कैसे दूं? मेरा जीवन सर्व्वस्व जो कुछ है, तुम्हारा ही है, गरीबनी पर जरा स्नेह रखना।

जब चिन्ता एक दफे शुरू होती है तो फिर समाप्त नहीं होती। सवेरे घर का धन्धा करती हुई चंपा यही सोचती रहती थी, दोपहर को दिन भर खिड़की में बैठी हुई यही सोचा करती, संध्या को जब बैजनाथ जी और बसन्ती बैठके बात चीत करते, चंपा भी उनके पास बैठती, पर उसका मन दूसरी तरफ लगा रहता! बुद्धि-मती बसन्ती समझ गई कि चंपा को सब मालूम हो गया है, रात दिन सोचती रहती है! चंपा अब वह अधखिली सरला बालिका न रही, जवानी के शुरू होते ही, जवानी के सुख स्वप्न से उसका हृदय भर गया है। रात दिन अनमनी रहती है; कभी कदाच शिवनाथ जी का नाम सुनते ही, चंपा का मुंह लज्जा से लाल हो जाता था, काम धन्धे के बहाने वहां से उठके अन्यत्र चली जाती थी॥

—:0:—

तेइसवां परिच्छेद ।

दिवाली ।

भारत वर्ष का दिवाली का त्योहार भी क्या ही सुन्दर है । क्या धनी, क्या निर्धन सब लोग अपना अपना घर झाड़ पोंछ साफ सुथरा करके दीपावली से सुसज्जित करते हैं । इस दिन मानों पृथ्वी में एक और ही चमकते दमकते नक्षत्र पुंजों की सृष्टी हो जाती है । एक ओर असंख्य दीपाक मानों रत्नो की उज्वल माला की तरह शोभा देते है तो दूसरी ओर घोर अमावश्या की रात्रि में आकाश के नक्षत्र पुंज और भी उज्वलतर होकर पृथ्वी तल की अपनी प्रकृती निहार निहार कर हंसते हैं । धनवानों के यहां झाड़ फनूस, दीपमालिका की बहार रहती है, गरीब गृहस्त दो चार मिट्टी का मामूली दिया ही बालके द्वार पर रखके इस त्योहार को मनाते हैं । वास्तव में इसके ऐसा साफ सुथरा, उज्जवल मन मुग्ध कारी दूसरा हिन्दू त्योहार नहीं है । कोई लोग ऐसा भी कहते हैं, कि भगवान रामचन्द्र जब रावण को मार कर अयोध्या लौटे थे, उस समय उनके अयोध्या पहोंचने और राज्य पर बैठने की खुशी में सारे भारत वर्ष में यह रोशनी की गई थी, तभी से यह प्रथा चली आवती है । आ हा ! क्या ही खुशी का जमाना रहा होगा जब एक मात्र आर्य्य सम्राट का डंका हिमालय की शीखर से लेकर कन्या कुमारी तक बजता था और उसके राज तिलक के उत्सव में यह सर्वजनिक आनन्द मनाया गया था । वही भारत संतान आज दिन भी उस स्मारक को धारण किए हुए है, भूली नहीं । कैसे भूलती ? सुख स्वप्न क्या जलदी विसारा जाता है । कलकत्ते महानगरी वृटिश इन्डिया की एक छत्र राजधानी का कहना ही क्या है ? सारी कलकत्ता नगरी असंख्य दीपावली से चमक दमक कर अद्भुत छटा दिखा रही थी । घर घर में आतिश बाजी, अनार छूट रहे थे, मानों टाउनहाल के लेक्चरारों की नकल कर रहें है थे, गले की आवाज के साथ ही उनका काम

भी तमाम होता था। उच्चाभिलाषी, यशोलुब्ध पुरुषों की तरह आस्मानतारा (एक किस्म की आतिश बाजी) बड़ी तेजी से आकाश की ओर जाता था, और उपर जाकर तेजी निकलते ही उलटे मुंह धरती पर गिर पड़ता था, जिसके सिर पर गिरता उसी की मिट्टी खराबी थी। हिन्दी के अनगिनत उपन्यासकारों की तरह चारों तरफ से पटापट पटाकों की अवाज आ रही थी "बस एकही अवाज में इनका सब उद्यम समाप्त-क्योंकि पहली प्रकाशित मन मोहनी या हवाई महल बिकी नहीं। विषयी पुरुषों की तरह चरखी व्यर्थ घूम घूम के हलाकान हो रही है, ऊंह ! जो गरम मिजाज है, भला पास कोई फटक तो जाय। और छछुंदर की नीची घृणित जिन्दगी, नीचता, बदमाशी करके ही समाप्त हो गई, सिवाय कुटिलता के सीधा रास्ता जानती ही नहीं, दूसरों को तंग करना पर निन्दा, द्वेष, दूसरों को देख के जलना यही सब उसकी जीविका है

आज रात दस बजे के बाद शिवनाथ जी, बैजनाथ जी के घर आ मौजूद हुए। इच्छा थी कि बसन्ती बेबे से भेंट करेंगे पर पहले आते ही बैजनाथ जी को द्वार पर खड़े पाया। बैजनाथ जी बोले। आओ, भाइ मैं तो तुमारा आसारा ही देख रहा था", यह कहते हुए उनका हाथ पकड़ के घर के भीतर ले गए। लज्जा और घबराहट से कांपते हुए शिवनाथ जी उनके पीछे पीछे घर के भीतर जाके मुंह नीचा करके बैठ गए। मुंह से अवाज नहीं निकली।

बैजनाथ जी दिए की बत्ती उसका के धीरे से बोले "शिवनाथ' मेरी स्त्री से तुमने जो बात कही थी, वह सब मैं सुन चुका हूं"।

शिवनाथ जी ने बड़ी मुश्किल से रूंधे हुए कण्ठ से जवाब दिया, "यदि मेरा कोई अपराध हुवा हो तो अपने इस बाल्य सखा का यह अपराध क्षमा कीजिए"।

बैजनाथ। नहीं शिवनाथ, तुमारा कोई कसूर नहीं है तुमने अपने ऊंचे विचार के उपयुक्त ही काम किया है। यदि सारा संसार तुमारी निंदा करे, तौभी मेरा मन तुम पर से तिल भर भी इधर उधर होने का नहीं।

शिवनाथ जी से कुछ जवाब नहीं बन पड़ा । सजल आंखों से आंसू बहा कर उन्होंने अपनी कृतज्ञता प्रगट की ॥ बैजनाथ भी समझ गए ।

बैजनाथ । मेरी स्त्री बचपन से तुम्हे बहोत चाहती है, छोटे भाई सा स्नेह करती है, उसने तुम्हारी बात का कुछ भी बुरा नहीं माना है । हम लोग आगे तुम्हे जैसा चाहते थे, मानते थे, वैसेही यावज्जीवन मानते रहेंगे ।

शिवनाथ । आप लोगों की यह दया मैं इस जन्म में नहीं भुलूंगा । थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे, फिर शिवनाथ जी बड़े कष्ट से दिल की घबराहट दबा कर धीरे से बोले "मेरी बात के बारे में आपने कुछ सोचा" ? यह कह कर, दम रोक के जवाब का आसरा देखने लगे, मानों इसी जवाब पर उनका जीवन मरण निर्भर हो ।

बैजनाथ । हां, इसी का जिकर कर रहा हूं । तुम ने क्या सब तरह आगा पीछा सोच विचार के यह बात कही है ?

शिवनाथ । मेरी छोटी समझ में जहां तक आता है, इसमें किसी की कुछ हानि नहीं है जहां तक हो सका, मैंने बहोत सोच बिचार ही के यह बात मुंह से निकाली है ।

बैजनाथ । शिवनाथ, तुम पढ़े लिखे हो, मूर्ख नहीं हो, पर तौभी अभी लड़के ही हो, इस लिए दो एक बात तुम्हे याद दिला देता हूं । जानते हो, इस बिवाह में कैसी निन्दा होगी ?

शिवनाथ । बहोत सी निन्दा बरदाश्त कर चुका हूं, और आगे चल कर जन्म भर और निन्दा सहने को तय्यार हूं, तब क्या निन्दा के डर से अपनी जिन्दगी के सारे सुख को तिलांजुली दे दुं ?

बैजनाथ । लोग तुम्हे जाति से बाहर कर देंगे ।

शिवनाथ । यदि बिरादरी को यही अच्छा लगता हो, तो यही करें मैं उसकी कृपा का कंगाल नहीं हूं ।

बैजनाथ । तुम्हारे निष्कलंक कुल में दाग लग जायगा ।

शिवनाथ । क्या कलंक ? यही कि मैंने विधवा से विवाह किया है यदि वह पाप का काम नहीं है, तो यह कलंक मुझको स्पर्श नहीं करेगा । जिसकी खुशी आवे, जो कहे, मुझे क्या ? पर हां यदि आप इस काम को कुत्सित समझते हैं तो आज्ञा कीजिए, मैं इससे हट जांऊ ।

बैजनाथ । विधवा विवाह शायद हमारे प्राचीन शास्त्रों के विरुद्ध नहीं है, पर हां आजकल की चलित रीतो के विरुद्ध अवश्यहै

शिवनाथ । तीस वर्ष पहले समुद्रयात्रा की भी रिवाज नहीं थी, आज दिन देखिए हजारों यात्री जहाजों पर बैठ के जगन्नाथ गंगासागर आते जाते हैं । आप को भी गोपाल बाबू की बात याद होगी जिस रोज उन्होंने कहा था, कि जीवित जाति आपही बुरी रिवाजों का सुधार कर लेती है । आगे बढ़नाही जीवन की पहचान है जहां के तहां पड़े रहना, मौत की निशानी है ।

बैजनाथ । शिवनाथ, तुम समझदार हो, हरेक बात को सोचने विचारने वाले हो, तुमसे एक बात खोल के कहूंगा । खूब सोच के जवाब देना । देखो, मनकी चाल हमेशा एक सी नहीं रहती, आज जिस प्रेम से हम पागल हैं, दो वर्ष बाद हो तो उसका वेग कम हो जाता है.हम भूल जाते हैं । विचार देखो, यदि चंपा पर तुमारा ऐसा प्रेम, यह उन्मत्तता हमेशा न रही तो फिर तुमारे मन में पछतावा होगा कि नहीं ? अभी जवाब मत दो, जो मैं हूं कहता सुनते जाओ, तुम बिरादरी से छेके जाओगे, दोस्त यार, भाई बन्धु किसी आनन्द उत्सव दुःख सुख में कोई तुम्हारे घर में पैर नहीं रक्खेगा, तुमारी कन्या हुई तो उससे कोइ ब्याह नही करेगा, तुमरे लड़के बालों को कोइ अपने यहां कभी नहीं बुलावे चलावेगा, सन्सार में तुम अकेले पड़ जाओगे । उस समय कभी तुमारे मन में यह पछतावा होगा कि हाय ! क्यों नहीं लड़काई में आगा पीछा विचार के काम किया, जलद बाजी करके क्यों सारी जिन्दगी के लिए

आफत सिर पर श्रोढ़ी, अपने कलेजे के टुकड़े, स्नेह के पात्र बाल बच्चों को जन्म दुःखी किया। शिवनाथ! खूब विचार देखो, जिस काम का ऐसा नतीजा हो सकता है उसमें क्या ऐसा जल्दी हाथ डालना चाहिए। जवानी में जरा सोच समझ के काम करके क्या बुढ़ौती की चिन्ता दूर करना उचित नहीं है? चंपा की तरह गौर वर्ण सुन्दर, पढ़ी लिखी, तेरह चौदह वर्ष की क्वांरी सरला बालिका क्या अपनी बिरादरी में दुर्लभ है। वह लोग तुम्हारे ऐसे दामाद को पाकर अपने को धन्य मानेंगे। ऐसी जगह विवाह करने से मैंने माना कि अभी तुम्हें कुछ कष्ट हो पर आगे को तो सुखी होगे।

शिवनाथ! तुम बुद्धीमान हो, सोच समझ के कोई काम करो, क्षणिक लालसा के वस न होकर जिसमें आगे को सुखी हो सको वैसा काम करो।

शिवनाथ। आप सच जानिए, मैंने केवल क्षणिक लालसा के वस हो कर यह काम करना नहीं चाहा है, वरं सारी जिन्दगी आनन्द से कटेगी, इसी आशा, भावी सुख, पवित्र गृहस्त आश्रम में जीवन विताने की इच्छा से यह प्रस्ताव किया है। यह मत समझिए कि आपने जो अंचनीच समझाया, वह मैंने सोचा नहीं, नहीं मैं इन सब बातों पर खूब विचार कर चुका हूं, एक दफे नहीं सैकड़ो दफे मनोमन इन बातों को उलट पलट कर विचारा है और जो आप यह कहते हैं, कि इस काम में पीछे से पछतावा होगा सो यदि विधवा विवाह पाप, अधर्म्म या अन्याय कार्य्य है तो तो पछतावा हो सकता है, यदि ऐसा नहीं है तो मुझे यावज्जन्म कभी पछतावा नहीं होगा, आपही बतलाइए, इस संसार में कौन सा बुद्धिमान पुरुष कोई सत्-कार्य्य करके पीछे से पछताया है? क्या आप से छिपा है कि कितनेही महान पुरुष केवल इसी लिए जातिसे निकाले गए कि उन्होंने मिथ्या विश्वास की जगह सचाई फैलानी चाही थी, कई महा पुरुष जन्म भूमि के कल्याणार्थ विदेश जाकर जाति

पतित हुए, आपही बतलाइए इन तेजस्वी पुरुषों ने क्या कभी पूर्वकृत कर्म्मों को अधर्म्म समझ कर पछतावा किया है। नहीं नहीं, पछतावा तो दूर रहा, बल्कि उनकी आत्मा उनके सिर पर महान गौरव का छत्र झुलाती है, एक बड़े जरूरी रस्म का सुधार मेरे द्वारा हुआ, मैंने ही पहला नमूना दिखा कर कमहिम्मती भाइयों के लिए रस्ता खोल दिया, यह विचार-यही चिन्ता-बुढ़ौती में उनके आनन्द का कारण होती है। क्या हुआ, यदि उस समय लोगों ने उनका आदर नहीं किया, आज दिन कौन सभ्य हिन्दू संतान इन महा पुरुषों को जाति पतित कहने की हिम्मत कर सकता है। जाति पतित कहना तो दूर रहा, सब लोग उनकी श्रद्धा करते, उनके नाम पर भक्ति से पुष्पांजली चढ़ाते हैं। थोड़ा समय और बीतने दीजिए ऐसे लोगों को लोग भुजा खोल कर गोद में लेंगे। इसी तरह रस्म रिवाजों का सुधार होता है, योंही जीवित समाज के हानि-कारक रस्म रिवाज सब एक एक करके दूर होते हैं। बैजू भय्या! पीछे से पछतावा करने के लिए मैं यह काम नहीं कर रहा, बरंच जन्मभर सुखी होऊंगा, परमात्मा की इच्छा से जन्मदुःखनी चंपा को सुखी करूंगा, इसी लिए इस काम पर उतारू हुआ हूं। चंपा का मन मैं खूब जान गया हूं, उसका सीधा पन, स्वच्छ पवित्र स्नेह वाली हृदय, आत्म विसर्जन स्वार्थत्याग की शक्ति, यह सब मैंने विशेष कर के लक्ष्य किया है। वह यदि मेरी धर्म्मपत्नी होगी तो मेरी जिन्दगी आनन्द मयी हो जायगी। बैजनाथ भय्या! मन की लालसा, उद्वेग, की कहानी सुना कर अब आप को ज्यादः तंग नहीं करूंगा, बस इसी से समझ लीजिये कि यदि इस विवाह में आप लोग राजी नहीं हुए तो आज से मेरे जन्मभर की कुल आशा, उद्यम, चेष्टा, उत्साह, यहीं समाप्त हुआ समझिए, कलेजे में बरछी विध कर के मजूरे मेहनत नहीं करते।

बैजनाथजी जरा मुसकरा कर बोले "क्या कहते हो शिवनाथ, भला

एक साधारण लड़की के लिए तुमरे ऐसे उत्साही युवक का उत्साह जाता रहेगा ? एक मामूली निराशा से तुमारे ऐसे बुद्धिमान, ऊंचे विचार वाले युवक की जन्मभर की चेष्टा यहीं से समाप्त हो जायगी! नहीं ऐसा नहीं हो सकता । शिवनाथ ! बड़े ही निराशा के स्वर से शिवनाथ बोले "बिना एक सहारे के आदमी का उत्साह, उद्यम धर्म्म अधर्म्म कुछ भी नहीं, रहता ओहः आज मेरा वह सहारा जाता रहा । पर आप को यह बात क्योंकर समझाऊं । समझाने की शक्ति भी नहीं रखता । अच्छा, तो आप लोग यह तय कर चुके हैं कि यह विवाह नहीं करेंगे ।

बैजनाथजी शिवनाथ के दोनों हाथ पकड़ के हंस कर बोले 'शिवनाथ तुम अच्छी तरह समझ बूझ सोच विचार के यह काम कर रहे हो कि नहीं, यही देखने के लिये मैंने तुमसे इतनी बातें कही जाओ, ऊपर जाओ, मेरी स्त्री की जबानी तुम्हे मालुम हो जायगा कि इस विवाह में हम लोग बिलकुल राजी हैं अभागी चंपा का भावी जीवन परमात्मा की दया से सुखपूर्ण हो इससे भला हम लोग इन्कार कर सकते हैं ? जाओ परमात्मा तुम दोनों को सुखी करें ।

शिवनाथजी कुछ जवाब नही देसके । उनके आंखों से आंसूओं की धारा बहने लगी । उन्होंने चुपचाप बैजनाथ जी का दोनो हाथ उठा कर अपने सिर पर रख लिया, फिर ऊपर गए । सोने के कमरे में दिया जलाके एक चटाई बिछाकर बसन्ती बैठी हुई थी शिवनाथ जी एका एकी उस कमरे में जाके उसके दोनों चरण पकड़ के अश्रुधारा से भिगोते हुए बोले "बसन्ती बेबे तुमने मुझे प्राणदान दे दिया किस मुंहसे तुमारी दया, तुमारे स्नेह का बखान करूं । इसका बदला तो सौ जन्म में भी नही दे सकूंगा ।

बसन्ती । ऐं ! ऐं ! शिवनाथ यह क्या करते हो, छोड़ो, छोड़ो, छिः छिः जिसको पैर पकड़ना है आपही आके पकड़ेगी इसे

क्यों ? छिः छिः ऐसी छोड़ो। शिवनाथजी ज़रा शर्मिन्दे से होकर बोले " बसन्ती बेबे तुमने बैजनाथ भय्या की समझ बुझा के इस काम के लिये राजी किया है इसके लिये मैं जन्म भर तुम्हारा अहसानमंद रहूंगा" ।

बसन्ती । अरे राजी न हों तो क्या करें जब वरपक्ष और कन्यापक्ष दोनों तरफ के मुखिया राजी होगए तब भला मैं क्यों कर मना कर सकती हूं ।

शिवनाथ । वरपक्ष और कन्यापक्ष के मुखिया कौन हैं ?

बसन्ती । मुखिया और कौन होगा? मैं तो देखु हुं कि दोनों आपही आप मुखिया बन बैठे हैं। वर आके कन्या देख गया, पसंद कर गया, और कन्या ने भी लुक छिप के वर देख लिया, पसंद कर लिया, सब सम्बन्ध ठीक हो गया ।

शिवनाथ । नहीं बसन्ती बेबे, हंसी मत करो सच सच संकोच छोड़ के बतलाओ कि तुम राजी हो कि नहीं ॥ चपा तो अभी कल को लड़की है, वह भला राजी नराजी क्या समझती है ? वह कुछ लड़क खिलवाड़ थोड़े हो है ?

बसन्ती । अजी नहीं जी, नही, वह निरी अन समझ लड़की नही है । अब खूब पक्की हो गई है । तुम्हे शायद मालूम नहीं, वह निराले में बैठी बैठी ब्याह की बात सोचा करती है ।

शिवनाथ । तुमरे पैर पड़ूं हुं बसन्ती बेबे, बहोत हुआ अब हंसी छोड़ो एक दफे अपने मुंह से कहके मेरी आत्मा ठंडी करो ।

बसन्ती । नहीं भाई, कहीं भूल से हाथ पैर पकड़ मत लेना, नहीं तो कहीं चंपा देख लेगी । तुम तो भले मानुष बन के चल दोगे और हम दोनों बहिनों में झगड़ा मच जायगा । नहीं भाई दूसरे की आफत कौन सिर ओढ़े ।

शिवनाथ । तुमसे सकना मुश्किल है, बसन्ती बेबे , मैंने हार मानी मैंने सोचा था कि तुमसे सलाह बात करके सब ठीक ठाक करूंगा सो देखता हुं कि आज कुछ भी हुआ हवाया नही ।

बसन्ती । ठीक ठाक और क्या करोगे । सब अब तो खाओ भाई

पुरोहित बुलाना ही बाकी है, सो बड़ी जल्दी हो तो कहो अभी बुला दूं। क्या जानु भाई आज कल के कालिज के लड़के आपही नाई पुरोहित का काम कर लेते हैं, क्या'। अरे भाई औरतो के टेहैले उहले भी हम लेगों को करने होंगे कि चंपा ही सब खुद कर लेगी। अच्छा न हो, चंपा को यहीं बुलाए देती हूं। अनी चम्पा, श्री चम्पा, ज़रा इधर तो आइयो भैन! शिवनाथ तुझे बुला रहा है, जरूरी काम है, जल्दी आ।

शिवनाथ जी हार मान के उठ खड़े हुए, बसन्ती हंसती हुई उठ खड़ी हुई। तब शिवनाथ जी बसन्ती का दोनों हाथ पकड़ के बोले "बसन्ती बेबे, तुम लड़कई से मुझ पर बड़ा स्नेह रखती हो, मेरी एक बात सुनो। इस काम में तुम राजी हो, बैजनाथ भय्या मुझ से पहले ही कह चुके हैं, एक दफे अपने मुंह से कह के आशीर्वाद करके मुझे तृप्त करो"।

बसन्ती धीरे धीरे कहने लगी "शिवनाथ। नरायण जी मेरी अभागी बहिन के सुख का उपाय किए दे रहे हैं, इसमें भला मैं असम्मत हो सकती हूं? भगवान तुम्हे सुखी करे, तुमरे सब उद्यम सुफल हों, तुमे नाम और इज्जत मिले। अभागी चंपा का नरायण जी कल्यण करें, वह चिर पतिव्रता होकर आनन्दमई गृहस्ती की रानी हो"। आंखों में आंसु भर के शिवनाथ जी बोले "और क्या कहूं, बसन्ती बेबे, भगवान तुमरि इस दया क पुरस्कार देंगे। तुमलोगों के ऐसी दया माया, अच्छे कामों में असीम साहस, अतुल्य स्नेह, इस संसार में दुर्लभ है। लोकों के कहने सुनने, निन्दा स्तुति का कुछ ख्याल मत करना। बड़े बड़े विद्वानों की राय है कि विधवाविवाह शास्त्रविरुद्ध नहीं है।

बसन्ती। शिवनाथ, मैं औरत जानी ठहरी, मैं शास्तर उसतर क्या जानूं। मेरी छोटी सी अकल में तो यही आवे है कि नन्ही सी बच्ची को जन्मभर जलाना, ऐसा हम लोगों के शास्तर में कभी नहीं लिखा होगा, और अनाथ नाथ दयालु परमेश्वर को

भी ऐसी इनकार नहीं है।

संसार में अपने को सब से भाग्यवान समझते हुए शिवनाथ जी, नीचे आंगने में आए, देखा कि चंपा भंडार घर का ताला बन्द करके हाथ में दिया लिए बाहर आ रही है। चंपा ने इधर करीब दो महीने से शिवनाथ जी को नहीं देखा था, सो इन्हें देखते ही वह सहसा चौंक पड़ी, सारा शरीर थर थर कांपने लगा।

ऐं! क्या यह लावण्यमयी पवित्र हृदया, स्वर्गीयकन्या मेरी होगी? क्या यह निर्मल काले काले स्नेहपूर्ण नेत्रों को मैं चुम्बन करूंगा? क्या यह कोमल मृणालवत बाहुलता का स्पर्श मेरे भाग्य में बदा है? क्या यह कमनीय अपूर्वसौन्दर्यविभूषित देहलता को मैं हृदय से लगाऊंगा? क्या मेरी छोटी सी कुटिया में यह सुन्दर पुष्प रात दिन खिला रहेगा? सवेरे के पौ फटने की रोशनी के साथ यह मुहब्बत का चिराग मेरी जिन्दगी को रोशन करेगा? संध्या के समय यह स्नेहप्रदीप मेरी छोटी सी अंधेरी कुटिया में उजियाला फैलावेगा? जिन्दगी की अनगिनत कोशिशों, काम काज मेहनत और तकलीफ में यह स्नेहमयी स्त्री मेरे जीवन को शान्तिपूर्ण करेगी"? इस प्रकार से एक के बाद एक चिन्ता की तरंगे शिवनाथ जी के हृदय में उथल पुथल करने लगीं, उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका, चम्पा ने ज्योंही दरवाजे की कुन्डी चढ़ा के पीछे मुड़ के देखा तो शिवनाथ जी को खड़े पाया। मारे शरम के उसका गोरा मुंह लाल हो गया, उसने सिर नीचा करके घूंघट काढ़ लिया। ऐं यह क्या? शिवनाथ जी से घूंघट क्यों? यह सोचकर और भी शरमिन्दी हुई, दोनो आंखे आप से आप बन्द हो आईं। आंखों की पपड़ी तक लज्जा से लाल हो आईं। चम्पा और खड़ी नहीं रह सकी, दौड़ के भाग गई।

चंपा का यह लज्जा से लाल हुआ भया सुन्दर मुखमंडल बहोत दिनों तक शिवनाथ जी के हृदय में अंकित रहा। जब जब कोई पीड़ा या कष्ट होता या निराशा की काली घटा उनके जीवन को अन्धेरा कर देती, तब तब बालिका की यह मूर्ती उन्हें याद

आ जाती थी।

खुशी खुशी, चंचलमन से शिवनाथ जी घर आए। क्या सच मुच ही शिवनाथ जी के भाग्य में यह स्वर्ग का सुख बदा है? या आज के रात की दीपावली की भांई यह सुख की आशा एकाएकी बुझ जावगी? बहोत ज्यादे सुख अकसर मनुष्यों के भाग्य में नहीं होता, बहोत ज्यादे सुख प्राप्त होने के समय अकसर मनुष्यों के हृदय में यह खटका आ मौजूद होता है।

घर आतेही नौकर ने शिवनाथ जी के हाथ में एक चिट्ठी दी। उनका दिल एकाएकी कांप गया, क्यों? न जानें क्यों!

ऊपर जाकर मोमबत्ती जला के शिवनाथ जी ने देखा कि उनके मा की चिट्ठी है" माता जी ने कुल पुरोहित से लिखवाकर भेजी है। पढ़ने लगे:—

"बेटा शिवनाथ, तुम भले चंगे आराम से रहो, तुमारी चेष्टा सुफल हो, तुम सुखी हो, रात दिन यही भगवान जी से मांगा करती हु"।

बेटा, । आज एक निन्दा की बात सुन के मेरे मन में बड़ी पीड़ा हुई है। बेटा शिवनाथ तुम भले मानुष लड़के हो, मैं यह निन्दा की बातोंपर यतबार नहीं करती। तुम अपनी अभागिनी माता को तकलीफ देने वाले नहीं हो"। "लोक कहे हैं कि तुमने चम्पा से ब्याह करने की इच्छा प्रगट की है। बेटा, यह अधर्म्म का काम है, यह काम करके अपने पिता के निर्म्मल कुल में कलंक मत लगाना। तुमारी मा जो कै एक दिन जीती हैं, उसे कष्ट मत देना, बेटा, तुमतो बड़ों की बात अमान्य करने वाले नहीं हो।

"बेटा शिवनाथ। मैं ने बहोत कुछ तकलीफ बरदाश्त की है तुमरे बाबू जी मुझे रुला कर चले गए, कामनी बिचारी की हालत भी तुमसे छिपी नहीं है। तुम्ही एक मात्र मेरे कलेजे के टुकड़े हो, तुमारी ही आशा से जीती हूं, अब इस उमर में मुझे मत रुलाइयो, बेटा, मैं अब ज्यादे दिन नहीं बचुंगी। "मेरे सिर के केशों की तरह तुमारी उमर हो, नारायण जी दुनिया में तुम्हे सुखी करें, धर्म्म में

तुम्हारी मति हो, यह अभागिनी और क्या असीस दे सकती है" ? शिवनाथ जी ने एक दफे, दो दफे, तीन दफे यह चिट्ठी पढ़ी। हाथ, सारा शरीर थर थर कांपने लगा, कमजोर हाथों से चिट्ठी गिर पड़ी, शिवनाथ जी मुर्छित हो कर धरती पर गिर पड़े।

चौबीसवां परिच्छेद।

माता और पुत्र।

उस दिन रात भर शिवनाथ जी के मन में जो पीड़ा होती रही, वह लिख कर बतलाना मुश्किल है। निराशा की कालीघटा उनके हृदय पर छा गई, लज्जा और घृणा से उनका दिल फोड़े सा दुखने लगा। ओफ "मैंने अपने परममित्र का सत्यनाश किया है" सैकड़ों बिच्छूवों की तरह यह चिन्ता उन्हें डंक मारने लगी। "ओह: क्या करूं। क्या जिस सुख स्वप्न को छ: महीने से हृदय में धारण किए हुआ हूं, उसे आज तिलांजुली दे दूं। माताजी की आज्ञा पालन के लिए मैं इसके लिए तैयार हूं। सारी जिन्दगी दु:खमय, उद्देश्य रहित, निराशा से पूर्ण, मरुभूमि, बियाबन की तरह उजाड़ और निरस हो जायगी॥ जीना एक बोझासा हो जायगा। हो, माता के लिए मैं यह भी कर सकूंगा। पर नहीं मेरे परममित्र बैजनाथ जी और उनकी साध्वी स्त्री बसन्ती जो मुझे लड़काई से छोटे भाई सा स्नेह करती है उन के नाम से आज जो कलंक फैला है, बिरादरी उनसे नफरत करेगी, गाली गलौच देगी, उन पर अंगुली दिखावेगी, नही यह मुझसे नही सहा जायगा। लोग कहेंगे कि इन दोनों ने एक नष्टा विधवा को शिवनाथ से ब्याह देना चाहा था, शिवनाथ ने सोच समझ के नामंजूर कर दिया, वह बैजनाथ के घर में ही है, हाय! हाय! यह कलेजे को चीर देने वाली बात क्या मैं बरदाश्त कर सकूंगा। जो बसन्ती अपनी सगी बहिन से भी ज्यादा मुझे चाहती है उससे ऐसा बर्ताव करूंगा? जो बैजनाथ जी अपनी उदारता से मुझे छोटे भाई से भी ज्यादा

चाहते हैं, लोकनिन्दा बिरादरी से छेके जाने, सारे विरोधों की कुछ भी परवाह न करके केवल मेरे और चंपा के भावी के सुख की इच्छा से मेरे इस विषम प्रस्तावसे भी राजी हुए थे, ओफ! उन्हें क्या दुनियाभर के तिरस्कार और घृणा का पात्र बनाऊंगा! जिस स्नेहपूर्ण निष्कलंक परिवार में प्रवेश करके मैंने शान्ती पाई आज उसे कुटिल नीच विषैले सर्प की तरह दंशन करके चला जाऊंगा। इस काल विष से यह परिवार सत्यानाश हो, चौपट हो, अमिट कलंक के समुद्र में डूब जाय, मैं बिना संकोच के उन्हें त्याग दूंगा। नहीं? नहीं, मामाजी! माताजी! मुझे क्षमाकरो मैं यह नहीं कर सकता! यह कह कर शिवनाथजी सहसा चिल्लाउठे।

हां! और वह धर्म्मपरायणा पवित्र हृदया अभागिनी चंपा--हाय छः महीने पहले वह निरी सीधी सादी लड़की थी, प्रेम, प्रणय किसे कहते हैं नहीं जानती थी, विवाह की बात उसने कभी स्वप्न में भी नहीं सोची थी। इसी छः महीने के अन्दर मैंने उसे प्रणय, प्रेम सिखा दिया सरला बालिका के हृदय में नए भाव, नई चिन्ता, नई आशा जगादी। अहा! सबेरे के पौफटने के साथही उषा का उजियाला जिस तरह चुप चाप सोए हुए जगत में धीरे धीरे फैलता जाता है, यह नई आशा भी उसी तरह इस अनाथा विधवा के हृदय में धीरे धीरे समागई है, आज वह लज्जा शील नम्रमुखी विधवा पियासे चातक की तरह प्रेमवारी की तरफ निगाह लगाए हुए है, ओफ! इस समय क्या मैं उसे धोखादूं। सदा के लिये हत भागिनी कर दूं। कलंक का दाग लगा कर उसे इस निर्दई जगत में अकेली छोड़ दूं। शायद वह इस असह्य अपमान और कलंक से महादुःखी होकर अकाल मृत्यु का ग्रास हो जायगी, या सदा सर्वदा के लिये यह निर्दई सर्दी का शोक हृदय में धारण कर जीवनमृत हो रहेगी। शिवनाथ जी और ज्यादे नहीं सोच सके और बरदाश्त न कर सके। धरती पर लोट लोट कर साधारण बालिका की तरह रोने लगे।

कमरा बड़ा गरम मालूम होने लगा। शिवनाथ जी उठ कर खिड़की के पास आए, पिछली रात की ठंडी हवा उनके सिर और

केशों पर लगी, जलता हुआ मुख कुछ ठंडा हुआ। सारा संसार घोर निद्रा में चुपचाप सोया हुआ है। अमावस की रात अपने अंधकार से सारी पृथ्वी और आकाश को ढाके हुए है, काली आ-काश के अनगनित उज्वल तारे इस पापपूर्ण संसार की तरफ चुपचाप देख रहे हैं।

माताजी ने लिखा है कि दो एक दिन में वह यहां आवेंगी। अच्छा, उन्हें यह सब बातें समझा कर कहूंगा तो क्या वह समझ जायेंगी ? इस काम में राजी होंगी। नहीं, वृथा आशा! उन्हें खूब जानता हूं बुढ़ौती में, वैधव्य में वह इस काम में कभी भी राजी नहीं होंगी, या मेरी जिद्द से उन्होंने जबान से कह भी दिया तो मनोमन बड़ी दुखी होंगी, अपने एकमात्र पुत्र के इस आचरण से अकाल मृत्यु की ग्रास हो जायंगी" शोक: इसके बाद हाथ जोड़ कर आ-काश, नीले आकाश, की तरफ देख कर आखें से आंसू बहाते हुए, शिवनाथ जी बोले "पूज्य जननी माता! ऐसा आशीर्वाद दो जिससे मैं पुत्र का कर्त्तव्य न भूलूं तुम्हें दुखी न करूं तुमारी अन्तिम दशा को दुख पूर्ण न करूं इसी चिन्तारूपी बिच्छू के दंशन से शिवनाथ जी सारी रात छट पटाते रहे। जब उषा काल की ठंडी हवा चलने लगी तो उनके शरीर में कुछ ठंडक पड़ी उन्होंने अपना कर्त्तव्य स्थिर कर लिया। शोक सन्तप्त पर शान्त हृदय से प्रातकाल का आसरा देखने लगे।

सवेरे की ठंडी हवा से उनकी आंखें लग गई। कितनी देर तक सोए यह उन्हे मालूम नहीं, पर उन्हें मालूम पड़ा कि कोई अपना कोमल हात मेरे शरीर पर फेर रहा है। आंख खोल के देखा तो अपनी स्नेहमई माता को सिरहाने बैठी हुई, स्नेह से अपने शरीर पर हाथ फेरते पाया। शिवनाथ जी उठ बैठे। उठते ही माता बोली, "बेटा शिवनाथ! तूँ इतना दुबला हो गया है, आहा तेरा मुंह बिलकुल सूख गया है, बेटा आहा, बिना बिछौने के खाली जमीन पर क्यों पड़ा हुआ है। चल उठ बिछौने पर जाके सो।

शिवनाथ। नही मा, मैं खूब सो चुका हूं अब नींद नही आवेगी।

तुम कब आईं? मा! आने का समय मुझे लिखना था। स्टेशन से आने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई।

माता। नहीं बेटा, तकलीफ कुछ नहीं हुई। मेरे साथ पुरोहित जी आए हैं। उन्होंने गाड़ी ठीक कर दिया था।

शिवनाथ। मा, मैंने बिना समझे बूझे जो अपराध किया है, तुमारे मन को कष्ट दिया है, उसे क्षमा करो। तुमारी चिट्ठी पाके मैंने अपनी मनसा छोड़ दी है। माताजी, मैं तुमारी बात अमान्य कभी नहीं करूंगा, यदि तुम्हारे मनमें मैंने कुछ पीड़ा दी हो तो अपने बच्चे का, सन्तान का यह अपराध क्षमा करो। मा, तुम तो मेरे सब अपराध बराबर क्षमा करती रही हो।

वृद्धा की आंखों से आंसू की धारा बहने लगी, स्नेह से गद्गद् होकर बोली "बेटा, शिवनाथ, तेरा मुंह मीठा हो तूने मेरी बात मान कर मेरी आत्मा ठंडी करदी, बेटा, मैं तो जानती थी की तुम मेरी बात जरूर मानोगे, तुम तो मेरे अवाध्य पुत्र नहीं हो, बेटा! आहाहा भगवान तुम्हारा कल्याण करें।

माता के दोनों हाथ अपने सिर पर रखके शिवनाथजी दो धारा आंसु बहाने लगे। मां ने अपनी आंचर से अपने इकलौते प्यारे पुत्र का आंसू पोंछ दिया, मा के स्नेह से पुत्र का हृदय शान्त हुआ।

पचीसवां परिच्छेद।

बड़े घराने का नतीजा।

यद्यपि चम्पा और शिवनाथ के ब्याह की बात छूट गई है पर औरतो की मजलिसों में बहोत दिनों तक इस बात की चर्चा रही। नाना प्रकार के मन गढ़त कलंक का प्रचार एक दम से रुका नहीं, भला ऐसी मजेदार बात क्यों रोज रोज मिलती है। कामनी की चचिया सास सबों को तो एक आध बात मिलने ही से हुआ, फिर जब कभी घर के काम धन्धे से फुरसत मिलती या कामनी को बकने झकने की मनसा होती तो फौरन यही चर्चा ले बैठती थीं।

छोटी। हां, हां, ब्याह छूट गया है, कौन कहे है छूट गया है, ऊपरा ऊपरी छूटा है, भीतरी भीतर सब कारर्वाई जारी है। समधिन कलकत्ते आई है कि नहीं बस इसीसे छोकरवा विचारा क्या करे, कुछ दिन के लिये चुप कर गया है। बस उनके आंख बन्द करने की देर है फिर देखना चटपट उसी अभागी छोकरिया से ब्याह कर लेगा।

झुम्मली। हांजी, हां, समधिन जी बड़ी भली हैं। जो कुछ किया है उसी मुंह झौंसीने तो किया है। अब हम लोगों के डर के मारे बात दबाई जा रही है। हमरे घर लड़की दीस है, उस मुंह झौंसी को क्या अपने प्राण का डर नही है। यह ब्याह हो जाता तो क्या मैं कामनी को जीता छोड़ती। जैसी बेहया मा वैसी ही बेहया लड़की भी पैदा हुई है, ऐसे छोटे लोगों की लड़की ब्याहना होए हैं। हाय। हाय हम लोगों के ऐसे कुल में कालिख लगाइस।

छोटी। और वह औरतिया भी कैसी बेहया है भई—ऐं उस बैजनाथ की जोरू को भी जरा हया शरम नहीं है। विधवा बहिन का व्याह करने को राजी होगई। राम। राम। छिः छिः। चौदह पुरुषों को एक दम से कलंक में डुबो दीस। ऐसी लड़की का जीनेसे मर जाना ही अच्छा है। पैदा होते ही माने नोन चटा के मार क्यों नहीं डाला।

मझली। और वह कलकी छोकरी भी देखो कैसी बेहया है। ऐसी विधवा को क्या घरमें रखना होए है? और कोई होता तो काशी या वृन्दावन अथवा सिर मुंड़ा के वैरागियों के अखाड़े में भेज देता। छिः! छिः! भले मानुषों के घर में ऐसी लज्जा की बात?

छोटी। तो निकालें क्यों नहीं हैं उसे निकाल बाहर करें, इतना नखरा काहे का है उसे निकाल के बजार में बैठा क्यों नही देते?

मझली। अरे अभी बखरा क्या हुआ है! अभी तो और भी होगा

अरे, बहिन तुझे तो सब हालत मालूम नहीं है, मैं सब सुन चुकी हूं। अब देखो न क्या होता है ऐसी देर नहीं है। तब देखेंगे न किस तरह छिपाती है। जाने में अबर मिजाज़ तो रहि। ऐसे समधी रहने से न रहना ही भला है, ऐसे कुटुंबों के मुंह में लूका।

छोटी। और देखो जरा, समधिन जी ने यहां आके कामनी को बुलवाया। जरा शरम हया नहीं हैं, जी।

मझली। अरे हया शरम ही होता तो क्या मुंहझौंसी लड़के का ऐसा नाता ठीक करती? क्यों नहो। भला इस अभागे कुल में और क्या होगा। उंह? बहु को लेने आवेगी। जलती हुई लकड़ी पीट पीट के पीठ की हड्डी तोड़ दूंगी न। कामनी जरा जाने का नाम ले तो सही। उसके पीठ की खाल न उतार ली तो मैं ब्राह्मण की बेटी नहीं॥ छि:! छि:! ऐसे घर में कोई बहु को भेजता होगा, उन्हें छूने से हम लोगों के सात पुरखों को जान मारी जाय है, क्या ही झक मारा गया है, कि ऐसे डोम चमारों के घर जाके कैलाशनाथ ब्याह कर आया। छि:! छि: छि:! इसी प्रकार से अपने कुल की, जाति की, पुरखाउ की खुशनामी, शिवनाथ बसन्ती और चम्पा का बखान, कामनी को हर रोज कितनी दफे सुननी पड़ती थी, इसका कुछ अंत नहीं था, पर दैववश इन अमृत भाषणियों के मीठे वचन कुछ दिनों के लिये मुलतवी हो गए, क्योंकि कामनी के स्वामी की बिमारी एकाएकी बहोत बढ़ गई, अब तब की हालत हो गइ; सब लोग उनी की चिन्ता में व्याकुल हो गए।

कामनी की बचिया खाच सब बहोल डर गईं, इतने भारी घराने को संभालने वाला और कोई दूसरा मर्द उस घर में नहीं था। कामनी बिचारी मारे डर और चिन्ता के सूख के कांटा हो गई, न खाने का होश, न सोने की फिकर, बस रात दिन बावली सी अपने स्वामी के तबियत का हाल जानने के लिये छटपटाया करती थी। बहनोइ की कड़ी बिमारी का हाल सुन कर शिवनाथ जी आए,

आकर कइ दिन तक उस घर में रहे। उन्हें देख के लोग कानाफूसी करने लगे पर उन्होंने किसी की कुछ परवाह नहीं की। बैजनाथजी भी रोज सबेरे से आकर दो पहर तक रहते, उन्हें देख कर शिवनाथ जी कुछ लज्जित होने लगे पर उस उदार हृदय सज्जन ने उन्हें एक कोने में बुला कर कहा "शिवनाथ अब तुम हमारे घर क्यों नहीं आते ? तुमने तो कुछ बुरा काम नहीं किया है। फिर शरमाते क्यों हो? । इस ब्याह में तुमारी मा राजी नहीं है, तुमने अपनी माता के कहने मुताबिक काम किया है, तो बेजा क्या किया। तुम यदि अपनी माता की असम्मति से विवाह करना चाहते भी तो हम लोग राजी नहीं होते। शिवनाथ, तुमारा कुछ अपराध नहीं हैं तुमने कुछ बुरा काम नहीं किया फिर डर किस बात का है। लोग जो चाहें कहें, हम परवाह नहीं करते, तुम भी परवाह मत करो।

बैजनाथ की बातें सुनके शिवनाथ जी विस्मित हो रहे। जिस बाल्य सखा को उन्होंने दुनिया भर के घृणा का, निन्दा का पात्र बनाया, जिसकी पवित्र गृहस्ती में उनोने कलंक लगाया, वही ऋषी-तुल्य मनुष्य आज आपही आके उनका हाथ पकड़ के उनके सारे अपराध क्षमा कर रहा है। शिवनाथ कुछ बोल न सके, कृतज्ञता से उनकी आंखो में आंसू भर आए, मनोमन बोले "अब तक तो आपको बड़ा भाई समझ कर स्नेह करता था, आज से देवता मानकर पूजा करूंगा।"

बैजनाथ और शिवनाथ ने अपने भर सक रोगी की बहोत कुछ सेवा टहल की, कालीजी का परशाद बन्द करवा दिया, रुपए की कुछ भी परवाह न करके कलकत्ते के सर्वोत्तम बैद्य डाक्टरों को दिखाया, उनके कहने मुताबिक परहेज वगैरः में कुछ फर्क न आवे देखने के लिये दिन रात रोगी की शय्या के पास बैठे रहे, पर इतने पर भी कुछ नही हो सका। एक हफ्ते तक उत्कट पीड़ा सह करके, कामनी के स्वामी का पर लोक वास हो गया।

एक तो पहले ही से कामनी का शरीर फिकर के मारे आधा हो गया था, इस संवाद के सुनते ही वह चिल्ला कर रोती हुई मूर्छी

खाकेर धरती पर गिर पड़ी । शिवनाथ जी बहोत कुछ पानी छिड़क के पंखा करके अपनी बहिन को होश में लाए । होश में आते ही अन्तिम बेर स्वामी को एक दफ: देखने के लिये कामनी चिल्लाने लगी । शिवनाथ ने रोकने की बहोत कोशिश की पर वह न मानी । केश बिखराए बावली ऐसी दौड़ती हुइ कामनी अपने स्वामी के कमरे में जा पहोची, मृत स्वामी के दोनों चरणों को सिर पर रख के हा हा कार ध्वनि से विलाप करके सबका हृदय बिलखाने लगी । आज तक कामनी को स्वामी के प्रेम का ज्ञान नहीं हुआ था, आज उसके आंख खुले, पुन्य हृदया विधवा बिचारी स्वामी के चरणों पर बार बार लोट कर बिलख बिलख कर रोने लगी, एक एक बार मृत स्वामी के मुख की तरफ देखती और बिलख उठती, बहोत कुछ विलाप और रोने धोने से भी दिलका बुखार नहीं निकलता था रोती रोती फिर मूर्छित हो गई । कामनी के अचेतन शरीर, दुबले पतले शरीर को दोनों हाथ से उठा कर शिवनाथ जी दूसरे कमरे में ले गए । कई रोज के बाद कामनी के ससुराल वाले सब लोग बांकीपुर को रवाने हो गए । शोक विह्वला विधवा तुला पट्टी में भाई के घर आके माता के स्नेह पूर्ण गोद मे सिर रख कर कुछ शान्त हुई । कामनी की उम्र अभी पचीस की भी नहीं हुई थी, पर उसके सिर के सामने के सब केश उड़ गयथे, आंखें दोनों गड्हे में धस गई थी, शरीर सूखके कांटा हो गया था, दुःख और शोक से नाना प्रकार की बीमारियों का घर हो रहा था । देखने से चौतिस बरस की सदा की रोगिनी सी मालूम होती थी । सदा की दुखिया को माता के गोद में सिर रख के कुछ शान्ति मिली ।

बड़ा घराना अच्छी जाति देख कर कामनी का विवाह किया गया था, पर अच्छा घराना शुद्ध वंश होने ही से सब समय सुख प्राप्त नहीं होता ।

—::o:o::—

छब्बीसवां परिच्छेद ।

धनी घराने का नतीजा ।

एक अभागनी की कथा पहले परिच्छेद में लिखी गई है, अब दूसरी हत भागिनी का वृत्तान्त इस अध्याय में लिखना पड़ा । इच्छा तो यही थी कि अब रोग शोक रोने धोने का दास्तान नहीं लिखेंगे पर क्या करें जब दुनियादारी का हाल लिखने बैठे हैं तो दुःख शोक की कहानी भी लिखनी ही पड़ेगी क्योंकि बिना इसके एक तरफ का चित्र सूना रह जायगा । खैर तौ भी थोड़े ही में सब हाल बयान किए देते हैं । कामनी के पति की बीमारी के समय यावत काल बैजनाथ हरदम वहीं रहते थे, इसलिए बसन्ती को घर से बाहर निकलने का अवकाश नहीं था, और इनके अड़ोसी पड़ोसियों ने इनके नाम से जैसी निन्दा, कलंक की बात फैला रक्खी थी, उससे कहीं बाहर अन्दर जाने को बसन्ती का जी भी नहीं चाहता था । पर हां, तारा का समाचार जानने के लिये वह बड़ी बिकल रहती थी तीसरे चौथे, आदमी भेज कर उसकी तबियत का हाल मंगवाने लगी । आदमी की जबानी हाल सुन के उसे बड़ा भय हुआ, अस्तु कई दिन बाद पालकी पर सवार होके खुद तारा के घर गई । वह मनोमन सोंचती जा रही थी कि वहां पहुंचते ही ताई जी इतने दिन तक न आने के लिए, जरूर बकेंगी, पर वहां जाकर ताईजी की जो हालत देखी उससे आंखों में पानी भर आया । ताईजी का सदा का हंस मुख चेहरा सूख गया है, बड़ी बड़ी काली आंखें गड्हे में धस गई हैं, काले भ्रमर ऐसे केश जगह जगह सफेद होगए हैं, मोटा ताजा गोल गाल शरीर दुबला गया है । लड़की की सेवा टहल के लिए रात दिन जागने से, उसकी दिली तकलीफ के लिए रात दिन रो रो के और सोंच सोंच के तारा की माता अकाल ही में बुढ़ौती को प्राप्त हो गई थी ।

बसन्ती के आते ही ताईजी रोकर बोली "आओ बेटी, तुम लोग एक एक करके आती जाओ, बेटी तारा को जरा देखो भालो जो करना होय करो मुझसे तो अब होता नहीं । मन में नाना प्रकार

की चिन्ता और सोच करती हुई बसन्ती ताईजी के संग तारा के कमरे में गई। तारा को देखते ही उसका जी कांप गया। तारा के मलीन सूखे हुए पीले चेहरे पर मौत की छाया पड़ चुकी थी।

बसन्ती बेबे को देखके रोगी का चेहरा कुछ जरा हरा हुआ, बसन्ती के तरफ तारा ने हाथ बढ़ाया बसन्ती उसी हाथ को पकड़ तारा के पास बैठ के चुपचाप आंखों से आंसू बहाने लगी, मनमें लड़कई की बातें याद आने लगीं। बसन्ती जब बहुत छोटी थी, ताईजी के घर खेलने जाती, तारा के संग न जाने कितने तरह का खेल खेलती, अपना लड्डू तोड़ के तारा आधा बसन्ती को देती, अपने खिलौने में से एक उसे देती। इसके बाद जब बसन्ती ताईजी के घर उनके आश्रय में रही तब भी दोनो जनी एक संग खेलतीं, गरीब की लड़की का तारा अनादर नहीं करती थी।

इसके बाद दोनों का विवाह हुआ, दोनों एक से दूर अलग अलग बिछुड़ गईं, पर बचपन का प्यार नहीं भूलीं, जब कभी ताइजी के यहां दोनों की मुलाकात होती तो कैसा आनन्द होता, अभी छः महीना भी नहीं बीता है, ताईजी के यहां दोनों का मिलाप हुआ था, हाय आज वह आनन्द कहां है? गोल गोल गोरे गोरे बाहों में वह हीरे के कड़े जड़ाउ अनन्त, जोशन कहां? हंसमुख सरला ताईजी का वह दर्प पूर्ण चेहरा और मीठी मीठी बातें कहां? धन दौलत का गर्व, दुनियादारी का घमंड यह सब कहां है? हाय! यह सारा सुख अब गया बीता होगया, तारा के भाग्य में अब वह सुख फिर नहीं आनेका। वह सारी सुखलीला स्वप्न होगई साथ ही साथ तारा की जीवन लीला, खेल कूद, सुख भोग, धन यौवन, खूब सूरती, नाजो अदा सब समय से पहले ही निर्वाण होने को है।

बड़ी देर के बाद, बड़ी धीमी आवाज से तारा बोली बसन्ती बे बे बहुत दिन बाद तुम्हें देखा, मिलके जी ठंडा हुआ।

बसन्ती। कामनी के पति बहुत ज्यादे बीमार होगये थे, उसीमें हम लोग बे तरह फंसे हुए थे, इसीलिए तारा रानी तुम्हे देखने नहीं आसके।

तारा । बिमारी अच्छी हुई ।

बसन्ती धीरे से बोली "कामनी विधवा है"

तारा चुप होगई सूखे गालों पर एक बूंद आंसू गिर पड़ा । थोड़ी देर बाद फिर बोली " कामनी है कहां ।

बसन्ती । शिवनाथ के यहां है । उसकी मा भी वही हैं । कलकत्ते आगई है ।

तारा । कामनी से कहना कि जी ठहरने पर मुझ से मिल जाय । मरने के पहले उसे एक दफे देखने को बड़ा जी करे है ।

बसन्ती । छि: तारा रानी ऐसी बात कोई मुंह में लाता होगा ! तुम्हे कड़ी बीमारी हुई है, तो क्या हुआ डाक्टर इलाज कर रहा है, दस पांच दिन में आगे पीछे आराम होजाओगी । छि: ! यह सब बातें मनमें मत लाया करो ।

तारा । आराम हो के क्या होगा ?

बसन्ती । आराम होके फिर घर गृहस्ती करना । आदमी के क्या सब दिन समान रहते हैं । आज जो तकलीफ है, कल नहीं रहेगी । सुख दु:ख तो सबी को लगा हुआ है । अच्छी होके, आनन्द से पति पुत्र के साथ गृहस्ती करना ।

ताराने कुछ जवाब नहीं दिया, होठ के कोने में जरासी हंसी दिखाई दी, थोड़ी देर तक कान लगाके मानो कुछ अवाज सुनने लगी फिर बोली इस खिड़की से झांक के देखो ।

बसन्ती और उसकी ताईजी दोनों उठके खिड़की से देखने लगीं । देखा कि एक जोड़ी आके फाटक पर खड़ी हुई, विजय और एक दूसरे बाबू उससे उतरे । फाटक पर एक बुढ़िया खड़ी हुई थी, दोनों जने न जाने क्या तो उससे बात करने लगे । बात चीत करते हुए तीनो ऊपर चढ़ गए ।

बसन्ती ने पूछा " ताईजी विजय नरायण के संग यह दूसरा बाबू कौन है ।

ताइजी । अरे, वही तो मेरे जमाई का सनीचर है । उसका नाम छब्बू बाबू नामों क्या है, कलकत्ते के सब बड़े आदमियों को

यहां जा जा के यह मुंह भौंसा योंहीं हंस हंस के बात बनावे है, और जितने तरह का बुरा चाल चलन है सिखा सिखा के आंख में धूल झोंक के रुपया ठगे है। भगवान जाने जमाई का कितना रुपया ठगिस है। ऐसे मुंहभौंसों को क्या जमराज याद नहीं करता।

बसन्ती। और वह बुढ़िया कौन है जो हंस हंस के बतियाती हुई विजय के संग उपर गई।

ताई। न जाने कौन सी झाड़ु, पिट्टी है देखूं तो हूं कि आज कई दिन से जोंक की तरह मेरे दमाद के पीछे चिमड़ी हुई है न जाने क्या क्या जाल फैला रही है।

बड़े धीरे से तारा बोली "मैं जनती हुं मा, थोड़ी देर में तुम लोग भी जान जाओगी, इतना कह के तारा पासा मोड़ के चुप हो गई। तारा को आंख लग गई है, यही अनुमान करके बसन्ती उस दिन विदा होके घर आई।

इस दिन से हर रोज बसन्ती तारा को देखने आती, पर उसका स्नेह, माता की सेवा टहल सब वृथा हुई। रोगी के मन में सुख नहीं, आशा नहीं, जीने की इच्छा नहीं, ऐसी हालत में क्या हो सकता था। खांसी और स्वांस और भी बढ़ गया, साथ ही आंव लहू का दस्त भी जारी हो गया, कमजोरी से बोला भी नहीं जाता था। डाकटरों ने भी जवाब दे दिया आज कल, अब तब, यही हालत होगई। अन्त को एक रोज कामनी को साथ लेकर बसन्ती तारा के यहां आई। अभागिनी को विधवा वेष में देख के रोगी की आंखों से अश्रु धारा बहने लगी कमजोरी के कारण मुंह से कुछ बोल न सकी। कामनी भी तारा का एक हाथ पकड़ के रोने लगी।

बीमारी बहोत बढ़ गई। शाम को नाड़ी बहोत धीमी चलने लगी। चलती भी है कि नहीं जलदी पता नही लगता था, डाकटर देखने आया, देखके उसका मुंह गम्भीर होगया। एक नई दवा देके कह गया कि सारी रात दो दो घंटे पर खिलाना सेबेरे फिर आउंगा।

तारा की मा आज. कई दिन से रात जाग रही थी। बसन्ती बोली "ताईजी आज तुम सोओ मैं रात को तारा के पास बैठी रहूंगी।

रात नौ बजने के बाद बसन्ती ने एक खुराक दवा खिलाई बड़े धीमे स्वर से तारा बोली "अबदवा क्यों! मैं चली। चलते चलाते तुम लोगों का मुंह देख पाया, यही बड़ा सुख है। बसन्ती बेबे., कामनी बेबे, मुझे भूलना मति"। बसन्ती और कामनी रोगी के दोनो हाथ अपने कलजे पर रख के, चुपचाप आंसू बहाने लगीं।

आधे घंटे बाद बड़ीही धीमी आवाज से तारा ने बुलाया "मा, मा,,॥ तारा की मा पासही में सो गई थी, नींद नही आई थी। आवाज सुनते ही, बेटी के पास आई। तारा ने दोनें हाथ उठाकर माका गला थाम लीया, कुछ बोल नही सकी। उर्धश्वास चलने लगा, दम रुकरुक कर आने जाने लगा, हाथ पैर ठंडे होगए, नौ सब नीले होगए, आखें पथरा गई, माता के गोद में स्नेहमई कन्या मृत्यु को, चिर शान्ति को प्राप्त हुई। रात दोपहर के बाद तारा की माता, बसन्ती और कामनी पालकी पर सवार होके इस घर से बाहर निकलीं। नीचे फाटक पर आके देखा कि "छन्नू बाबू और वही बुढ़िया विजय से मिलके नीचे उतर रहे हैं।। बसन्ती ने पूछा "ताइजी तुमे कुछ पता लगा कि यह बुढ़िया कौन है"।

पहले तो उनोने कुछ जवाब नहीं दिया, फिर बसन्ती के दो तीन दफे पूछने पर बोली, इस बुढ़िया की एक भर्तजी है, न भाजीं है कौन तो है, वह थेटर में सीता, सावित्री, राधा, न जाने क्या क्या तो स्वांग सजती है, उसके मुंह में लूका। छन्नू बाबू उसको एक रोज विजय के पास लाए थे और उसके नाम से दस पन्द्रह हजार रुपया भी ठग के ले गया है, भगवान जाने और क्या क्या पट्टी पढ़ा गया है। तारा बेटी के रहते उसे घर लाके नहीं रखिस था, अब शायद लाके रखेगा, उसके लिए हजारों रुपया लगा के घर सजाया गया है।

* * * * * * * *

धनवान, गुणी, स्वरूपवान विजयनारायण जी कलकत्ते के रईसों में एक आदरणिय रत्न हैं। सभा समाज सोसाइटी सब जगह उनका समान आदर है, सब लोग उनकी तारीफ़ करते उनका यश गाते हैं। उनके मंत्रीगण, पार्षदगण उनकी उदारता की तारीफ करते हैं, एड्केटेड क्लास (शिक्षित सम्प्रदाय) उनकी रुचि पर लट्टू हो रहे हैं, ब्राह्मण पुरोहित, पञ्च चौधरी उनकी हिन्दूयानी, धर्म्मिष्टता की प्रशंसा करते नहीं अघाते, लड़की वाले (तारा के मरने के बाद) उने दमाद बनाने के लिए दम पर दम पैगाम भेज रहे हैं। और अफसर लोग, धनी, उदार जमिदार विजय नारायण जी को राजा की उपाधि से विभूषित करने की सोंच रहे हैं।

ऐसा सुनने में आता है कि चतुर, बुद्धिमान, विद्वान छन्नू बाबू आज कल में आनरेरी मेजिष्ट्रेट होने वाले हैं। वह महा प्रभु, अफसरों से अकसर मिलते जुलते रहते हैं। अबकी दफे लेभी दरबार में भी गए थे। उनके शिस्टाचार सभ्य भव्य आचरण और बातो से सब लोग बड़े सन्तुष्ट हुवे। और कुछ चाहे न हो, छन्नू बाबू के पास गाड़ी घोड़ा, मांजी घसो घसाई बुद्धी और मन हर लेने वाली मिठी बातों का भंडार जरूर हैं, यह अफसरों कर्तारों को खुश रखते, बड़े आदमियों का मन हाथ में लिए रहते और धीरे धीरे अपनी तरक्की (दांव मारते) करते जाते थे। यह भी सभ्य समाज के शिरताजों में गिने जाते थे।

सत्ताइसवां परिच्छेद।

परिक्षा।

शिवनाथजी की परिक्षा के दिन बहोत पास आगए। वह रात दिन पोथी लिए पढ़ा करते थे। घरके भीतर जाने की भी फुरसत नही थी। रात दिन पढ़ पढ़ के शिवनाथ जी बहोत दुबले होगए, यद्यपि उनकी मा और बहिन उनकी बहोत कुछ सेवा टहल करती, उनके खाने पीने का विशेष ध्यान रखती, जिसमें उनका शरीर

कुछ फिरे। पर शिवनाथ का मुंह कुछ भी फिरा नहीं, बड़ी मेहनत करने लगे, रात रात भर जागरन करके सोने के कमरे में पोथी लिए अकेले बैठे रहते, दिन पर दिन और भी कमजोर और पीले पड़ने लगे।

शिवनाथ जी की माता उनका यह हाल देख के बोली "बेटा इतना पढ़ पढ़ के क्या बिमार होगे? रहने दो, परिक्षा देने की कोई जरूरत नहीं है, चलो हम लोग कुन्दनपुर चलें वहीं अपने पिता की जगह जमीन जो है वही देखना भालना आराम से रहना। कलकत्ते की अबोहवा तुमे सहती नहीं।

शिवनाथ बोले, नहीं मा इस उमर में पढ़ाई लिखाई छोड़ देना अच्छा नहीं। अब परिक्षा को भी ज्यादे दिन नहीं है। एक बार कोशिश कर के देख तो लें। कामनी ने पहले ही से शिवनाथ के ब्याह का बांकीपुर में एक जगह ठीक किया था। उसने समझा कि घर में बहू आने से शिवनाथ का मन बहल जायगा, शरीर, चेहरा मोहरा फिर जायगा। अस्तु एक दिन कामनी ने ब्याह की बात उन के सामने छेड़ी। शिवनाथ केवल यही बोले "बेबे! पढ़ने के बखत तंग क्यों करती हो?

बसन्ती की माई जी इन दिनों बसन्ती ही के यहां रहतीं, अभी तक कुन्दनपुर गई नहीं थीं। वह अकसर शिवनाथ की मा से मिलने आतीं और दिन भर बैठ के बात चीत किया करती थीं और मन में दुःख कर कर के रोती थी। तारा की मा कहती ',बेबे उस बखत यदि लोगों की बातों पर न चल के हम लोग जरा सोच समझ के काम करतीं तो क्या यह दिन देखने पड़ते, बाह्मन पुरोहितों की बात पर बड़ा घाराना, अच्छा कुल देख के लड़की ब्याही, मैंने भी अड़ोसी पड़ोसी की बात सुन के बड़े पैसे वाले के यहां बेटी का ब्याह किया, उसका आज यह फल मिला। भगवान को जो इच्छा, इस में अपना क्या बस है, मन का सोचा तो होता नहीं। अच्छा बेबे! जो होना था, हुआ, पर तुम शिवनाथ का खूब ख्याल रखना। आहा। बिचारा पढ़ पढ़ के दुबला गया है। शिव-

नाथ को पढ़ा लिखा के ब्याह शादी कर के बहू घर लाओ, बहू का मुंह देख के दुःख ऋ सब भूल जायगा ॥

शिवनाथ की मा बोली " मेरा भी यही इरादा है, बच्चा ऐसा दुबला हो गया है देख देख के फिकर के मारे मेरा जी उड़ा जाय है। मैं भी समझूं हूं कि ब्याह होने से बच्चे का शरीर कुछ फिर जायगा। पर वह तो ब्याह करना चाहता ही नहीं। और तिस पर लोगों ने जो एक कलंक फैला रखा है, सोचते भी दुख होए है"।

तारा की मा। अरे राम! राम! वह बात अब जबान से मत निकालो, मैं उन दिनों लड़की की मांदगी में फंसी हुई थी कुछ ऐसा देख सुन नहीं सकी, नहीं तो क्या यह सब होने पाता? बसन्ती बेटी भी तो अभी लड़की ही ठहरी बैजनाथ और शिवनाथ भी तो अभी कल के बच्चे हैं, अभी उन दिनों इन सबों को अपने हाथ से पाला पोसा है, उन्हें अभी बुद्धी ही कितनी है। समझ क्या है? सो तो नहीं। अगर कुछ समझ ही होती तो ऐसा काम करते? खैर जो होना था हुआ, बसन्ती अब उस बात का जिकर तक नहीं करती, तो क्या हुआ, इस से तुमरे लड़के का ब्याह अटका थोड़े ही रहेगा। जितनी निन्दा कलंक है सब औरतों ही के लिए है। जो कुछ दुख शोक निन्दा कलंक सब बिचारी बसन्ती और चंपा ही को भोगना पड़ेगा। हाय! हाय! अभी वह कलकी दूध पीती बच्ची है, कुछ नहीं जानती, बिल्ली के बच्चे से खेलती, लच्छी से जंगलों में अमरूद तोड़ तोड़ के खाती दौड़ती फिरती थी, उसे ऐसे कलंक में डुबाना? आहा, बिचारी का शरीर सूख के काँटा ऐसा हो गया है, मुंह सफेद हो गया है, आंखें गड्ढे में धंस गई हैं। कल की बच्ची भला इतना भारी कलंक सह सकती है। क्या करे बिचारी, नसीब में निन्दा लिखा है, कौन दूर करे, बतलाओ?

शिवनाथ की माता। आहा बिचारी चंपा बेटी की बात याद आने से छाती फट जाती है। कल की बच्ची विधवा हो गई, आहा! उस बिचारी के भाग्य में जो कष्ट है हमीं जाने हैं, वह दूध पीती बच्ची क्या जानेगी? तिस पर से यह निन्दा! ऐं जी, जो लोग निन्दा

करें हैं उने जरा तरस भी नहीं आवे है, जरा सोंचे समझे भी नहीं हैं । चंपा ने क्या किया था ? उसका इसमें क्या अपराध है बत-लाओ ! और दोष भी किसको दूं ? बसन्ती बिचारी ने भी तो कुछ बुरा समझ के यह काम नहीं किया था; शिवनाथ ने चंपा से ब्याह करना चाहा, कलकत्ते में कई एक ऐसा ब्याह हुआ भी है, चलो यह ब्याह भी हो जाय । यही तो कि लोग इस बात कहेंगे, कहेंगे तो कहें, शिवनाथ और चंपा तो सुखी होंगे । यंही सोंच के बसन्ती ने यह काम करना चाहा था, कुछ बुरा समझ के नहीं किया था । बसन्ती बिचारी को मैं बचपन से जानूं हुं, उसके ऐसी लड़की हम लोगों के गांव भर में नहीं है । अच्छा, बसन्ती अब हम लोगों के यहां आती क्यों नहीं ? उस से आनेके लिये कह देना, उस देख के जी ठंठा होए हैं ।

तारा की मा । अजी मैं, तो सदा ही कहुं हुं, पर रात दिन गृहस्ती के धन्धे में फंसी रहती है, इस लिए आ नहीं सकती । चंपा बिचारी तो अब कुछ काम काज कर सकती नही, जैसी दुबली हो गइ है. मैं उसे ज्यादे मेहनत नहीं करने देती । में भी दुःख शोक के मारे कुछ कर धर नहीं सकती । तरकारी समारते तारा याद आवे है, भात उबालते तारा याद आवे है, आंगन में खड़े होते तारा याद आवे है. आहा, बेटी, इसी उमर में मा को छोड़ के कहां चली गई, बेटी (रोदन) । दोनों थोड़ी देर तक रोईं । उसी समय कामनी भीतर आई । तारा की मा ने पूछा "ऐरे कामनी ! तेरा भाई ऐसा क्यों हो गया है, ? जरा देखियो सुनियो बेटी, जरा खाने पीने का ख्याल रखियो, पढ़ पढ़ के क्या बीमार होगा ?

कामनी । मैं तो सेवा टहल में कुछ कसर नहीं रखनी, पर न जाने क्यों सदा पोथी लिए बैठा रहता है, खाने पीने के तरफ कुछ ध्यान नहीं है, इसी से दुबला हुआ जाय है ॥

तारा की मा । ब्याह का जिकर छेड़े था ?

कामनी । एक बार, कइ बार कह चुकी हुं ।

तारा की मा । क्या कहता है ?

कामनी। सुनी अन सुनी कर जाए है, कहेहै कि ब्याह करने काम नहीं है। बहोत कुछ जिद्द करूंहुं, मां का नाम लेके कहुं हुं तो कहे है कि "मां से कहना उन की यदि ऐसी ही इच्छा होय तो मैं ब्याह कर लूंगा, पर उससे मैं सुखी नहीं होउंगा।

तारा की मां। अरे, सब लड़के योंहि कहें हैं, फिर ज्योंहि बहू का मुंह देखिन कि सब भूल जांय है। मैं तो समझूं हूं कि ब्याह कर देना ही अच्छा है।

शिवनाथ की मां। नहीं बे बे बच्चा शिवनाथ, मुझसे कभी मन की बात नहीं छिपाता। मैं डरूं हूं कि जबरदस्ती ब्याह कर देने से बेटा शिवनाथ दुःखी न हो जाय। मेरा करम तो योंहि बहोत दिन से फूट चुका है, कामनी बिचारी पर भी विधाता निर्दई हो गए (रोदन) अब खाली एक मात्र शिवनाथ ही मेरा भरोसा है, उसे यदि दुःख हुआ तो इन आंखों से नही देख सकुंगी।

तारा की मा। हाय, हाय, मैं बल जाउं, शिवनाथ दुःखी क्यों होने लगा अच्छा अभी ब्याह नहीं करता न सही। पढ़ने लिखने में मन है, पढ़े, अच्छा ही है।

शिवनाथ की मा। बेबे, पढ़ाई लिखाई भी कुछ ऐसी विशेष होरही है, मुझे तो मालुम नहीं पड़ता, शिवनाथ तो सदा ही से पढ़ता लिखता है, उसके लिए ऐसा दुबला होते तो कभी नहीं देखा।

तारा की मा उस दिन विदा होके घर गई। कामनी बोली मां! तो फिर शिवनाथ के लिए क्या करूं? डाकटर दिखाउं"?

मां। बेटी, मन की चिन्ता का डाकटर क्या दवा करेगा? डाकटर के पास इस रोग का इलाज नहीं है।

कामनी। तब क्या होगा? बसन्ती बेबे से एक दिन सलाह करके देखुं? हम लोगों को जब कभी-कोई तकलीफ आन पड़ती थी तो बसन्ती बेबे ही सलाह देती थी।

मां। बसन्ती, इस बारे में कुछ सलाह नहीं देगी।

कामनी। देगी क्यों नहीं मा? जरूर देगी।। मैं एक दिन उसके यहां जाउंगी।

जाड़े के दिनों में शिवनाथ जी की परिक्षा हुइ। उनके क्लास के और सब लड़के कहने लगे कि अबकी दफे शिवनाथ न हो दर्जे का और एक लड़का कुंजबिहारी फर्स्ट होगा। महीने भर बाद रिजल्ट निकला, कुंजबिहारी फर्स्ट हुआ, पर सबों को यह देख के बड़ा आश्चर्य हुआ कि पास हुए लड़कों की फिहरिस्त में शिवनाथ का नाम कहीं भी नहीं है।

तब शिवनाथ की माताने उन्हें बुला के कहा "बेटा इतना पढ़ पढ़ के हड्डी सुखा के भी तो पास नहीं हो सके। अब क्या करोगे?

शिवनाथ जी धीरे से बोले मा, अब को दफे नही सके फिर से एक बार कोशिश करके देखेंगे। बड़ी कठिन परिक्षा है, बहुतेरे एक बार मे पास नही होते"।

कामनी भी कई एक दिन बसन्ती के घर गई, पर बसन्ती कुछ सलाह नहीं दे सकी, बोली कि "अपनी मां से कहना कि ताईजी से सलाह करके शिवनाथ के लिये जो मुनासिब समझें करें। हम लोग बहिन, लड़की ठहरीं, इन सब बातों में क्या कुछ सलाह बात देसके हैं"? कामनी ने घर आके यह सब बातें मांसे कहीं।

माता। चंपा को कैसा देखे, बेटी?

कामनी। चंपा अच्छी है। पर कलकत्ते आके एक दम से बदल गई है, चिन्हाई नही पड़ती। लंबी होगई है, शरीर भी कुछ दुबला होगया है, पर घर का काम धन्धा मजे में कर रही है। शरीर का रंग भी अब लड़कई के ऐसा चंपा ऐसा रंग नही रहा, जरा श्यामताई आगई है, अब वह कुन्दन पुर की दुध पीती बच्ची नहीं है। बुद्धीमती शिवनाथ की मां कुछ बोली नही। सारादिन मनोमन सोचती रही, कई एक दिन तक अकेली बैठी हुई सोचा करती। अन्त को एक दिन रात की बेला सोते जाते वखत मनोमन बोली "बेटा शिवनाथ, माता के प्रति जो कर्तव्य है, तुमने पूरा किया। नारायण जी सहाय हों। अब पुत्र के प्रति जो कर्तव्य है मैं करूंगी॥

अठाइसवां परिच्छेद ।

गुरुदेव की व्यवस्था ।

दूसरे दिन सवेरे शिवनाथ की माता पालकी पर सवार होके भवानीपुर के उत्तर तरफ बेहाला नामक गांव में आ उपस्थित हुई। एक छोटी सी कुटिया के सामने पालकी रखी गई, साथ में जो दाईथी कुटिया के भीतर गई।

थोड़ी देर में उसी दाई के साथ एक वृद्ध ब्राह्मण बाहर आए। इनकी उम्र का पता लगाना तो कठिन था, पर हां सिरके बाल सब उड़ गए थे, जो थोड़े से थे भी बगुले के पर की तरह सफेद हो रहे थे, रंग गोरा था, पर शरीर पर झुर्रियां पड़ गई थीं, देखते ही मालूम पड़ता था कि इनकी आयू का दो हिस्सा बीत चुका है, यह वृद्ध ब्राह्मण कुन्दन पुर के बाज पेइ घराने के कुल गुरु थे, इनके साथ एक तेजस्वी ब्रह्मचारी भी बाहर आए। यह हाल ही में काशी जी से आए थे।

गुरु। पुत्री, आज यहां किस अभिप्राय से आगमन हुआ? चलो कुटिया के भीतर चलें। शिवनाथ की माता इस ब्राह्मण के साथ कुटिया के भीतर गई; बैठने पर बोली "पितृदेव कुशल से तो हैं?

गुरु। हां, पुत्री परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर आरोग्य है। अपना मंगल कहो।

शिवनाथ की माता। भगवान ने जीता रखा है, पर मन में सुख नहीं है। आज कई महीना हुआ, मेरी कन्या कामिनी विधवा हो गई है।

गुरुदेव ने चुप चाप आंखों से एक बुंद आंसू गिराया, गिराकर बोले "पुत्री, रुदन मत करो, जो परमात्मा की इच्छा होती है, वही होता है। उसकी काररवाइ में दखल कौन दे सकता है।

शिवनाथ की माता। आप का कहना सच है, पर कामनी के व्याह के वक्त मैं ने अड़ोस पड़ोस के ब्राह्मण पुरोहित के कहने सुना-

बिक सब काम किया आप ने उसी वक्त मना किया था, आप की बात सुनती तो यह कष्ट सहना नहीं पड़ता बिचारी कामनी को भी पानी में बहाना नहीं पड़ता, इसी दुःख से रातदिन मेरा जी जला करे है।

गुरु। अपने को धिक्कार मत दो। इन बातों में आदमी का कुछ चारा नहीं है, और न हम लोगों के सलाह ही से कुछ विशेष फल होता है। हम लोग बहोत कुछ सोच विचार के दस बुद्धीवानों से सलाह ले के काम करते हैं, क्षण भर में सब उलट पुलट हो जाता है, हमारी कल्पना वृथा हो जाती है, परमात्मा अपनी इच्छानुसार सब काम करते हैं।

शिवनाथ की मां। तौ भी भले आदमी बुद्धीवानों की सलाह से किया हुआ कोई काम बिगड़ भी जाय तो मन में दुःख तो नहीं रहता, पितृदेव! इसी लिए आज एक बात के लिए आप से सलाह लेने आई हुं। एक क्रिया के लिए आप की मनसा जानने आइ हुं।

गुरु। पुत्री, तुझे तो खूब मालूम है कि मैंने क्रिया, कर्म्मकांडों में आना जाना बहोत दिन से छोड़ दिया है, किसी प्रकार के शास्त्र की व्यवस्था देने में भी असमर्थ हुं। मुझ से अधिक बिद्वान, शास्त्री, पंडित, काशी, कलकत्ते, नवद्वीप में मौजूद हैं जो रात दिन शास्त्रालोचन किया करते हैं, कर्म कांड में भी वह लोग दक्ष हैं, व्यवस्था देने में भी पूरे विचार शील हैं। मैंने तो यह सब काम बहोत दिनों से छोड़ दिया है, केवल परलोक सुधारेने के लिए देवार्चन करता हुं और मन बहलाने के लिए जब जो इच्छा होती, एक आध पुस्तक देखता हुं, वह भी सामान्य कोई बहोत साधारण पुस्तक होती है।

शिवनाथ की माता। पिता जी, यदि खाली एक इसी कृया के लिए आप की व्यवस्था लेने की जरूरत होती तो मैं आप को तंग करने नहीं आती, पर आपलोग मेरे पति के पुश्तैनी कुल गुरु हैं, आप मेरे श्वशुर जी के परममित्र थे, मेरे स्वामी पर परम कृपा रखते थे, सो यदि इस कुल में कुछ आफत बिपद आ पड़ेगी तो आप के बि-

बाय और किस से सलाह पूछने जाऊंगी। इस घराने के लिए आप जैसा यत्न करेंगे दूसरा क्या वैसा करेगा, हम लोगों का और मुरब्बी कौन है ?

गुरु। पुत्री, रुदन मत करो, मैं तुम लोगों के लिए अपने भरसक कुछ बाकी नहीं रक्खूंगा, पर इस बुड्ढे की सामर्थ भी कम है और विद्या भी कुछ ऐसी नहीं हैं।

शि० मा। पिता जी, जो लोग बहोत विद्या का घमंड करे हैं, उन से व्यवस्था लेने को मेरा जी नहीं चाहता। आप में जो विद्या है वह इस देश में किसी से छिपी नहीं है, नहीं तो इन निराले गांव में काशी मथुरा ऐसे दूर देशों से विद्यारथी पढ़ने नहीं आवते। गुरुदेव, आप को जबान ही मेरे लिए बेद. वाक्य है।

गुरु। पुत्री, तुमे भ्रम हुआ हैं। मेरी विद्या यत्सामान्य है। समुद्र तुल्य आर्य्य शास्त्रों से मैं एक आध चुल्लु भी पी सका हूं कि नहीं इस में सन्देह है। विद्यार्थियों से बात चीत करने में मुझे बड़ा आनन्द आवता हैं उनके प्रति स्नेह करने को जी चाहता है, इसी लिए दो एक जने यहां आ जाते हैं। आज कल काशी जी से यह ब्रह्मचारी महाराज पधारे हुए हैं।

शि० मा०। पिता जी, उसी स्नेह की लालसा से मैं भी आई हूं, अपनी पुत्री पर स्नेह कर के आज एक सलाह दीजिए।

गुरु। कहो पुत्री कहो, तुमे जो कहना होय कहो, मैं तुमारे स्वामी कुल वालों से बहोत दिनों से परिचित हुं मेरी सामान्य शक्ति से जो कुछ हो सकेगा मै करुंगा।

शिवनाथ की माता धीरे धीरे कहने लगी "पिताजी मेरे लड़के शिवनाथ के संग एक बाल विधवा के ब्याह की बात चीत हो रही है, उसी के लिए आप की व्यवस्था, सलाह, आप का आशीर्व्वाद लेने आई हुं।

गुरुदेव शिवनाथ की मां को बचपन से जानते थे, सनातन धर्म्म में उसकी पक्की आस्था का उन्हे पूरा पता था, उसके मुंह से यह बात सुनके उन्हे कुछ आश्चर्य्य हुआ;—कहने लगे "पुत्री विधवा विवाह!

इम लोगों की रीती के विरुद्ध है, प्रचलित शास्त्र, प्रचलित धर्म्म-सब के विरुद्ध है, तुम क्या नहीं जानती ? इस में तो ब्राह्मण पुरोहित सब एक मत है, जिससे तुम पूछती सब बतला देते, केवल यही बात पूछने के लिए तुमने मेरे पास आने का कष्ट क्यों किया ?

शि०मा० । मैं ब्राह्मण पुरोहितों की व्यवस्था जानना नहीं चाहती, उसके लिए आपके पास नहीं आई हूं । केवल आपकी मनशा आपका सलाह लेने आईहुं । जो मैं कहती हूं सुनिये । यह कह कर शिवनाथ की माता ने आदि से अन्त तक अपने दुःख की सारी कहानी कह सुनाई बसन्ती की मा का वृतान्त, बसन्ती और बैजनाथ की बात, उन के कलकत्ते आने का हाल, चंपा और शिवनाथ के पवित्र प्रणय का वृतान्त, लोगों की निन्दा कलंक की कहानी, निराश्रय निर्दोष अबला चंपा के कलंक, अपमान असह्य यातना और शरीर की दुर्गति का हाल, सदा की दुःखिया कामनी की कथा, अभागी तारा की सारी कथा, उनोंने सविस्तर वर्णन किया । सुनते सुनते गुरुदेव की आंखो से आंसू की धारा बहनेलगी, काशी के ब्रह्मचारी की आंखों से चिनगारीसी निकलने लगा, शरीर कांपने लगी, अन्त से शिवनाथ की माता बोली' गुरुदेव, इस समय हम लोगों पर चारों तरफ से आफत घिर आई है, आपके सिवाय और किससे सलाह लेने जाऊं, लोगों की बातों पर भूल के तारा की मा ने बड़े धनी घराने मे तारा का व्याह किया, पर बचपन ही मे दुःख और शोक से तारा ने प्राण त्याग दिए । गांव के ब्राह्मण पुरोहितों की बात पर आपकी ठीक सलाह की कुछ पर वाह न कर मैंने बड़े कुलीन घराने मे लड़की व्याही, भगवान ने उस पाप का दंड हाथो हाथ दिया । बिचारी कामिनी बच्ची का मुंह देख के कलेजा फटा जाता है । दुनिया मे मेरा और कोई नही है, सुख की सारी आशा भी जा चुकी, बच्चा शिवनाथ के अलावे दुसरा सहारा नही है, और बच्ची, बसन्ती और चंपा हैं । उन लोग भी मेरे पेट के बच्चो की तरह हैं उनकी अभागिनी माता मरते वक्त उने मुझे सौंप गइ थी । गुरु देव, अब आपही इनके एक मात्र बड़े हैं, मुरब्बी हैं, इन बच्चों का भार लीजिए, जो मुनासिब

समझिए कीजिए। यह अनाथ विधवा अब और यह बोझा सम्भाल नहीं सकती"।

इतना कहके शिवनाथ की माता प्रबल वेग से आंसुओं की धारा बहाने लगी। पितृ तुल्य गुरु देव के सामने दुःख की कहानी कहके, मानों शोक कुछ कम हुआ।

शिवनाथ की माता की कहानी सुनते सुनते वृद्ध की आंखें कई बेर आंसू से भर गई थीं, परन्तु निराश्रय विधवा को रोते देख उनकी आंखो से भी आंसू टपकने लगे। बहोत देर तक मन को वश नही कर सके, थोड़ी देर बाद बोले' पुत्री तुमारी बातें से मेरा मन बड़ा विचल गया है। अब क्यापूछती हो, कहो।

शि० मा०। मैं केवल यही पूछती हूं कि "विधवा बिवाह क्या महापाप है"?

गुरुदेव। पुत्री, पापपुण्य का निर्णय परमात्मा कर सकते हैं, हम लोग तो केवल शास्त्रों की कुछ थोड़ी बहुत बात बतला सकते हैं।

शि० मा०। अच्छा यही बतलाइए। हम लोगों के सनातन हिन्दू शास्त्रों मे क्या यह बात नहीं मिलती? लोगो के कहने सुनने, निन्दा अपयश की बात मैं नही पूंछती मुझे अब बहोत दिन जीना नही है। लोक निन्दा से मेरा कुछ विशेष बिगड़े सुधरेगा नही।

गुरु। पुत्री, शास्त्र तो एक नही है और सब शास्त्र एक समय के बने हुए भी नही हैं, और सबों मे एक ही तरह का लेख भी नही है। जिस जिस समय हिन्दुवो का जैसा आचार व्यवहार रहा है, उसीका निचोड़, सार भाग हम लोगों का शास्त्र है।

शि० मा०। पिताजी मैं औरत ठहरी, मैं यह सब क्या समझूं मैं केवल यही जाना चाहती हूं कि सनातन शास्त्रों मे विधवा बिवाह निषिद्ध है कि नही, खाली इतना बतला दीजिए।

गुरु देव। इस समय यह चाल निषिद्ध है, इस लिए आज कल के शास्त्र से भी यह बात निषिद्ध है ही है इसमे और पूछना क्या है?

शि०मा०। पिताजी आज कल के शास्त्र और पुराने शास्त्र का झगड़ा मैं नही जानती, मैं मूर्ख, अनपढ़ अबला हुं। आप सब पढ़ चुके हैं,

हमारे धर्म्म के जो मूल शास्त्र हैं उनका निचोड़ इस अबला को समझा दीजिए, मेरा मन बड़ा व्याकुल हुआ है।

सुने हैं कि कलकत्ते के किसी बड़े भारी पंडित के मत में विधवा विवाह शास्त्रानुकूल है, पर आप के मुंह से सुने बिना मुझे विश्वास नहीं आता। आपका वचन ही मेरा वेद वाक्य है।

गुरुदेव बहुत देर तक सोचते रहे अन्त को धीरे धीरे कहने लगे "पुत्री, जब तुम पूछती ही हो तो तुमसे सब साफ साफ कहूंगा। तुमने जिन पंडित की बात कही, वह मेरे गुरुभाई थे, उनकी पण्डिताई, शास्त्र विद्या, सच्चाई मुझे सब मालूम है। एक दिन की बात है कि यही विधवा विवाह के सम्बन्ध में मुझसे और विद्यासागर महाशय से खूब तर्क वितर्क हुआ, मैं अपने भर तक खूब झगड़ा, उस समय मुझे विद्या का बड़ा अभिमान था। पर नहीं पुत्री, बचपन से मैं उस पण्डित श्रेष्ठ को जानता हूं वह भूले नहीं है, ठग भी नहीं हैं। उनके कथन का एक एक अक्षर सत्य है। विधवा विवाह सनातन हिन्दूशास्त्र में निषिद्ध नहीं है। मेरे परम मित्र रामप्रसाद सरस्वती का भी यही मत है, वह भी अपनी सम्मति प्रगट करके तुमे सन्तुष्ट करेंगे।

वि० मा०। पिताजी आपने अपनी अनाथ कन्या का जी जैसा ठंढा किया है उसके बदले नारायण जी आपका सौ सौ जन्म तक मंगल करेंगे। मैं अब और किसी से शास्त्र की व्यवस्था, रीति रस्म की बात पूछने नहीं जाऊंगी। पर हां इतना और जाना चाहती हुं की नारायणजी की आंखों में यह बात भली है कि बुरी। आप दोनों महा विद्वान पण्डित इस जगह हैं कृपा करके इसका जवाब देके मेरी आत्मा का बोझ हलका कीजिए।

रामप्रसाद सरस्वती। पुत्री! संसार के बड़े से बड़े पण्डित भी इस बात का जवाब नही दे सकते मैं किस गिनती में हूं, परमात्मा के मन में क्या है उसका अनुमान जानना भी आदमी की शक्ती से बाहर है। पर हां इतना जरूर कह सकते हैं कि जो करुणा के सागर हैं, उनोने बाल विधवा को जन्म भर की वैधव्य यंत्रणा भोगने के लिये

पैदा किया है, मेरी छोटी सी बुद्धि में तो यह बात नहीं आवती।

सरस्वती महाराज की स्थिर गम्भीर पुण्यमय वाणी इस छोटी सी कुटिया में गूंजने लगी। सरस्वती महाराज कौन हैं?

उपसंहार।

'बैशाख महीने में ५, से पहले कुन्दनपुर के गांव से हमारी और बैजनाथ जी की सपरिवार मुलाकात हुई थी। यद्यपि इनसे जान पहिचान हुए अभी एक बरस भो नहीं हुआ है, पर न जाने क्यों इनसे अपने घर वालों की तरह प्रीती होगई है। फिर बैशाख महीना आया, पाठक चलो फिर कुन्दनपुर की कुटिया में जाके इनसे बिदा हो आवें।

बैजनाथजी की नौकरी चाकरी कुछ नहीं लगी और न उनकी गरीबी गई। बरस भर कलकत्ते रहकर अपनी खेती बारी देखने के लिए वह गाव में फिर आए। गोपाल बाबू ने हाईकोर्ट के दफ्तर में उनके लिए एक काम का ठीक किया था। कोई भी समझदार युवक ऐसा मौका हाथ से जाने नहीं देता। पर शायद हमारे बैज-नाथ जी की बुद्धि उतनी तेज़ नहीं थी, बुद्धि में जरा गांव गवई की हवा लगी हुई थी, इसीलिए उन्होने वह काम लेना नहीं चाहा और अपने गांव पर लौट आए। शिवनाथ जी ने और दो चार महीना कलकत्ते रहने के लिए उनसे बहुत कहा पर वह बोले "नहीं शिवनाथ, कलकत्ता खूब देखलिया अब ज्यादे देखने की रुचि नहीं है? बसन्ती अपना पूर्ववत आम की चटनी बनाने और घरका धन्धा करने लगी। घरके धन्धे में अब एक और सुबीता भी हो गया था। बसन्ती की ताई के तारा के अलावे और कोई लड़का वाला नहीं था। तारा के मरने के बाद उनका मन भी सदा दुःखी रहता इसलिए दोपहर के वखत हर रोज बसन्ती के यहां आ बैठती, बसन्ती के बच्चों को खिलाती या खिलावन की स्त्री से गप्प सप्प इधर उधर की बात चीत करती थी। खिलावन पत्नी भी ताईजी और बसन्ती दोनों के केश संवार दिया करती थी और बसन्ती, हमें लिखते लज्जा आवती है सारी दोपहरिया हाथ में

लघ्घीलेके पेड़ों पेड़ कच्चा आम तोड़ती फिरती थी। ताईजी कहा करती "चसन्ती लड़की अच्छी है पर अभी तक उसकी बुद्धी पकी नही"।

रमानाथ जी की एकलौती कन्या मर चुकी है, पहले तो कुछ दिनों तक उन्हे जरा गम हुआ, पर वह रोजगारी काम काजी आदमी ठहरे, यह शोक थोड़े ही दिन मे भूल गए। जमीनगिरी का काम भी पूरे उत्साह से कर रहे थे, विशेष कर बांकीपुर को कलक्टरी में सिरिस्तेदारी की जगह खाली होने वाली थी, रमानाथ उसी पर ताक लगाए बैठे थे, इसलिए उनकी जिन्दगी भी लक्ष्य से खाली नहीं थी।

शिवनाथ की मां, आंखों से आंसू बहाती हुई बहू चंपा को घर लाके बुढ़ौती उमर में ठंडी हुई। व्याह कलकत्ते ही में हुआ था, व्याह में कोई आए कोई नहीं आए परन्तु इसके लिए काम रुका नहीं रहा। जो लोग इस काम के प्रधान उद्योगी थे, उन लोगोंने भी इसकी कुछ ऐसी परवाह नही की। सदाके हंसमुख ठंडे मिजाज देवीबाबू जांए कि न जाएं इसी असमंजस में पड़े हुए थे, कहीं शामत को मार, गृहणी जी से जिकर छेड़ बैठे। वह बेभाव की पड़ी कि चुप करके बैठरहे। फिर जाने आने की बात मुंह से भी नहीं निकाली। महल्ले के ब्राह्मण पुरोहित पंच चौधरी महाशयों ने खूब हैरा मचाया व्याह में विघ्न डालने की भी यथा साध्य चेष्टा की बड़े उछले कूदे, पर अब वह जमाना नहीं रहा कि इन लोगोंके विरोध से कोई काम रुक जाय। हां, इन लोगों का महात्म अवश्य जाहिर हो जाता है। गोपाल बाबू अपने बीसों शिक्षित दोस्तों के साथ इस विवाह में शामिल हुए, त्यौरा लाया और भी कलकत्ते के दस पांच भले आदमी इस विवाह में शामिल हुए थे, बड़ी हंसी खुशी से यह शुभ कार्य्य निर्विघ्न समाप्त हुआ। विवाह में विद्यासागर के पक्षवाले पण्डित लोग आवेंगे इसी डर से महल्ले के पण्डित शास्त्रीयों ने उधर झांकने की हिम्मत नहीं की। महल्ले के देशहितैषी हिन्दू कुल तारक युवकगण जो इस अहिन्दू कार्य्य में विघ्न

डालने और ढेला मारने आए थे, वह दरवाजे पर एक लाल मुंह के अहिन्दु सार्जन को देखके चुपचाप जेब का ढेला जेबही में लिए हुए बैरंग वापिस गए।

शिवनाथके ब्याह के बाद बैजनाथ गांव में आए, तो पहले लोगों ने इनसे खान पान का सब सम्बन्ध छोड़ दिया, परन्तु अन्त को नाईजों के बहुत कुछ कहने सुनने से रमानाथ जी ने सबको बुलाके एक फैसला कर दिया। फैसला यह हुआ कि शिवनाथ प्रायश्चित करें, पर शिवनाथ को कालिज की हवा लग चुकी थी, वह ऐंठ बैठा कहा "मैंने यह काम कुछ अधर्म समझ के नहीं किया है, इसलिये प्रायश्चित कदापि नहीं करूंगा"। अन्त को उनकी मां ने एक दिन ब्राह्मण भोजन करा दिया। रमानाथ जरा दिल्लगी बाज थे हंस के शिवनाथ से बोले, अरे भाई तुम लोग निरे लड़के हो, कुछ समझते बूझते नहीं, अरे बरसात का पानी चाहे जहां से हो के जाय आखिर आयगा तो नदी ही में न। तुम विधवा से ब्याह करो या किसी की बहू बेटी निकाल लाओ, बस ब्राह्मणों के पेट में कुछ पड़ने ही से हुआ, सब बखेड़ा मिट जाता है। यही तो आ,ज कल की बिरादरी हुई है, पंचायत हुआ है, तुम लोग मानो चाहे मत मानो"। शिवनाथ जी ने जवाब दिया बिरादरी पंचायत की ऐसी दुर्दशा होगई है इसीलिये तो सुधार की सख्त जरूरत है, जिस बिरादरी में न्याय अन्याय का विचार नहीं, उसका नाश भी शीघ्र ही होजाता है। खिलावन की स्त्री बहुत दिन तक घरमें बैठी हुई गों गों करके रोया करती थी कहती हम तो तब हिहैं कहा रहा कि कलकत्ते जिन जाओ उहिन धरम करम नाही रहत। हाय, हाय, ऐसन हरी भरी गृहस्ती कोई का हो गयलरे। चंपा बीबी हमार दहीया खातरहलिन उसके मनमें इतना रहा के जाने हायरे हम तब-हिए कहा कि रंगरेजी पढ़ा मनसेदुआ लोगन के गले में छूरी फेराला, कोई भैल न, हायरे हैयारे दैया का करिब रे दैय्या? इत्यादि इत्यादि ',

खिलावन की स्त्री मनोमन चंपा पर बेहद नाराज हुई, पर

माया नहीं छोड़ सकी, फिर छिपा के चोरी से चीनी बाकी दही शिवनाथ जी के यहां ले जाने लगी थोड़े ही दिन में फिर से दोनों में पहले सा मेल होगया ।

शिवनाथ की मा पहले की तरह अपने पूजा अर्चना में लगी रहती, गृहस्ती के धन्धे से कुछ मतलब नहीं रखती थी । कामनी ही घर का सारा इन्तजाम करती । इतने दिन बाद उसके हाड़ में जरा हवा लगी । कामनीही भंडार के चीज वस्त का इन्तजाम करती रसोई करती और गृहस्ती चलाती थी । चंपा बड़े भक्ति भाव से अपने प्रभु की पूजा करती कामनी बेबे से स्नेह करती और उसकी आज्ञा पालन कर अपने को धन्य समझती थी । घर में, अंगने में झाड़ देती, तालाव से जल भर लाती, मसाला पीसती, तरकारी बनाती, दूध गरमकरती और तालाव पर जाके बरतन मांजना उसे बड़ा अच्छा लगता था । तालाव के किनारे आम, के कटहर के और और फलों के भी कई पेड़ थे, जो फल पकता चंपा तोड़ के लाके कामनी बेबे के पास रख देती थी ।

एक दिन संध्या के समय चंपा इनी पेड़ों के बीच खड़ी हुईहै, न जाने क्या सोच रही है, न जाने कहां से एका एकी शिवनाथ पीछे से आके बोले, क्या सोच रही हो ?

चंपा जरा शरमा के घुंघट काढ़ के बोली "नहीं बतलाती । शिवनाथ । हां बतलाओगी क्यों नहीं ? बतलाओ न ।

यह कह कर शिवनाथ जी ने धीरे से उसके पास जाके उस फूल धनुष सरीखे कोमलदेहलता को हृदय से लगा लिया और लज्जा से नीचे हुए भए मुख को उठा के गुलाब ऐसे लाल लाल होठों का गाढ़ चुम्बन किया । उनके स्पर्श से चंपा का सारा शरीर कांपने लगा । और भी ज्यादे शरमिन्दी होके बोली "छि: यह क्या करो हो, छोड़ो छोड़ो ।

शिवनाथजी छोड़ के बोले "अच्छा अब बतलाओ ?

चम्पा जरा मुसकरा के बोली "लड़कई में जब तुमरे यहां आती तो इसी अमरुद के पेड़ से तुम अमरूद तोड़ तोड़ के मुझे

खिलाते थे, वही याद कर रही थी।

शिवनाथ जी हंस के बोले "अच्छा वही बचपन का प्यार अभी तक नहीं भूली हो। हमें लिखते लज्जा आती है कि शिवनाथ जी उसी अमरूद के पेड़ पर चढ़ गये और चम्पा नीचे अमरूद बटोरने लगी। इसी समय तालाब के घाट पर न जाने किसकी आहट आई, कामनी बेबे किसी काम से इधर ही आ रही है, मारे लज्जा और डरसे चम्पा घबरागई अब शिवनाथ भागें क्योंकर? कोई रस्ता नही। पर चम्पा स्वामी के सब गुण नही जानती थी, शिवनाथजी एक छलांग में बाग का घेरा लांघ के बाहर जा कूदे और छिन भर में आंखों के ओट होगए।

इसी बरस वह एफ० ए० और दो बरस बाद बी० ए० की परिक्षा में भी सन्मान के साथ पास हुए। एक जगह अच्छी सर्कारी नौकरी भी मिलगई पर बसन्ती हमेशा यही दुख किया करती थी, कि उनकी पेड़ पर चढ़ने की आदत नहीं छूटी।

नीचे लिखी पुस्तकें हमारे यहां से प्राप्त हो सकती हैं।

प्राचीन भारतवर्ष की सभ्यता का इतिहास:-सर रमेश चन्द्रदत्त के लिखे हुए पुस्तक (Ancient civilization of India) का अनुवाद चार भाग का मूल्य ४) फी भाग १)

फुटबाल का खेल :-लड़कों के लिये उपयोगी पुस्तक दाम ≡)॥

महात्मा श्रीकृष्ण जी का जीवन चरित्र:-यह पुस्तक ला० लाजपत रायजी की लिखी पुस्तक का अनुवाद है मूल्य ॥)

बङ्ग विजेता:-यह उपन्यास सर रमेशचन्द्र दत्त लिखित पुस्तक का अनुवाद है बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है मूल्य ॥।)

आदर्शनगरी:-यह उपन्यास विज्ञान सम्बन्धी है इसमें दिखलाया गया है कि किस प्रकार विज्ञान से आज कल नुक्सान पहुंचाने का उद्योग होता है और किस प्रकार से विज्ञान द्वारा स्वास्थ्य का ध्यान रखकर नगर की रचना करनी चाहिये इस पुस्तक में विज्ञान द्वारा हानि पहुंचाने तथा उससे रक्षा करने वालों का खूब फ़ोटो खींचा गया है मूल्य १)

(१) वनिता विनोद:-स्त्री शिक्षा की अति उत्तम पुस्तक इस पुस्तक को काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी के १२ चुने हुए लेखकों द्वारा लिखाकर तय्यार कराई है मूल्य दूसरे संस्करण का ।॥)

(२) धर्म्म और विज्ञानः—यह पुस्तक नई रोशनी और विज्ञान का प्रचार करती है और इसने योरप के अंधविश्वास को दूर करने और विज्ञान के फैलाने में बड़ी सहायता दी है यह. पुस्तक अङ्गरेज़ लेखक ड्रेपर की लिखी है (Conflict between religion and science) का भाषा अनुवाद है मूल्य सजिल्द २) बिना जिल्द १॥)

दुर्गेशनन्दिनीः—ऐतिहासिक और अति रोचक उपन्यास है बङ्किम बाबू के मशहूर उपन्यास का अनुवाद मूल्य दो भाग का ।।।)

मैगेस्थनीज़ः—भारत वर्ष के लगभग २३०० वर्ष के पुराने वृत्तान्त के जानने का शौक है तो इस यात्री के लिखे वृत्तान्त को पढ़िये मूल्य ॥≶)

बुन्देलखण्ड केशरी—महाराज छत्रसाल का जीवन चरित्र दो भाग का मूल्य ।।।)

महात्मा ग्वीसेपमेज़नीः—का जीवन चरित्र मूल्य ।)

स्वास्थ्यरक्षाः—स्वास्थ्य पर बड़ी उपयोगी पुस्तक है मूल्य ।)

पुस्तक मिलने का पता माधो प्रसाद ।

पुस्तक कार्य्यालय

धर्म्मकूप काशी